CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री तन्त्रिका पारसनाद्दंपगा

द्वितीय खण्ड

२१८

लेखकः-
श्री ले. ज. धन शम्सेर जङ्गबहादुर राणा
" विश्वविजयी कुलशिरोमणी "

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुस्तक मिल्नेका ठेगाना-
लालदर्बार
नारायणहिटी ब्लक नं. २० ³⁷⁄₁⁴
काठमाडौं, नेपाल.

(सर्वाधिकार-सुरक्षित)

मुद्रकः—
"श्री अन्नपूर्णा प्रेस" नेपाल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रं २१८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तन्त्र २१८

श्री ५ महाराजाधिराज, नेपाल.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री फिल्ड मार्शल रुद्रशम्शेर जङ्गबहादुर राणा
(लेखक के पिताजी)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री फिल्ड मार्शल रुद्रशम्शेर जङ्गबहादुर राणा
(लेखक के पिताजी)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री क० ज० तेजशम्शेर जङ्गवहादुर राणा
(प्रकाशक के पिताजी)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री क० ज० तेजशम्शेर जङ्गवहादुर राणा
(प्रकाशक के पिताजी)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

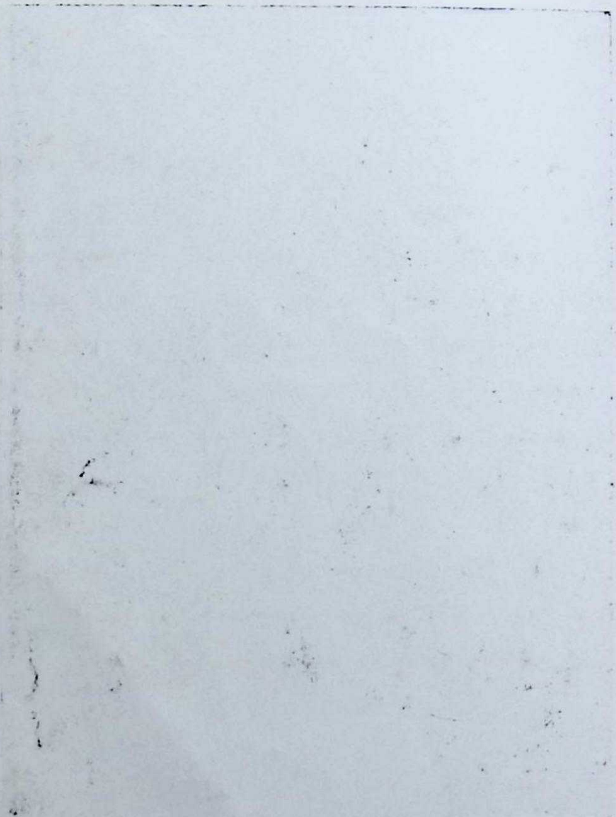

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो शब्द

प्रिय पाठक वर्ग,

पुस्तक हिन्दी भाषा भाषी महानुभावों के समक्ष प्रस्तुत करने के दृष्टिकोण से हिन्दी में लिखी गई।

वास्तव में इस पुस्तक मेंभाषा को प्रधानता देने का प्रयास नहीँ, विषय वस्तु को प्रधानता दिए जाने के कारण सम्भव है कहीँ भाषा शिथिल हो गई हो। भाषा उद्देश्य पूर्तिका उपकरण मात्र होनेका कारण भाषा की गहनता, लालित्य अथवा माधुर्य प्रति अधिक परिश्रम नहीं हो सका फिर भी अभि व्यक्त किए जाने वाले विषय में अभि व्यंजना की कमी न रहे इसका यथा शक्य विचार किया गया है। अतः उपरोक्त दृष्टिकोण से में हिन्दी लिखने में कहाँ तक सफल हुआ यह पाठकों के सामने है।

छपाई की त्रुटिको कृपया सुधार कर पढें।

भवदीय

लेखक

ले० ज० धनशम्शेर

जङ्गबहादुर राणा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री ले० जनरल धनशम्शेर जङ्गबहादुर राणा
(लेखक)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री ले० जनरल धनशम्शेर जङ्गवहादुर राणा
(लेखक)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

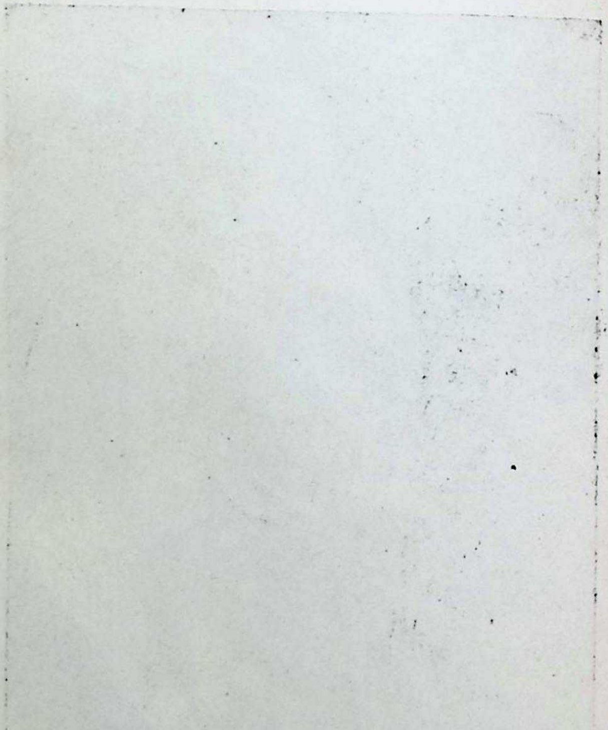

[illegible]
([illegible])

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री ले० जनरल इन्दुशम्शेर जङ्गबहादुर राणा
(प्रकाशक)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री ले० जनरल इन्दुशम्शेर जङ्गबहादुर राणा
(प्रकाशक)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीप्रफेसर पं. सोमनाथ शर्मा ज्यू करकमलेषु समर्पितम्
भवदीय
ॐ
लेखक
धनशम्शेर जं. व. रा.
ले. ज.

॥श्रीतान्त्रिकोपासनादर्पणद्वितीयखण्ड की विषयानुक्रमणिका॥

विषयाः	पृष्ठाङ्का

अष्टमपटल

उच्छिष्टगणेशका मन्त्रध्यानादिका वर्णन	१
उत्तराम्नाय की नामावली	१
सिद्धिलक्ष्मीका भेदका वर्णन	२
प्रत्यङ्गिरा का भेदका वर्णन	७
गुह्यकालीका भेदका वर्णन	११
धुमावतीका वर्णन	३३
(विकराल) अघोरभैरवका वर्णन	३४
कामकलाकाली का वर्णन	३५
वामदेव का वर्णन	४८
वामनभगवान का वर्णन	४८
हयग्रीवभगवान् का वर्णन	५०

नवमपटल

महागणपति का वर्णन	५२
ईशान का वर्णन	५५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भैरवामृतमहायाग का विवरण	२४३
कौलरुद्रीयाग का वर्णन	२४७
अन्ययागादि का संकेन	२४८
कौलाचार तथा अवधूताचार का भेद	२५१
कन्या तथा सुवासिनी के नाम भेद	२५३
उपासनाफल का वर्णन	२५५
पाशुपतत्रय का वर्णन तथा समाप्ति	२५६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री:

॥ ॐ ॥

॥ अथ अष्टमपटलः ॥

॥ ॐ नमः श्रीपरदेवतायै ॥

अब मैं उत्तराम्नायका वर्णन करता हूं। उत्तराम्नाय के उच्छिष्ट गणेशमन्त्र ध्यानादि के विषय में मेरू तन्त्र में ऐसा है: –

अथातः संप्रवक्ष्यामि उत्तराम्नायसिध्दिदान् ।
वदेध्दस्तिपिशाचीति लिः लिः स्वाहा नवाक्षरः ॥
कंकालोस्य मुनिश्छन्दो विराडुच्छिष्टनामकः ।
गणेशो देवता प्रोक्तस्सर्वसंपत्प्रदायकः ॥
द्विर्त्रीन्द्विन्दुद्विभिश्चापि पञ्चाङ्गविधिरीरित : ॥ "

ध्यानम्– " उद्यादिनेश्वररूचिं पाशांकुशवराभयान् । "
हस्तैर्दधानं स्मेरास्य मरुणं चिन्तयेध्ददि ॥

ऐसे ही उत्तराम्नाय के गणेश के भेद बहुत हैं। अपने अपने गुरु परंपरा के अनुसार चलना चाहिए।

अब मैं शक्ति, शिव तथा विष्णु के विषय में लिखता हूं। वडवानलतन्त्र में लिखा है कि:–

" सिध्दिलक्ष्मीर्गुंह्यकाली महाभीम सरस्वती ।
धूमा कामकला काली महाकाली कपालिनी ॥
महाश्मशान कालीच कालसंकर्षिणी तथा ।
प्रत्यङ्गिरा महाराज्ञीयोंगेशी सिध्दि भैरवी ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एता वहुबिधा युक्ताः सर्वविद्योत्तमोत्तमाः ।
उत्तराम्नायपीठस्थाश्चतुर्वर्गफल प्रदाः ॥ ”

फिर मुण्ड मालातन्त्र में लिखा है:—

“ भेदास्त्वे क्रोनपंचाशदुराम्नांय वर्त्मनि ।
गुह्यकाली ततः प्रोक्ता सिध्दिलक्ष्मीस्ततः परम् ॥
स्वर्णकोटेश्वरी तत्रं राजराजेश्वरी तथा ।
गुह्येश्वरी तथा प्रोक्ता तथा तारा त्रिरूपिणी ॥
छिन्नमस्ता महादेवी ततः प्रोक्ताति भीषणा ।
एवं विधास्तु संकेताः सदा गोप्याःप्रकीर्तिताः ॥ ”

यहां मैं वडवानल-तन्त्र का मत के नामों का क्रम से वर्णन करता हूं। सिद्धिलक्ष्मी के मूलमन्त्र दो हैं। एक नवाक्षरी दुसरा षोडशाक्षरी। दोनों का फल सम ही माना गया है, क्यों कि षोडशाक्षरी में अधिक अक्षर होने से भी प्रणव नहीं है, नवाक्षरी प्रणवयुक्त है। अतः बहुत से उपासकों के क्रममें नवाक्षरी ही विशेष प्रचलित है। इनदोनों मन्त्रोके विनियोग (ऋष्यादिन्यास), यन्त्र और आवरण पूजादि एक ही हैं। परन्तु करषडगन्यस) तथा ध्यान पृथक् हैं। नवाक्षरी के मन्त्र ध्यानादि कालानलतन्त्र में ऐसे हैं।

" ध्रुतिश्चटीच दोग्ध्रोच शोषिणी शिरया सह ।
दोला तदनु मालूरः सामरश्च निरत्त्ययः ॥
शेषे दण्डः परिज्ञेय इयमुक्ता नवाक्षरी ।
नैतस्य सहशो मन्त्रस्त्रिपु लोकेषु .विद्यते ॥
षड्दीर्घभाजा बीजेन करांगन्यासमीरितम् ॥ ”

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहां ‘ विजेन ’ पदको ‘ मायाबीजेन ’ पद माना गया है। ऋष्यादिन्यास ऐसे हैं:—

“ श्रीसिध्दिलक्ष्मीमन्त्रस्य ऋषिर्नारद ईरितः ।
गायत्री छन्द आख्यातं सिध्दिलक्ष्मीश्च देवता ॥
चटोबीजं तथाख्यातं समीहा शक्तिरिष्यते ।
प्रवन्धः कीलकं विद्यात् पुरुषार्थचतुष्टयं ॥
विनियोगोस्य मन्त्रस्य कथितस्त्वयि नारद ॥ ”

षोडशाक्षरी का भी विनियोग यही है। पंचाक्षरी का ध्यान निस्नलिखित प्रकारका हैं।

“ ध्यानमस्या प्रवक्ष्यामि तन्निवोधय आत्मज ।
श्वेतां श्वेतशवारूढां नृमुण्डकुण्डलाम् ॥
पंचवक्त्रां महारौद्रिं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनाम् ।
ब्याघ्रचर्मावृतकटीं शुष्कावययवभूषिताम् ॥
आवध्दयोगपट्टांच नरास्थिकृतभूषणाम् ।
हस्तैः षोडशभिर्दीप्तैः विस्रस्तघनकुन्तलाम् ॥
खड्गं बाणं तथा शूलं चक्रं शक्तिं गदामपि।
जपमाला कर्त्तृकांच विभ्रतीं दक्षिणैर्भुजैः ॥
फलकं कार्मुकं नागपाशं परशुमेवच ।
डमरूं फेरूपोतंच नरमुण्डकपालकम् ॥
उद्वहन्तीं करैर्वामैर्दीर्घसर्वाङ्गभूणाम् ॥ ”

फिर षोडशाक्षरी के मन्त्र ध्यानादि तन्त्रान्तमें ऐसे हैं:—

“ अथोध्दरिष्ये देवेशीं षोडवार्णं मनूत्तमम् ।
यमेकवामुच्चार्यं मुच्यते जन्मसंकटात् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चटी दोग्धी शिरोसिद्धिभूर्मद्धिः प्रोथ एव च ।
फली पुनः शिरो रेतः प्रातरान्त्रे ततः परम् ॥
पुरश्चरणहोमाः स्युर्मलिनाहृदपर्यंटाः ।
मन्त्रोऽयमपि सर्वेषां मनूनामुत्तमः स्मृतः ॥
इदानीं ते सुगमेन कथयामि द्विजर्षभ ।
श्रुतिपूर्वं बीजमुक्त्वा अंगुष्ठाभ्यां पदं ततः ॥
शेषे दण्डः समाख्यातः पुनर्बीजद्वयं वदेत् ।
तर्जनीभ्यां यदा तत्र दण्ड इत्यभिधीयते ॥
पुनर्बीजद्वयं यत्र ऽथामन्ता मध्यमा ततः ।
दण्डः शेषे च विज्ञेयः पुनस्तद्बीजमेव च ॥
अनामिकाभ्यामन्ता च ततो दण्ड प्रकीर्त्तितः ।
बीजद्वयात् कनिष्ठाभ्यां पदाद्दण्ड बीजं स्मृतम् ॥
बीजद्वयं करतलपृष्ठाभ्यां दण्ड इत्यपि ।
इतिकरन्यासं कृत्वा अङ्गन्यासं चरेत् सुधिः ॥
क्रमेणानेन वै ब्रह्मन् संभवन्यासमाचरेत् ।
श्रुतिचटयौ सभाभाष्य हृदयाय पदं ततः ॥
दण्डस्तदनु विप्रर्षे बीजद्वयं तथा परम् ।
शिरसे पदतश्चैव दोग्धी बीज स्मृतं तदा ॥
तद्बीजद्वकमुच्चार्य शिखायै पदमेवच ।
इन्द्रबीजं समस्यातं पुनर्बीजद्वयं वदेत् ॥
कवचाय पदञ्चैव दोग्ध्रीबीजं हिनारद ।
बीजे तथा समुश्चार्यं नेत्रत्रयाय बौषडिति ॥
षडंगन्यासमित्युक्तमर्चायां कायशोधनम् ॥ '

षोडशाक्षरी विद्यात्मिका सिद्धिलक्ष्मी का ध्यान ऐसा हैः—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" महातेजोमयी लक्ष्मी रश्मिकोटयुतप्रभा ।
पंचवक्त्रा दशभुजा त्रिपंचनयनैर्युता ॥
श्वेतवर्णनिभा देवी महाप्रेतोपरिस्थिता ।
मातृकाष्टकमध्यस्था सिध्दियोगनिषेविता ॥
दारितास्या लेलिहाना ज्वालालुप्तजगैत्त्रयी ।
उच्छ्वासोच्छ्वासवेगेन चालयन् कुलपर्वतान् ॥
क चिद्देशे क्वचित् कूटे क्वचित् संहरते क्षणात् ।
क्वचित् सृजेत् पालयेच्च स्वतन्त्राद्वा प्रवर्त्तते ॥
गोनासाभरणैर्युक्ता उरगेन्द्रविभूषिता ।
पाशांकुशधरादेवी वराभयकराम्बुजा ॥
सव्यहस्ते धृतं खड्गं त्रैलोक्यक्षोभकारकम् ।
वामे खट्वाङ्गमत्युग्रं दक्षिणे शूलमुत्तमम् ॥
वामे तु कलशं दिव्यं महारत्नप्रपूरितम् ।
एषा प्रत्यङ्गिरा देवी उन्मत्ता व्योमदेहजा ॥
एकात्मा नैक भेदेन विश्वं व्याप्य व्यवस्थिता ।
प्रत्मङ्गिरा महादेवी सिध्दिलक्ष्मीर्जय प्रदा ॥ "

परन्तु मेरे को दोनों ही भेदों में निम्नलिखित पद्धत्युक्त ध्यान करने को श्रीगुरूदेवने वताया है। वह ध्यान ऐसा है:-

" खट्वाङ्गाङ्कुशपाशशूलवरकृद् भीत्राणपात्रं शिरः ।
कुंभासिज्वलितोद्भटैर्भुजवरैराभासमानां शिवाम् ॥
रूद्रस्कन्धगतां शरच्छशिनिभां पंचाननां सुन्दरीम् ।
पंचत्र्यक्षविराजितां भगवतीं श्रीसिध्दिलक्ष्मीं भजे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चटी दोग्धी शिरोसिद्धिभूमर्द्धिः प्रोथ एव च ।
फली पुनः शिरो रेतः प्रातरान्त्रे ततः परम् ॥
पुरश्चरणहोमाः स्युर्मलिनाहृदपर्यंटाः ।
मन्त्रोऽयमपि सर्वेषां मनूनामुत्तमः स्मृतः ॥
इदानीं ते सुगमेन कथयामि द्विजर्षभ ।
श्रुतिपूर्वं बीजमुक्त्वा अंगुष्ठाभ्यां पदं ततः ॥
शेषे दण्डः समाख्यातः पुनर्बीजद्वयं वदेत् ।
तर्जनीभ्यां यदा तत्र दण्ड इत्यभिधीयते ॥
पुनर्बीजद्वयं यत्र श्यामन्ता मध्यमा ततः ।
दण्डः शेषे च विज्ञेयः पुनस्तद्बीजमेव च ॥
अनामिकाभ्यामन्ता च ततो दण्ड प्रकीर्त्तितः ।
बीजद्वयात् कनिष्ठाभ्यां पदाद्दण्ड बीजं स्मृतम् ॥
बीजद्वयं करतलपृष्ठाभ्यां दण्ड इत्यपि ।
इतिकरन्यासं कृत्वा अङ्गन्यासं चरेत् सुधिः ॥
क्रमेणानेन वै ब्रह्मन् संभवन्यासमाचरेत् ।
श्रुतिचटयौ सभाभाष्य हृदयाय पदं ततः ॥
दण्डस्तदनु विप्रर्षे बीजद्वयं तथा परम् ।
शिरसे पदतश्चैव दोग्धी बीज स्मृतं तदा ॥
तद्बीजद्वकमुच्चार्यं शिखायै पदमेवच ।
इन्द्रबीजं समस्यातं पुनर्बीजद्वयं वदेत् ॥
कवचाय पदञ्चैव दोग्धीबीजं हिनारद ।
बीजे तथा समुश्चार्यं नेत्रत्रयाय बौषडिति ॥
षडंगन्यासमित्युक्तमर्चायां कायशोधनम् ॥

षोडशाक्षरी विद्यात्मिका सिद्धिलक्ष्मी का ध्यान ऐसा हैः—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" महातेजोमयी लक्ष्मी रश्मिकोट्ययुतप्रभा ।
पंचवक्त्रा दशभुजा त्रिपंचनयनैर्युता ॥
श्वेतवर्णनिभा देवी महाप्रेतोपरिस्थिता ।
मातृकाष्टकमध्यस्था सिध्दियोगनिषेविता ॥
दारितास्या लेलिहाना ज्वालालुप्तजगत्त्रयी ।
उच्छ्वासोच्छ्वासवेगेन चालयन् कुलपर्वतान् ॥
क चिद्देशे क्वचित् कूटे क्वचित् संहरते क्षणात् ।
क्वचित् सृजेत् पालयेच्च स्वतन्त्राद्वा प्रवर्त्तते ॥
गोनासाभरणैर्युक्ता उरगेन्द्रविभूषिता ।
पाशांकुशधरादेवी वराभयकराम्बुजा ॥
सव्यहस्ते धृतं खड्गं त्रैलोक्यक्षोभकारकम् ।
वामे खट्वाङ्गमत्युग्रं दक्षिणे शूलमुत्तमम् ॥
वामे तु कलशं दिव्यं महारत्नप्रपूरितम् ।
एषा प्रत्यङ्गिरा देवी उन्मत्ता व्योमदेहजा ॥
एकात्मा नैक भेदेन विश्वं व्याप्य व्यवस्थिता ।
प्रत्यङ्गिरा महादेवी सिध्दिलक्ष्मीर्जय प्रदा ॥ "

परन्तु मेरे को दोनों ही भेदौ में निम्नलिखित पद्धत्युक्त ध्यान करने को श्रीगुरूदेवने वताया है। वह ध्यान ऐसा है:-

" खट्वाङ्गाङ्कुशपाशशूलवरकृद् भीत्राणपात्रं शिरः ।
कुंभासिज्वलितोद्भटैर्भुजवरैराभासमानां शिवाम् ॥
रूद्रस्कन्धगतां शरच्छशिनिभां पंचाननां सुन्दरीम् ।
पंचत्र्यक्षविराजितां भगवतीं श्रीसिध्दिलक्ष्मीं भजे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन का यन्त्र कालानलतन्त्र में इस प्रकारका है:-

" यन्त्रोध्दारमहं वक्ष्ये सिध्दिलक्ष्म्या द्विज श्रृणु ।
चतुरस्रं चतुर्द्वारं वृत्तत्रयेण वेष्ठितम् ॥
अष्टारं च रविदलं पुनरष्टदलं लिखेत् ।
षट्कोणमध्ये कोणं च तत्र बिन्दुं विचिन्तयेत् ॥ "

अस्यवरणपूजा–" बिन्दौ देवीं प्रपूज्यादौ वृत्तेतु शोणितार्णवम् ।
अष्टारेऽष्ट श्मशानानि संपूज्य द्वादशे दले ॥
चण्डयोगेश्वरीञ्चैव चण्डकापालिनी ततः ।
महाकालीं सिध्दिकालीं कालसंकर्षिणीं ततः ॥
डामरेशीं कुब्जिकाञ्च ततः श्रीसुन्दरीं यजेत् ।
झंकारिणीं प्रपूज्याथ श्रीमत्प्रत्यंगिरां ततः ॥
सिद्धियोगेश्वरीञ्चैव यजेत् सिध्दिकरालिकाम् ।
अष्टपत्रेऽसितांगादि भैरवैः सहसंगताः ॥
ब्रह्माद्याष्टकमातॄंश्च क्रमेण परिपूजयेत् ।
षट्कोणे तु षडङ्गेन पूजयेत्परमेश्वरीम् ॥
त्रिकोणे गुरूपंक्तिञ्च कोणाग्रेषु यजेत्ततः ।
मध्ये तु सकलास्त्राणि देव्याहस्तस्थितानिच ॥
विन्दौ पञ्चमहाप्रेतान् पञ्चतत्वत्मकान् ततः ।
आनन्दभैरवकारं यजेत्सिध्देश्वरं ततः ॥
वक्रपूजां विधायाथ मूलदेव्यै वलिं हरेत् ।
पुनर्विन्दौ षडाम्नायनायिकापूजनं चरेत् ॥
ताभ्यश्चापि वलिंदत्वा सायुधान्दिक्पतीन्यजेत् ॥"

इस सिद्धिलक्ष्मीको सपरीतप्रत्यङ्गिरा भी कहते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खास प्रत्यगिराविद्या तो दूसरी है। उनके मन्त्र ध्यानादि मेरूतन्त्र में ऐसे हैं ;—

"अथातः संप्रवक्ष्यामि परकृत्यानिवारिणीम् ।
देवीं प्रत्यगिरां नाम सर्वापद्विनिवारिणीम् ॥
ॐ अँ कँ चँ तथा टँ तँ पँ ह्मँ भ्रों ह्रीं समुच्चरेत् ।
हूँ स उक्ता हुँ तथाऽस्त्रं स्वाहान्तं षोडशाक्षरः ॥
मुनिर्विधाता छन्दोष्णिग्देवता षट् प्रकीर्तिताः ।
महावायुर्महापृथ्वी महाकाशस्तथैव च ॥
महासमुद्रनामा च महापर्वत एव च ।
महाग्निश्चेति हूँ बीजं ह्रीं शक्तिः परिकीर्तिता ॥
लज्जया तु षडङ्गानि षड्दीर्घान्वितयाऽऽचरेत् ।
मन्त्रदेवीं स्ततो मन्त्री ध्यायेत्सुस्थिरमानसः ॥"

ध्यानम्—"नानारत्नाचिराक्रान्तं वृक्षाम्भः स्रवणैर्युतम् ।
व्याघ्रादिपशुभिर्व्याप्तं सानुयुक्तं गिरिं स्मरेत् ॥
मत्स्यकूर्मादि बीजाढयं नवरत्नसमन्वितम् ।
घनच्छायं सकल्लोलमकूपारं विचिन्तयेत् ॥
ज्वालावलीसमाक्रान्तं जगत्त्रितयमद्भुतम् ।
पीतवर्णं महावन्हिं संस्मरेच्छत्रुशान्तये ॥
त्वरा समुत्थरावौघ मलिनं रुध्दभूर्दिवम् ।
पवनं संस्मरेद्विश्वजीवनं प्राणरूपतः ॥
नदीपर्वतवृक्षादिकलिताग्रासंसकुला ।
आधारभूता जगतो ध्येया पृथ्वीह मन्त्रिणा ॥
सूर्यादिग्रहनक्षत्रकालचक्रसमन्वितम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निर्मलं गगनं ध्यायेत् प्राणिनामाश्रयः पदम् ॥
एवं षड्देवता ध्यात्वा सहस्राणि तु षोडश ।
जपेन्मन्त्रं दशांशेन षड्द्रव्यैर्होममाचरेत् ॥ "

मालामन्त्र– " अथप्रत्यङ्गिरामालामन्त्रसिद्धः प्रकीर्त्यते ।
ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससेशते विश्वसहस्रहिम् ॥
सिनि सहस्रवदने महाबले पराजिते ।
प्रत्यङ्गिरे परसैन्यपरकर्मपदं वदेत् ॥
सर्वभूतेति दमनि सर्वदेवान् वदेत्ततः ।
बन्धयुग्मं सर्वविद्या द्विच्छिन्धि क्षोभयन्द्वयम् ॥
परयन्त्राणीति वदेत् स्फोटयद्वितयं ततः ।
सर्वशृङ्खलाँस्त्रोटय त्रोटय ज्वलचोच्चरेत् ॥
ज्वालाजिह्वे करालेति वदने प्रत्यमुच्चरेत् ।
गिरे ह्रीं नम इत्येष सपादशतवर्णवान् ॥
ब्रह्माऽनुष्टुब्मुनिश्छन्दो देवी प्रत्यंगिरा मता ।
बीजशक्ती तारमाये कृत्यानाशेतियोजनम् ।
षड्ङ्गानां विधिश्चात्र षड्दीर्घान्वित मायमा ॥ "

अस्या ध्यानम्– " सिंहारूढातिकृष्णाङ्गीं ज्वालावक्त्रां भयंकारम् ।
शूलखड्गकरां वस्त्रे दधतीं नूतने भजे ॥ "

फिर सिद्धान्त संग्रमें इन का मन्त्रान्तर ऐसा है:—

" ॐ यां कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरां कृत्वां वधूमिव ।
तां ब्रह्मणाऽपनिर्नुद्मप्रत्यक् कर्त्तार मिच्छतु ॥
ह्रीं मुन्याद्या विनियोगान्ता मालामन्त्रवदस्य तु ।
षड्ङ्गानि च पादेन पादार्धैश्चरणेन च ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुर्याद्वेदादिषड्दीर्घं हृल्लेखापुटितेन च।
शिरोभ्रूमध्यवदनगलत्राहृद्वयेष्वथ ॥
हृन्नाभिपार्श्वकट्यन्धुपादेषु पदशो न्यसेत् ।
व्यापकन्तं समस्तेन कृत्वा ध्यायेन्महेश्वरीम् ।

अस्याध्यानम्- " खड्गचर्मधरां कृष्णां मुक्तकेशीं विवाससाम् ।
दंष्ट्राकरालवदनां भीषाभां सर्वभूषणाम् ॥
ग्रसन्तीं वैरिणं ध्यायेत् प्रेरितां शिवतेजसा ॥ "

इस विद्या का उपासना उत्तराम्नाय से होता है। विशेषतः परकृत्यानिवारणके लिए इस विद्याका प्रयोग होता है ।प्रत्यक्ष फलदायक भी है।

अब सिद्धिलक्ष्मी के विषय में थोडा सा औ लिखना है। जैसे श्रीविद्यामें प्रथम बालात्रिपुरा विद्या है, उसके वाद पञ्चदशी, षोडशी इत्यादि हैं, अतः बालात्रिपुरा भी श्रीविद्या ही है, वैसे ही गुह्यकाली-विद्या में भी गुरूपरंपरा भेदसे सिद्धिलक्ष्मी तथा मतान्त से तुम्बुरेशी प्रथम विद्या-होने के कारण उत्तराम्नायात्मि का गुह्यकाली-विद्या ही है। तुम्बुरेशी के विषय में मेरे गुरूपरंपरा में नहोने के कारण कुछ नहीं लिखसकता हूं।

सिद्धिलक्ष्मी का भैरव नारसिंह भैरव हैं । नारसिंह भैरव वह स्ववं विष्णु का अवतार नृसिंह भगवान् ही है। जिस आवस्था में नृसिंहको तीननेत्र होते हैं उस अवस्था में वह भैरव रूप होने के कारण उत्तराम्नायात्मक है। और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस अवस्था में उसके दोनेत्र है उस अवस्था में विष्णु का नृसिंहावतार के साथ भगवती के महाविद्या त्रिपुरभैरवी के साथ ऐक्य होने के कारण ऊर्ध्वाम्नायात्मक है। अब नृसिंह के मन्त्र के विषय मन्त्रान्तर बहुत है। परन्तु मैं यहाँ केवल एकाक्षरी मन्त्रका उद्धार देता हूँ। इस मन्त्र से दोनों ही अवस्थाका ध्यान तथा अर्चन हो सकता है। संहिता में ऐशा लिखा है:—

" अथ वक्ष्ये नृसिंहस्य बीजरूपं मनूत्तमम्।
संवर्त्तो वन्हिमारूढो मनुस्वरविभूषितः॥
बिन्दुनादकलाक्रान्तो भुक्तिमुक्तिप्रदो मनुः।
अत्रिरस्य मुनिः प्रोक्तो गायत्री छन्द ईरितम्॥
देवता नृहरिः प्रोक्तः सुरासुरनमस्कृतः।
षड्दीर्घ भाजा बीजेन षड्ङ्गानि प्रकल्पयेत्॥
ध्यानपूजादिकं सर्वं मन्त्रराजोदितं चरेत्॥"

नृसिंह भगवान् का ध्यान शारदातिलक में ऐसा हैं:—

" कोपादालोलजिह्वं विवृतनिजमुखं सोमसूर्याग्निनेत्रम्।
पादादानाभिरक्तप्रभमुपरिसितं भिन्नदैत्येन्द्रगात्रम्॥
शंखं चक्रं सपाशांकुशकुलिशगदादारणान्युद्वहन्तम्।
भीमं तीक्ष्णोग्रदंष्ट्रं मणिमयविविधाकल्पमीडे नृसिंहम्॥"

संहिता में लक्ष्मीनृसिंह के मन्त्र ध्याना इस प्रकार के हैं:—

" अथ लक्ष्मीनृसिंहस्य मन्त्रं वक्ष्ये सुदुर्लभम्।
तारेन्दिराशक्तिरमाः शूलिनं पुरोषोत्तमम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लक्ष्मीप्रियपदं ङेऽन्तं नित्यमामुदितोत्तरम् ।
चेतसं तादृशं प्रोक्का लक्ष्मीश्रितपदोत्तम् ॥
अर्द्धदेहपदं ङेऽन्तं रमा माया रमा च हृत् ।
सुरवर्णो मनुः प्रोक्त श्चतुर्वर्गफलप्रदः ॥
मुनिः प्रजापतिः प्रोक्तश्छन्दोऽनुष्टुबुदाहृतम् ।
लक्ष्मीनृसिंहो भगवान् देवताऽस्य प्रकीर्तितः ॥
स्वबीजेन षडङ्गानि कृत्वा न्यासान्तरं चरेत् ॥ "

ध्यानम्- " सर्पेन्द्रभोगशयनः पर्पेन्द्रफणच्छत्रवान् ।
आलिङ्गतश्च रमया दीप्तया चन्द्रसन्निभः ॥
पद्मचक्रवराभीति धरस्त्र्यक्षेन्द्रशेखरः ॥ "

अस्ययन्त्रम्- " अष्टपत्रं लिखेत् पद्मं कर्णिकाकेशरान्वितम् ।
चतुरस्रं ततो वाह्ये यन्त्रं श्रीनारसिंहकम् ॥ "

अब मै **गुह्यकाली** के विषय में यथा ज्ञान व्याख्या करता हूँ । महाकालसंहिता के गुह्याखराड में जो लिखा है उसका भावार्थ देता हूं । गुह्यकाली के मन्त्रों के अठारह भेद हैं और वे सब आगमों में गुप्त हैं । मन्त्रों के भेद से ध्यानों तथा यन्त्रों के भी भेद माने गये हैं । ब्रह्मा, वशिष्ट, राम, हिरगयाक्ष के छोटे भाई (हिरगयकशिपु), कुवेर, यमराज, भरत, रावण, वाली, वसुओं, विष्णु तथा अन्व देव और दानवों ने गुह्यकाली का उपासना किया है । जिस मन्त्र का उपासना जिस उपासक ने जिस आम्नाय से किया वह मन्त्र उसी आम्नाय का होगा । गुह्यकाली के कई भेद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं— शतमुखी, अस्सीमुखवाली, बिश, दश, पाँच, तीन, और एक मुखवाली इत्यादि अनेक रूपवाली गुह्यकाली मानी जाती हैं। भरतोपासिता गुह्यकाली सब कालियों में श्रेष्ठ हैं। इन के दशमुख और चौवन ५४ भुजायें हैं। प्रथम इन्के ध्यानका वर्णन कर तत्पश्चात् मन्त्रोद्धार दूँगा। महाकालसंहिता में इनका ध्यान ऐसा है:—

" भरतो पासिता या च रामोपास्या च या स्मृता।
ध्यानं तयोरेकमेव कथ्यमानं मया शृणु ॥
ध्यायेद्देवीं प्रभावेण प्रोच्छलद्रक्तवारिधिम् ।
उत्तुङ्गोत्तुङ्गकल्लोलप्रपूरितदिगन्तरम् ॥
तत्र द्वीपं रक्तमांसपूरितं रक्तवालुकम् ।
नवकोटिकचामुण्डाकोटिभैरववेष्टितम् ॥
तन्मध्ये मण्डलं ध्यायेत् योजनाऽयुतविस्तृतम् ।
भैरवीकोटिघटितंप्राकारं तत्र चिन्तयेत् ॥
एवं श्मशानं तन्मध्ये शतयोयोजनविस्तृतम् ॥
चिन्तयेत् प्रोच्छलद्वन्हिज्वालाव्याप्तक्षमण्डलम् ॥
योगिनीकोटिविहितकरतालिकचेष्टितम् ।
नारान्त्रनद्धमुण्डस्रक्कृततो रणमालिकाम् ।
तदन्तःस्थायिनीं कालीं ध्यायेन्निश्चलमानसः ॥
रत्नसिंहासनं दिव्यं हीरमुक्तादिनिर्मितम् ।
धारयन्तं चतुष्कोणयुगं वेदं विचिन्तयेत् ॥
सत्ययुगं च ऋग्वेदं शुक्लवर्णञ्च पूर्वकम् ।
त्रेतायुगं यजुर्वेदं पीतवर्णं च दक्षगम् ॥
द्वापरं सामवेदञ्च रक्तं पश्चिमदिग्गतम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री गुह्यकाली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

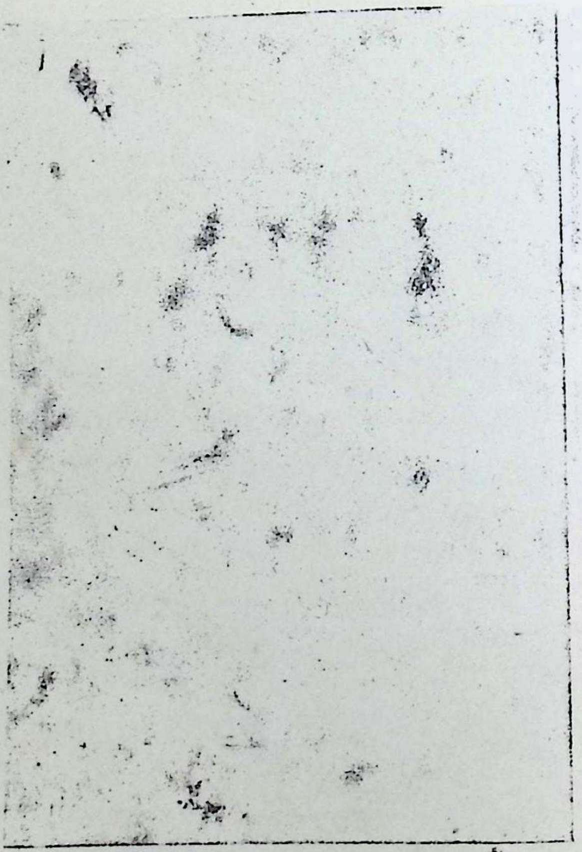

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथर्ववेदञ्च कलिः श्यामन्मुत्तरदिग्गतम् ।
उपवेदस्य सूत्रस्य मूर्घ्नि सिंहासनं स्थितम् ॥
तस्य सिंहासनस्योर्ध्वं मन्यत् सिंहासनं महत् ।
स्वस्वास्त्रवाहनयुतै र्दिग्पतिभिर्भिरावृतम् ॥
देवशः सिंहासनधराँस्ताँश्च ध्यायेदतन्द्रितः ।
स्वां स्वां दिशमवष्टभ्य स्थितां परमशोभिताम् ॥
इन्द्रं पीतं सवज्रञ्च स्थितमैरावतोपरि ।
पावकं रक्तवर्णञ्च छागस्थं शक्तिहस्तकम् ॥
यमं कृष्णं कासरस्थं दण्डहस्तं भयानकम् ।
निऋतिं धूम्रवर्णञ्च खड्गहस्तं तुरङ्गगम् ॥
वरुणं पाशहस्तं च धूम्रं मकरवाहनम् ।
श्यामं वायुं ध्वजधरं हरिणोपरिसंस्थियम् ॥
गदाधरं कुवेरञ्च कुङ्कुमाभं नरे स्थितम् ।
ईशानं शुभ्रवर्णञ्च शूलहस्तं वृषे स्थितम् ॥
सिंहासनं तृतीयञ्च पञ्चप्रेतै र्धृतंप्रिये ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रूद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ॥
एते पञ्चमहाप्रेताः स्थिताः सिंहासनादयः ।
पीतः श्यामस्तथा रक्तो धूम्रः श्वेतः क्रमादिमे ॥
दण्डं चक्रं च शक्तिं च शूलं खट्वाङ्ग मेवच ।
धारयन्तो मुखे न्यस्ततर्जनिका स्त्रिलोचनाः ॥
केशरिद्विपकोलाश्च फेत्काररवभीषणाः ।
ऊर्ध्वं पीठं ततो ध्यायेद् भैरवाख्यं भयानकम् ॥
खर्वस्थूलतरं घोरं कृष्णवर्णं चतुर्भुजम् ।
पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रञ्च कीकशाभरणान्वितम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खट्वाङ्गं कर्त्रिकां दक्षे कपालं डमरूं तथा ।
धारयन्तं मुण्डमालायुतं दंष्ट्रोग्रभीषणम् ॥
तदूर्ध्वं षोडशदलं पद्मं यज्ञोपकल्पितम् ।
ज्योतिष्टोमोऽग्निष्टोमो वाजपेयश्च षोडशी ॥
चयनं पुंडरीकं च राजसूयोऽश्वमेधकः ।
बार्हस्पत्यं विश्वजिच्च गोमेधो नरमेधकः ॥
सौत्रामण्यर्धसावित्री सूर्यकान्तोऽचलंभिदः ।
एतादृशैः षोडशभिर्दलैः पद्मं प्रकल्पितम् ॥
तस्योपरि ततो ध्यायेच्छिवासनमनुत्तमम् ।
बिन्दुनादयुतं नीलं शशाङ्ककृतलाञ्छनम् ॥
महार्घरत्नाभरणं त्रिनेत्रं भीमदर्शनम् ।
वज्रदंष्ट्रानखस्पर्शं पद्मपृष्ठे शिवोत्तमम् ॥
पिङ्गोग्रैकजटाभारं द्विभुजं नागहारिणम् ॥
वसानांचर्मवैयाघ्रं शूलखट्वाङ्गधारिणम् ।
अष्टपत्राम्बुजं तस्योपरिष्टान्नवसासनम् ॥
धर्म्मो ज्ञानं च वैराग्यमैश्वर्यं च चतुर्दिशि ।
यशो विवेकः कामश्च मोक्षश्चेति विदिग्दिशि ॥
एवमष्टदलाम्भोजोपविष्टां गुह्यकालिकाम् ।
ध्यायेन्नीलोत्पलश्यामामिन्द्रनीलसमद्युतिम् ॥
ज्ञानरश्मिच्छटाटोपज्योतिर्मण्डल मध्यगाम् ।
दशवक्त्रां गुह्यकाली सप्तविंशतिलोचनाम् ।
द्विद्विनेत्रयुतां वक्त्रे वामदक्षिणसंमुखे ॥
सप्तस्वन्येषु वक्त्रेषु त्रिलोचनसंयुताम् ।
ऊर्ध्ववक्त्रं दीपकाख्यं चण्डयोगेश्वरीति हि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तस्याधः केशरिमुखं श्वेतवर्णं विभीषणम् ।
तस्याधः फेरुवक्त्रं च कृष्णं त्रैलोक्यडामरम् ॥
वानरास्यं ततो वामे रक्तवर्णं महोज्वलम् ।
नरास्यं तदधो ज्ञेयं किर्मीराभं महोत्कटम् ॥
ऋक्षवक्त्रं भवेद्दक्षे धूम्रवर्णं भयानकम् ।
गारुडास्यं ततो वामे पिङ्गवर्णं सुचञ्चुकम् ॥
दक्षिणे मकरास्यं च हरिताभं प्रकीर्तितम् ।
गजास्यं वामतः प्रोक्तं गौरवक्त्रं स्रवन्मदम् ॥
हयास्यं दक्षिणे काल्याः श्यामवर्णं विचिन्तयेत् ।
महादंष्ट्राकरालानि दारुणस्वनवन्ति च ॥
अट्टाट्टहासयुक्तानि स्रवद्रक्तानि सर्वदा ।
लेलिहानविनिष्क्रान्त ललज्जिह्वान्वितानि च ॥
अहर्निसं कंपमानान्यास्यानि दधतीं शिवाम् ।
भीमनिर्ह्रादिनीं भीमां भ्रूभङ्गकुटिलाननाम् ॥
पिंगलोर्ध्वजटाजूटां चन्द्रार्धकृतशेखराम् ॥
ननारत्नविनिर्माण सगुण्डस्वर्णवभूणाम् ।
स्रवद्रक्तानृमुण्डास्रक्कृतनक्षत्रमालिकाम् ॥
आकण्ठगुल्फलम्बिन्याऽलंकृतां मुण्डमालया ।
श्वेतास्थिगुलिकाहारग्रैवेयकमहोज्ज्वलाम् ॥
शवदीर्घाङ्गुलीपंक्तिमण्डितोरःस्थलस्थिराम् ।
कठोरपिंगलोत्तुंगवक्षोजयुगलान्विताम् ॥
महामारकतग्राववेदिश्रोणिपरिष्कृताम् ।
विशालजघनाभोगामतिक्षीणकटिस्थलाम् ॥
अन्त्रनद्धार्भकशिरोज्वलत्किंकिणिमण्डिताम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुः पंचाशतादोष्णां भूषितां जगदम्बिकाम् ॥
रत्नमालां कपालं च चर्मपाशं तथैव च ।
शक्तिं खट्वांगमुण्डं च भुशुण्डीं धनुरेव च ॥
चक्रं घण्टां ततो बालप्रेतं शैलमतः परम् ।
नरकंकालनकुलौ सर्पमुन्मादवंशिकाम् ॥
मुद्गरं वन्हिकुण्डं च डमरूं डिण्डिमं तथा ।
भिन्दिपालं च मुशलं पाशं पट्टिशमेव च ॥
शतघ्नीं च शिवापोतं वामहस्तेषु बिभ्रतीम् ।
अथ दक्षभुजे रत्नमालां कर्त्रीमसिं तथा ॥
तर्जनीमङ्कुशं दण्डं रत्नकुम्भम् त्रिशूलकम् ।
पंचपाशुपतान् वाणान् शोषकोन्मादमूर्छकान् ॥
संहारकान् मृत्युकरानेवं कामप्रधारिणः ।
कुन्तं च पारिजातं च छुरिकां तोमरं तथा ॥
पुष्पमालां डिण्डिमं च गृध्रं चैव कमण्डलुम् ।
मांसखण्डं श्रुवं बीजपूरं श्रुचं तथैवच ॥
परशुं च गदां यष्टीं मुष्टिं कुणपलाळनम् ।
धारयन्तीं महारौद्रीं जगत्संहारकारिणीम् ॥
जबापुष्पाभनागेन्द्र कृतनूपुरयुग्मकाम् ।
पाटकोरगनिर्माणलसदङ्गदशोभिताम् ॥
धूसराहिकृतस्फीतकटिसूत्रावलम्बिनीम् ।
सुपाण्डुरभुजङ्गेन्द्रकृतताटङ्कशोभिताम् ॥
श्वेतदर्वीकरानद्धजटामुकुटमण्डिताम् ।
वैयाघ्रचर्मवसनां द्वीपिचर्मोत्तरीयकाम् ॥
किंकिणीजालशोभाढ्यां वीरघण्टानिवादिनीम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नूपुरा रावललिनां घर्घराशब्दभोषणाम् ॥
कटकाङ्गदकेयूरनरास्थिकृतशःभनान् ।
रक्तपद्ममयींमालां पादपद्मावलम्बिनीम् ॥
काञ्चीकट्टारकप्रेङ्खत्कटिमध्यविराजिताम् ।
ब्रह्मसूत्रोज्ज्वलत्कण्ठयोगपट्टोत्तरीयकाम् ॥
सौम्योग्रभूषणैर्युक्तां नागाष्टकविराजिताम् ।
रत्नकुण्डलकर्णश्रीपञ्चकालानलस्थिताम् ॥
पद्मोपरि स्थितां देवीं नृत्यमानां सदोदिताम् ।
पद्मासनसुखासीनां सर्वदेवाधिदेवताम् ॥
मुक्तहुँकारजिह्वाग्रं चालयन्तीं विचिन्तयेत् ।
त्रिकोटिशक्तिचामुण्डा नवकोटिभिरन्विताम् ॥
महायोगिनीकोटीनामष्टादशभिरूर्जिताम् ।
चरन्तीं च हसन्तीं च डाकिनीषष्टिकोटिभिः ॥
भैरव्यशीतिकोटिभिः परिवारैश्चवेष्टिताम् ।
कोटिकालानलज्वालान्यक्कारोद्यत्कलेवराम् ॥
महाप्रलयकोद्यर्कविद्युद्बुद्बुदसन्निभाम् ।
दुर्निरीक्ष्यां महाभीमां सेन्द्रैरपि सुरासुरैः ॥
शत्रुपक्षक्षयकरीं दैत्यदानवसूदिनीम् ।
निर्विकारां निराभासां कूटस्थां चिद्विलासिनीम् ॥
अद्वैतां परमानन्दां नित्यां शुद्धां निरञ्जनाम् ।
सृष्टिस्थितिश्चसंहारोऽनाख्याभासा पदाभिदाम् ॥
वेदान्तवेद्यां कैवल्यरूपां निर्वाणकारिणीम् ।
गुणातीतामात्मरूपप्रबोधातीतगोचराम् ॥
एवं ध्येया महाकाली प्रोद्भिन्ननवयौवना ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पंच वक्त्रस्था मध्यस्था गुह्यकाली परेश्वरी ॥ ”

भरतो पासिता षोडशाक्षरी तथा रामोपासिता सप्तदशाक्षरी दोनों ही विद्याओंका ध्यान एक ही है, और यही है। यह दोनों ही विद्याओंका उपासना उत्तराम्नायसे होता है। इस विद्या का मतान्तर से उत्तराम्नाय-नायिका भी मानते हैं। भरतोपासिता षोडशाक्षरमन्त्रोद्धार महाकालसंहिता में ऐसा है:—

“ आदौ वेदादिमुध्दृत्य ततः पस्य द्वितीयकम् ।
एकारयुक्तं तदधो रेफं विन्दुं च योजयेत् ॥
सिध्दि शब्दं ततः प्रोच्य करालि च विनिर्दिशेत् ।
लज्जां क्रोधमनुस्मृत्यु कफोणिं वामभुध्दरेत् ॥
बामदृग्विन्द्वधोवन्हियुक्तं कुर्यात् ततश्च तम् ।
वधूबीजं पुनर्मन्त्रद्वितीयं बीजमुध्दरेत् ॥
हृन्मन्त्रो वन्हिजाया च मन्त्रोऽयं षोडशाक्षरः ॥ ”

ऋ यान्यासादि--“ अथर्वाऋषिरूद्दिष्टो जगती छन्द उच्यते ।
देवता गुह्यकाली च द्वितीयार्णं तु कीलकम् ॥
शक्तिस्तु दशमं बीजं द्वितीये नवमं भवेत् ।
पुरुषार्थ चतुष्कस्य सिध्दये कामनास्थितिः ॥
द्वे पञ्च त्रीणि चद्वे चद्वे पुनर्द्वे पुनस्तथा ।
वर्णाक्षराणां भारत्यास्तत्तत्स्थाने प्रविन्यसेत् ॥ ”

इस मन्त्र के दो भेद हैं, एक कीलित, दूसरा अकीलित। इनमें से उपर दिया हुआ मन्त्र अकीलित हैं। कामिनी बीज के पूर्व क्रोध बीज उच्चारण करने से किलित मन्त्र होगा। अर्थात् छ्रिं हूँ के बदले हूँ छ्रीं होगा। कीलित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्त्र में शापमोचन की जरुरत होनेके कारण बहुतसी गुरुपरम्परामें अकीलित मन्त्र ही प्रचलित हैं। कीलित तथा अकीलित मन्त्रके विषयमें हमाकालसंहिता में ऐसा लिखा है:—

" अथवा कामिनीबीजात् पूर्वं क्रोधमनुंस्मरेत् ।
इयं हि भरतोपास्या कीलिताऽपिच शापतः ॥ "

अब रामोपासिता सप्तदशी का वर्णनकरता हूँ। इस मन्त्र के भी दो भेद हैं एक हारीतोपासिता दूसरा च्यवनोपासिता इस में से हारीतोपासिता कीलित तथा च्यवनोपासिता अकीलित हैं। इस मन्त्रोद्धार महाकाल संहिता में ऐसा है:—

"रामोपास्यामतो वक्ष्येऽक्षरसप्रदशान्विताम् ।
सापिहारीतमुनिना कीलिता तपसोवलात् ॥
आदौ तस्यैवमन्त्रस्य चतुर्शोर्णान्समुद्धरेत् ।
द्वितीयवीजोपरि च हसखं विनियोजयेत् ॥
एव तु पञ्चमं वीजं षष्ठं खेन च वर्जितम् ।
सप्तमं हसहीनं च करालि तदनन्तरम् ॥
त्रयोदशैकादशके स्थानेसप्तममक्षरम् ।
पञ्चमं द्वादशस्थाने द्वितीयं च चतुर्दशे ॥
आद्यं पञ्चदशे कुर्याद्वन्हिजायान्तगो मनुः ।
हारीतोपासिता ह्येषा च्यवनोपासितां श्रणु ॥
षष्ठपञ्चमयोरस्य व्यत्ययः समुदीरितः ।
एतावतैव भवति च्यावनी सुमहाफला ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्यास— " सप्तदश्यास्तु मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिर्मतः ।
छन्दश्च सुप्रतिष्ठाख्यं देवता गुह्यकालिका ॥
पञ्चमार्णं कीलकं स्यात् सप्तमं शक्तिरुच्यते ।
तदेव विपरीतंहि च्यावनीसमुदीरितम् ॥
प्रयोगः सर्वसिद्ध्यार्थं जपे प्रोच्चारितो भवेत् ॥ "

" द्वे पञ्च त्रीणि च द्वे च द्वे चत्रीणि " इति करषडङ्गन्यासः ॥

गुह्याके क्रमदीक्षा के संकेत में वृहद्वडवानलतन्त्रने षोडशाक्षारी को ' सिद्धिकराली ' तथा सप्तदशाक्षरीको ' सिद्धिकाली ' संज्ञा दिया है। वह वचन ऐसा हैः—

" सिद्धिलक्ष्मीः सिद्धिपूर्वाकराली सिद्धिकालिका ।
सिद्धिकापालिनी श्रीमद्गुह्याकामकलात्मिका ॥ "

अथ भरतोपासिता तथा रामोपासिता गुह्यकाली का यन्त्र तथा आवरणपूजा एक ही है यह बात पूर्व हां कहचुका हूँ। उनके यन्त्रोद्धार मेरे तथा अन्ययन्योद्धार पास में महाकाल संहितोक्त जो है, वह ऐसा हैः—

" सविन्दुत्र्यार पञ्चारविभिन्ननवकोणयुक् ।
वृत्तयोरन्तरेऽष्टारयुतं तदनु भाविनि ॥
वस्वर्कभूपच्छदनाम्भोजवृत्तान्वितं ततः ।
अष्टाशनिसमायुक्तमन्तर्वहिरथापिच ॥
अष्टशूलाष्टमुण्डाढ्यं वन्हिज्वालायुतेन हि ।
श्मशानेनावृत शीरे शोणितं देन वेष्टितम् ॥
यन्त्रराजमिदं देवि पूजनाय प्रकल्पितम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋतश्च्यवनश्चापि हारीतश्च जवालकः ॥
दक्षञ्चेते जनाः पञ्च पूजयन्त्यमुनाऽम्बिकाम् ।
बिन्दुपञ्चारषट्कोणत्रिकोणनवकोणगः ॥
अष्टारवृत्तसहितषोडशच्छदपद्मयुक् ।
पुनर्वृत्तान्वितः शेषे पूर्ववत्सकलं प्रिये ॥
पूज्योऽयं रामयक्षेशनाहुषाणां वरानने ॥ "

अस्यावरण पूजा बृहद्वडवानलतन्त्रे :---

" सृष्टिस्थितिलयानाख्याभासारूपां तु कालिकाम् ।
बिन्दौ संपूज्य वृत्ते च शोणितार्णवकं यजेत् ॥
श्मशानाष्टकमभ्यर्च्य त्रिशूलाग्रे ततो यजेत् ।
महादंष्ट्रिन्यादिसर्वांश्चतुर्विंशतिकालिकाः ॥
मुण्डप्राकारे श्रीमहासुखकालीमूर्त्तिपूर्वाः ।
श्मशानकाल्यादिचतुः पञ्चाशत्कालिकास्ततः ॥
षोडशारे महाज्ञानमूर्त्तिकाल्यादि षोडशाः ।
द्वाशारे महामेलापमारूता काल्यादि द्वादशास्ततः ॥
वस्वच्छदेऽसिताङ्गादि भैरवाष्टक संयुताः ।
ब्रह्मावतीकालिकादि मातृकाष्टककालिकाः ॥
नवयोन्याञ्च व्याघ्रादिवामार्तंबक्रमेणच ।
कालीञ्च रक्तकालीञ्च झङ्कारकालिकां ततः ॥
राजराजेश्वरीकालीं सिद्धिपद्माख्यकालिकाम् ।
श्रीकालीं गुह्यकुब्जाख्यकालिकां च ततः परम् ॥
सुन्दरीकालिकाञ्चैव संपूज्य पञ्चकोणके ।
पूजयेत्क्रमतो वत्स सुषयादिपञ्चकालिकाः ॥
त्रिकोणे गुरूपंक्तिश्चह्यु त्तराम्नायवर्त्मनि ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्ये देवीं षडंगेन संपूज्याथासनानि च ॥
सर्वायुधानि संपूज्य वक्त्रपूजां समाचरेत् ।
अथोत्तराम्नायमते क्रमपूजां समाचरेत् ॥
पूर्वोक्ते नैवमन्त्रेण मूलदेवीं वलिं हरेत् ।
भैरवाय वलिं दत्वा सकलावरणामिध–
देवताभ्यो वलिदत्वा षडाम्नायप्रपूजनम् ।
विधायच वलिंदत्वा प्रणमेत् परमेश्वरीम् ॥
पुनर्दक्षिणकाल्यादि दशविद्याः प्रपूजयेत् ।
ततस्ताभ्योर्वलिंदत्वा पुनः पूजां समाचरेत् ॥
अन्नपूर्णां नृत्यनाथं ततश्च हनुभैरवम् ।
ततस्तेभ्यो वलिंदत्वा षण्णिर्वाणानि पूजयेत् ॥
इति संक्षेपतः प्रोक्तं गुह्यावरणमुत्तमम् ॥"

गुह्यकाली विद्या के विषय में एक विचित्र की बात है। वह यह हैं कि गुह्यकाली के बहुत से मन्त्रों के विनियोग में जो जो बीज मूलमन्त्रों में नहीं हैं वह वह बीज उसमन्त्र के बीज, कीलक तथा शक्तिरूप होते हैं। मैं गुह्यकाली के भेद लिखरहाहूँ, उससे आपलोगोंको सब विदित हो जायगा। जैसा गुह्यकाली का मन्त्रभेद है, वैसा ही मतान्तर में उनका नामभेद मानागया है। यद्यपि उन सबका एक नाम गुह्यकाली अथवा गुह्येश्वरी ही है। शंकरजी ने सुधाधारास्तव में उनके नामभेद इस प्रकार बताया है।—

" महाचण्डयोगेश्वरी गुह्य काली।
कराली महाडामरी चाट्टहासा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जद्ग्रासिनी चण्डकापालिनी च ।
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ॥ ”

अब महाकालसंहिता में जो गुह्यकाली के मन्त्र ध्यानादि लिखे है, वे ऐसे हैं:—

१. “ एक त्रैवहिशाकिन्या भवे देकाक्षगे शुभा ।
ऋषिर्हिरएयगर्भोऽस्य छन्दउक्तः प्रकीर्तितः ॥
देवता गुह्यकालीच काली वीजं तुषीजकम् ।
कूर्चा शक्ति स्मरः कील उपयोगस्तु मुक्तये ॥ ”

जिन मन्त्रों का करषडङ्ग न्यास नहीं वताया है उन मन्त्रों के आद्यवीज का दीर्घषड्भाजावीजों से करें। इस विषय में शंकरजी ने “ अनुक्तकल्पे देवेशि आद्यषड्दीर्घभाजया ” इस वचन से संकेत किया है। पूर्वोक्त एकाक्षरी का ध्यान ऐसा है:—

“ देवी सानारैकमुखी द्विवाहुरसिचमंधृक् ।
विधात्रोपासिताध्यानं सर्वमन्यत्पुरोदितम् ॥ ”

‘ पुरोदितम् ’ का अर्थ यह है कि आसनादि और सबकुछ भरतोपासिता गुह्यकालीवत् है।

२. “ तारत्रयाशाकिनीभिस्त्र्यक्षरेभ्यो भवेन्मनुः ।
अस्यर्षिः परमेष्ठीस्याज्जगती छन्द उच्यते ॥
मंत्रदेवी गुह्यकाली मायावीजमुदीर्य्यते ।
लक्ष्मीः शक्ति योगिनी च कीलकंसमुदाहृतम् ॥
सर्वासामेव सिद्धीनां साधनायोग योगिता ॥ ”

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रितार में जो वाग्वीज है, उसके स्थान पर शाकिनी बीजरखने से वह शाकिनीत्रितार तथा गुह्यकाली का त्र्यक्षर मन्त्र बनजाएगा। इनकाध्यान इस प्रकारका है:—

"त्रिमुखी मनुजद्वीपफेरूवक्त्रेनशोभिता ।
चतुर्भुजा खड्गशूलौ दक्षिणेविभ्रती शिवा ॥
वामेकरे पाशमुद्रौ दधाना कालविग्रहा: ।
अनङ्गोपासिताविद्या त्रलोक्यस्यापिमोहिनी ॥"

३. "योगिनी शाकिनी स्त्रीभिस्त्र्यक्षरोह्यपरोमनुः ।
ऋषिराथर्वणोह्यस्य मध्याछन्दउदीर्य्यते ॥
देवी गुह्या स्मरोबीजं शक्तिः काली उदीर्य्यते ।
अंकुशः कीलकं चापि विनियोगस्तु संपदि ॥"

ध्यानम्– "एषापि त्र्यानना ज्ञेया गजवाजिनराकृतिः ।
चतुर्दोर्दण्डिता रक्ता दधाना दक्षिणे भुजे ॥
वाणांकुशौ चापकरे चापफेरूणिसुक्रमात् ।
वरुणोपासिता विद्या तव देवि मयोदिता ॥"

४. "तारकूर्चा ग्निकान्ताभिस्ताराद्याभिर्वरानने ।
पन्चाक्षरी महाविद्या पावको पासितामता ॥
ऋषि ईश्वर एतस्य छन्दोबीज वृहत्सरौ ।
मोहः शक्ति रमाकीलं देवता गुह्यकालिका ॥
पुरुषार्थचतुष्टस्य सिद्धये विनियोगिता ॥"

ध्यानम् - "पन्चानना नरद्वीपफेरुसिंहगजाकृतिः ।
अष्टबाहु कृपाणेषु चक्राक्षाणि च दक्षिणे ॥
धारयन्ती वामकरे चर्म्म पाशांकुशास्त्रजः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रक्तश्यामा वपुर्भासा सर्वमन्यत् पुरोदितम् ॥ "

५ "प्रणवो भौवनेशीरूर्योगिनीशाकिनीयुतः ।
पञ्चाक्षरक्रमेणान्यो गुह्यकाल्या महामनुः ॥
ऋपिपितामहोह्यस्य गायत्रीछन्दः उच्यते ।
गुह्यादेवी रमावीजं शक्ति कीले स्सरास्मृते ॥
वश्यकर्मणि भूपानां विनियोगोस्यकीर्तितः ॥ "

ध्यानम्– "एषापि पञ्चवदना तार्क्ष्यर्क्षनराश्ववदन्तिभिः ।
पूर्ववच्चाष्टदोर्युक्तातैरेवास्त्रैश्च मण्डिता ॥
आदित्यापासिताप्रोक्ता सर्वकामफलप्रदा ॥ "

६. 'योगिनी कूर्चरमणीरावमारादिमर्मनुः ।
पञ्चाक्षराणांव्युत्प्रास्य सौभाग्यफलदायकः ॥
ऋषिः स्वयम्भूर्बृहती छन्दो गुह्या च देवता ।
बीजमस्य समुद्दिष्टं तारिघं वरवर्णिनि ॥
चण्डः शक्तिः कीललं च खेचरो भवतिप्रिये ।
विनियोग सर्वकार्य सिद्धये परिकीर्तितः ॥ "

ध्यानम्– "पीतारूणोऽयं वर्णेन षण्मुखी दशवाहुका ।
इभाश्वतार्क्ष्यमकरकपिफेरुमुखाकृतिः ॥
शूलं चक्रं गदां शक्तिं बीजपूरं च दक्षिणे ।
गृध्रराजं शिवापोत मङ्कुशं रत्नमालिकाम् ॥
नृमुण्डं वामहस्ते च धारयन्ती महेश्वरी ॥ "

७. "पुरतः शाकिनीं दत्वा डाकिनीं तदनन्तरम् ।
वर्णादारभ्य भारत्यास्तृतीयात्सप्तमावधिः ॥
वर्णानेतानन्तराले शिरान्ते स्यान्नवाक्षरी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋषिः स्वयंभूरुद्दिष्टश्छन्दः पंक्तिरुदाहृतः ॥
एषा बीजवती कुन्तबीजेन परमेश्वरी ।
योगिनी शक्तिरुद्दिष्टा भूतः कीलकमुच्यते ।
मारणायाभिचाराय विनियोगोऽस्यकथ्यते ।"

ध्यानम्- "अष्टास्या षोडशभूजा कुभासा कृष्णलोहिता ।
द्विपर्क्षताक्ष्यंपञ्चास्य कपिग्राहाश्वफेरुभिः ॥
त्रिशूलचक्रखड्गेषु गदाप्रासाँश्च कर्तृकाः ।
दधाना दक्षिणेहस्ते वामे पाशं च चर्म्मं च ॥
अहिकोदण्डपरशु घण्टामालाकपालकान् ।
दानवापासिताविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा ॥"

८. "एतस्यैव द्वितीयास्तु महाचण्डत्रयोप्यनु ।
संबोधनपदंयोगेश्वर्या मन्त्रो नवाक्षरः ॥
ऋषिमृत्युञ्जयोह्यस्य छन्दस्त्रिष्टबुदीरितान् ।
एतत्तामयुता गुह्याकाली भवति देवता ॥
स्याद्व्रखेचरीबीजं त्रिकाल्यो शक्तिबीजके ।
विनियोगस्तुयोगेन कैवल्यफलप्राप्तये ॥"

ध्यानम्- "नारं विना भारतीय मुखानिक्रमतो नव ।
भुजैर्युताष्टादशभि स्ततरस्त्रोपशोभितैः ॥
खड्गांकुशौरत्नमालां त्रिशूलं परशुं तथा ।
वाणान् पाशुपतान् पंच गदां मुष्टिं च कर्तृकाम् ॥
दक्षिणे वामतश्चमं पाशं खट्वांग मेवच ॥
भुशुण्डीं चक्रधनुषी घण्टामुन्मादवंशिकाम् ॥
कपालं क्रमतश्चेति बिभ्रतीं घोररूपिणीम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवेशीमृत्युकालाभ्यामियं पूर्वमुपासिता ॥ ”

९ “ सानुफेम्कारिडाकिन्यस्तारलज्जारमास्ततः ।
रावात्सिद्धिपदं प्रोच्य करालि तदनन्तरम् ॥
योगिन्यनंगशाकिन्यो हृन्मन्वकास्ततः परम् ।
इयं सप्तदशा ब्रह्मोपासिता परमेश्वरो ॥ ”
आदिनारायण ऋषिर्वाहृतश्छन्दसान्वितः ।
महागुह्या देवतास्य देवि कालपन्तयापिच ॥
सृष्टयावीजेन चैवेषां शक्तयाकर्णिकयान्वितः ।
वलतावीजकेनाढ्या मुक्ता च विनियोगिनी ॥ ”

ध्यानम्- “ ब्रह्मादिपञ्चकयुगश्रुति दिक्पती नाम्—
मुण्डेषु भैरवशिवाप्रलयानलेषु ॥
तस्योर्ध्वगेदशशतच्छदविद्रुमाभे ।
पद्मे स्थितां भगवतीं परमां दशास्याम् ॥
सिंहेभकोलकपिऋक्षतुरंगताक्ष्र्य—
योगेश्वरीमकरमानवपंक्तिवक्त्राम् ॥
शूलांकुशां परशुमुद्गरपाशपात्र –
खट्वांगवालक शिरोञ्चितपाणि पद्माम् ॥ ”

१० “ लक्ष्मीलज्जाश्चसानुश्च भोगेकूटोप्यनाहतः ।
ततश्चडाकिनीहारौ संहिता मेखलापिच ॥
अतोनु योषियोगिन्यौ सबुद्धिगुप्तनामनि ।
अस्त्रान्त सप्तदशिका वाविष्टीपरिकीर्तिता ॥
ऋषिरूचिवृंहश्छन्दो गुह्येयमपिदेवता ।
धौमाभवेनकूटेन वाजमस्योपवर्णितम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रलयः शक्तिरुदिता वलिः कीलकमिष्यते ।
विनियोगोमृतायैव भारतीवत् वरानने ॥

इनका ध्यान भी भारती (भरतोपासिता) वत् है।

११. " प्रणवो डाकिनीं हृद्यां डाकिनीप्रणवौ ततः ।
पञ्चाक्षरो महामन्त्रः सर्वोध्य परिकीर्तितः ॥
विष्णुनाविधृतं यस्मात्त्ववच्चापि चिन्तितम् ।
नाम्नाख्यातं विष्णुतत्त्वं मन्त्राणामुत्तमं परम् ॥
ऋषिरस्य विरूपाक्ष छन्दसासुप्रतिष्ठया ।
आदिशक्तिर्महागुह्या देवतापरिकीर्तिता ॥
सावित्री नामकं कूटं बीजमस्य शुचिस्मिते ।
शक्तिस्तु गोसवोज्ञेयो नरमेधस्तुकीलकम् ॥
विनियोगोऽस्य मन्त्रस्य सर्वस्मिन्नपि कर्मणि ।
अस्य करानन्यासाणि सूर्योपास्या समानि हि ॥ "

इनका ध्यान सूर्योपास्यावत् है।

१२. " कुलाङ्गनां संमुद्धृत्य देवी देवादि नाननाम् ।
डाकिन्योनन्तरं भोगं स्मरहृन्मन्त्रसंयुतम् ॥
उद्धृत्योपास्य देवेशि मन्त्रमष्टाक्षरं त्विदम् ।
मातृतः पितृतश्चापि कुलकोटिं समुद्धरेत् ॥
अरुणेय ऋषिः प्रोक्तो गायेत्रीछन्द इत्यपि ।
गुह्यातु देवताऽपस्य वीजंत्रेता प्रगीयते ।
विकुन्तः शक्तिरुदिता शूलं कीलकमुच्यते ॥
प्रयोगः सर्वसिद्धार्थं विशेषेणतु मुक्तये ।
अस्त्राया हृदयं यस्मादतोस्त्वा हृदयं त्विदम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अस्यापि सर्वं विज्ञेय भारतीव वरानने ॥"

इसका भी ध्यान भारतीवत् है।

३३. "आदौलज्जां ततो लक्ष्मीं ततस्तारंच डाकिनीम् ।
ततोऽनुदद्यात् फट्कारीं भासाकूट मतः परम् ॥
मेखलाहार महिला योगिनीकूर्चडाकिनी ।
ततोनुनासं वज्र हार्दमन्त्रान्तमुद्धरेत् ॥
ख्यातामहाषोडशीयमुत्तराम्नायगं प्रिया ।
ऋरस्यालोमपादश्छन्दपक्तिरुदाहृतम् ॥
गुह्यातिगुह्यादेव्यस्या नृसिंहो बीजमीप्यते ।
शक्तिः पिलुः काकिनीतु कीलकं समुदाहृतम् ॥
निः श्रेयसपदावाप्त्यै विनियोगोस्य कथ्यते ।
एकादशास्योपास्याहि विज्ञेया वरवर्णिनि ॥

इनका ध्यान भी भारतीवत् ही है केवल एक अक्ष अक अधिक होके एकादशानना है।

३४. "तारत्रपारमामारयोगिनी कामिनीरूपः ।
रावः काली डाकिनीच मानसं चज्रमेव च ॥
चण्डसानुत्तमाङ्गञ्च च षोडशार्णा प्रकीर्तिता ।
अस्यार्षि सरलोमाख्यो मध्यपादंदसायुतः ॥
षोडशार्णेश्वरी गुह्यकाली देवी प्रकीर्तिता ।
डाकिनी दीपमन्दा च बीजशक्तिक कीलकाः ॥
त्रयोदशास्या विज्ञेया मन्त्रदेवी महाफला ॥"

इनका ध्यान भी भारतीवत् ही है, परन्तु ३ वक्त्र अधिक हो कर त्रयोदशानना है। वह ३ वक्त्र अपनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी गुरूपरम्परा भेद से पृथक् पृथक् जीवों के वक्त्रों की कल्पना करना होगी।

१५. " ताराद्यं डाकिनीमुक्ता महाचण्डयथाक्षरम् ।
योगेश्वरी अपावाध्यौ ततोजय महावदेत् ॥
संगलेरावतः सिद्धि कराञिनि वदेत् प्रिये ।
भौवने योगिनीच कूर्च स्त्री शाकिनी ततः ॥
कालि शब्दान्महाशब्दान्निर्वाणात्सिद्धियोद्धरेत् ।
प्रदे महाभैरविती विच्चे घोरे ततः परम् ॥
हारकूर्चौफट्त्रपान्ते मवेदनकवल्लाभा ।
महाविद्या मयाप्रोक्ता ह्यष्टपंचाशदक्षरा ॥
संमोहन ऋषिस्त्वस्या जगतीछन्दउच्यते ।
मंगला गुह्यकालीच देवता परि कीर्तिता ॥
भोगसिद्धिकराकूटा वीज शक्तिक कीलका ।
समुपास्या षोडशास्या तथा पञ्चदशानना ॥ "

इनका ध्यान भी भारतीवत् ही है परन्तु अपनी अपनी गुरूपरम्परा के अनुसार ५ अथवा ६ वक्त्र अधिक मानकर पञ्चदशानना अथवा षोडशानना का चिन्तन करना चाहिए।

१६. " हिरण्यकशिपूपास्यासर्वासामाद्यरूपिणी ।
उद्धरामि मनुस्तस्यास्तत्रचेतोवधारय ॥

रामोपास्यासतमार्णं सवामट्टक् (पाली अक्षर में ऐसा ही लिखा है)

तस्याद्यंच द्वितीयंच एतस्य द्विचतुर्थकम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लज्जावीजंच छ्रीं कारं क्रोधं स्त्रीकमलाह्वम्
रेफोहकारटक्ष मलावेरग्स्तदनन्तरम् ॥
वामाक्षी कंठ संयुक्तं कूटमेतत् प्रकीर्तितम् ।
एकादशं महाकूट मचरं पगि कीर्तितंम् ॥
लक्ष्मीप्रणवलज्जानां बीजानितदनन्तरम् ।
द्वितीय वीजकं देयं प्रथमं च ततः परम् ॥
एवं काल्याः षोड़शार्णा सर्वागमेपुगोपिता ।
कालाननोस्यमन्त्रस्या ऋषिश्छन्दश्च शर्करी ॥
आद्य या गुह्यकाल्यख्या देवता सा प्रकीर्तिता ।
आद्यवीज हि वीजं स्याश्चतुर्थं चैव कीलकम् ॥
शक्तिरेकादशं वीजं बिनियोगस्य सिद्धये ॥ "

ध्यानम्- " ध्यानमस्या विधेहित्वं कथ्यान मतः परम् ।
शतवक्त्रां गुह्यकालीं दोर्दण्डह्युत मण्डिताम् ॥
सिंहेभवाजि शरभकपिफेरुगरुत्मताम् ।
ऋक्षोष्ट्रखरवक्त्राणां प्रस्तारोवा क्रमात्प्रिये ॥
शतत्रयेण नेत्रेण शोभितां च सदैव हि ।
आगुल्फालम्बिविस्रस्तजटोपरिविराजिताम् ॥
शिवविष्णुशिरोन्यस्त प्रत्यालीढपदक्रमात् ।
वामेपञ्चसहस्राणि वाहूनां विभर्तीं शिवाम् ॥
तावन्तेवहि चापानां धारयन्तीं कराम्बुजैः ।
दक्ष पञ्चसाहस्रे शरास्त्राणि च विभ्रतीम् ॥
व्याघ्रचर्मपरीधानां चन्द्रार्धंयुतशेखराम् ।
अष्टोत्तरसहस्राणि मुण्डमालाभिरन्विताम् ॥
लेलिहान महाभीमलल्लजिह्वाकरालिनीम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भ्रुकुट्यागलवदनां पक्षां सर्वाननेष्वपि ॥
शार्दूलत्वक्परिधानां विश्वविस्तारिताननाम् ॥
गलन्नृमुण्डहाराढ्या नादापूरितपुष्कलाम् ।
ज्वलद्द्रुतवहाकार विस्तृतकच संचयाम् ॥
नरास्थिकृतसर्वाङ्ग भूषणं जगदम्बिकाम् ।
कोटिकोटि महाघोर भैरवी योगिनी युताम् ॥
शतवक्त्रां गुह्यकालीं गलद्रुदिर चर्चिताम् ।
सिंहासनसृगध्यासनाद्यैः पूर्ववदुद्यताम् ॥
एवं रूपां गुह्यकालीं ध्यायेन्निश्चलमानसः ॥"

इन षोडश भेदों में भारतोपासिता तथा रामोपासिता मिलकर अष्टादश भेद बनगये। फिर इनके उपभेद अष्टादश हीं हैं उनमें से ३३ भेदों का उपासना एक एक आम्नाय से होकर १८ भेदों का ६ आम्नायों से उपासना होता है। गुह्याविद्या का रहस्य बडा ही गंभीर है। इन के उपभेदों के मन्त्रध्यानादि मुझे मालूम नहीं हैं। इन सब गुह्यकालियों के भैरव नारसिंह भैरव हिं हैं परन्तु ध्यान भेद से सिद्धेश्वर, गुह्येश्वर इत्यादि अनेक नाम से प्रसिद्ध हैं। इन के मन्त्र भेद मुझे १०१८ जो ज्ञात हैं, उनका भी मन्त्रोद्धारश्लोक मैं नहीं जानता हूँ। अतः मन्त्रों को स्पष्टरूप से देनेको मैं समर्थ नहोने के कारण मैं नहीं लिख सकता हूँ। गुह्य-काली के जितने मन्त्र ध्यानादि के भेद हैं, उतने ही उनके भैरव के मन्त्र ध्यानादि के भेद हैं। वडवानलतन्त्रोक्त नामावली में जो भीमासरस्वती का नाम दिया है वह विद्या मेरे क्रम में नहीं है अतः मैं इन के सम्बन्ध में नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिख सकता। फिर पूर्वोक्त नाम केक्रम में 'धूम्रा' पद से धूमावती विद्या की सूचनादी गयी हैं। धूमावती के मन्त्र-ध्यानादि का वर्णन महाथर्वण संहिता में ऐसा है:—

"दान्तौ सवामकर्णेन्दु धूमावत्यग्नि गेहिनी।
अष्टाक्षरी महाविद्या भजतां सर्वसिद्धिदा॥
(मेरूतन्त्रे एतदष्टार्णस्य न्यासादि)
"पिप्पलादोमुनिश्छन्दो निवृज्ज्येष्ठाऽस्य देवता।
षड्दीर्घ विन्दुयुक्तेन धकारेण षडङ्गकम्॥
आद्यबीजद्वयान्तस्थैः षड्वर्णैर्न्यासमाचरेत्।
अंगुष्ठादौ षडंगेषु पुनर्देवीं विचिन्तयेत्॥"

अस्याध्यानम्– "विवर्णा चञ्चला कृष्णा दीर्वा च मलिनाम्वरा।
विमुक्तकुन्तला दीर्घा विधवा विरलद्विजा॥
काकध्वजरथारूढा विलम्वित पयोधारा।
शूर्पहस्ताऽतिरूक्षाक्षी धूतहस्ता त्वरान्विता॥
प्रवृद्धरोमा तु भृशं जटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं सदा कलहतत्परा॥
एवं विधां सदा ध्यायेत् ततः कर्म समाचरेत्॥"

तन्त्रान्तरे मन्त्रान्तरम्–" धूँवीजत्रितयं प्रोच्य धुरयुग्मं समुच्चरेत्।
धूमावतीपदं प्रोच्य क्रोंस्वाहा फटसमन्विता॥
मन्त्रः प्राथमिकः प्रोक्तो द्वितीयंश्रृणु सादरम्।
प्रणवं धूम्रविजंच धूमावतीपदं वदेत्॥
देदत्तो धावतीति स्वाहान्तो मनुराडयम्॥
ऋषिः क्षपणकः ख्यातो गायत्रीछन्द ईरितम्।
धूमावती देवताच धूँबीजंबीजमीरितम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वाहा शक्तिः समुश्चाटे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥
धाँषट्कैस्तु षडङ्गानि ध्यानं शृणु वरानने ॥ "

अस्याध्यानम्– " काकारूढातिकृष्णभा भिन्नन्नदन्ता विरागिणी ।
मुक्तकेशी सुधूम्राक्षी क्षुत्तृषार्ता रयातुरा ॥
चञ्चला चातिकामार्ता क्लीष्टा पुष्टा पिशङ्गिका ।
मलिनाश्रमणी रक्ता व्यक्तगन्धा विरोधिनी ॥
धूतशूर्पाग्रहस्ता च ध्येया धूमावती परा ॥ "

अस्यायन्त्रम्–" लिखेदष्टदलं पद्मं भूपुरेण च वेष्टितम् ॥ "

अस्यावरणपूजा मेरुतन्त्रे–

" पूर्वोक्ते पूजयेत् पीठे ज्येष्ठां शत्रुनिवर्तने ।
केशरेषु षडङ्गानि पत्रस्था अष्ट शक्तयः ॥
क्षुधातृषारतिर्निद्रा निर्ऋतिर्दुर्गतीरूषा ।
अक्षमेति ततो देवा इन्द्राद्यां आयुधान्विताः ॥ "

इन के भैरव **अघोर भैरव** हैं। जोकि शंकर के दक्षिण वक्त्ररूप अघोर नहीं हैं। इनका नामान्तर विकराल भैरव है। इनका मन्त्र शारदातिलक में ऐसा है:—

" अथाभिधास्ये विधिवदघोरास्त्रमनुत्तमम् ।
यस्य संस्मरणादेव सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः ॥
हुमन्तः स्तंभने मन्त्रः क्रोमाकृष्टौ समासने ।
वषडन्तः संवरणे नमोऽन्तो विषमासने ॥
ग्रहचौर रिपुध्वंसे हूँ क्रोमन्तो त्रिधीयते ;
शक्रान्तश्चाखिलेष्टास्यै क्षौमन्तो मारणे भवेत् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फडन्तो भूतसंहारे मन्त्रोयं कल्पपादप: ।
मायास्फुरद्द्वयं भूय: प्रस्फुरद्वितयं तत: ॥
घो घोरतरेत्यन्ते तनुरूपपदं पुन: ।
चटयुग्मं तदन्ते स्यात् प्रचट द्वितयं तत: ॥
कहयुग्मं वमद्वन्द्वं ततो वन्धयुगं पुन: ।
घातयद्वितयं वर्म फडन्त: समुदाहृत: ॥
एवं पञ्चाशदर्णोऽयमघोरास्त्रमहामनु: ।
अघोरोऽस्य मुनि: प्रोक्तश्छन्दस्त्रिष्टुवुदाहृतम् ॥
अघोररूद्र: संदिष्टो देवता मन्त्रवित्तमै: ।
हृदयं पञ्चभि: प्रोक्तं शिर: षड्भिरूदाहृतम् ॥
शिखा दशभिराख्याता तावद्भि: कवचंमतम् ।
वसुवर्णै: स्मृतं नेत्रमाद्यार्णैरस्त्रमीरितम् ॥"

अस्याध्यानम्: "सजलघनसमाभं भीमदंष्ट्रं त्रिनेत्रम् ।
भुजगधरमघोरं रक्तवस्त्राङ्गरागम् ॥
परशुडमरूखड्गाखेटकं बाणचापौ ।
त्रिशिख नरकपाले बिभ्रतं भावयामि ॥"

अब वडवानल तन्त्रोक्त नामावली के अनुसार कामकलाकालीका वर्णन करता हूँ। **कामकलागुह्यकाली** को केवल **कामकलाकाली** कहते हैं। उनके मन्त्र-ध्यानादि के विषय में महाकालसंहिता में लिखा है:—

" आद्यावर्गाद्यवर्णोऽक्ष्णा वामेनपरिशीलित: ।
मूर्ध्निमूर्ध्नायतृतीययुग्मध: परिकीर्तित: ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिन्दुवामाक्षिसंयुक्तो वन्हिः खपर मस्तकः ।
वामश्रुत्यर्धचन्द्रेण तृतीयः सपरो भवेत् ॥
दक्षस्कन्धोर्ध्वदन्ताभ्यां चाक्षरो बिन्दुमस्तकः ।
ओष्ठवर्गद्वितीयो ह्पूर्वाधरोष्ठबिन्दुयुक् ॥
षडक्षराणि सम्बोध्य यथानामस्थितिक्रमात् ।
प्रतिलोमेन चोद्धृत्य तानिबीजानि पञ्च वै ॥
भूत बीजाद्यमारभ्य मारबीजान्तमेवहि ।
वैश्वानरवधूयुक्तो मन्त्रोह्यष्टादशाक्षरः ॥
अस्यास्मरण मात्रेण यावन्त्यः सन्ति सिद्धयः ।
स्वयमागान्ति पुरतो जपादीनां च का कथा ॥
सप्तकामकलाकल्पा मनवः सन्ति गोपिताः ।
तेषु सर्वेषु मन्त्रेषु मुख्योयं परिकीर्त्तितः ॥
महिमा वर्णितुं शक्यो नास्य वर्षायुतैर्मया ।
त्रैलोक्याकर्षको नाम मन्त्रः सर्वार्थसाधकः ॥
अतः परंप्रवक्ष्यामि छन्दश्चर्षि च बीजकम् ।
अस्यकामकलाकालीमन्त्रस्याहमृर्षिर्मतः ॥
छन्दश्च बृहतीख्यातं देवीचेयं प्रकीर्त्तिता ।
आद्यबीजं तु बीजंस्यात् क्रोधार्णं शक्तिरेव च ॥
विनियोगस्य सर्वस्य सर्वदा सर्व सिद्धये ।
षडङ्गं पञ्चबीजैस्तैर्भिन्नाऽप्येकं चकाकंरयेत् ॥
नामाक्षराणिप्रत्येकं तत्र देयानि पार्वति ॥"

अस्याध्यानम्-" ध्यानमस्या प्रवक्ष्यामि कुरु चित्तैकतानताम् ।
उद्यद्घनाघनाश्लिष्यज्जपाकुसुमसन्निभाम् ॥
मत्तकोकिलनेत्राभां पक्कजम्बूफलप्रभां ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुदीर्घप्रवलालम्बिविस्रस्तघनमूर्धजाम् ॥
ज्वलदङ्गारवच्छोण नेत्रत्रितय भूषिताम् ।
उद्यच्छारदसंपूर्ण चन्द्रकोकनदाननाम् ॥
दीर्घदंष्ट्रायुगोदञ्च द्विकरालमुखाम्बुजाम् ।
वितस्तिमात्रनिष्क्रान्तललज्जिह्वा भयानकाम् ॥
व्यात्ताननतया दृश्यद्वात्रिंशद्दन्तमण्डलाम् ।
निरन्तरं वेपमानोत्तमाङ्गां घोररूपिणम् ॥
अंसासक्तनृमुण्डासृक्पिवन्तीं वक्त्रकन्दरात् ।
सृक्कद्वन्द्वस्रवद्रक्तस्नापितोरोजयुग्मकाम् ॥
उरोजाम्भोजसंसक्तसपतद्रुधिरोच्चयाम् ।
सशवीस्कृतिं धयन्तीं तल्लेलिहानरसज्ञया ॥
ललाटे घननाराचसृग्विहितारूणचित्रकाम् ॥
सद्यश्छिन्नगलद्रक्तनृमुण्डकृतकुण्डलाम् ॥
श्रुतिन्द्धकचालम्बीवतं सलसदंसकाम ।
स्रवदस्रौघया शश्वन्मानव्या मुण्डमालया ॥
आकण्ठगुल्फलम्बिन्यालंकृतांकेशवद्धसा ।
श्वेतास्थिगुलिकाहारग्रैवेयकमहोज्ज्वलाम् ॥
शवदीर्घांगुलिपङ्क्तिमंडितोरः स्थलस्थिराम् ।
कष्ठोरपीवरत्तुंग वक्षोजयुगला न्विताम् ॥
महामारकतग्रावबेदि श्रोणिपरिष्कृताम् ।
विशालजघनरा भोगमतिक्षीणकटिस्थलाम् ॥
अन्त्रनद्धार्मकशिरोवलत्किंकिणीमण्डिताम् ।
सुपीनषोडशभुजां महाशंखाञ्चदङ्गदाम् ॥
शवानां धमनीपुञ्जैर्वेष्टितैः कृतकङ्कणाम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रथितैः शवकेशैः स्रग्दामभिः कटिसूत्रिणीम् ॥
शवपोतकरश्रेणी ग्रथनैः कृतमेख्यालाम् ।
शोभमानांगुली मांसमेदोमज्जांगुलीयकै ॥
असिंत्रिशूलं चक्रं च शरमंकुशमेव च ।
ललानं च तथा कन्त्रीमक्षमालां दक्षिणे ॥
पाशच परशुं नागं चापं मुद्गरमेव च ।
शिवापोतं खर्परञ्च वसासृङ्मेदसाऽन्वितम् ॥
कम्बरकचं नृमुण्डं च धारयन्तीं स्ववामतः ।
विलसन्नूपुरां देवीं ग्रथितैः शवपञ्जरैः ॥
श्मशानप्रज्वलद्घोरचिताग्निज्वालमध्यगाम् ।
अधोमुखहादीर्घ प्रसुप्तशवपृष्ठगाम् ॥
वमन्मुखानलज्वालाजालव्याप्तदिगन्तराम् ।
घोररूपायैव हि तिष्टन्तीं प्रत्यालीढपदक्रमात् ॥
वामदक्षिणसंस्थाभ्यां नदन्तीभ्यां मुहुर्मुहुः ।
शिवाभ्यां घोररूपाभ्यां वमन्तीभ्यां महानलम् ॥
विद्युदंगाखर्णाभ्यां वेष्टितां परमेश्वरीम् ।
सर्वदैवानुकम्पाभ्यां पश्यन्तीभ्यां महेश्वरीम् ॥
अतीव भीषमाणाभ्यां शिवाभ्यां शोभितां मुहुः ।
कपालसंस्थं मस्तिष्कं ददतीं च तयोर्द्वयोः ॥
दिगम्बरां मुक्तकेशीमट्टहासभयानकाम् ।
सुधावनारान्त्रयोगपट्टविभूषिताम् ॥
संहारभैरवैर्णवद्धाऽवं संभोगमिच्छम् ।
अतिकामातुरांकाळीं हसन्तीं सर्वविग्रहाम् ॥

इन के विषय में महाकालसंहिता में ऐसा है:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

या गुह्यकाली सैवेयं काली कामकलाविधा ।
मन्त्रभेदाद्ध्यान भेदाद्भवेत्कामकलात्मिका ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

षोडशार्णा यथा मुख्या सर्वं श्रीक्रममध्यगा ।
तथेयं नवकालीषु सदा मुख्यतमास्मृता ॥

इस उक्तिका तात्पर्य यह है कि तन्त्र में दो कल्प के नाम सें दो भागों में वटेगए हैं । एक कालीकल्प और दूसरा श्रीकल्य कामकला (गुह्य) काली का ध्यान पूर्व मे ही वताचुका है कि, " संहार भैरवेणैव सार्द्धं संभोगमिच्छतीम् " इन वचन से विदित हुआ कि यहा भैरव तथा शक्ति दोनोही की खडी अवस्था में लिङ्ग सें कुलागार को स्पर्शकर युगलमूर्ति चणकाकारवत् वनरही है। अतः इनको कामकलाकाली नाम सें पुकाराजाता है । फिर अव इस पुस्तक का चतुर्थ पटल में वताया हुआ "महाकालेन च सम्मं विपरीतरतातुराम् " इस वचन से ज्ञात होता है कि जव विपरितरता वनजाएगी तव कामकला दक्षिणकाली दक्षिणाम्नायात्मिका वनजाएगी । अतः " न्यासप्रियातु श्री विद्या कालिका मैथुनप्रिया " कहकर तन्त्र शास्त्र को दो कल्प में विभाजन कर मैथुन प्राधान्य घोरकर्मान्वित कालीकल्प शंकरजी ने अपनाए फिर न्यास प्राधान्य सौम्यकर्मान्वित श्रीकल्प श्रीधर नारायण ने अपनाए। अतः शंकर तथा उन के मतावलम्वी वशिष्ठादि देवर्षिलोग कौलावधूत वनगए फीर श्रीधर तथा उनके मतावलम्वी जनकादि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजर्षिलोग दिव्यकौल वनगए। जव श्रीयन्त्र रूप वनकर महानिर्वाण भैवका वक्षस्थल में काली लयहो जएजी तव निर्वाण महात्रिपुर सुन्दरी वनजाएगी। इस वात अगले पटल मे दीजाएगी। सकल ही उत्तराम्नायात्मक गुह्यकाली के भेद काली नाम सें पुकारे जानें सें भी श्रीकल्प सें उपासित होतें हैं। क्योंकि वडवानल तन्त्र में ऐसा है:—

महात्रिपुरसुन्दर्याश्चण्डयोगेश्वरी परा ।
नतयोर्विद्यते भेदोभेदकृन्नरकं व्रजेत् ॥

"चण्डयागेश्वरी" नाम "गुह्यकाली" का नामान्तर है। परन्तु कामकलाकाली उत्तराम्नायात्मिका होने सें भी नवकालियों में सें मुख्य होने के कारण इन की उपासना काली कल्प सें हो ती है। फिर पूजाक्रम भी अन्य कालीयों से पृथक् है। इस विषय में महाकालसंहिता में ऐसा लिखा हैं।

"भूतशुद्धिं विधायादौ पूर्ववत्कथितं प्रिये ।
मातृकान्यास पीठादि न्यासं कुर्यात् पुरोक्तवै ॥
क्वचिच्च गुह्यकालीवत् क्वचिद्दक्षिणकालीवत् ।
न्यास पूजादिकसंर्व विशेष: कुत्रचित् प्रिये ॥
सामान्यं च विशेष च स्थापयेदर्घ युग्मकम् ।
चतुरः पूजयेद्देवान् गणार्काच्युतशूलिनः ॥
कुर्याच्च मानसीं पूजामुपचारैश्च पार्थिवैः ।
ततो मुख्याम्यजेदाद्यां कालीं कामकलाभिदाम् ॥
आवाहयेदनेनैव मन्त्रेण श्रृणु पार्वति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तारं मायां रमां पाशमुच्चार्यार्णचतुष्टकम् ॥
षड्क्षराणिसंवोध्य देवीनाम यथार्थवत् ।
आगच्छ युगलं तिष्ठ युगलं तदनु क्षिपेत् ॥
पूजागृहाणेति युग्मंवन्हिजायां तमेघ हि ।
मूलमन्त्रेणवै कार्य्यमन्यत्सर्वं शुचिस्मिते ॥
ङेन्तं तन्नाममुश्चार्यकामवीजाद्यमग्रत: ।
सर्वेष्वेवोपचारेषु मन्त्रोऽसौपरिकीर्तितः ॥
विशेष मन्त्रोनोयत्र तत्रासो मनुरिष्यते ।
यत्र यत्र विशेषोऽस्ति तववक्षे नसंशयः ॥
अर्घ्यं दाने विशेषोऽस्ति तदपिव्याहरामिते ।
प्रणवंकामरोधौच लज्जां भौतश्ववीजकम् ॥
श्मशानवासिनी ङेन्तं ङेन्तं नाम तथोश्चरेत् ।
एषोऽर्घोनम इत्युत्क्वादद्यादर्घ्यं प्रकल्पितम् ॥
मूलमन्त्रेण नाम्नाच ह्यपरांश्चैव षोडशः ।
निवेदयेन्महाकाल्यै यद्यदुक्तं प्रपूजने ॥
मगन्धदाने मन्त्रोऽस्तिनवा पुष्पसमर्पणे ।
तयोरेव विशेषोऽस्ति कथयिष्यामितच्छृणु ॥
यद्रत्रादशवार्षिक्या न्यूनया अपिवाभवेत् ।
आतुर मासिकं यत्स्यादाद्याहो जातशोणितम् ॥
अनङ्गगन्ध तन्नाम नाधिकायाः कदाचन ।
तद्दानफल वाहुल्य वक्तुमेव नशक्यते ॥
स्वयमागत्य देवेशी गृह्णाति शिरसार्पितम् ।
तस्मात् घृणा नकुर्वीत तद्दाने प्रयतेतवै ॥
अनंगगन्धदानस्य मन्त्रमाकर्णय प्रिये ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तारं वाग्भववीजञ्च प्राशार्दं कमलार्णकम् ॥
क्रोधंमारं पिशाचार्णं मायां पाशमुदीर्यंच
ङेन्तं रतिप्रिया शब्दं प्रोच्चरेन्नववीजतः ॥
ङेन्तं तन्नमचोच्चार्य एष तन्नामचोद्धरेत् ।
हृद्धू मन्त्रं समुच्चार्य गन्धं दद्याश्च साधकः ॥
जाताद्य र जसोनार्या यदाद्यदिनसंभवं ।
पुष्पं स्वयंभूपुष्पं तत्तद्दानं त्यायकल्पते ॥
नसौवर्णेन पुष्पेण न मुक्तामणिभिस्तथा ।
नदीपैर्नापिनैव्येद्यै र्ना पिपूजादिसंभवैः ॥
नहोमैर्न जपैर्नापितर्पणैः प्रीयते शिवा ।
यथा स्वयंभूपुष्पेण प्रीयते जगदम्बिका ॥
तत्रापि परयोषायाः इत्यागमसुगोपितम् ।
अधुन्ना कथ्यते तस्य दानं मन्त्रो वराङ्गने ॥
प्रणवा दीत्रयावत्यौ ङेन्तं नाम ततो वदेत् ।
क्रोधं पाशं समुच्चार्यं ङेन्तं च भगमालिनीम् ॥
वाग्भवं नु वधूबीजं ङेन्तं चापि भगप्रिया ।
पैशाचं कामलं वीजं ङेन्तं च मदनातुरा ॥
एतत्पुष्पस्य नामापि नम इत्यक्षर द्वयम् ।
प्रोच्चार्यं देव्या तद्द्व्यै सर्वकामार्थं सिद्धये ॥
परमा भीष्टमाप्नोति दत्वैतत्पुष्पमुत्तमम् ।
धूपदीपे च नैव्यद्ये मूलमन्त्रः प्रकीर्तितः ॥
चामरछत्रदानेच स एव परिकीर्तितः ।
पूजायां वलिदानस्य मन्त्रमाकर्णय प्रिये ॥
एकं तारं समुद्धृत्य मारमायारूपोर्णकान् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिस्त्रीः प्रोश्चार्य ग्हाँ ग्हीं ग्हूँ एतत्त्रितयमुद्धरेत् ॥
भगप्रियेत्विति पदं भगमालिनि चेतिच ।
महावलिमितिस्मृत्वा गृह्णेति च पदद्वयम् ॥
भक्षयेति पदद्वन्द्वं मम शत्रूनथापि च ।
नाशयोश्चाटय हन शत्रुत श्छिन्धिचापिच ॥
मथ विध्वंषय तथा मारय द्रावयापि च ।
युगं युगं दशभवेन्मायाग्निवनितायुतः ॥
वलिदाने महामन्त्रः सर्वकामफलप्रदः ।
भोजने वलिदानस्य मन्त्रोन्यस्ति वरानने ॥
प्रणवं पूर्व मुश्चार्य लज्जा ग्हं युग्म युग्मकम् ।
क्षौं क्षौं भूतार्णयुगलं पाशयुग्मं शरद्वयम् ॥
नाम संवोध्यदेव्यास्तु महाकामातुरे पिच ।
महाकाल प्रिये चा पि ममारिष्टं ततोऽवदेत् ॥
निचारय पदद्वन्द्वं शत्रुत्विति पदं ततः ।
स्तंभयेति पदद्वन्द्वं मारयेति तथैवच ॥
दमयुग्मं मर्दययुगं शोषयेति युगं ततः ।
इमं वलिंगृह्ण गृह्ण ततएतावदुच्चरेत् ॥
खादयेति पदद्वन्द्वं क्रोधाग्निवनितायुतः ।
भोजनादौ महामन्त्रः वलिदाने प्रकीर्तितः ॥
एवं निर्वर्त्य देव्यास्तु पूजा सर्वोपचारकान् ।
सप्तवरणपूजां तामारभेत ततः क्रमात् ॥

अस्या आवरणपूजा तत्रैवः—

पूर्वं यत्कथितं तन्त्रं त्रिकोणोपरि विस्तृतम् ।
वहिस्त्रिकोण तस्यैव तयोर्मध्ये च षट् यजेत् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहारिणी भीषणा च मोहियी कोणगा इमाः ।
कोणमध्येऽस्थिता स्तिस्र कुरुकुल्ला कपालिनी ॥
विप्रचित्ता क्रमेणैव पूज्या षट् प्रथमाहतौ ।
मध्ये त्रिकोणेऽपितथा कोणे कोणान्तरस्थिताः ॥
उग्रा चोग्रप्रभा दीप्ता त्रिकोणाग्रे व्यवस्थिताः ।
नीला घना वलाका च तयोरन्तरगोचराः ॥
पूजनीया प्रयत्नेन द्वितीयावरणे प्रिये ।
सरान्तस्थे त्रिकोणे तु त्रिस्त्रिरेकत्र पूजयेत् ॥
ब्राह्मी नारायणी चैव सव्य माहेश्वरी तथा ।
चामुण्डा चापि कौमारी तथा चैवापराजिता ॥
दक्षिणे पूजयेत्तिस्रस्तिस्र पश्चिमगा अपि ।
वाराही नारसिंही च तथेन्द्राणी प्रकीर्तिताः ॥
सर्वाः श्यामा असिकरा मुण्डमालाविभूषिताः ।
कपालं तर्जनीं चैव धारयन्त्यः सुसंपदाः ॥
सर्वासामपि वैदेयो वलिपूजा तथैवच ।
अनुलेपनकं चैव विभवेनोपकल्पितम् ॥
त्रिस्त्रिपूजा प्रकर्तव्या सर्वासामपि सर्वदा ।
दलेषु पूजये दष्टौ भैरवाय प्रकीर्तिताः ॥
असिताङ्गो रुरुश्चैव चण्ड उन्मत्तसं ज्ञकः ।
क्रोध स्तथैव कापाली तथा भीषणनामकः ॥
संमोहनस्तथा सर्वे कर्त्त्रीं खर्परधारिणः ।
कालाञ्जनचयप्रख्या द्विभुजा रौद्ररूपिणः ॥
एतान्संपूज्य विधिवत् क्षेत्रपालान् प्रपूजयेत् ।
एकपादो विरूपाक्षो भीमः संकर्पणस्तथा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चण्डघण्टो मेघनादो वेगमाली प्रकंपनः ।
एते चाष्टाः क्षेत्रगला दलयोरन्तर स्थिताः ॥
विकृतास्या भीमरूपा गडापरिधपाशयः ।
दलयो रन्तरे पूज्याः पञ्चमावरणे प्रिये ॥
षष्ठे चावरणे देव्या योगिनीरष्ट पूजयेत् ।
उल्कामुखी कोटराक्षी विद्युज्जिह्वा करालिनी ॥
वज्रोदरी तापिनी च ज्वालाजालस्करी तथाः ।
व्याप्तनना घोररावा जिह्वाललनभीषणाः ॥
वसाश्रङ्मांससंपूर्ण कपालासिकरास्मृताः ।
एता दला॑ संपूज्या षष्ठावरणके क्रमात् ॥
लोकपाल संपूज्या वहिर्दशसु दिस्वपि ।
स्वस्वायुध।सक्तकराः स्वस्ववाहनसंयुताः ॥
सप्तावरण मेतत्ते कथितं भक्तितत्परे ।
देव्याः कामकलाकाल्याः समन्त्र ध्यानपूर्वकम् ॥
एवं पूर्वोक्तरूपां तां संपूज्य परमेश्वरीम् ।
योगिनीचक्रसहितां भैरवेणसमन्वितास् ॥
ततश्च विधिवत् कान्ते वलिं संप्रतिपादयेत् ।
वलिमुत्सार्य नैवेद्य नैऋत्यां दिशि चोत्सृजेत् ॥
हृदये चैव देवीं तां संस्थाप्य विधिवत् पुनः ।
निर्माल्यं च्च शुचौदेशे धारणीयं शिरस्यपि ॥

अव यहा एक स्मरण करनेकी वात है। श्रीकल्प मे जिसप्रकार मेधा दीक्षा की अलेखिनी विद्या विराड्रूपा त्रिपुरसुन्दरी की होती है, उसीप्रकार कालीकल्प में विराड्रूपा कामकलाकाली की अलेखिनी विद्या होती हैं। अतः वे ह "ईनीखहपीस्वराः" सप्तका तातत्पर्य जो गुरुवक्त्र-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गम्य हैं, उसी से कामकलाकाली के सप्तावरणहुए, फिर श्रीविद्या के नवावरण ही लोकप्रसिद्ध थे उस में वेही सप्त सें षोडशावरण वन गए। श्रीक्रम तथा कालीक्रम की अलेखिनी विद्या में भेद इतनाही हैं कि मन्त्र एक ही हैं काली कल्प में श्रीकल्पका विपरितक्रम से मनन होगा। यहा मैं इतना ही लिख सकता हूँ, अन्य वात गुरूवक्त्र से ही जानलेना चाहिए। श्रीविद्या की मेधादीक्षा का वर्णन अगले पटल में कियाजाएगा।

कोटिकालानलज्वालान्यक्कारोग्र कलेवराम् ।
महाप्रलयकोद्यर्क विद्युद्बुंदसन्निभाम् ॥
कल्पान्तकारिणीं कालीं महाभैरवरूपिणीम् ।
महाभीमां दुर्निरीक्षां सेन्द्रैरपि सुरासुरैः ॥
शत्रुपक्षय करीं दैत्यदानव सूदनीम् ।
चिन्तयेदीदृशीं देवीं कालीं कामकलाभिधाम् ॥"

अस्यायन्त्रम्:- "यन्त्र मस्या प्रवक्ष्यामि तत्र धेहि मनः प्रिये ।
भूपुरे वसुपत्राढये पद्ममष्टदलान्तिम् ॥
केशराणि प्रकल्प्यानि तदन्तश्चापिकर्णिकाम् ।
कर्णिकान्तस्त्रिकोणस्य त्रितयं पृथगेव हि ॥
वहिस्त्रिकोण कोणेपु लिखेद्वीजत्रयं शुभम् ।
मायाबीजं तु वामे स्यत् क्रोधबीजं तु दक्षिणे ॥
अधः पाशं विनिर्दिश्य कन्दर्पाणं तु मध्यतः ।
तदन्तः स्थायिनी देवी तत्र सद्दं प्रतिष्ठितम् ॥
एतद्यन्त्रं महादेवि सर्वकामफलप्रदम् ॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कामकलाकाली के भैरव का नाम संहार भैरव है। परन्तु यह संहारभैरव असिताङ्गादि अष्ट भैरवों में वर्णित संहारभैरव नहो कर नारसिंहभैरवके ही रूपान्तर हैं। इनका मन्त्र नवाक्षारका हैं। उसका उद्धार श्लोकरूप में मेरे पास नहोनेके कारण मैं यहाँ नहीं देसकता हूँ। अतः मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

कपालिनी गुह्यकाली के उपभेदों मेंसें एक विद्या है। कालसंकर्षिणी कामकलागुह्यकाली का भेदान्तर विद्या है। सिद्धिभैरवी विद्या शत्यद् सिद्धिलक्ष्मी के भेदकी विद्या हो सकती है। यह तीनोंही विद्यायें मेरे क्रममें नहोने के कारण इन के मन्त्र ध्यानादि के विषयमें मैं अनभिज्ञ हूँ। फिर महारात्रियोगेशी शायद् सिद्धियोगेश्वरी ही होंगी उनका वर्णन उपर लिखचुका हूँ प्रत्यङ्गिरा के विषय में भी उपर लिखचुका हूँ। श्मशानकाली का बर्णन दक्षिणाम्नाय का विवणा में लिखचुका हूँ। छिन्नमस्ताका भी विवरण देचुका हूँ। तारा के विषय में किस अवस्थामें तारा उत्तराम्नायात्मिका होगी वह मुझे ज्ञान नहीं है।

यह उत्तराम्नाय विद्या गम्भीर विद्या है। मैंने तो अपने पूर्णक्रम पूर्ति के लिए क्रम से सकल ही आम्नायों को केवल दिग्दर्शन रूपसे ग्रहण किया है। इसी से मुझे किसी आम्नाय का भी विशेषतया ज्ञान नही है। तथापि इन विद्यायों का महत्व हम हिन्दूओंके दील में दिन परदिन ऱ्हास होता जारहा है, यह समझकर लोकहित के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिए मैं अल्पज्ञानी जो जानता हूँ, वह देरहा हूँ कारण मैं आगेही लिख चुका हूँ कि आम्नाय के ज्ञान विना किसी देवता का अर्चन नहीं हो सकता है, क्यों कि बिना गणेश-पूजन किसीं भी देवता की पूजा नहीं हो सकती। इसलिए जिस आम्नाय के देवा की पूजा होगी, उसी आम्नायके गणेश की पूजाकरनी चाहिए। अन्यथा पूजा निष्फल होगी अतएव आम्नानका जानना अत्यावश्यक है।

उत्तराम्नाय में शिवका रूप वामदेव है। उनके मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:—

"ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमः रुद्राय नमः कालाय नमः कलिवकरणाय नमो वलविकरणाय नमो वलाय नमो वलप्रमथनाय नमः सर्व भूतदमनाय नमो नमोन्मनाय नमः।"

अस्याध्यानम्:— "वराक्षमाऽभयटंकहस्तः।
सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः॥
त्रिलोचनश्चारूचतुर्मुखो नाम्।
पायादुदिच्यां दिशि वामदेवः॥"

वेदमें यजुर्वेदात्मक सब मन्त्र उत्तराम्नायात्मक हैं। धूमावती महाविद्या के विष्णु का वामनावतार में ऐक्यता, होने के कारण वामन भगवान् की उत्तराम्नाय से उपासना होगी। वामन भगवान् के मन्त्र ध्यानदि के भेद मेरु तन्त्र मे वहुत हैं। उन मेंसे एक यहाँ लिखता हूँ। वह ऐसा है:—

ॐनमो विष्णवे सुरपतये महावलायस्वाहा।
मुनिरिन्दुर्विराट्छन्दो देवताचैव वामनः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकद्वित्र्याशुगशरनेत्रार्णैरङ्गकल्पनम् ॥ "

अस्यध्यानम्- " ज्वलन्मयूखकनकच्छत्राधःपुण्डरीकगम् ।
पूर्णचन्द्रनिभं ध्यायेच्छ्रीभूम्याश्लिष्टपार्श्वकम् ॥
द्वीष्वंगुल्युच्छ्रयायासो मयूखस्फटिकप्रभः ।
दध्यन्नं वामहस्तेन स्वर्णस्य चषकं दधत् ॥
पीयूषपूर्णं स्वर्णस्य कलशं दक्षिणे दधत् ॥ "

त्रिविक्रम भी वामन का ही भेद है। उनका भी उत्तराम्नाय सेही उपासना होता है। उनके मन्त्र ध्यानादि मेरुतन्त्र में इस प्रकार के हैं:—

" अथातः संप्रवक्ष्यामि मन्त्रं त्रैविक्रमं परम् ।
तारं नमोभगवते व्याहृतित्रितयं वदेत् ॥
व्यापकाय पदं पश्चाद्ङेऽन्तं चापि त्रिविक्रमम् ।
विंशत्यर्णो महामन्त्रो गतराज्यप्रदायकः ॥
पदपञ्चकसर्वेण षडङ्गविधिरीरितः ।
मुनयो वालिखिल्याः स्युश्छन्दो गायत्र मीरितम् ॥
देवता विश्वरूपोऽयं त्रिविक्रम उदाहृतः ॥ "

अस्यध्यानम्- " दक्षांघ्रिव्याप्तपातालं वामांघ्रिव्याप्तभूतलम् ।
दक्षिणं पुनरुत्थाप्य स्वर्गव्याप्तिकरं हरिम् ॥
वलिदत्तैः कुशतिलतोयैः संप्रस्रवत्करम् ।
अभयं वामहस्तेन कुर्वन्तं च सुरेश्वरम् ॥
गंगौघ धौतपादाब्जं ध्यायेद्ब्रह्मादिकस्तुतम् ॥ "

वामन भगवान् का यन्त्र ऐसा है:—

" षड्दलं पद्ममालिख्य तद्बाह्ये षोडशच्छदम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तद्बहिर्वसुपत्रं च तद्बाह्ये द्वादशच्छदम् ॥
अष्टपत्रं ततो बाह्ये तद्बहिर्भूपुरत्रयम ॥ "

अस्यावरणपूजा– " वैष्णवे पूजयेत् पीठे तत्र सूर्याग्निमण्डले ।
सोमस्य मण्डलं पृष्ठं योगपीठस्वरूकम् ॥
विष्णवे सह सोमाय त्रैलोक्याप्यायनाय च ।
मन्त्रोह्रींकारहृत्पूर्वस्वाहान्तो नववर्णकः ॥
अनेन योगपीठस्य पूजनं समुदीरितम् ।
ततःषड्दलमध्ये तु पूजयेद्वामनं विभुम् ॥
षड्दलेषु षडंगानि वाह्ये षोडशपन्चके ।
पूषा सुमनसा प्रीतिः पुष्टि स्तुष्टि स्वथैव च ॥
ऋद्धिर्धृतिश्च सौम्या च मरिचिर्मुण्डमालिनी ।
शशिनी सुभगा चैव लक्ष्मीरिच्छा तथैव च ॥
संपूर्णमनुका चैवममृता षोडशी मता ।
ततश्चाष्टदले पूजेत् पूजाद्यै वासुदेवकम् ॥ "

हयग्रीव भगवान् की भी उत्तराम्नायसे ही उपासना होता है। उन के मन्त्र ध्यानादि मेरुतन्त्र में ऐसे हैं:—

" अथोच्यते हयग्रीवमन्त्रः सर्वसमृद्धिदः ।
हसावुकारसंयुक्तौ बिन्दुनापरिशोभितौ ॥
विप्रसेव्यो बीजमन्त्रो हयग्रीवस्य चादिमः ।
हसावेकार संयुक्तौ सबिन्दू क्षत्रियस्यतु ॥
हसावेकार संयुक्तौ सबिन्दुवैश्यजन्मनः ।
त्रिष्टुप् छन्दो मुनिर्ब्रह्मा हयग्रीवोऽस्य देवता ॥
षड्दीर्घयुक्तबीजेन षडङ्गविधिरीरितः ॥ "

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ.यध्यानम्– " कमलं जपमालां चाश्र्यं पुस्तक मेवच ।
श्वेत पद्मस्थितं गौरं श्वेतवस्त्रानुलेपनम् ॥
भक्तप्रियं हयग्रीवं बन्देऽहं दानवान्तकम् ॥ "

उत्तराम्नाय के विषयमें मेरा इतना ही ज्ञान है। अब मैं यह पटल समाप्त करता हूं। अब अगले लेखमें ऊर्ध्वाम्नाय का कुछ संकेत लिखनेकी चेष्टा करूँगा। मैं भी यह ऊर्ध्वाम्नाय श्रीविद्या दिग्दर्शन रूपसे ही जनता हूं। उस से भी प्रकाश करने की योग्य विषय मात्र का वर्णन किया जायगा।

इति श्रीधनशम्शेरवर्मणा संग्रह्लित श्रीतान्त्रिकोपासना दर्पणे उत्तराम्नायविवरणन्नाम अष्टमः पटलः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ॐ ॥

॥ अथ नवमः पटलः ॥

॥ ॐ नमः श्रीपरदेवतायै ॥

अब मैं उर्ध्वाम्नायका वर्णन करता हूं। उर्ध्वाम्नाय के गणेश एक ही **महागणपति** हैं। फिर गणेश के सकल भेदों में से यही मुख्य हैं। इनके मन्त्र ध्यानादि के विषय में मेरुतन्त्र में ऐसा है:—

"ऊर्ध्वाम्नाये प्रवक्ष्यामि गणेशान् सिद्धिदायकान् ।
भुक्तिमुक्तिप्रदं तत्र महागणपतिं शृणु ॥
तारः श्रीबीजहृल्लेखा कामो भूबीजमेव च ।
गणेशबीजं गणपतये वरवरेति च ॥
द सर्वजनं मे वशमानयाग्निवधूरिति ।
अष्टाविंशतिवर्णोऽयं गणकोऽस्य मुनिर्मतः ॥
निवृद्गायत्रिका छन्दो महागणपतिः सुरः ।
गँ बीजं ह्रीं च शक्तिः स्याद्दीर्घपट्कयुतस्तु गः ॥
तागदिबीजपट्केन पृथग्युक्तेन कारयेत् ।
षडङ्गानि मनोरस्य जातियुक्तान्यथाचरेत् ॥
अथवा तारापूर्वेण दीर्घपट्कयुतेन च ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वबीजेनाङ्गुलिन्यासं षडङ्गानि समाचरेत् ॥ "

शारदातिलकतन्त्रमें इन का यन्त्र सहित का ध्यान इस प्रकार का है:—

" षट्कोणान्तस्त्रिकोणस्थं महागणपतिं स्मरेत् ॥
हस्तीन्द्राननमिन्दुचुडमरुणच्छायं त्रिनेत्रं रसा—
श्लिष्टं स्वप्रियया सुपद्मकरया स्वाङ्कस्थया सन्ततम् ॥
बीजापूरगदाधनुस्त्रिशिखयुक्चक्राब्जयाशोत्पल—
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशान् हस्तैर्वहन्तं भजे ॥
गण्डपालीगलद्दानपानलालसमानसान् ।
द्विरेफान् कर्णतालाभ्यां वारयन्तं मुहुर्मुहुः ॥
कराग्रधृतमाणिक्यकुम्भवक्त्रविनिःसृतैः ।
रत्नवर्षैः प्रीणयन्तं साधकान् मदविह्वलम् ॥
माणिक्यमुकुटोपेतं रत्नाभरणभूषितम् ॥ "

मेरुतन्त्र में इन का यन्त्र इस प्रकार का है:—

" पूजायन्त्रं गणेशस्य मातृकापद्ममुच्यते ।
चतुर्द्वारसमायुक्तं चतुरस्त्रत्रयावृतम् ॥
तत्कर्णिकायां षट्कोणं तदन्तश्च त्रिकोणकम् ॥ "

अस्यावरणपूजा— " देवस्याग्रे त्रिकोणाच्च वहिर्मन्त्रैर्यजेत्सुरान् ।
लक्ष्मीनारायणायेति ॐ श्रीं पूर्वो हृदन्तकः ॥
मन्त्रस्तेन यजेतञ्च ध्यायेद्बिल्वतले स्थितम् ।
पद्मद्वये कला लक्ष्मीः शंख चक्र धगे हरिः ॥
ॐ ह्रीं गौरीहराभ्यां च हृदन्तो नववर्णकः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवस्य दक्षिणे तौ च ध्याये नेवं प्रपूजयेत् ॥
संस्थितौच जटाधस्तात्सुबर्णरजतप्रभौ ।
पाशांकुशधरा देवी टंकशूल धरो हरः ॥
तारः क्लीं रतिकामाभ्यां हृदन्तोऽय नवाक्षरः ।
पृष्ठस्थपिप्पलाधस्ताद्रतिकामौ समर्चयेत् ॥
नालयुक्तोत्पलद्वन्द्व चापपुष्पेषुसयुतौ ।
ॐ ग्लौं महीवराहाभ्यां हृदन्तोयं दशाक्षरः ॥
उत्तरेधः प्रियंगोस्तु महीकोलौ यजेत्ततः ।
शुकवीज्याग्रकगदाचक्रालंकृतसद्भुजौ ॥
ॐ गँ लक्ष्मीगणकाभ्यां हृदन्तोऽयं दशाक्षरः ।
देवस्याग्रे त्रिकार्णान्तर्लक्ष्मीयुग्गणकं यजेत् ॥
षट्कोणेतु यजेन्मन्त्रमोंगं पूर्वो हृदन्तकः ॥
आमोदं सिद्धिसहितमग्रकोणे समर्चयेत् ।
समृद्ध्यायुतमभ्यर्चेत्प्रमोदं वह्निकोणके ॥
सुमुखंकान्तिसंयुक्तमीशकोणे समर्चयेत् ।
दुर्मुखं मदनावत्या यजेद्वारुणकोणगम् ॥
विघ्नं मदद्रवायुक्तं कोणेनैशाचरेयजेत् ।
वायव्ये विघ्नकर्तारं द्राविण्यासहितं यजेत् ॥
पाशांकुशधरा विद्या शक्तयश्चाभयप्रदाः ॥
रक्तारक्ताम्बरालेपभूषणा मदविह्वलाः ।
षट्कोणस्य वहिर्देवैर्दक्षिणे तु समर्चयेत् ॥
वसुधारान्वितं शंखनिधिं वामेऽर्चयेत्तथा ।
वसुमत्यायुतं पद्मनिधिं तद्ध्यानमुच्यते ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्राद्यो मौक्तिका भोन्यो माणिक्या भस्तुधारया ।
वर्षन्तौ धनसंपत्तिं लोकानां मेघवत्सदा ॥
केशरेष्वङ्गपूजाभ्याद्ब्राह्याद्या: पत्रमध्यगाः ।
चतुरस्रे लोकपालांस्तदस्त्राणि च पूर्ववत् ॥
षडावरणसंयुक्तमित्थं देवं समर्चयेत् ॥"

ऊर्ध्वाम्नाय में शङ्कर का रूप ईशान है। उनके मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं ।:—

१" ॐईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदा शिवोम् ॥"

अस्यध्यानम्- "वेदाभयष्टांकुशपाशटङ्क: —
कपालढक्काक्षकशूलपाणि: ॥
शीतद्युतिः पञ्चमुखो वतान्मा-
मीशानमूर्ध्वं परमप्रकाशः ॥

अब मैं उर्ध्वाम्नाय के विषय में लिखता हूँ । वडवानल तन्त्र में लिखा है;—

"कामेशी ललिता वाला महात्रिपुरसुन्दरी ।
त्रिपुरा भैरवी ह्येता ऊर्ध्वाम्नायसमाश्रिता: ॥"

फिर परातन्त्र में भी लिखा है:—

ऊर्ध्वसिंहासनं वक्ष्ये त्रैलोक्यैश्वर्यसूचकम् ।
सर्वचक्रेश्वरी नित्या सर्वाम्नायप्रपूजिता ॥
सर्वसिंहासनमयी ईशानास्येन चोदिता ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परब्रह्मैश्वरी चाग्रा देवी नारायणीश्वरी ॥
निद्राबुद्धिः क्षमा ख्यातिः क्षुधालज्जा स्मृतिधृतिः ।
तस्यादर्शवमात्रेण साक्षाल्लक्ष्मीपतिर्भवेत् ॥"

इन सब ऊर्ध्वाम्नायात्मक विद्याओं को श्रीविद्या कहते हैं। श्रीः स्वयं ही महात्रिपुरसुन्दरी हैं। अतः खास श्री विद्या महात्रिपुरसुन्दरी ही हैं। उनकी ही अवस्था भेद से भिन्न भिन्न नाम कल्पित कियेगएहैं। श्रीविद्या जैसे गम्भीर विषय पर कलम उठाना असम्भव है। मैं जानता भी हूं कि मेरा लेख पढ़कर उपासकलोग मेरी हस्सी उडाएँगे, तथापि मैं आपलोगों से क्षमा याचना कर जिज्ञासु के लिऐ यथा ज्ञान कुछ कुछ लिखने की चेष्टा कर रहा हूँ।

अब यहाँ मैं वडवानलतन्त्रोक्त वचन के अनुसार व्याख्या करता जाउँगा। "**कामेशी**" इस पद के अर्थ से कामेश्वर्यादि **षोडशनित्याकला** जिनको परा-तन्त्रने "**नित्या**" पदसे सूचित किया है, कामेश्वर्यादि अति रहस्य योगिनियाँ जिनको परातन्त्रने "**सर्वचक्रेश्वरी**" पदसे सूचित किया है, फिर स्वयं महात्रिपुरसुन्दरी जिन को परातन्त्रने "**परब्रम्हेश्वरी**" पदसे सूचित किया है, यह तीन प्रकार की विद्यायें समझी गयी हैं। अतः कामेशी अथवा कामेश्वरी नाम के ३ भेद हैं एक "**कामेश्वरी**"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नित्या, दूसरी कामेश्वर्यतिरहस्य योगिनी और तीसरी स्वयं महात्रिपुरसुन्दरी जिनको "काम्यते (कामना की गई है) योगिभि (योगिओंसे) इति कामः तस्य इश्वरी कामेश्वरी" इस अर्थ से सिद्ध किया है। प्रथम कामेश्वरी का वर्णन नित्याकलाओंके वर्णन के, दूसरी का चक्रेश्वरीओं के वर्णन के, फिर तीसरी का महात्रिपुरसुन्दरी के वर्णन के साथ साथ ही व्याख्या होगी।

अब सबसे पहले मैं नित्याकलाओं का ही वर्णन करता हूँ। यहाँ। पाठकों से पुनः यह निवेदन करना चाहता हूँ कि यह श्रीविद्या का विषय अतिगहन होनेके कारण इसका यथार्थ रहस्य समझाना फिर समझना वडा ही कठिन है। सकल आम्नायों की क्रमदीक्षा जिन्हों ने ग्रहण की है, उन लोगों को भी गुरूके सामने वैठकर गुरू के स्वयं समझाने से भी विना अभ्यास समझना मुश्किल है। ऐसी बात केबल लेखद्वारा मैं कैसे समझा सकता हूँ? फिर हिन्दी भाषा मेरी मातृभाषा नहीं है और इस भाषापर मेरा विशेषतया अभ्यास भी नहीं है तथापि अपने अल्पज्ञान से कुछ कुछ समझाने की चेष्टा करूँगा।

कामेश्वर्यादि नित्याकलायें प्रकाश और विमर्स के सामरस्य कराने की जो सत्ता-स्फुरण है, उन से पञ्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महाभूत (पृथ्वी, जल, तेज, मरुत्, आकाश) हुआ। उन के अन्तर्गत पञ्चतन्मात्रा (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) एक–एक गुण बढाकर पंचदश गुण हुए। अर्थात् आकाश का-शब्द १। वायु का शब्द और स्पर्श २। तेज का शब्द, स्पर्श तथा रूप ३। जल का शब्द, स्पर्श, रूप, तथा रस ४। फिर पृथ्वी का शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध ५। गुण विद्यमान होने के कारण १५ गुण हुए। वही स्फुरण-सत्ता षोडशवाँ महात्रिपुरसुन्दरी नित्याकला, और पंचदश-कलायें कामेश्वरी नित्याकला से लेकर विचित्रा नित्याकला तक पंचदश तिथिरूप में परिणत हो गई। अतः यों जिस तिथि का विभाजन जिस सत्ता से होगा, वही सत्तारूप उस तिथि का नित्याकला रूप है।

इस विषय में वडवानलतन्त्रमें ऐसा लिखा है:—

" एक एव प्रकाशाख्यः परः कोऽपि महेश्वरः।
यस्य शक्तिर्विमर्शाख्या सा नित्या गीयते बुधैः॥
विमर्शाख्या च सा देवी पाञ्च विध्यं समागता।
आकाशानिलसप्ताचिः सलिलाव निभेदतः॥
एकैकगुणवृद्धातु तिथिसंख्यात्वमागताः।
विमर्शरूपिणी विद्या षोडशीया प्रकीर्तिता॥
गता सा षोडशैर्भेदैस्त्रिपुरा परमेश्वरी।
सुन्दर्यादिमहापूर्वं विचित्रान्तं समन्ततः॥
स्वागमादेव बोद्धव्यमिति संकेतमात्रतः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रतिपत्प्रभृतौ देव्याः पौर्णमास्यान्तिकं प्रिये ॥
एकैकं पूजयेद्यस्तु स सौभाग्यमवाप्नुयात् ॥ "

इस विषय में शास्त्र में तो इतना ही है। अब इस में आपलोग विचार कीजिये कि बिना गुरु शास्त्रावलोकन से क्या होगा? नित्याकलाओं का रूप तथा तिथियों के अभेद का रहस्य किस प्रकार जाना जायेगा?

इन नित्याकलाओं और तिथियों के विषय में मैं यथा ज्ञान वर्णन करता हूँ। १. कामेश्वरी नित्याकला शुक्लप्रतिपदा तथा अमावास्या की तिथिनित्या है। श्रीविद्यार्णवतन्त्रमें उनका मन्त्रोद्धार ऐसा है:—

" तत्र कामेश्वरी नित्या कथ्यते भुविदुर्लभा ।
त्रिपुरेशीं समुच्चार्य तारान्ते हृत्पदं ततः ॥
कामेश्वरी पदं चोक्त्वा स्विच्छाकामफलप्रदे ।
सर्वसत्ववशं प्रोक्त्वा करि सर्वजगत् पदम् ॥
क्षोभान्ते तु करे हूँ हूँ वाणांश्च त्रिपुरेश्वरीम् ।
विपरीतां समालिख्य विद्या षट्त्रिंशदक्षरा ॥
आद्य भागत्रयेणैव द्विरावृत्या षडङ्गकम् ॥ "

ध्यानम्— " उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि—
नेत्रां धनुः शुभशरांकुशकामपाशान् ॥
रम्यै र्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपाम् ।
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुखण्डाम् ॥ "

२. भगमालिनी— इन के भी दो भेद हैं। एक भगमा—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिनीनित्या और दूसरी भगमालिन्यतिरहस्ययोगिनी। यहाँ मैं भगमालिनी नित्याका वर्णन करता हूं। शुक्ल द्वितीया तथाकृष्ण चतुर्दशी की तिथि नित्या भगमालिनी नित्या हैं। उनके मन्त्रध्यानादि श्रीविद्यार्णवतन्त्र में ऐसे हैं:—

"अथवक्ष्ये महेशानि विद्यां श्रीभगमालिनीम्।
वाग्भवं भग शब्दान्ते भुगे वाग्भवमेव च॥
भगिन्यन्तेवाग्भवं च भगो दरी च वाग्भवम्।
भगक्लिन्ने वाग्भवं च वाग्भवादौ भगावहे॥
भगगुह्ये वाग्भवं च भगयोगि च वाग्भवम्।
भगन्यन्ते पातनीति वाग्भव भगसवं च॥
पदे वाग्भवमालिख्य ततो भगवशंकरी।
वाग्भवं भगरूपे तद्भगिन्येव च वाग्भवम्॥
भगक्लिन्ने वाग्भवं च भगस्वान्ते समालिखेत्।
रूपे सर्वभगानीति मे ह्यानयच वाग्भवम्॥
भगक्लिन्नद्रवे चान्ते भगं क्लेदय चालिखेत्।
वाग्भवं च भगब्लूँ च वाग्भवं भग जँ लिखेत्॥
वाग्भवं च भगब्लूँ च वाग्भवं भग भेँ लिखेत्।
वाग्भवं च भग ब्लूँ च वाग्भवं भग मों लिखेत॥
भगक्लिन्ने च सर्वाणि भागान्यथ च मे लिखेत।
वाग्भवं च भगब्लूँ च वाग्भवं भगहेँ लिखेत॥
वाग्भवं च भगब्लूँ च वाग्भवं भगहेँ लिखेत्।
भगक्लिन्ने च सर्वाणि भगान्यथ च मे लिखेत्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वशमानय चालिख्य भगपञ्चकमन्मथम् ।
भगान्तरे भगान्तेऽथ हरब्लेमात्मकमालिखेत् ॥
भगांते पञ्चमं कामं ततो वै भगमालिनीम् ।
ङेन्तामुच्चार्य विद्येयं त्रैलोक्यवशकारिणी ॥
चतुरधिकविंशत्या द्विशते न च मण्डिता ।
वर्णानां भगमालेयं नित्या सा फलसिद्धिदा ॥
ऋषिरस्यास्तु सुभगो गायत्रं छंद एव च ।
देवतेयं तु बीजं तु हरब्लेमात्मकं प्रिये ॥
शक्तिः स्त्रीँ बीजकं ब्लूँ तु कीलकं परमेश्वरी ।
षड्दीर्घस्वर भेदेन न्यसेदङ्गानि देशिकः ॥ "

ध्यानम्– " कदम्बवनमध्यस्थामुद्यत्सूर्यसमद्युतिम् ।
नानाभरणसंपन्नां त्रैलोक्याकर्षणक्षमाम् ॥
पाशांकुशौ पुस्तकं च तौशिखीगतलेखनीम् ।

३. नित्यक्लिन्ना– यह विद्या शुक्ल तृतीया तथा कृष्ण त्रयोदशी की तिथि नित्या हैं। इन के मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:—

" भुवनेशीं समुच्चार्य नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ।
वह्नि जाया च विद्येयं रुद्रवर्णा महोत्कटा ॥
एकेनच तथाद्वाभ्यां द्वाभ्यां द्वाभ्यां क्रमात् प्रिये ।
द्वाभ्यां द्वाभ्यां षडंगानि विन्यसेद्देशिकोत्तमः ॥ "

ध्यानम्– " रक्तां रक्ताङ्गवसनां चन्द्रचूडां त्रिलोचनाम् ।
विद्युद्वक्त्रां महाघूर्णलोचनां रक्तभूषिताम् ॥
पाशांकुशौ कपालं च महाभीतिहरं तथा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दधतीं संस्मरेन्नित्यां पद्मासनविराजिताम् ॥ ”

४. भेरुण्डा- यह विद्या शुक्ल चतुर्थी तथा कृष्ण द्वादशी की तिथि नित्या हैं। इन के मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:—

“अथवक्ष्ये महेशानि भेरुण्डां परमेश्वरीम् ।
भेराकारं समुच्चार्याङ्कुशाभ्यां तं चवेष्टयेत् ॥
अन्त्यहीनं चवर्गं तु चतुर्धा रेफ मण्डितम् ।
अनुग्रहेन्दु विन्द्वाढ्यं तारस्वाहोदरस्थितः ॥
मनुर्दशार्णो देवेशि महाविषहरो भवेत् ।
ऋषिरस्य महाविष्णुर्गायत्रं छंद उच्यते ॥
देवतेयं पराशक्ति स्तृतीयं बीजमुच्यते ।
वह्निजाया च शक्तिः स्यात् कीलकं सृणिं रेवच ॥
षड्दीर्वं स्वरभेदेन बीजेनैवं षडङ्गकम् ॥ ”

ध्यानम्- “चन्द्रकोटि प्रतीकाशां स्रवन्तीममृतद्रवैः ।
नीलकण्ठां त्रिनेत्रां च नानाभरण भूषिताम् ॥
इन्द्रनीलस्फुरत्कान्तिशिखिवाहनशोभिताम् ।
पाशांकुशौ कपालं च छुरिकां वरदाभये ॥
बिभ्रतीं हेमसंबद्ध गारुडाङ्गदभूषिताम् ॥ ”

५. वन्हिवासिनी- यह विद्या शुक्ल पञ्चमी तथा कृष्ण एकादशी की तिथि नित्याहै। इन के मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:—

“ श्रृणुदेवि प्रवक्ष्यामि नित्यां वै वन्हिवासिनीम् ।
परां विलिख्य वह्यन्ते वासिन्यै नम इत्यपि ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अष्टार्णोऽयं महेशानि पुरुषार्थं प्रदो मनुः ।
ऋषिरस्य वसिष्ठः स्याद्गायत्री छंद उच्यते ॥
आद्यन्ते बीजशक्तीच कीलकं मध्य एवच ।
देवि पद्त्रयेणैव द्विरावृ याङ्गकं न्यसेत् ॥"

ध्यानम्—"ध्यायेत्तां च सुवर्णाभां नानालंकारभूषिताम् ।
पाशांकुशौ स्वस्तिकं च शक्तिं च वरदाभये ॥
दधतीं रत्नमुकुटां त्रैलोक्यतिमिरापहाम् ॥"

६. महावज्रेश्वरी अथवा महाविद्येश्वरी— यह विद्या शुक्लषष्ठी तथा कृष्णदशमी की तिथिनित्या हैं । इन के मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैः—

"अथवक्ष्ये महेशानि महाविद्ये (वज्रे) श्वरीं पराम् ।
नित्यक्लिन्नां समालिख्य मुखे तार समालिखेत ॥
हल्लेखान्ते करोमात्म चन्द्रबीजं विसर्गवत् ।
चतुर्दशाक्षरी विद्या ऋषिर्ब्रह्मा निगद्यते ॥
गायत्रं छन्द आख्यातं देवता परमेश्वरी ।
आद्यन्ते बीजशक्ती तु हल्लेखा कीलकं भवेत् ॥
चतुष्केण च युग्मेन युग्मेन युगलेन च ।
युगलेनच युग्मेन न्यसेदङ्गानि देशिकः ॥"

ध्यानम्—"जपाकुसुमसंकाशां रक्तांशुकविराजिताम् ॥
माणिक्यभूषणां नित्यां नानाभूषाविभूषिताम् ।
पाशांकुशौ कपालस्थसुधापानविघूर्णिताम् ॥"

७ शिवदूती- यह विद्या शुक्लसप्तमी तथा कृष्णनवमी की नित्या हैं । इनके मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैंः—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" अथदूतीं प्रवक्ष्यामि त्रैलोक्याकर्षणक्षमाम् ।
भुवनेशीं समुच्चर्यं शिवदूत्यै नमो लिखेम् ॥
सप्तर्णा शिवदूतीयं त्रैलोक्यस्वामिनी प्रीये ।
ऋषी रुद्रस्तु गायत्री छन्दोऽस्या देवता शिवा ॥
आद्यन्ते ब्रीजशक्ती च मध्येकीलक मुच्यते ।
विद्याभागत्रयेणैत्र द्विरावृत्यांगकं न्यसेत् ॥ "

ध्यानम्- " दूर्वानिभां त्रिनेत्रां च महासिंहासनासनाम् ।
शखारिवाणचापांश्च सृणिपाशौ वराभये ॥
दधतीं चिन्तयेन्नित्यां शिवदूतीं महेश्वरं म् ॥ "

८. त्वरिता— वह विद्या शुक्लष्टमी तथा कृष्णाष्टमी की तिथिनित्या हैं। इनके मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:—

" अथ वल्ये महेशानि त्वरितां सिद्धिदायिनीम् ।
तारं परान्ते कवचं खेचछेक्षः समालिखेत् ॥
स्त्रींहूमात्मकमुच्चर्यं क्षे परामस्त्रकं लिखेत् ।
त्वरिता रविवर्णायं भोगमोक्षफलप्रदा ॥
ऋपिरीशो विराट्छन्दो देवतेयं च पार्वति ।
कवचं स्त्रीशक्तिबीजे कीलकं च प्रकीर्तितम् ॥
चछेयुग्मंहृच्छिरस्तु छेक्षः युग्मं शिखा ततः ।
क्षः स्त्रीं युग्मं चकवचं स्त्रींहूमात्मयुगं तथा ॥
हूँ फे नेत्राणि विन्दस्प क्षेफडस्त्रं प्रकीर्तितम् ॥ "

ध्यानम्- " श्यामांगीं रक्तसत्पाणिचरणाम्बुजशोभिताम् ।
वृषलाहिसुमञ्जीरां कण्ठरत्नविभूषिताम् ॥
स्वर्णांशुकां स्वर्णभूषांवैश्याहिद्वन्द्वमेखलाम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तनुमध्यां पीनवृत्तकुचयुग्मां वराभये ॥
दधतीं शिखिपिच्छानां वलयांगदशोभिताम् ।
गुन्जारूणां नृपाहीन्द्रकेयूरां रक्तभूषणाम् ॥
द्विजनागस्फुरत्कर्णभूषां मत्तारूणेक्षणाम् ।
नीलकुञ्चितधम्मिल्लवनपुष्पकलापिनीम् ॥
कैरातीं शिखिपत्राढ्यनिकेतन विराजिताम् ।
स्फुरत्सिंहासनप्रौढांस्मरेद्भयविनाशिनीम् ॥ "

९ **कुलसुन्दरी**– यह विद्या शुक्लनवमी तथा कृष्ण सप्तमी की तिथिनित्या है। इन के विषय में ऐसा है:—

" अथ वक्ष्ये महेशानि विद्यां श्रीकुलसुन्दरीम् ।
बालाख्या त्रिपुरेशानी सर्वसिंहासने स्थिता ॥
ब्रह्मविष्णुमहेशाद्यै: पूज्या सा कुलसुन्दरी ॥

इनका मन्त्र बाला की त्र्यक्षरी विद्या ही है। वह पीछे बाला के विवरण में बताई जाएगी। कुल सुन्दरी का ध्यान ऐसा है—

" अतिमधुरचापहस्तामपरिमितामोदबाणसौभाग्याम् ।
अरुणामतिशयकरूणामभिनवकुलसुन्दरीं वन्दे ॥ "

१०. **नित्या**– यह विद्या शुक्लदसमी तथा कृष्णाषष्ठी की तिथि नित्या हैं। उनके मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:—

" अथवक्ष्ये परां नित्यां पुरुषार्थप्रदायिनीम् ।
त्रिपुरेशीं समुच्चार्य नित्याख्यां भैरवीं तथा ॥
हुँकारत्रितयं वाणा विद्येयं वै नवाक्षरी ॥ "

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भैरवी का विवरण नीचे दिया जाएगा। नित्या का ध्यान ऐसा है:—

"तप्तकाञ्चनसंकाशां सत्रलङ्कारभूषिताम् ।
वराभयकरां नित्यां विमलां प्रणमाम्यहम् ॥

यह नित्या विद्या विमला नाम से प्रसिद्ध हैं।

११. नीलपताका— यह विद्या शुक्लएकादशी तथा कृष्णपञ्चमी की तिथि नित्या हैं। इनके मन्त्र ध्यानादि ऐसे है:—

"अथ वक्षे महेशानि विद्यां नीलपताकिनीम् ।
तारं हृत्पदमाभाष्य कामेश्वरी पदं ततः ॥
कामांकुशेपदं चोक्त्वा ततः कामपताकिके ।
भगवत्यथ नीलान्ते पताके च भगान्तिके ॥
वतिहृन्मन्त्रमालिख्य ततोऽग्निवतिच मे लिखेत् ।
परमान्ते तथा गुह्ये ह्रींकारत्रितयं लिखेत् ॥
मदने मदनान्ते च देहे त्रैलोक्य। मालिखेत् ।
आवेशय तथा लेख्यं कवचास्त्राग्निवल्लभा ॥
षड्वर्णा परनेशानि देवी नीलपताकिनी ॥"

ध्यानम्– "रक्तां रक्तांशुकप्रौढां नानारत्नविभूषिताम् ।
इन्द्रनीलस्फुरन्नील पताकां कमले स्थिताम् ॥
कामग्रैवेयसंलग्नसृणी च वरदाभये ।
दधतीं परमेशानीं त्रैलोक्याकर्षणक्षमाम् ॥"

१२. विजया– यह विद्या शुक्लद्वादशी तथा कृष्ण-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थी की तिथि नित्या हैं। इन के मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:—

" अथ वक्ष्ये परां विद्यां जयदां विजयां सदा।
शिवचन्द्रखपान्ताग्निरुद्रस्वरविभूषितम् ॥
बिन्दुनादकलाक्रान्तं विजयायै नमो लिखेत् ।
ऋषिरस्या शिवश्छन्दोगायत्रं देवता स्वयम् ॥
बीजंहृन्मध्यवर्णास्तु बीजशक्तीतुकीलकम् ।
षड्दीर्घस्वरसंभिन्नबीजेनैव षडङ्गकम् ॥"

ध्यानम्- " एक वक्त्रां दशभुजां सर्पयज्ञोपवीतिनीम् ।
दंष्ट्राकरालवदनां नरमालाविभूषिताम् ॥
अस्थिमालावशेषाढ्यां वह्निकूटसमप्रभाम् ।
व्याघ्राम्बरां महाप्रौढशवासनविराजिताम् ॥
रणे स्मरणमात्रेण भक्तेभ्यो विजयप्रदाम् ।
शूल सर्पं च ढक्कासिसृणिघण्टाशनिद्वयम् ।
पाशमग्निमभीतिं च दधानां विजयां स्मरेत् ॥"

१३. सर्वमंगला— यह षित्या शुक्लत्रयोदशी तथा कृष्ण तृतीया की तिथि नित्या हैं। इन के मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:—

" अथ वक्ष्ये महेशानि नित्यां वै सर्वमङ्गलाम् ।
बीजं वारूणताराढ्यां सर्वान्ते मंगलापदम् ॥
ङेन्तं हृदयमालिख्य नवार्णा सर्वमङ्गला ॥
ऋषिश्छन्दो महेशानि गायत्रं छन्द उच्यते ॥
विद्याभागत्रयेणैव द्विरावृत्या षडङ्गकम् ॥"

ध्यानम्- " शुभ्रपद्मासने रम्यां चन्द्रकुन्दसमद्युतिम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुप्रसन्नां शशिमुखीं नानारत्नविभूषिताम् ॥
अनन्तमुक्ताभरणां स्रवन्तोसमृतद्रवम् ॥।
वरदाभयशोभाढ्यां स्मरेत् सौभाग्यवर्धिनीम् ॥"

१४. **ज्वालामालिनी**— यह विद्या शुक्लचतुर्दशी तथा कृष्णद्वितीया की तिथि नित्या हैं। इनके मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:—

"ज्वालामालां प्रवक्ष्यामि पुरुषार्थप्रदां सदा,
ओँकारबीजमुच्चर्य नमो भगवतीति च ॥
ज्वालामालिनिदेव्यन्ते सर्वभूतान्त संलिखेत् ।
हारकारि च के जातवेदसीति ज्वलन्ति च ॥
ज्वलयुग्मं प्रज्वलेति युगं हूमात्मकं त्रिधा ।
वन्हिद्विधाच कवचमन्त्रं चापि समालिखेत् ॥
चत्वारिंशद्वर्णरूपा वस्वर्णं च क्रमाद्वदेत् ॥
रेफास्त्रे बीजशक्ती तु कीलकं कवचं प्रिये ।
रविसूर्यशरागाष्टवेदैरङ्गावि निन्यसेत् ॥"

ध्यानम्- "उद्यद्विद्युल्लताकान्तिस्वर्णाभरण भूषिताम् ।
महासिंहासनप्रौढां ज्वालामालां करालिनीम् ॥
अरिशंखौखड्गखेटे त्रिशूलंडमरुं तथा ।
पानपात्रं च वरदं दधतीं संस्मरेद्यजेत् ॥"

१५. **विचित्रा**— यह विद्या पूर्णिमा तथा कृष्ण प्रतिपदा की तिथि नित्या हैं। इन के मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:।

"अथ वक्ष्ये महादेवीं विचित्रां विश्वमातरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यस्यास्मरण मात्रेण पलायन्ते महापदः ॥
चक्रानुग्रहबिन्द्रिन्दुभूपितं मनुमालिखेत् ।
ऋषिर्ब्रह्मास्यमन्त्रस्य गायत्री छन्द उच्यते ॥
विचित्रा देवता बीजं ककारः कीलकं च तु ।
ताराराजस्तु शक्तिः स्यात् पुरुषार्थ प्रदायिनी ॥
षट्दीर्घस्वरभेदेन न्यसेदङ्गानि देशिकः " ॥

ध्यानम् - " शुभाङ्गी ज्ञानदा नित्यं विचित्रबसना सदा ॥
बिचित्रतिलका नित्यं बिचित्र कुसुमोज्वला ॥
वरदाभयशोभाढ्या नानारत्नधरा क्वचित् " ॥

अब मैं फिर इन नित्याओं के बिषय में पाठकों को कुछ प्रमाण देकर समझाने की चेष्टा करूंगा। देखिये, श्रीसूर्य एक ही हैं। मौसम के अनुसार कभी गरम, कभी ठण्डे एवं १२ महिनों में प्रकृति के १२ ही भाव होते हैं। इसलिए सूर्य के भी १२ ही नाम दिए गए हैं। अब यहाँ आपलोग विचार कीजिये। गरम मौसम में ठण्डी चीज खाना और ठण्डा बस्त्र पहनना सभी पसन्द करते हैं। उस समय देह गरम होती है और (आत्मा की) मनोवृत्ति ठण्डक की ओर झुकती है। उस समय कूटस्थ साक्षी जो चेतना है, उसका भाव एक प्रकारका होगा, जो अनुभव गम्य है। इसीप्रकार ठण्डे मौसममें गरम चीज खाने और गरम वस्त्र पहनने में सभी सुख को अनुभव करते हैं, क्योंकि उस समय देह ठण्डी होती है और मनोवृत्ति गरम की ओर झुकती है। पञ्चदशी में भी लिखा है:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" कूटवह्निर्विकारिणस्थितकूटस्थमुच्यते ॥ "

अतएव बहुत सूक्ष्म विचार से मालूम होगा कि चन्द्रमा का भी हमलोगों पर श्रीसूर्यकाही जैसा प्रभाव होता है। अतः अमावास्या और शुक्लप्रतिप्रदा में चन्द्रमा की कला प्रायः एक ही होती है, कृष्णचतुर्दशी और शुक्लद्वितीयामें भी प्रायः चन्द्रमा की कला समान ही है। एवं सब तिथियों में ऐसा ही होने के कारण दो दो तिथि यों में एक एक तिथि नित्या हुई। जैसे सूर्य एक ही हैं, वैसे ही श्रीविद्या (महात्रिपुरसुन्दरी) एक ही हैं। वह त्रिपुरसुन्दरी कैसी हैं इस विषयमें निम्न लिखित वचन हैं:-

" प्रकाशश्च विमर्शश्च स्पन्दः सत्ता चिति क्रिया।
स्फुरत्तेति समाख्याता तावै त्रिपुरसुन्दरी " ॥

जैसे सूर्यजन्य शीतोष्ण दुःख हटाने के लिए जल, अग्नि तथा वस्त्रादिका प्रयोग करते है, वैसे ही चन्द्र जन्य मनश्चाञ्चल्यवृत्तिदूर करके एकाकारवृत्ति करानेके लिए कामेश्वर्यादि नित्याकलाओंके पृथक् पृथक् नाम, रूप तथा मन्त्र बनगये हैं। अतः जिस तिथि में जो नित्याकला है, उस तिथि में उस तिथिनित्या के मन्त्र ध्यानादि की उपासना करने से मनकी एकाग्रता होगी, क्योंकि स्फुरत्तारूपिणी त्रिपुरसुन्दरी तिथि नित्यारूपा, फिर चन्द्रमा मन हैं। श्रुति में कहा है कि " चन्द्रमा मनसो जातः।" फिर तत्वबोध में श्री १०८ शंकराचार्यजी ने भी लिखा है कि " मनसो देवता चन्द्रमा।" इन नित्याकलाओं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का मन्त्रार्थ तथा ध्यानकानिर्गुणार्थ के ऐकीकरण न करने से इस से अधिक स्पष्टकर इसका रहस्य का उद्घाटन नहीं हो सकता है, अतः मैं वह लिखने में असमर्थ हूँ। फिर इन मन्त्र ध्यानादि का किस प्रकार' उपासना में प्रयोग करके मनश्चाञ्चल्यवृत्ति हटानी होगी, यह सव विषय अन्तर्याग की क्रिया होने के कारण गुरुवक्त्र से ही जानकर कुछ रोज गुरु के ही सामने वैठकर अभ्यास करके ठीक करना चाहिए। " योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः " ऐसा होने के कारण यह उपरोक्त अभ्यास श्रीविद्योपासना के लिए अत्यावश्यक हैं। श्रीविद्योपासना में अन्तर्याग तथा वहिर्याग साथसाथ ही करना पड़ेगा नहीं तो इस विद्याका सिद्ध होना आकाशकुसुम-सदृश है। इसलिए वह सब मैं यहाँ लेखद्वारा वर्णन करने में असमर्थ हूँ।

अब ललिता का वर्णन करता हूँ। पूर्वाम्नायकी ललिता तो भुवनेश्वरी का ही रूपान्तर है। उनका पूर्वाम्नाय के विवरण में पहले ही वर्णन करचुका हूँ। यह ऊर्ध्वाम्नायात्मिका ललिता जो हैं, वही त्रिकूटात्मिका **महात्रिपुरसुन्दरी** हैं, जिसको **पञ्चदशी महात्रिपुरसुन्दरी** कहते हैं। इस पञ्चदशी विद्या के विषयमें ऐसा है: —

" यस्य नो पश्चिमंजन्म यदि वा शंकरः स्वयम्।
तेनैव लभ्यते विद्या श्रीमत्पञ्चदशाक्षरी ॥ "

ऐसा तो लिखा है, परन्तु केवल मन्त्र ग्रहण करने से वैसा नहीं हो सकता है। सवसे पहले वाला की साङ्गोपाङ्ग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपासना कर अन्तर खुला कर यह पञ्चदशी विद्या जिसने सिद्ध गुरूद्वारा प्राप्त किया है उसका पुनर्जन्म नहीं हैं। पञ्चदशी मन्त्रों के २५ भेद हैं, विविध छन्दों में विविध प्रकारके ध्यान होने से भी रूप तो एकही है वह ऐसा है:—

" वालार्कायुततेजसांत्रिनयनां रक्ताम्वरोल्लासिनीम् ।
नानालंकृतिराजमानवपुषं वालेन्दुराच्छेखराम् ॥
हस्तैरिक्षुधनुः सृणिसुमशरं पाशं मुदा वि्रतीम् ।
श्रीचक्रस्थित सुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत् ॥ "

अन्यज्च-- " वालार्कमण्डलाभासां चतुर्वाहां त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुशधनुर्वाणधारयन्तीं शिवां भजे ॥ "

यहाँ देखिये, कामेश्वर (परशिव) के अङ्क में श्री नहोकर केवल पञ्चप्रेत के उपर विराजमान हैं। षोडशी (लघुषोदशी) तक श्री का रूप ऐसा ही है इस अवस्था तक उर्ध्वाम्नायात्मिका रजोगुणात्मिका मानी गई हैं। रजोगुणात्मिका का मतलव यह है कि, वह त्रिगुणात्मिकाहोने से भी उन में रजोगुण के भाग अधिक हैं। लघुषोडशी अथवा षोड़शीका मतलब यह है कि जैसा पञ्चदशी के ३ कूटों मे १५ अक्षर विद्यमान हैं वैसा ही षोडशी मे १६ अक्षर विद्यमान हैं तथा सप्तदशी, अष्टादशी भी ऐसी ही हैं। फिर महाषोडशी की अवस्थामें तो श्री सर्वाम्नायसमष्टिरूपिणि गुणात्तीता मानी गई हैं, फिर इनके मन्त्र मे प्रत्येक कूटाक्षरको ११ अक्षर मान के महाषोडशाक्षरी मानी गई है, महासप्तदशी भी ऐसी ही है। (महाषोडशी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री महात्रिपुरसुन्दरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा महासप्तदशी का वर्णन पीछे महात्रिपुरसुन्दरी के वर्णन में किया जाएगा। यहाँ तो मैं ललिता पञ्चदशी तथा षोड़शीका वर्णन कररहा हूं। पञ्चदकी तथा षोड़शी १५ तथा १६ अक्षरों से अधिक भी हो सकती हैं परन्तु उन का मन्त्रार्थ करने सें १५ तथा १६ ही अक्षर का अर्थ निकलेगा यह बात गुरु वाक्यगम्य होने के कारण मैं यहाँ नहीं लिख सकता हूं। श्री विद्या पञ्चदशी के २५ भेद हैं फिर २५ ही उपासक हैं। उपासक यहलोग हैं:—

"मनुश्चन्द्र कुबेरश्च लोपामुद्रा च कामराट्।
अगस्त्यनन्दिसूर्याश्च विष्णुस्कन्दशिवास्तथा॥
दुर्वासाश्च महादेव्या द्वादशोपासकास्मृता:।
शक्रश्च चोन्मनी चैव तथा च वरुणस्तथा॥
धर्म्मराजोऽनलो नागराजो वायुर्धनेश्वरस्तथा।
ईशानश्च रतिश्चैव तथा नारायणस्तथा॥
ब्रह्माजीवो महादेव्यास्त्रयोदशउपासका।
पञ्चविंशति संख्याकोपासकानां महेश्वरि॥
उपास्य मन्त्रभेदांस्ते प्रवक्ष्यामि समासत:॥"

पञ्चदशी विद्या के ३ कूटाक्षर होते हैं। १ वाग्भवकूट, कामराज कूट, ३ शक्तिकूट २ प्रत्येक कूटका प्रत्येक ध्यान है। जब ३ कूट मिलजाएँगे, तब पञ्चदशी विद्या होगी और उनका पूर्वोक्त ध्यान होगा। कौलिकों के लिए कामराजोपासिताविद्या ही सर्वोत्तम मानी गई है। उनका वर्णन ज्ञानार्णव तन्त्र में ऐसा हैं:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१. कामराजोपासिता–"श्रृणुदेवि प्रवक्ष्यामि बीजं कामेश्वरीमतम्।
सकला भुवनेशानी कामेशीबीजमुत्तमम् ॥
अनेन सकला विद्याः कथयामि विशेषतः ।
स्मरो भगं विन्दुमती लपरा वाग्भवम् मतम् ॥
शिवो जीवः स्मरः शम्भुर्लंपरा कामकूटकम् ।
भृगुः कामः क्षमा माया कामराजाभिधामता ॥
प्रथमं वाग्भवं कूटं द्वितीयं कामकूटकम् ।
तृतीयं शक्ति कूटं स्यात् कूटत्रयतनुर्मनुः ॥"

वाग्भव कूटका ध्यान ऐसा हैः—

"शुल्कांस्वच्छविलेपमाल्यवसनां शीतां सुखण्डोज्वलाम् ।
व्याख्यामक्षगुणं सुधाढयकलशं विद्यां च हस्ताम्बुजैः॥
विभ्राणां कमलासनां कुचनतां वाग्देवतां सस्मिताम् ।
वन्दे वाग्विभवप्रदां त्रिनयनां सौभाग्यसंपत्करीं ॥"

कामराजकूटका ध्यान ऐसा हैः—

"बालार्ककोटिरूचिरां स्फटिकाक्षमालाम् ।
कोदण्डमिक्षुजनितं स्मरपञ्चवाणान् ॥
विद्यां च हस्तकमलैर्दधतीं त्रिनेत्राम् ।
ध्यायेत्समस्तजननीं नव चन्द्रचूड़ाम् ॥"

शक्तिकूटका ध्यान ऐसा हैः—

"कदम्ववनमध्यगां कनकमण्डपान्तःस्थिताम् ।
षडम्वरुहवासिनीममरसिद्धसौदामिनीम् ॥
विजृंभितजपारुचींविमल चन्द्रचूडामणीम् ।
त्रियंवककुटुम्विनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये ॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समष्टिरूपपञ्चदशीका ध्यान तो पूर्व ही देचुका हूँ। अब ज्ञानार्णवतन्त्रोक्त इन मन्त्रों के अन्य भेदों का वर्णन करता हूँ वह ऐसे हैं :-

२. " श्रृणुदेवि प्रवक्ष्यामि लोपामुद्राभिदांपराम् ।
कामराजाख्यविद्यायाः शक्तिं तुर्यं च सुन्दरि ॥
हित्वामुखे शिवेन्द्वाढ्या लोपामुद्रा प्रकाशिता ॥
अगस्त्योपासिता विद्या त्रैलोक्यक्षोभकारिणी ।
एषाविद्या कामराजपूजितैव न संशयः ॥ "

३. " विद्योद्धारं प्रवक्ष्यामि शक्तिमादनमध्यगम् ।
शिवं कुर्याद्वाग्भवेतु शिवाद्यं कामराजकम् ॥
चन्द्राद्यं तु तृतीयं स्याद्विद्येयं मनुपूजिता ॥ "

४. सहाद्यं वाग्भवं देवि चन्द्राद्यं शिवमध्यगम् ।
मादनं काम वीजं तु शक्तिबीजं हसाननम् ॥
चन्द्राराधितविद्येयं भोगमोक्षफलप्रदा ॥ "

५. " हसाद्यं वाग्भवं विद्धि शिवाद्यं सहमध्यगम् ।
मादनं कामबीजे तु तार्तीयं श्रृणुपार्वति ॥
हसाद्यं शक्तिबीजं तु कुवेरेण प्रपूजिता ॥ "

६. " कामराजाख्य विद्याया वग्भवे मादनं त्यज ।
चन्द्रं तत्रैव संयोज्य कामराजे ततः परम् ॥
हित्वा चन्द्रं मुखे कुर्याद्विद्येयं नन्दिपूजिता ॥ "

७. " कामराजाख्यविद्याया हित्वा भूमीं तृतीयके ।
शक्तिबीजे स्थितां देवि चन्द्राधः कुरु तत्र च ॥
इन्द्राराधितविद्येयं भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥ "

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८. " लोपामुद्राख्य विद्याया द्वितीयाया महेश्वरि ।
कामराजे भृगुं हित्वा मुखे कुर्यात्तमेव हि ॥
शिवं विना चतुर्थं तु तार्तीये शक्रगः शिवः ।
एषाविद्या वरारोहे त्रिपुरा सूर्यपूजिता ॥ "

९. " श्रृणुदेवि प्रवक्ष्यामि चतुष्कूटां च शांकरीम् ।
लोपामुद्रां द्वितीयां तु विलिख्य सुरसुन्दरि ॥
पुनर्विलिख्य तामेव चतुर्थे पञ्चमे स्थिताम् ।
हित्वा तु भुवनेशानीमेकोच्चारेण चोच्चरेत् ॥ "

१०. " लोपा मुद्रा पुनर्देवि विलिखेत् तदनन्तरम् ।
नन्दिकेश्वरविद्यां च षट्कूटा वैष्णवी भवेत् ॥ "

११. " कामराजाख्य विद्याया त्रिकूटेषु वरानने ।
यास्थिता भुवनेशानी द्विधाकुरू महेश्वरि ॥
विन्दुहीना नादहीना दुर्वासः पूजिता भवेत् ॥ "

मुझे इतना ही मन्त्रोद्धारका श्लोक मिला इस से अधिक अग्न्युपासिता, वरुणोपासिता, वायूपासिता तथा ब्रह्मोपासिता ये ४ विद्यायें मुझे याद हैं, परन्तु उनका उद्धार मुझे नहीं मिलसका, इस से अधिक भेदों के मन्त्रों का मैं अनभिज्ञ हूँ । फिर लघुषोडशी के भी ६ भेद मैं जनता हूँ । उनका भी श्लोकरूप मन्त्रोद्धार मेरे पास नहीं है । इस से अधिक लघुषोदशी के भेद हैं या नहीं है वह भी मैं नहीं जानता हूँ । पञ्चदशी ललिताकी विद्या में से तीन विद्या प्रधान मानी गई हैं । इन में से एक कामराजोपासिता पंचदशी हैं, जिन्हें कादि पंचदशी कहते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेषतया बहुत से गुरुओं के संप्रदाय में यही विद्या प्रचलित हैं। दूसरी लोपामुद्रोपासिता पञ्चदशी हैं। इन को हादिपंचदशी विद्या कहते हैं। विशेषतः हयग्रीव क्रम वाली गुरुपरम्परा में इस विद्याका प्रचलन है। तीसरी नन्द्युपासिता पञ्चदशी हैं जिन्हें सादि पञ्चदशी कहते हैं। यह विद्या तथा अन्य भेदकी विद्या अल्प संख्यक गुरुपरम्परा में प्रचलित हैं। जो ब्रह्माण्ड़पुराणान्तर्गत ललितासहस्रनामस्तोत्र, ललितात्रिशतीस्तोत्रादि हैं, वे इसी उर्ध्वाम्नायात्मिका ललिता के हैं, पूर्वाम्नायात्मिका ललिता के नहीं हैं। सकल सहस्त्रनामस्तोत्रों में यह ललितासहस्रनामस्तोत्र उत्तम है, क्यों कि इसके श्लोकों में पादपूरणार्थ निरर्थक (च, तु, वै, हि) पद नहीं हैं, फिर प्रत्येक नाम से प्रत्येक गुढार्थ निकलते है इन के भैरव कामेश्वर हैं। उनका मन्त्र तथा ध्यान ऐसे हैः—

सोमकामेन्द्रयुङ्मायाश्रुतिश्च- परमेश्वरि ।
तारवाणीरमालज्जा बीजैस्तु संपुटी भवेत् ॥
कामेशस्य दशार्णोयं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥
जपाकुसुमसंकाशं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् ।
श्रृणिपाशेक्षुकोदण्डप्रसूनेषु धरंस्मरेत् ॥

फिर बालाका भैरव त्रिपुरेश्वर हैं उनका ध्यान तथा मन्त्र ऐसे हैः—

"एकवक्त्रं त्रिनयं चतुर्बाहुसमन्वितम् ।
दक्षिणे चांकुशं खड्गं वामे खेटकपाशकौ ॥
धारयन्तं रक्तवर्णं बृषासनगतं विभुम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऊर्ध्वकेशं हारहारं कपाल मालयान्वितम् ॥
एवं विधं महादेवं ध्यायेत्त्रिपुर भैरवम् " ॥
" माया लक्ष्मी स्तथा हंसः प्रासाद वीजमेवच ।
वह्निजायान्तको मन्त्रो भवेत् त्रैपुर भैरवः ॥
षडङ्गमूलमन्त्रेण वलिपूजादिकं तथा " ॥

मन्त्रार्थ का रहस्य जानना बड़ाही कठिन है। मन्त्रार्थ से ही मन्त्रके महत्वका यथार्थ ज्ञान होगा। पञ्चदशी मन्त्रकी महिमा वैसी क्यों हुई, इस विषय में यह बात है कि इस मन्त्रमें व्रह्मगायत्री के चारही पाद अन्तर्गत हैं। अतएव इस मन्त्रका अर्थ करने के लिए प्रथम इस के अर्थ से गायेत्रीका पदनिकाल अर्थ करना चाहिए। श्रुति ने त्रिपुरातापिन्युपनिषद् में यह श्रीविद्या पञ्चदशाक्षरी (कामराजोपासिता)का मन्त्रार्थ इस प्रकार किया है:-

"अथै तस्य परं गह्वरं व्याख्यास्यामो महामनु समुद्भवं तदिति। व्रह्म शाश्वतम्। परो भगवान्निर्लक्षणो निरञ्जनो निरुपाधिराधिरहितो देवः। उन्मीलते पश्यति विकासते चैतन्यभावं कामयत इति। स एको देवः शिवरूपी दृश्यत्वेन विकासते। यतिषु यज्ञेषु योगिषु कामयते। कामं जायते। स एव निरञ्जनोऽकामत्वेनोज्जृम्भते। अकचटतपयशान्सृजते। तस्मादीश्वरः कामोऽभिधीयते। तत्परिभाषया कामः"क" कारम् व्याप्नोति। काम एवेदं तत्तदिति 'क' कारो गृह्यते। तस्मात 'तत्' पदार्थ इति य एवं वेद। 'सवितुर्वरेण्य' मिति षूङ् प्राणिप्रसवे सविता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राणिनः सूते प्रसूते शक्तिम्। सूते त्रिपुरा शक्तिराद्येयं त्रिपुरा परमेश्वरी महाकुण्डलिनी देवी। जातवेदसमण्डलं योऽधीते सर्वं व्याप्यते। त्रिकोण शक्ति 'रे' कारेण महा भागेन प्रसूते। तस्मात् 'ए' कार एव गृह्यते। "वरेण्यं" श्रेष्ठं भजनीयमक्षरं नमस्कार्यम्। तस्माद्वरेण्यमेकाक्षरं गृह्यत इति य एवं वेद। "भर्गोदेवस्य धीमही" त्येवं व्याख्यास्यामः। धकारो धारणा। धियैव धार्यते भगवान् परमेश्वरः। भर्गोदेवो मध्यवर्ति तुरीयमक्षरं साक्षात्तुरीयं सर्वं सर्वान्तर्भूतम्। तुरीयाक्षरम् "ई" कारं पदानां मध्यवर्तीत्येवं व्याख्यातं भर्गोरूपं व्याचक्षते। तस्माद्भर्गो देवस्य "धीमही" त्येव "मी" काराक्षरं गृह्यते। महीत्यस्य व्याख्यानं महत्वं जडत्वं काठिन्यं विद्यते यस्मिन्नक्षतेरेतन्म हिलकारः परंधाम। काठिन्याढ्यं ससागरं सपर्वतं ससप्तद्वीपं सकाननमुज्ज्वलद्रूपं मण्डलमेवोक्तं 'ल' कारेण पृथ्वीदेवी महीत्यनेन व्याचक्षते। "धियो यो नः प्रचोदयात्।" परमात्मा सदाशिव आदि भूतः परः। स्थाणु भूतेन "ल" कारेण ज्योतिर्लिङ्गमात्मनं धियो बुद्धयः परे वस्तुनि ध्यानेच्छारहिते निर्विकल्पके "प्रचोदयात्" प्रेरयेदित्युच्चारण रहितं चेतसैव चिन्तयित्वा भावयेदिति। "परोरजसे सावदो" मिति तदवसाने परंज्योतिरमलं हृदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दैवतं चैतन्यं चिल्लिङ्गं हृदयागारवासिनीं हृल्लेखेत्यादिना स्पष्टं वाग्भवकूटं पश्चात्तरं पञ्चभूतजनकं पंचकलामयं व्यापठ्यत इति। य एव वेद। अथ तु परं कामकला भूतं कामकूटमाहुः। "तत् सवितुर्वरेराय" मित्यादि द्वात्रिंशद-क्षरीं पठित्वा तदिति परमात्मा सदाशिवोऽक्षरं विमलं निरुपाधितादात्म्य प्रतिपादनेन "ह" काराक्षरं शिवरूपं निरक्षरमक्षरं व्यालिख्यत इति। तत्परागव्यावृत्तिमादाय शक्तिं दर्शयति। तत्सवितुरिति पूर्वणाध्वना सूर्याधश्चन्द्रिकां व्यालिख्य मूलादि ब्रह्मरन्ध्रगं सोक्षरमद्वितीयमाचक्षत इत्याह भगवन्तं देवं शिवशक्त्यात्मकमेवोदितम्। शिवोऽयं परमं देवं शक्तिरेषा तु जीवजा। सूर्या चन्द्रमसोर्योगाद्धं-सस्तत् पदमुच्यते। तस्मादुज्जृम्भते कामः कामात्कामः परशिवः। कार्णोऽयं कामदेवोऽयं वरेरायं भर्गो उच्यते। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवः क्षीरं सेचनीयमक्षरं सम द्यु घुम्नमक्षरं परमात्मजीवात्मनोर्योगान्तदिति स्फष्टमक्षरं तृतीयं 'ह' इति तदेव सदाशिव एव निष्कलमष आद्यो देवोऽन्त्यमक्षरं व्याक्रियते। परमं पदं 'धी' ति धारणं विद्यते जडत्वधा रणम्। 'मही' ति 'ल' कारः शिवाधस्ता-त्तु लकारार्थः स्पष्टमन्त्यमक्षरं परमं चैतन्यं 'धियो योनः प्रचोदयात् परोरजसेसावदो' मित्येवंकूटं कामकलालयं षडध्वपरिवर्तको वैष्णवं परमं धामैति भगवांश्चैतस्माद्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एवं वेद। अथैतस्मादपरं तृतीयं शक्तिकूटं प्रतिपद्यते। द्वात्रिंशदक्षर्या गायत्र्या 'तत्सवितुर्वरेण्यं' तस्मा दात्मन आकाश आकाशाद्वायुः स्फुरते तदधीनं वरेण्यं समुदीयमानं सवितुर्वा योग्यो जीवात्मपरमात्मसमुद्भवस्तं प्रकाशशक्तिरूपं जीवाक्षरं स्पष्टमापद्यते। 'भर्गोदेवस्यधी' त्यनेनोधाररूप— शिवात्माक्षरं गण्यते। 'मही' त्यादिना शेषंकाम्यंरमणीयं दृश्यं काम्यं रमणीयं शक्तिकूटं स्पष्टी कृतमिति। एवं पञ्चदशाक्षरं त्रैपुरं योऽश्नोते स सर्वान्कामानवाप्नोति।"

एवं श्री विद्या पञ्चदशाक्षरी विद्या का अर्थविचार कर एकोच्चारण करने से ही गायत्री के सम्यगाप्ताक्रम की पूर्ति होगी। गायत्री का सम्यगाप्ताक्रम तो गुरूवक्त्रसे ही जानलेना चाहिए। पूर्वोक्त उपनिषद् में ही फिर इसी पञ्चदशाक्षरी विद्याका अर्थ "जातवेधसेत्यादि' ऋचा में घटाया है। वह लेख विस्तारभय से यहाँ नहीं दिया है। श्रीविद्यामहाषोड़शी का अर्थतो ऐसा गहन है कि श्रुति भी उसे वर्णन नहीं कर सका। स्वयं शंकर कहते हैं किः—

"वक्त्रकोटिसहस्रैस्तु जिह्वाकोटिशतैरपि।
वर्णितुं नैवशक्येयं श्रीविद्याषोड़शाक्षरी॥
ब्रह्मविद्यास्वरूपा हि भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
एकोच्चारेण देवेशि वाजपेयस्य कोटयः॥
अश्वमेध सहस्राणि प्रादक्षिण्यं भुवस्तथा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काश्यादितीर्थयात्राः स्युः सार्धकोटित्रयान्विताः ॥
तुलांनायान्तिदेवेशि नात्रकार्याविचारणा ।
एकोच्चारेणगिरिजे किं पुनर्ब्रह्म केवलम् ॥
षोडशार्णा महाविद्या नप्रकाश्या कदाचन ।
गोपितव्या त्वया भद्रे स्वयोनिरिव पार्वती ॥
अपि प्रियतमे देयं सुतदारधनादिकम् ।
राज्यं देयं शिरोदेयं नदेया षोडशाक्षरी ॥
सप्तलक्षमहाविद्यास्तन्त्रादौ कथिताः प्रिये ।
सारात् सारतरा चेयं महाविद्या सुगोपिता ॥ "

पञ्चदशी, षोडशी तथा महाषोडशी विद्यादि सब का विनियोग एक ही ऐसा है।

"ऋषिरस्य महेशानि दक्षिणामूर्त्तिरव्ययः ।
पंक्तिश्छन्दः समाख्यातं देवी त्रिपुरसुन्दरी ॥
वाग्भवं बिजमित्युक्तं शक्तिस्तु शक्तिकूटकम् ।
कामराजः कीलकं स्याद्दष्याादिन्यास ईरितः ॥ "

तत्रान्तरे– " निः सरन्ति महामन्त्रा महाग्नेर्विस्फुलिङ्गवत् ।
तथैव मातृकावर्णा निःसृता वाग्भवाः प्रिये ॥
अत एवास्य देवस्य वाग्भवं बीजमुच्यते ।
योषित्पुरुषरूपेण स्फुरन्ती विश्वमातृका ॥
महामोहेन देवेशि कीलयन्ती जगत्त्रयम् ।
अतस्तत्कीलकं देवि तेन सौभाग्यगर्भिता ॥
पालयन्ती जगत् सर्वं तेनेयं शक्तिरुच्यते ॥ "

तन्त्रान्तरे करषडङ्गन्यासः—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"अँ आँ सौरिति प्रोक्तं बीजं त्रिविधमुत्तमम् ।
एतद्बीजं द्विरावृत्य मध्यमाद्यङ्गुलीपुच ॥
शुद्धिं करस्य कुर्वीत तलयोः पृष्ठयोरपि ।
चतुर्थी नतिसंयुक्ता नाममन्त्रैः पृथक् पृथक् ॥
मध्यमाऽनामिका चैव कनिष्ठाऽङ्गुष्ठतर्जनी ।
क्रमेण नाम चाख्यातमंगुलीनां महेश्वरि ॥
द्विरावृत्या तु मूलेन षडंगानि प्रकल्पयेत् ॥

महाषोड़शी मन्त्र का विशेष विवरण पीछे किया जाएगा। श्रीविद्या ललिता की भी श्रीयन्त्र में ही पूजा होती है। श्रीयन्त्रार्चन का भी सूक्ष्म तया पीछे वर्णन करूँगा।

११ नं चित्र अब मैं बाला का विवरण लिखता हूँ। वडवानलतन्त्र में जो " बाला " पद दिया इसके अर्थ से बालात्रिपुरा, बालासुन्दरी तथा बालात्रिपुरसुन्दरी इन तीनों ही विद्याओं का सूचक है। सब से प्रथम बालात्रिपुरा की मूलविद्या त्र्यक्षरी का वर्णन कर उनके मन्त्रों के भेद का वर्णन करूँगा। बालात्रिपुरा का मूलमन्त्र त्रिपुरासार-समुच्चय में ऐसा लिखा है:—

"अथ त्रिलोकार्चित शासनाया ।
वक्ष्यामि बीजत्रयमम्बिकायाः ॥
गोप्तव्यमेतत् कुलधर्मविद्भि—
रमुष्य हेतोर्निजसिद्धयेच ॥
कान्तादिभूतपदगं कगतार्धचन्द्रम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दन्तान्तपूर्वजलधिस्थितवर्णयुक्तम् ॥
एतज्जपं नरवरो भुवि वाग्भवाख्यम् ।
वाचां सुधारसमुचां लभते स सिद्धिम् ॥
कान्तान्तं कुलपूर्वपञ्चमयुतं नेत्रान्तदण्डान्वितम् ।
कामाख्यं गदितं जपान्मनुरयं साक्षाज्जगत्क्षोभकृत् ॥
दन्तान्तेन युतं सदण्डिसकलं संमोहनाख्यं कुलम् ।
सिध्यत्यस्य गुणाष्टकं खचरता सिद्धिश्च नित्यं जपात् ॥
ऋषिर्दक्षिणामूर्त्तिसंज्ञो महात्मा ।
भवेच्छन्द एतस्य मन्त्रस्य पंक्तिः ॥
सरस्वत्यचिन्त्यप्रभावा प्रदिष्टा ।
बुधैर्देवता देववृन्दार्चिताङ्घ्रीः ॥
अमुष्यमन्त्रस्य रदान्तयुक्तम् ।
वीजं सदण्डं नकुलीशपूर्वम् ॥
शक्तिस्तुसा खण्डल कर्णपूर्व —
साहार्धजैवातृकमाननान्तम् ॥

अब बालात्रिपुराके मन्त्रभेदका वर्णन करता हूँ । मन्त्रमहोदधिमें ऐसा लिखा हैः—

" अथ वक्ष्यामी बालाया भेदानागमगोपितान् ।
१. मायाकामौ बरारूढं तार्तीयं त्र्यक्षरो मनुः ॥
२. अनुलोमप्रतिलोमाभ्यां बालामन्त्रः षडक्षरः ।
३. बालाश्रीकामहृल्लेखासंपुटोयं नवाक्षर ॥
४. बालान्ते बालात्रिपुरेस्वाहान्तो दशवर्णवान् ।
५. वाक्कामौव्योमभृग्विन्दुयुङ्मनुर्दीर्वभूघरः ॥
पिनाकोत्रिपुरेसिद्धिं देहिहृन्मनुवर्णवान् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६. मायालक्ष्मीर्मनोजन्मात्रिपुरान्तेतु भारती ॥
कवित्वंदेहिठद्वन्द्वं षोडशार्णो मनुस्मृतः ।
७. कमला पार्वती कामस्त्रिपुरान्ते च मालती ॥
मह्यं सुखं ततोदेही स्वाहा सप्तदशाक्षरः ।
८. भृगुब्रह्मक्रियावह्नियुक्ताशान्तिस्सरात्रिपा ॥
दहनान्त्यमहाकालभुजङ्ग पुरुषोत्तमाः ।
मन्वर्घी शेन्दुसंयुक्ताद्वितीयंबीजमीरितम् ॥
वाग्बीजं त्रिपुरेसर्ववाञ्छितं देहिहृत्ततः ।
वह्नि प्रियासप्तदशवर्णो यं कीर्तितोमनुः ॥
९. हल्लेखात्रितयं प्रौढ त्रिपुरेनं तारोग्यमै- ।
श्वर्यं देहि प्रिया वन्हेर्मनुरष्टादशाक्षरः ॥
१० मायारमामन्मथान्ने त्रिपुरा मदने पदम ।
सर्वं शुभं साधयाग्नेः प्रियान्तोष्टादशाक्षरः ॥
११. हल्लेखाकमलानंगोवालान्तेत्रिपुरेपदम् ।
मदायत्तां ततो विद्यां कुरुहृद्वन्हिवल्लभा ॥
मन्त्रोविंशतिवर्णो यम् ।
१२. मायापद्मामनो भवः ।
परापरेन्ते त्रिपुरे सर्वमीप्सितमुच्यताम् ॥
साधयानलकान्तायमन्यो विंशतिवर्णकः ।
१३. कामद्वन्दंरमायुग्मं मायायुक् त्रिपुरापदम् ।
ललितेन्ते मदीप्सीतितामन्तेयोषितं पदम् ॥
देहिवाञ्छितमित्युक्त्वाकुरुज्वलनकामिनी ।
अष्टाबिंशतिवर्णोयं मनुरिष्टप्रियाप्रदः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४. कामपद्माद्रिपुत्रीणां प्रत्येकं त्रितयंवदेत् ।
त्रिपुरान्ते सुन्दरीतिसर्वं जगदिनद्वयम् ॥
वशं कुरुद्वयं मह्यं वलं देह्यनलांगना ।
सर्वाभीष्ट प्रदोमंत्र उक्तो वाणगुणाक्षरः ॥"

न्यासादि–"चतुर्दशानामेतेषां मनूनांमृषिरीरितः ।
दक्षिणा मूर्तिसंज्ञस्तुच्छन्दो गायत्रनुच्यते ॥
त्रिपुरादेवता बाला षडङ्गं मातृकासमम् ॥"

अब ध्यान के बिषय में बालात्रिपुरा की मूल त्र्यक्षरी का ध्यान मेरुतन्त्र में ऐसा है।

"अभयं पुस्तकं मालां वरं च दधतीं करैः ।
अरुणामरुणाब्जस्थां रक्तवस्त्रां द्विजेशकाम् ॥"

तन्त्रान्तरे– "रक्ताम्वरां चन्द्रकलावतंसाम् ।
समुद्यतादित्यनिभां त्रिनेत्राम् ॥
विद्याक्षमालाभयदानहस्ताम् ।
ध्यायामिवालामरुणाम्वुजस्थाम् ॥"

बालात्रिपुरा के पूर्वोक्त चतुर्दश भेदों का ध्यान एक ही मन्त्र महोदधि में निम्नलिखित प्रकारका है।:—

"पाशाङ्कशौ पुस्तकमक्षसूत्रम् ।
करैर्दधानासकलामरार्च्या ॥
रक्तात्रिनेत्राशशिशेखरेयम् ।
ध्येयाखिलर्ध्यै त्रिपुरात्रवाला ॥"

बालात्रिपुरा ऊर्ध्वाम्नायात्मिका हैं तथापि मतान्तर में उनका पश्चिमाम्नाय से भी उपासनाकरने की किसी-किसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुपरम्परा-की प्रथा है। इनके यन्त्र के विषय में ऊर्ध्वाम्नायी लोग निम्नलिखित प्रकार के त्रिपुर भैरवी के यन्त्र के मध्य में बिन्दु रखकर पूजा करते हैं। वह यन्त्र ऐसा है:-

"पद्ममष्ट दलोपेतं नवयोन्याढ्यकर्णिकम् ।
चतुर्द्वार समायुक्तं भूगृहं विलिखेत्ततः ॥
बिन्दुयुक्ता भवेद्बाला बिन्दुहीना च भैरवी ॥"

फिर पश्चिमाम्नायीलोग निम्नलिखित प्रकार के यन्त्र में पूजा करते हैं । वह यन्त्र ऐसा हैं:—

"त्रिकोणं बिलिख्यानुबृर्चदलानाम् ।
ततः पंचकं तद्बहिश्चापिवृत्तम् ॥
पुनः षड्दलं बाह्यतश्चापिहृत्तम् ।
लिखेदष्टपत्राणि तद्बाह्यतोऽपि ॥"

उर्ध्वाम्नायात्मिका बालात्रिपुरा के यन्त्र तथा आवरणार्चन के विषय में मन्त्रमहोदधि में ऐसा है:—

"नव योन्यत्मकं यन्त्रं वहिरष्टदलावृत्तम् ।
भूगृहेण पुनर्वीतं पूजनाय लिखेत्सुधीः ॥
मध्ययोनौतु तार्तीयमष्टयोनिषुमन्मथम् ।
केसरेषु स्वरान्यसेद्वर्गानष्टौदलेष्वपि ॥
दलाग्रेषुत्रिशूलानि पद्मं मातृकयावृतम् ।
एवं विलिखिते यन्त्रे पीठ शक्तिः प्रपूजयेत् ॥
इच्छाज्ञान क्रियाचैव कामिनी कामदायिनी ।
रतिरतिप्रिया नन्दा मनोन्मन्यपि चान्तिमा ॥
पीठशक्तिरिमाइट्वा पीठं तं मनुना दिशेत ।
व्योम पूर्वं तु तार्तीयं सदाशिव महापदम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रेतपद्मासनं ङेन्तं नमोन्तः पीठमन्त्रकः ।
षोडशार्णस्ततो मूर्तौ क्लृप्तायां मूलमन्त्रतः ॥
आवाह्यपूजयेद्देवीमुपचारैः पृथग्विधैः ।
देवीमिष्ट्वामध्ययोनौ त्रिकोणेरतिपूर्विकाः ॥
वामकोणेरतिं दक्षे प्रीति मग्रे मनोभवाम् ।
योन्यन्तर्वह्निकोणादावंगानि परिपूजयेत् ॥
मध्ययोनेर्बहिः पूर्वादिक्षुचाग्रेस्मरानपि ।
वाणदेवीस्तद्वदेव शक्तिरष्टसुयोनिषु ॥
सुभगाख्या भगापश्चात्तृतीया भगसर्पिणी ।
भगमाली तथा नङ्गा नङ्गाद्या कुशुमापरा ॥
अनङ्गमेखलानङ्गमदनेत्यष्टशक्तयः ।
पद्मकेसरगाब्राह्मीमुखाः पत्रेषु भैरवाः ॥
दीर्घाद्यामातरः पूज्याह्रस्वाद्याश्चाष्टभैरबाः ।
दलाग्रे ष्वष्टपीठानि कामरूपाख्यमादिमम् ॥
मलयंकोल्लगिर्याख्यं चौहाराख्यं कुलान्तकम् ।
जालन्धरं तथोद्यानं कोह्रपीठमथाष्टकम् ॥
भूगृहेदशदिक्ष्वर्च्यं द्वैतुकं त्रिपुरान्तकम् ।
वेतालमग्निजिह्वं च कालान्तककपालिनौ ॥
एकपादं भीमरूपं मलयं हाटकेश्वरम् ।
शक्राद्यानायुधैः सोर्ध्वं स्वस्वदिक्षुसमर्चयेत् ॥
तद्वहिर्दिक्षुवटुकं योगिनी क्षेत्रपालकम् ।
गणेशं विदिशास्वर्च्यं द्वसून्सूर्यान्छिवांस्ततः ॥ ”

कामना भेदसे बालात्रिपुरा का मूलत्र्यक्षरी विद्याका प्रत्येक अक्षरको एकाक्षर मन्त्र मानकर उर्ध्वाम्नाय से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपासना होता है। उनका ध्यान तथा उपासनाविधि निम्नलिखित प्रकारका है:–

१. विद्याक्षमाला सुकपालमुद्रा –
राजत्करां कुन्दसमानकान्तिम् ॥
मुक्ताफलालंकृतिशोभिताङ्गीम् ।
वालांस्मरेद्वाङ्मयसिद्धिहेतोः ॥
ध्यात्वैवं वाग्भवं लक्षत्रयं शुक्लां वरावृतः ।
शुक्लचन्दनलिप्ताङ्गो मौक्तिकाभरणान्वितः ॥
जपित्वा तद्दशांशेन पालाशकुसुमैर्नवैः ।
जुहुयात्मधुराक्तैर्यः स कविर्युवतीप्रियः ॥ ”

२. “ भजेत्कल्पवृक्षाधउद्दीप्तरत्ना—
सने सन्निषण्णां मदाघुर्णिताक्षीम् ।
करैर्बीजपूरं कपालेषुचापम् ।
सपाशांकुशं रक्तवर्णं दधानाम् ॥
ध्यात्वा देवीं जपेल्लक्षत्रयं योमध्यबीजकम् ।
रक्तवस्त्रावृतोरक्त भूषणोरक्तलेपनः ॥
दशांशं मालती पुष्पैश्चन्द्रचन्दनलोलितैः ।
जुहुयात्तस्यवश्याः स्युस्त्रिलोकीजनताः क्षणात् ॥ ”

३. “ व्याख्यानमुद्रामृतकुंभविद्या—
मक्षस्रजं संदधतीं कराग्रैः ।
चिद्रूपिणीं शारदचन्द्रकान्तिम् ॥
बालांस्मरेन्मौक्तिकभूषिताङ्गीम् ॥
ध्यात्वैवं शक्तिबीजं च जपेल्लक्षत्रयंसुधीः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सितवस्त्रानुलेपाढ्यामात्मानं देवतां स्मरेत् ॥
मालतीकुसुमैर्हुत्वा चन्दनाक्तैर्दशांशतः ।
लक्ष्मीविद्यासुकीर्तिनामाधारो जायते चिरात् ॥ ”

बालात्रिपुरा के चतुर्दश भेदों में से जो सबसे प्रथम बर्णित मायादि त्र्यक्षरी विद्या हैं उनके स्थितिक्रमसे उच्चारण होने से वह **त्रिशक्तिलक्ष्मी** विद्या होंगी । उनका ध्यान निम्नलिखित प्रकारका हैः-

“ स्मेराननां चतुर्हस्तां पुस्तकाक्षवराभयाम् ।
त्रिशक्तिरूपिणीं वालां शरच्चन्द्रसमप्रभाम् ॥
रक्ताम्बरां चन्द्रमौलीं ध्यायेल्लक्ष्मीस्वरूपिणीम् ॥ ”

इनका उर्ध्वाम्नाय से ही उपासना होगा और बालाका ही रूपान्तर है । मतान्तर में त्रिशक्ति लक्ष्मी दूसरी भी है । उनका उपासना पूर्वाम्नायसे भी होसकता है । उनके मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैः-

“ श्री बीजं च पराबीजं कामबीजं समालिखेत् ।
त्रिशक्तिर्देवताङ्गानि द्विरावृत्त्या यजेत् प्रिये ॥
ऋषिर्ब्रह्मास्य गायत्री छन्दोऽपि कथितं प्रिये ।
त्रिशक्तिर्देवताङ्गानि द्विरावृत्त्या यजेत् प्रिये ॥

ध्यानम्— “ नव हेमस्फुरद्भूमौ रत्नकुट्टिममण्डपे ।
महाकल्पवनान्तस्थे रत्नसिंहासनेवरे ॥
कमलासनशोभाढ्यां रत्नमञ्जीरकुण्डलाम् ।
स्फुरद्रत्नलसन्मौलीं रत्नकुण्डलमण्डिताम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनर्घ्यरत्नघटितनानाभूषणभूषिताम् ।
दधतीं पद्मयुगलं पाशांकुशधनुः शरान् ॥
षड्भुजामिन्दुवदनां दूतीभिः परिवारिताम् ।
चारुचामरहस्ताभी रत्नादर्शसुपाणिभिः ॥
ताम्बूलस्वर्णपात्रीभिर्भूपापेटीसुपाणिभिः ।
श्रीमत्त्रिशक्तिलक्ष्म्यस्वां ध्यायेत्सर्वसमृद्धिदाम् ॥

कोई कोई पश्चिमांनायीलोग वागादि त्र्यत्तरी में बाला-त्रिपुराका पूर्वोक्त ललिताका 'बालार्कमण्डलाभासा-मित्यादि' ध्यान करते हैं। परन्तु किस प्रमाण से वेलोग यह ध्यान करते हैं, इस में मैं अनभिज्ञ हूं, क्यों कि मेरे क्रम में बालात्रिपुरा की ऊर्ध्वाम्नाय से ही उपासनो होता है:—

बालासुन्दरी के बिषय में उनका केवल एक ही मूल मन्त्र मैं जानता हूं वह चतुर्दशात्तरी बिद्या है। उसमे दोप्रणव बिद्यमान हैं। जब इस मन्त्र का अर्थ करेंगे तब वह दो प्रणवों से दो अर्थ निकलेंगे। फिर इस बिद्या में एक शक्तिवीज है उस में भी विसर्ग की जगह नाद बिन्दु है। इस विद्या के उद्धार के श्लोक मेरे पास नहोने के कारण मैं यहाँ नहीं दे सकता हूं। इनका ध्यान त्रिपुरभैरवीका ही है। वालात्रिपुरा की मुण्डमाला नही है, परन्तु बाला सुन्दरी की मुण्डमाला है। त्रिपुरभैरवी तथा बाला सुन्दरी का ध्यान ऐसा है:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकाम् ।
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वराम् ॥
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद्वक्त्रारविन्दश्रियम् ।
देवीं बद्धहिमांशु रत्नमुकुटां वन्देरविन्दस्थिताम् ॥ "

इसमें भेद केवल इतना ही है कि त्रिपुरभैरवी के युवती और बालासुन्दरी के बाला रुपसे ध्यान करना चाहिये। इन बालाओं की पूजा में यन्त्रावरणादि सब त्रिपुर भैरवी वत् हैं क्यों कि इन दो विद्या में अभेद है। इन दोनों के मन्त्रों में भेद इतना ही है:—

" भैरवीयमुदिता कुलपूर्वा ।
देशिकैर्यदि भवेत् कुलपूर्वा ॥
सैव शीघ्रफलदा भुवि विद्ये–
त्युच्यते पशुजनेष्वतिगोप्या ॥"

बाला-विद्या में बालात्रिपुरसुन्दरी सर्वोत्तम हैं। उनका मन्त्र षडक्षरात्मक है तथा उनका अन्यभेदभी नहीं है। इनके मन्त्र में अन्य महामन्त्रवत् छहो आम्नाय समष्टि होजाते हैं। इस विद्याका भी मन्त्रोद्धार श्लोकरूपमें मेरे पास न होने के कारण मैं यहाँ नहीं दे सकता हूं। यह विद्या उर्ध्वाम्नायात्मिका है। दक्षिणामूर्तिमत से तो इन को उर्ध्वाम्नायनायिका विकल्प से सर्वमन्त्रेश्वरी परादेवता को भी उर्ध्वाम्नायनायिका मानकर श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीको सर्वाम्नायनायिका ब्रह्म विद्या मानते हैं अतः 'बाला-त्रिपुरसुन्दरी की पूर्वोक्त उर्ध्वाम्नायात्मक बालायन्त्र में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री बालात्रिपुरसुन्दरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूजा होती है। इनकी आवरणपूजा में विशेष विन्दु में निम्नलिखित प्रकारकी आम्नायपूजा भी होती हैं:

"उन्मनी पूर्वाम्नायात्मिका, निशेश्वरी दक्षिणाम्नायात्मिका, कुब्जिका पश्चिमाम्नायात्मिका, गुह्यकाली उत्तराम्नायात्मिका, वज्रवैरोचनी अधराम्नायात्मिका तथा ब्रह्मरूपा उर्ध्वाम्नायात्मिका की पूजा होती है। 'बालात्रिपुरसुन्दरीका ध्यान ऐसा है:—

"अरुणकिरणजालै रञ्जिता सावकाशा।
विधृतजपवटीका पुस्तकाभीतिहस्ता ॥
इतरकरवराढ्या फुल्लकल्हारसंस्था।
निवसतु हृदि बाला नित्यकल्याणशीला ॥"

बालात्रिपुरा के ध्यान में अरुणकिरणजाल नहीं है। बालात्रिपुरसुन्दरी में अरुणकिरण जाल है फिर इनके आसनका कमल पञ्चप्रेत के उपर ध्यान किया जाता है। तन्त्रान्तरमें इनका ध्यान ऐसा भी है:—

"बालांबालदिवाकरद्युतिनिभां पद्मासनेसंस्थिताम् ।
पञ्चप्रेतमयाम्बुजासनगतां वाग्वादिनीरूपिणीम् ॥
चन्द्रार्कानलभूषितात्रिनयनां चन्द्रावतंसां शुभाम् ।
विद्याक्षाभयविभ्रतींवरकरां वन्देपरामम्बिकाम् ॥"

पञ्चप्रेतको निर्गुण अर्थ में पञ्चमहाभूत तथा तदुपरि विराजित शक्तिको सर्वोच्च प्रकृतिरूप में घटाया है। अतः प्रत्येक आम्नयनायिकाओं का पञ्चप्रेतासन की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कल्पना होती है। परन्तु पश्चिमाम्नायनायिका होते हुए भी कुब्जिका का षड्प्रेतासन नहीं है। वह धर्मरूपवृषभके आसन पर बैठे हुए कुब्जिकेश्वर के अङ्कमें अर्द्धाङ्ग और ज्ञानरूपसिंह के पृष्ठ में अर्द्धाङ्ग करके विराजित हैं। किसी ध्यान में केवल ज्ञानरूप सिंहके पृष्ठ पर विराजित हैं। और किसी में सूर्य चन्द्र के आसन पर बैठी हैं। क्यो कि इनको सकल चैतन्यचिद्रूपा में बटाया है। शिवोक्त सुधाधारास्तव के निम्नलिखित श्लोक से कुब्जिका काही वर्णन किया है, क्यों कि उस स्तोत्र में छहों आम्नायनायिकाओं के निर्गुणरूप का पृथक पृथक् श्लोक में वर्णन है:—

"जले शीतलत्वं शूचौदाहकत्वम् ।
विधौ निर्मलत्व' रवौ तापकत्वम् ॥
तवैवाम्बिके यस्य कस्यापि शक्ति—
स्त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ॥"

इसका यथार्थरहस्य गुरुवक्त्रसे ही जान लेना चाहिए। वाला के क्रम के विषय में वृहद्वडवानलतन्त्र में ऐसा है:—

"शारदा वालात्रिपुरा वालात्रिपुरसुन्दरी ॥"

फिर तन्त्रान्तर में ऐसा भी लिखा है:—

"प्रथमं वालात्रिपुरा द्वितीयं वालसुन्दरी ।
तृतीयं चैव सा देवी वालात्रिपुरसुन्दरी ॥"

वालात्रिपुरा तथा वालासुन्दरी का भैरवी से सम्बन्ध होनेके कारण इनके विषयमें और भी बातें हैं। वे भैरवी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के विवरणमें दी जायेंगी।

पूर्वोक्त वड़वानलतन्त्रवचनमें 'महात्रिपुरसुन्दरी' तथा परातन्त्रमें 'सर्वाम्नायप्रपूजिता' जो पद है, उस पद से महाषोडशी रूपिणी महात्रिपुरसुन्दरी को सूचित करते हैं। महाषोड़शी की महत्वका वर्णन उपर ही करचुका हूँ। महाषोडशी के दो भेद हैं। एक शिवोपासिता रमादि महाषोड़शी तथा दूसरी विष्णूपासिता तारादि महाषोड़शी उन में से बहुतसी गुरुपरम्परामें शिवोपासिता ही प्रचलित है। उसका मन्त्रोद्धार नवरत्नेश्वर तन्त्रमें ऐसा है:—

"लक्ष्मीः परा मदनवाग्भवशक्तिबीजम् ।
तारं च भूतिकमले कथिता च विद्या ॥
कूटत्रयं च विपरीततया नियुक्तम् ।
श्रीषोडशाक्षरमिहागमसुप्रसिद्धम् ॥ "

विष्णूपासिता तारादि महाषोडशीका मन्त्रोद्धार सिद्ध-यामलतन्त्रमें ऐसा है:-

"कामो माया रमा बाला त्रिकूटा स्त्री भगाङ्कुशौ ।
काली कामकला कूर्चः सर्वादौ प्रणवः प्रिये ॥
श्रीमहाषोडशीयं च याख्याता भुवन त्रये ।
ज्ञानेन मृत्युहा विद्या सर्वाम्नायैर्नमस्कृता ॥"

इन दोनों मन्त्रों के ही विनियोग तथा न्यासादि पूर्वोक्त पञ्चदशी मन्त्रवत् हैं। केवल मूल षड़ङ्ग में बीजान्त में ऐसा है:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"सर्वज्ञता नित्यसुतृप्तता च ।
अनादिबोधश्च स्वतन्त्रता च ॥
अलुप्तशक्तित्वमनन्तता च ।
षडाहुरङ्गानि शिवे शिवाद्यः ॥"

इस विद्याका वर्णन ब्रह्मगायत्री के साथ-साथ ही करूंगा। ब्रह्मगायत्री भी ब्रह्मविद्या होने के कारण ऊर्ध्वाम्नायात्मिका हैं। उनके नाम; रूप तथा मन्त्र सन्ध्या ओं के अनुसार पृथक् पृथक् होते हैं। ब्राह्मणोंको व्याहृति के अन्तमें तथा व्याहृति के आगे और मन्त्र के अन्तमें इन ३ जगहों में प्रणव लगाकर ब्रह्मगायत्रीका जपकरना चाहिए। क्षत्रियोंको व्याहृति के आगे तथा मन्त्रके अन्तमें प्रणव लगाकर ब्रह्मगायत्री जपनी चाहिए। वैश्योंको केवल व्याहृति के आगे एक प्रणव लगाके जपकरना चाहिए। परन्तु दुःख की बात है कि बहुत से ब्राह्मण आदिमें एक ही प्रणव लगाकर ब्रह्मगायत्री जपते हैं तो त्रिकालसन्ध्यादि की बात तो उन्हें ज्ञात ही नहीं हो सकती है। फिर वे क्षत्रियों और वैश्योंको ब्रह्मगायत्री किस प्रकार देसकते हैं? इसलिए बहुतसे ब्राह्मणों ब्रह्मत्वहीन होनेकेकारण क्षत्रियों और वैश्योंको अन्य—अन्य गायत्री देकर गुरु बनने की प्रथा चला रहेहैं। शायद वे लोग प्रमाण देंगे कि सूर्यगायत्री में निम्नलिखित वचन हैः—

"इयं तु सूर्यगायत्री जपतामिष्टदायिनी ।
अन्नानां राजपुत्राणां क्षत्रतेजोविवर्द्धिनी ॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस वचनका तात्पर्य यह है कि वे लोग अपनी सन्ध्या रूप ब्रह्मगायत्री तो जपते ही हैं। परन्तु क्षत्रतेज बढ़ाने की कामना से इस सूर्यगायत्री की विशेष उपासना करने को कहा है। यहाँ "क्षत्रियों के उपनयन में सूर्यगायत्री देना" ऐसा नहीं लिखा है। ब्रह्मगायत्री ही द्विजों को देने के प्रमाण वेद में प्रसस्त मिलते हैं। फिर "द्विज" शब्द से ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य तीनों ही वर्णों को पुकारते हैं। फिर ब्राह्मणों को तीन, क्षत्रियों को दो तथा वैश्यों का एक प्रणव लगाकर जपने का भी संकेत-प्रमाण वेदमें मिलते हैं। बृहद्वडवानलतन्त्रमें भी लिखा है:—

"ब्राह्मणैस्तुत्रिभिर्जाप्या द्वाभ्यां क्षत्रियजैस्तथा ।
वैश्यैश्चैकेन संयोज्य गायत्रीब्रह्मरूपीणी ॥"

अब मैं सन्ध्या का वर्णन करता हूँ। गायत्री का ध्यान सूर्यमण्डल में करने को कहा है। इस से स्पष्ट विदित होता है कि सूर्यके सम्बन्ध से सन्ध्या बनी। यहाँ मैं यह बात कुछ-कुछ समझाने की चेष्टा करता हूँ। जैसे चन्द्रमा का सम्बन्ध मन से है, वैसा ही सूर्य्य का सम्बन्ध आत्मा से है। सूर्य्य को शास्त्र आत्मा तथा चन्द्रमा को मन ही मानते हैं। जातकालङ्कार में भी "कालात्मा दिनकृत् मनश्च हिमगुः" इत्यादि वचन हैं। प्रातःकाल जब लोग निद्रारूप विश्रान्ति से जागकर शौच-स्नानादि कर्म कर ताजा हो जाते हैं तब उनकी आत्म-स्फूर्ति नूतनसी (बालावस्थाकी) बन जाएगी। उक्त अव-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्था में अनुभवगम्य आत्मा की चेतनाका जो भाव रहता है उसको प्रातः गायत्री कहते हैं। इनका ध्यान निम्नलिखित प्रकार है:—

" ब्रह्माणी चतुराननाक्षवलयं कुंभंकरैः स्रुक्स्रुवौ।
विभ्राणारूणकान्तिरिन्दुवदना ऋग्रुपिणी बालिका॥
हंसारोहणकेलिरम्बरमणींविवान्विताभूषिता ।
गायत्रीहृदिभाविता भवतु नः संपत्समृद्धयौः सदा॥ "

इनको प्रातर्गायत्री, ब्रह्माणी तथा (केवल) गायत्री कहते हैं। यह बिद्या प्रातः कालके जीवोंकी अबिद्या हटाने वाली सत्ता है, जिस से बह ऋग्वेदोक्त महावाक्य " प्रज्ञानं ब्रह्म " के तत्व का ज्ञान करा देती है। इस महावाक्य की ब्याख्या लेख-विस्तार भय से यहाँ नहीं दी है। वह पाठक लोग वेदान्त ग्रन्थादि पढकर जानलेने की कृपा करें। जिस अवस्था में " प्रज्ञानं ब्रह्म " का बोध होगा, उसमें भी " प्रज्ञानं " और " ब्रह्म " ये दो पद होनेके कारण " अहं, इदं, त्वं " का अभास तो अवश्य ही रहता है। परन्तु श्री विद्या बीज रूपा होने के कारण उसमें " अहं, इदम्, त्वं " का लेश भी नहोने से यह केवल ब्रह्मत्व देती है। इसलिए पहले उपनयन में गायत्री मन्त्र ग्रहण करके ब्रह्मचर्य से उन की उपासना करके जब वेदके महावाक्यों के तत्व का ज्ञान होगा तब " अहं, इदं त्वं. " का भाव हटानेकेलिए बीजरूपदीक्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का क्रम ग्रहण करके जीवन्मुक्त होना चाहिए। अतः उपनयन के कुछ वर्षबाद दीक्षा ग्रहण करने की प्रथा अभी-तक चलरही है। अतः पहले गायत्री जपकर पीछे दीक्षा मन्त्र जपना चाहिए। श्रीविद्या महात्रिपुरसुन्दरी के भी गायत्री के जैसे ही सन्ध्या, न्यासादि तथा ध्यानादि पृथक् पृथक् हैं।

"प्रज्ञानं ब्रह्म" के बोध से उपर ले जाकर "अहं, इदं, त्वं" का भाव हटानेवाली सत्ता जो महात्रिपुरसुन्दरी हैं, उनका मन्त्र पूर्वोक्त महाषोड़शी के सृष्टिक्रम से प्रातः सन्ध्या में जपना चाहिए। उस अवस्था की महात्रिपुरसुन्दरी का ध्यान ऐसा है।:—

"कोद्यर्कारुणविग्रहां त्रिनयनां चन्द्रार्द्ध चूडामणीम् ।
पाशं सांकुशचापबाणविधृतां स्मेराननां षोडशीम् ॥
पन्चब्रह्ममयात्मके मणिमये सिंहासने संस्थिताम् ।
कामेशांकविराजितां भगवतीं श्रीसुन्दरीं चिन्तये ॥"

महात्रिपुरसुन्दरी का भैरव महाकामेश्वर हैं। उनका मन्त्र न्यास, तथा ध्यान ऐसे है:—

"बाला तारो रमा माया वन्हिवायुधरास्तबः ।
उपस्थरूपशब्दास्तुरतीबिन्दुस्थमाद्यकम् ॥
वाय्वाग्निक्षोपस्थरूपरशस्पर्शयदीपिकाः ।
सबिन्दुक द्वितीयं वै शब्दत्रितयभूमिमाः ॥
रतीरथंबिन्दुसहितं तृतीयं तारएव च ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विलोमषड्वीजयुतो षोड़शार्णो मनुर्मतः ॥
आनन्दभैरवऋषिः पंक्तिश्छन्दप्रकीर्तितः ।
बालाबीजत्रयेनैवन्यासः प्रोक्तो महेश्वरि ॥
यदातु दक्षिणामूर्तेर्मतं स्यात् जलवन्हियुक् ।
यादौ चाद्ये तथा चान्ते क्षादौ नीरं यमान्तके ॥
एवं संयोज्य देवेशि षट्त्रींशत्तत्वयुङ्मनुः ॥

(इन मन्त्र षोडशार्ण हैं। परन्तु इनका ३ कूटों का वर्णों भी अलग अलग करके गिना जायेतो ३६ तत्वरूप ३६ ही वर्णों वन जाएगा। गुरूवक्त्र सें इनका मन्त्रार्थं जानलेनेसे सें यहयाद हो सकेगा।)

"उद्यत्कोटिदिवाकरारूणनिभं वामांकसंस्थांविकम् ।
भक्तारोपितदृक्कटाक्षकलितोल्लासं जटालंकृतम् ॥
दोर्भिः कार्मुकपाशवाणसृणीन् विभ्राणसिन्दोः कलाम् ।
नानारत्नविराजमानवपुषं कामेश्वरं भावये ॥"

मध्यान्ह में सबलोग अपने-अपने काम में संलग्न होकर थोडी देर के लिए जब आरामी (Recreation) लेते हैं, उस अवस्था में पूर्वोक्त प्रकार वही गायत्री सावित्रीरूपा वनजाती हैं। उनका ध्यान ऐसा है:—

" रुद्राणी नवयौवना त्रिनयना वैयाघ्रचर्माम्बरा ।
खट्वाङ्गत्रिशिखाक्षसूत्रवलयाभीतिर्दधानाम्बिका ॥
विद्युत्पुञ्जजटाकलापविलसद्बालेन्दुमौलिः सदा ।
सावित्री वृषवाहना सिततनु ध्येया यजूरूपिणी ॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनको मध्यान्ह-गायत्री, रूद्राणी (माहेश्वरी) तथा सावित्री कहते हैं। यह विद्या यजुर्वेदके महावाक्य "अहं ब्रह्मास्मि तत्व का बोध कराती है। इस महावाक्य में भी " अहं, इदं, त्वं " का लेश वर्तमान है। अतः उसे हटाने केलिए " महाषोडशी कास्थितिक्रम से मध्यान्हकालमें जपकरना चाहिए। उनका ध्यान ऐसा है:—

"गौरांगीं शशिशेखरां त्रिनयनां पूर्णेन्दुबिम्बाननाम्।
मालापुस्तक पाशकांकुशधरां रम्यातिशुक्लाम्बराम्॥
पन्चब्रह्ममये सुरत्नरवचिते सिंहासने शोभिताम्।
वन्दे श्री श्रुतषोडशीं त्रिजगतां पीयूषनिस्पन्दिनीम्॥"

उस अवस्था के महाकामेश्वर का ध्यान यह है:—

"क्षुणत्संमञ्जीरं क्षणितगुणकान्चीपरिलसद् ।
गुरुश्रोणीबिम्बं सुतनुतबिलग्नं पृथुकुचम् ॥
क्षुणत्कण्ठाहारं करकलितपाशांकुशधनुः ।
सरं सोढुं धामस्मितमुखपैसि त्रिनयनम् ॥"

सायं काल में लोग अपने-अपने काम से निवृत्त होकर थकित बनकर अपने अपने विश्रामस्थान पर पहुचकर जब आरामी (Rest) लेते हैं, उस अवस्था में पूर्वोक्त प्रकार वही गायत्री सरस्वतीरूपा बन जाती हैं। उनका ध्यान ऐसा है:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"वृद्धा नीलघनप्रभापरिलसत् पीताम्बरा भूषिता ।
दिव्यैराभरणै रथांगकमले शंखंगदां बिभ्रतीम् ॥
तार्क्ष्यस्कन्धगता समस्तजगदाराध्या परावैष्णवी ।
ध्येया सैव सरस्वती भगवती सामस्वरूपा परा ॥"

इनको सायं-गायत्री, वैष्णवी तथा सरश्वती कहते हैं इस विद्या सामवेद के महावाक्य "तत् त्वमसि" के तत्व का बोध कराती है। इस महा वाक्य में भी "अहं, इदं, त्वं" का लेश हटाने के लिए **महाषोडशीका संहारक्रम** से सायंकाल में जप करना चाहिए। उनका ध्यान ऐसा है।

"सानन्दां मदघूर्णलोचनमुखीं मन्दस्मितां पुष्पिणीम् ।
बाहुभ्यां मधुपूर्णपात्रविधृतां मेघप्रभां श्यामलाम् ॥
त्र्यक्षां शोणितबिन्दुनीलवसनां श्रीपञ्चप्रेतात्मके ।
पर्यंङ्के रुचिरे स्थितां कुचनतां वन्दे महाषोडशीम् ॥"

उस अवस्था के महाकामेश्वर का ध्यान ऐसा है:—

"अर्काभं शशिशेखरं त्रिनयनं पिंगोर्ध्वकेशोज्वलम् ।
हस्तैरंकुशपाशखेटकमहाखड्गान् दधानं विभुम् ॥
दिव्यैराभरणैर्युतं नरशिरोमालाधरं सस्मितम् ।
सानन्दं वृषवाहनं मदमुखं कामेश्वरं भावयेत् ॥"

अर्धरात्री में बहुत से लोग गाढ़निद्रा में पडकर आनन्द में अपने को भूलकर पूरा आराम लेते हैं। उस अवस्था में वही गायत्री **चतुस्पदीगायत्री** रूपा बन जाती है। उन के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री ब्रह्मगायत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सगुण तथा निर्गुण दो ध्यान हैं, निर्गुण अर्थतो एक ही है। तथापि अपनी अपनी गुरू परम्परा के अनुसार दोमें से एक ध्यान करना चाहिए सगुण ध्यान ऐसा है:—

" मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रिक्षणैः ।
युक्तामिन्दुनिवद्धरत्नमुकुटां तत्वात्मवर्णात्मिकाम् ॥
गायत्री बरदाभयांकुशकुशाञ्छुभ्रं कपालं गुणम् ।
शंखंचक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥ "

निर्गुणध्यानम्–" हृदिविकसितपद्मं सार्कसोमाग्निविम्वम् ।
प्रणवमयमचिन्त्यं यस्यपीठं प्रकल्प्यम् ॥
अचलपरमसूक्ष्मंज्योतिराकाशसारम् ।
भवतुममसुदेऽसौ सच्चिदानन्दरूपः ॥ "

जब लोग गाढनिद्रा में मग्न हो रहते हैं, उस अवस्थामें जपादि पुरश्चरण किस प्रकार हो सकते हैं ? यह एक शंका की बात है। परन्तु मेरा कहना यह है कि उस समय में बहुत से आदमियों को यह अवस्था हो जाती है। इसलिए सर्वसाक्षी प्रकृति का भी यह रूप होता ही है। अतः उपासकको तो जाग्रत अवस्था में ही रहकर उनकी उपासना करनी चाहिए। यह ब्रह्मरूपा चतुस्पदि गायत्री अथर्ववेद के महावाक्य " अयमात्मा ब्रह्म " के तत्व का बोध कराती है। इस महावाक्य में भी " अहं, इदं, त्वं " का लेश होने के कारण यह हटाने के लिए रमादिमहाषोडशी में विशेष एक कूट तथा उनके सादि कूटमें भी कुछ व्यञ्जन वर्ण जोडकर अथवा गुरू परम्परान्तर से निम्नलिखित प्रकारका कूट तारादि महाषोडशी में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जोडकर महासप्तदशी विद्या रचकर जपकरना चाहिए। तारादि महासप्तदशी के विषय में सिद्ध यामलतन्त्र में ऐसा है:—

"लोपायाः शक्ति कूटान्ते हंसबीजयुता यदि ।
तदा सप्तदशी विद्या साक्षाज्ज्ञानस्वरूपिणी ॥"

उनका नाम महाजाख्यासुन्दरी अथवा सप्तदशीमहा-त्रिपुरसुन्दरी है। उनका ध्यान ऐसा है:—

"अमृतार्णवमध्यस्थं रक्तपद्मं विचिन्तयेत् ।
कर्णिकायां शुभ्रवर्णामानन्दमयवेदिकाम् ॥
ततः काच्युतरुद्रेशखुरकाढ्य सदाशिव–
फलकान्वितमुद्दीप्तं नानारत्नसमूहकैः ।
सिंहासनं तदूर्ध्वस्थं षड्दलाम्नायपंकजम् ॥
तदुपरिस्थितांदेवीं तप्तकाञ्चनसन्निभाम् ॥
विकीर्णकुन्तलांनग्नां चन्द्रार्द्धकृतशेखराम् ।
मन्दस्मितास्यकमलां चन्द्रार्ककुण्डलाननाम् ॥
छिन्नभैरवमुण्डस्रग्धरां तुंगकुचद्वयाम् ।
नवयौवनसंपन्नां चारुदेहां चतुर्भुजाम् ॥
पाशंचैवेक्षुकोदण्डं वामोर्ध्वाधः कराम्बुजाम् ।
अंकुशं पञ्चबाणं च दक्षिणोर्ध्वाधतोधृताम् ॥
ऋतुस्नातां स्फुरन्नेत्रां परब्रह्मस्वरूपिणीम् ।
एवं ध्यायेत्परां रूपां महात्रिपुरसुन्दरीम् ॥"

जब साधक "अहं, इदं, त्वं" का भाव छोडकर समाधिस्थ हो जाएगा तब अजपा गायत्री के दो बीजों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की समष्टि से एक प्रासाद बीज बन जाएगा। यह प्रासाद बीज के विषय में कुलार्णवतन्त्र में ऐसा है:—

" श्रीप्रासादपरामन्त्रमूर्ध्वाम्नायमधिष्ठितम् ।
आवयोः परमाकारं यो वेत्ति स स्वयं शिवः ॥
शिवादि कृमिपर्यन्तं प्राणिनां प्राणवर्त्मना ।
निश्वासोच्छ्वासरूपेण मन्त्रोऽयं वर्तते प्रिये ॥ "

उस अवस्था को प्राप्त कराने वाली " सर्व मन्त्रेश्वरी परादेवता रूप महात्रिपुरसुन्दरी और महाकामेश्वरका सामरस्य एक स्वरूप बन जाता है। उन के जपादि तुरीया सन्ध्या के बाद करने से उक्त समाधि मिलजाएगी। इस विद्याको प्रासादी विद्या कहते हैं। इस विद्या के दो मन्त्र हैं एक श्रीप्रासाद दूसरा पराप्रासाद दोनों के ही न्यास ध्यानादि समान ही हैं। इनका मन्त्रोद्धार कुलार्णवतन्त्र में ऐसा है: —

" अनन्तचन्द्रभुवनमिन्दुबिन्दुयुगान्वितः ।
श्रीप्रासादपरामन्त्रो भुक्तिमुक्तिफलप्रदः ॥
पराप्रासादमन्त्रस्तु सादिरुक्तः कुलेश्वरि ।
प्रकाशानन्दरूपत्वात् प्रत्यक्षफलदानतः ॥
प्रसन्नचित्तवश्यत्वात् प्रसिद्धार्थनिरूपणात् ।
प्राक्तनाघप्रशमनात् प्रपन्नार्त्तिविनाशनात् ॥
प्रासादकरणात् शीघ्रात् प्रासादमनुरीरितः
परमानन्दजननात् परमैश्वर्यकारणात् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परोक्षफलदानाच्च परधर्मनिदर्शनात् ।
परत्वात्सर्वमन्त्राणां परामन्त्र इतीरितः ॥
कुलमन्त्रमिदं देवि न्यास श्रृणु वरानने ॥ ”

तत्रैव अस्यन्यासादि “ ऋषिरस्य परः शम्भुश्छन्दश्चाव्यक्तपूर्विका ।
गायत्री देवता यत्र सर्वमन्त्रेश्वरी परा ।
दीर्घत्रययुतं मूलं बीजशक्त्या च कीलकम् ॥
षड्दीर्घमूलयुक्तेन षडङ्गानि च पार्वति ।
ईशतत्पुरुषाघोरसद्योजातात्मनस्तथा ॥
पंचांगुलिषु विन्यस्य मूर्त्तौ वक्रेषुवर्जयेत् ।
पंचब्रह्माणि तथैवांगुलिन्यासमाचरेत् ॥
आधारशक्तिमारभ्य पीठमन्त्रान्तमम्बिके ।
अस्यषोढां महेशानि कुर्यात्पूर्वोक्तवर्त्मना ॥
महाषोढ़ाह्वयं न्यासं तत. कुर्यात्समाहितः ।
वक्ष्माणेन विधिना देवता भावसिद्धये ॥
यस्यतस्य न वक्तव्यं तव स्नेहाद्वदाम्यहम् ।
प्रपञ्चो भुवनं मूर्त्तिर्मन्त्रदैवत मातरः ॥
महाषोढाह्वयं न्यासं सर्वन्यासोत्तमोत्तमः ॥ ”

महाषोढान्यास न कर इस मन्त्रका जप करना निरर्थक है। अतः महाषोढ़ाका जो लोग अनधिकारी हैं, उन लोगों के लिए यह मन्त्र फलदायक नहीं है। इस मन्त्रके देवता सर्वमन्त्रेश्वरी हैं उनका ध्यान कुलार्णवतन्त्रमें ऐसा हैः—

“ एवं न्यस्ततनुर्देवि ध्यायेद्देवीमनन्यधीः ।
अमृतार्णवमध्योद्यन्मणिद्वीपे सुशोभिते ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कल्पवृक्षवनान्तस्थनवमाणिक्यमण्डपे ।
नवरत्नमयेश्रीमत्सिंहासनगतेऽम्बुजे ॥
त्रिकोणान्तः समासीनं चन्द्रसूर्यसमन्वितम् ।
अर्द्धाम्बिका समायुक्तं प्रविभक्तविभूषणम् ॥
कोटिकन्दर्पलावण्यं सदा षोडशवार्षिकम् ।
मन्दस्मितमुखाम्भोजं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् ॥
दिव्यांवरस्रगालेपं दिव्याभरणभूषितम् ।
पानपात्रञ्च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः ॥
विद्यासंसिद्धिविभ्राणं सदानन्दमुखेक्षणम् ।
महाषोढोदिताशेषदेवतागणसेवितम ॥
एवं चित्ताम्बुजेध्यायेदर्धनारीश्वरंशिवम् ।
पुरुषं वा स्मरेद्देवि स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत् ॥
अथवानि ष्कलं ध्यायेत् सच्चिदानन्दलक्षणम् ।
सर्वं तेजोमयं देवि सचराचरविग्रहम् ॥
ततः संदर्शयेन्मुद्रादशकं परमेश्वरीम् ।
योनिं लिंगं च सुरभिञ्चेति मुद्राचतुष्टयम् ॥
वनमालां महामुद्रां नभोमुद्रामितिक्रमात् ।
यथाशक्तिजपेन्मन्त्रंमूलं श्रीपादुकामपि ॥
मूर्ध्नि संचिन्तयेद्देवि श्रीगुरुं शिवरूपिणम् ॥ "

इनको अर्द्धनारीश्वरी अथवा अर्द्धनारीश्वर भी कहते हैं। परन्तु यह गौरीशंकररूप अर्द्धनारीश्वर नहीं हैं। उनका भी उपासना उर्ध्वाम्नाय से ही होता है, तथापि उनके मन्त्र ध्यानादि पृथक् हैं वह ऐसे हैं:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" अग्निः संवर्तकादित्यरानिलाःषष्ठ विन्दुमत् ।
चिन्तामणिरितिख्यातं वीजं सर्वसमृद्धिदम् ॥
कस्यपोमुनिराख्यातश्छन्छोऽनुष्टुबुदाहृतम् ।
अर्धनारीश्वरः प्रोक्तो देवता जगतां पतिः ॥
रेफादिर्व्यञ्जनः षड्भिः कुर्यादंगानिषट्क्रमात् ॥

अस्य ध्यानम्– " नीलप्रभातरुचिरं विलसत्त्रिनेत्रम् ।
पाशारुणोत्पलकपालत्रिशूलहस्तम् ॥
अर्धाम्बिकेशमनिशं प्रविभक्त भूषम् ।
वालेन्दुवद्धमुकुटं प्रणमामिरूपम् ॥ "

अब फिर सन्ध्या की ओर चलें। तुरीया सन्ध्या में शिव और शक्ति दोनों की ही समष्टि एक रूप होनेके कारण भैरव का जप नहीं होगा।

निद्राके पश्चात् और जागने के पूर्व [निद्रादौ जागरान्ते] की अवस्था प्रायः आदमियों की व्राह्ममुहूर्त में होती है। उस अवस्था का जीव [हंस] के उपर रहने वाले चैतन्य का रूप महानिर्वाण भैरव तथा उनका वोध करानेवाली सत्ता स्फूर्ति [शक्ति] जो है वह निर्वाण-महात्रिपुरसुन्दरी का रूप वन जाता है। उक्त निर्वाणभैरव का मन्त्र षोडशाक्षरात्मक है उनका उद्धार वडवानलतन्त्र ने इसप्रकार किया है। उनका ध्यान ऐसे है:—

" अस्य मन्त्रं श्रृणुदेवि ऋष्यादिञ्च श्रृणुप्रिये ।
तारं श्रीशाकिनी वीजं पराप्रासादमेवच ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्वर्तकं महाबीजं कवचाङ्कुशकूर्चकम् ।
अङ्कुशं कूर्चतृतयं अस्त्रान्ते वन्हिवल्लभा ॥
षोडशार्णेति मन्त्रोऽयंत्रैलोक्ये चाति दुर्लभम् ।
मन्त्रोच्चारणमात्रेण साक्षात्परशिवो भवेत् ॥
षोडशार्णेति मन्त्रस्य शब्दब्रह्मस्वयं ऋषिः ।
उष्णिक्छन्दो देवता च निर्वाणभैरवेश्वरः ॥
पराप्रासादबीजञ्च लक्ष्मीः शक्तिस्तथैवच ।
अंकुशं कीलकं प्रोक्तं स्वेच्छया विनियोगकः ॥
षडङ्गञ्च न्यसेद्देवि पराप्रासादबीजकम् ॥"
"श्वेतरक्तफलाकारतदूर्ध्वेनन्तपत्रकम् ।
कर्णिकेदलमध्येतु ब्रह्मादिपञ्चदेवता ॥
ब्रह्माविष्णुश्चेश्वरश्च रुद्रो मध्ये सदाशिवः ।
सदाशिवोर्ध्वंपत्राष्टं पत्रमध्येष्टभैरवम् ॥
असिताङ्गोरुरुश्चण्डः क्रोध उन्मत्तभैरवः ।
कपाली भीषणश्चैव संहारभैरवस्तथा ॥
सशक्तिकांञ्चसंध्यात्वा कर्णिके चिन्तयेत्ततः ।
शक्त्यायुतं पिङ्गकेशं श्रीमहाभैरवेश्वरम् ॥
तस्यनाभ्युद्धृतं पद्मं षड्दलास्नायसंस्थितम् ।
मध्ये निर्वाणरुद्रञ्च हंसासनव्यवस्थितम् ॥
रक्तवर्णं महारौद्रात्मानं परमभैरवम् ।
पञ्चवक्त्रं विंशबाहुं नेत्रद्वादशकं प्रिये ॥
अट्टाट्टहासनिरतं तीक्ष्णदंष्ट्रं भयाननम् ।
भ्रुभङ्गं कुटिलं भीमं प्रदीप्तानलनोज्वलम् ॥
शटाधृतोर्ध्वरक्ताभं चन्द्रार्धंकृतशेखरम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिंहास्यं मध्यवक्त्रं तु दक्षिणे कोल कृष्णकम् ॥
वामेवृषभवक्त्रन्तु श्वेतवर्णं सुदीपितम् ॥
महिषास्यमूर्ध्व वक्त्रं कृष्णाभं कृष्णवर्चसम् ॥
तदूर्ध्वं ज्योतिवक्त्रं तु शिखाकारं विचिन्तयेत् ।
ज्योतिवक्रयान्तरेसिद्धि करालीं च विचिन्तयेत् ।
वक्षे श्रीचक्रचिन्हन्तु कुंकुमंज्योतिभं ततः ॥
अधंचक्रसुशीताभं अर्द्धाधः कुंकुमंस्मृतम् ।
नानारत्नविभूषाढयं लक्षब्रह्माण्डभालकम् ॥
ब्रह्मविष्णवीशमुण्डस्रगापादान्तविभूषणम् ।
शिवचर्मशिरोदेशे विष्णुचर्मोत्तरीयकम् ॥
ब्रह्मचर्मकटीदेशे मेखलात्रयसंयुतम् ।
ज्योतिर्ज्वालामयं सर्वं नृत्यमानंविचिन्तयेत् ॥
दक्षेदशभुजे पद्मं वामेदशभुजे तथा ।
दक्षिणाकालिकाद्यादि दशविद्या करेस्थिताः ॥
इत्येवं ध्यानमात्रेण साक्षात् परशिवो भवेत् ।
मथा पूर्वोद्धृता देवी महात्रिपुरसुन्दरी ॥
तस्यायं भैरवो देवि गोपनीयं स्वयोनिवत् ।
महात्रिपुरसुन्दरी चण्डयोगेश्वरी परा ॥
नतयोर्विद्यते भेदो भेदकृत्नरकं व्रजेत् ।
तस्मादात्मैक्य संभाव्यमिति ज्ञानं सदा स्मरेत् ॥ १

निर्वाणमहात्रिपुरसुन्दरीका मन्त्र बीजत्रयपुटित दशकूटात्मक षोड़शाक्षरान्वित है। उनका ध्यान बृहद्वड़वानल तन्त्रमें ऐसा है:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" महात्रिपुरसुन्दर्याध्यानमत्त: शृणुप्रिये ।
जपाकुशुमसंकाशां कोटिमार्तण्डतेजसाम् ॥
वक्त्रैः षोडशभिर्युक्तां विशाललोचनप्रियाम् ।
अष्टाधिकशतैर्हस्तैर्युक्तां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥
ऊर्ध्वं वक्त्रं रक्तवर्णं तदधः श्यामवक्त्रकम् ।
तदधः श्वेतवक्त्रञ्‌तु तदधो हरितप्रभं ॥
तद्दक्षेश्वेतवक्त्रयन्तु वामे च पीतवक्त्रकम् ।
तदधोरक्तवदनं दक्षे हरितकुंकुमे ॥
वामेलाक्षारसाभञ्च तद्वामेकापिलन्तथा ।
तद्दक्षाधो दाडिमाभं तद्दक्षेनीलश्वेतकम् ॥
वामेव धूकवर्णं च पीतं धूम्रकवर्णकम् ।
मुक्तकेशीं चन्द्रमौलीं शशिमार्तण्डकुण्डलाम् ॥
देवानां दुर्लभै रत्नैर्विराजितकिरीटिनीम् ।
रक्तवस्त्रपरीधानां ब्रह्मचर्म्मोत्तरीयकाम् ॥
विष्णुचर्म्मरीधानां योगपट्टविभूषिताम् ।
मनोहरे कटीदेशे किंकिणीजालमण्डिताम् ॥
वैडूर्यमुक्ताहाराभिस्तनमध्येविराजिताम् ।
छिन्नभैरवशीर्षैश्च कृतामालातशोभिताम् ॥
रक्तपद्ममयीमालामापादान्तावलम्बिनीम् ।
अङ्कुशं पाशबाणांश्च पिनाकशूलपट्टिशान् ॥
सिद्धिलक्ष्मीं कुब्जिकाञ्च भुवनेशीञ्च वारुणीम् ।
वाराहीं ब्राह्मींनारसिंहीं चामुण्डां वैष्णवीं तथा ॥
भैरवीं छिन्नमस्ताञ्च ह्यर्धनारीश्वरीन्तथा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खड्गं शूलं गदां चक्रं पद्मं नीलोत्पलन्तथा ॥
रक्तोत्पलं त्रिदण्डञ्च मूशलं चाक्षमालिकाम् ।
पुस्तकं शरवीं शक्तिं तोमरं हीरवज्रकम् ॥

छत्रं ध्वजं भिन्दिपालं कृपाणं कलशन्तथा ।
पताकां तर्जनीं मुण्डं कपालं यमदण्डकम् ॥
गरुडं कुक्कुटं गृध्रं शिवां श्वानं षडस्त्रकम् ।
दामिनीं सोमगंगाञ्च वृक्षं डमरु जाम्बुकम् ॥
वरदं धारयन्तीञ्च दक्षहस्तोर्ध्वतः क्रमात् ।
त्रिपुरां दक्षिणाकालीमुग्रताराम्रमान्तथा ॥
ऐन्द्रीं माहेश्वरीं लक्ष्मीं कौमारीमुग्रचण्डिकाम् ।
ब्रह्माविष्णुशिवानग्निं भैरवं शारदान्तथा ॥
शार्दूलं केशरीं व्याघ्रं सिंहमर्कटहस्तिकान् ।
कुठारचर्म्मखट्वाङ्गं पर्वतं शवमत्स्यकम् ॥
श्मशानं तक्षक काकं मकरञ्च शिलान्तथा ।
शङ्खमुद्गरवीणांश्च फेटकं मांस खण्डकम् ॥
चैत्यं सरस्वतीं सिन्धुं मार्जारं गृहकच्छपम् ।
मातुलुंगं तुरंगञ्च सूर्यमष्टाश्रघण्टिकाम् ॥
श्रुक्‌श्रुवौ सुमुखीदेवीं मयूरं गाञ्च माहिषम् ।
अभयंवामतो हस्तैर्धारयन्तीञ्च सुन्दरीम् ॥
आनन्दभैरवं देवं श्मशानोर्ध्वेकृतासनम् ।
श्मशानाधो रक्तपद्मं शून्यपद्मं विचिन्तयेत् ॥
सदाशिवस्यनाभिस्थ पद्मनालामृतोत्थिताम् ।
ततः सिंहासनं दिव्यं मध्यरत्नादियुतम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ।
एते प्रेतासनाद्राह्ये दिक्पालादिभिसंस्थिताम् ॥
खगान्तरे शून्यमध्ये ज्वालाव्याप्तदिगन्तरे ।
तदन्तरे स्थितां देवीं ध्यात्वा मोक्षमवाप्नुयात् ॥"

इन के मन्त्र को लघुसाम्राज्यमेधा दीक्षा कहते हैं। इन दोनो (शिवशक्तिसमष्टिमन्त्र) अलेखिनी विद्या ही यथार्थ लघुसाम्राज्यमेधा हैं। इस महानिर्वाणभैरव तथा निर्वाण महात्रिपुरसुन्दरीका उपासना लघुसाम्राज्य मेधा-दीक्षा के बिना नहीं होसकता। वैसे साधक को इसका रहस्य स्वयं ही विदित होगा। अन्य लोगोंको विशेष बताने की जरुरत नहोने के कारण यहा केवल दिग्दर्शन रूप से वर्णन किया गया है। इस विद्या को सन्ध्या को भासा-सन्ध्या कहते हैं। तदनन्तर महासाम्राज्यमेधादीक्षा है। जिसे ग्रहण करने से गृहस्थाश्रम को त्याग करके बान-प्रस्थाश्रम ग्रहण करना होता है। अतः वह दीक्षा मुझे नहोने के कारण उसविषय में मैं कुछ भी व्याख्या नहीं कर सकता हूँ। ऐसा गुरु ही सजीवमीनयुक्त कर सुधाकलस से गृहस्थाश्रमियों को महापूर्णाभिषेक देकर लघुसाम्राज्यमेधा का उपदेश देसकता है। फिर जिसने कमसेकम १०।१२ वर्ष तक दत्तचित्त हो कर शास्त्रोक्त नियमानुसार पूर्ण क्रम के पथानुयायी बनकर उपासनासे कुछ-कुछ सिद्धि प्राप्त किया है, वही महापूर्णाभिषेक तथा लघुसाम्राज्यमे-धादीक्षा ग्रहण करने का अधिकारी बनसकता है। नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो सजीवमीन रहित का अभिशेक महापूर्णाभिशेक नहोकर लघुपूर्णाभिशेक तथा उपासनादिसे सिद्ध नकिए हुए क्रम आडम्बर क्रम होने के कारण इसे कुछ भी नहीं होगा। और आदमी लोग शास्त्र तथा मन्त्र में दोष ड़ालकर हस्सीकर वायु में फूँक देंगे। हमारी प्राचीन पद्धतियों की ऐसी ही दशा है। योग्य गुरु कलिके प्रभाव से सहसा मिलना कठिन है। अतः गुरु के बिषय में यह ध्यान रखना चाहिए कि आडम्बरी गुरुओं के वदले सीधे-सादे शुद्धचित्तवाले मन्त्रज्ञ ब्राह्मणों से मन्त्र ग्रहण करके उसमें दृढ़ विश्वास रखकर किसी उपासक से अपनी पद्धतियाँ संशोधित कराके उपासना करना ही श्रेयशरकर है। परन्तु यह यादरखना चाहिए कि जो उपासक बिनावित्त परोपकार के लिए संशोधन कर देते हैं, वे ही उपासक हैं। ऐसे उपासक को कोई बित्त भी देतो वह वापस कर देगा। जो लोग मुँह से "वित्त की जरूरत नहीं हैं" ऐसा कहते हैं और देनेसे ग्रहण करते हैं। उनको कैसे उपासक कहें? कलि में यथार्थ सिद्धिवाला गुरु मिलना मुश्किल है। इसलिये पूर्वोक्त शुद्धचित्त वाले ब्राह्मण गुरु से मन्त्र ग्रहण करके निम्नलिखित मेरुतन्त्रोक्त वचनानुसार असिद्ध गुरु से लिए मन्त्रका दोष निवारण करले। दूसरे का चित्त शुद्ध है या अशुद्ध है यह बात यथार्थ जानना असंभव है। तथापि उनके आचार व्यवहार से सन्तोषी वा असन्तोषी, शान्त वा क्रोधी, दंभी वा अदंभी, परोपकारी वा स्वार्थी,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दयालु वा नीर्दयी, परनिन्दक वा योग्यपरोपदेशग्राही एवं अनेक विचार कर शुद्ध चित्त का अनुमान करना चाहिए। मंत्र संस्करण के बिषय में मेरुतन्त्र में ऐसा हैं।:-

" असिद्धत्वाद्गुरोर्दैवात शिष्ये सिद्धिर्नजायते ।
तदोपायं प्रकुर्याद्धि यद्गोप्यमधुनोच्यते ॥
अनुलोम विलोमेन बिन्दुवन्मातृकाक्षरैः ।
जपेत्संपुटितं मन्त्रं प्रत्यहं शतसंख्यया ॥
एकमासं ततो होमादिकात् सिद्धोभवेन्मनुः ।
पुरश्चर्याक्रमखिलमान्हिकं च समाचरेत् ॥ "

अर्थात गुरूके असिद्धत्व से मन्त्रसिद्धि न होगी तो एक मास तक पुरश्चरण के नियम में रहकर अँ से क्षँ तक की वर्णमाला का उच्चारण कर उसके बाद मूलमन्त्र फिर उसके बाद क्षँ से अँ तक उच्चारण करें। यह मन्त्रका ९क जप हुआ। इसप्रकार अष्टोत्तर-शत जप नित्य करना चाहिए। तब एकमास के बाद उसी प्रकार स्वहान्त कर ३२४ आहुति हवन करना। उसके बाद कुलाचारी होतो कुल-पञ्चामृतसे, पश्वाचारी हो तो पशु-पञ्चामृत से ३३ बार उसी प्रकार तर्पण कर ४ बार मार्जन करे। तत् पश्चात् कुलाचारी हो तो निशा में चक्रार्चन करके एक कौलिक को वीर-भोजन करावे, यदि पाशव कल्पवाला हो तो पूजा की जरूरत नहीं है। केवल एक साधारण ब्राह्मण भोजन करावे। यदि सिद्ध गुरूके मुख से कोई मन्त्र मिले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और भूल से असिद्ध गुरू समझकर उसका कोई इसप्रकार संस्कार करेगा तो गुरू और मन्त्रके अनादर का दोष होकर उसमन्त्र का विपरीत फल होगा। यह भी याद रखना चाहिए कि पाशव कल्पके ब्राह्मण के मुखसे केवल पाशव कल्पकी ही दीक्षा, वीरकल्प वाले ब्राह्मण से पशु-कल्प और वीरकल्प दोनो कि ही दीक्षा हो सकती है। फिर कुल-कल्पवाले ब्राह्मण के मुख से तो पशु-कल्प, वीर-कल्प तथा कुल-कल्प इन तीनों कल्पों की ही दीक्षा हो सकती हैं। अब यहाँ एक शंका की बात है। वह यह है कि बहुत से लोग वीर-कल्प और कुल-कल्प को एक ही समझते हैं, परन्तु वेपृथक् है। जब पाशव कल्प से वीर-कल्प में आरूढ़ होते समय मपञ्चक के प्रयोगसहित चक्रार्चन करके दीक्षा देते है, उस समय में गुरु जो अभिषेक देते हैं, उसका नाम **शाक्ताभिषेक** है। शाक्ताभि-षेकी पुरुष वीर शाक्त यानि वीर-कल्प वाला हो जाएगा। जब शाक्ताभिषेक हो जाएगा तब पशुत्वका मोचन हो कर वीर बन जाएगा। फिर वीर दो प्रकारके हैं। **मानववीर** तथा **दानववीर**। रावणादि उपासक दानव वीर थे फिर भरतादि तथा वशिष्ठादि उपासक मानववीर थे। दानव वीर देवताको साक्षात्कार कराके उनके शस्त्रद्वारा परम-पदको प्राप्त करते हैं। मानव वीर पूर्णाभिषेक ग्रहण करके कौलबन कर आत्माका साक्षात्कार कराके ज्ञानद्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परमपदको प्राप्त करते हैं। अभी कलिकालमें भी अपने-अपने प्राक्तनीय संस्कारानुसार वीर उपाशकों में कोई दानववीर कोई मानववीर बनते हैं। दानव वीर "अन्य लोगों को आपत पडे वा न पड़ें जो कुछ भी होवे, परन्तु अपने स्वार्थ सिद्ध होवें।" ऐसे ध्येय से मारणमोहनादि षट्कर्म में मग्न हो कर ऐहिक सिद्ध वनकर अपने परमार्थ का रास्ता विगाड देते हैं। मानव-वीर "अपने को आपद पडे वा नपडे जो कुछ भी होवे, परन्तु अन्यलोगों के उपकार होवें।' ऐसे ध्येय से स्वार्थत्यागकर अपने परमार्थ का रास्ता सुधार लेते हैं। जब मानववीर का मनोभाव ठिक हो जाएगा तब द्वितीय क्रम में आरूढ होते समयमें जो अभिषेक होगा, उसको कौलाभिषेक कहते हैं। तब वह वीर कुल- कल्प वाला कौल बन जाता है। अभी कलिकाल में (सजीवमीनयुक्त) महापूर्णाभिषेक देने-लेने की वात दुर्लभ सी ही होने के कारण कौलाभिषेक में ही अभिषेकी पुरुषका नाम अमुकानन्दनाथ देव तथा स्त्रीका नाम अमुकम्यम्बा देवी एवं गुरुदेव से नामाकरण होगा तथा उन लोगोंका शाम्भव गोत्र होगा। यह कौलाभिषेक को नामाकरण होनेके कारण लघुपूर्णाभिषेकभी कहते हैं। अभी पूर्णाभिषेक नाम से जो लोग अभिषेक दिया-लिया करते हैं, वह केवल लघुपूर्णाभिषेक अथवा कौलाभिषेक है। यह अभिषेक भ्रमसे दानव-वीर भी ले सकते हैं क्योंकि इस में सजीवमीन की जरुरत नहीं है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महापूर्णाभिषेक में तो अयोग्यव्यक्ति के लिए संस्कृत सुधा-घट में मीन सजीव नहीं रहसकता। यदि दैववश भ्रमसे दानव-वीर कौलाभिषेक प्राप्त कर कौल बन जाने से भी उसकी दानवी स्वार्थता हटकर देवत्व भाव नहीं हो सकता। लघुपूर्णाभिषेक के बाद यदि योग्य गुरू मिलजाएगा तो महापूर्णाभिषेक के साथ लघुसाम्राज्यमेधादीक्षा का उपदेश होगा। इस विषय में जिज्ञासु लोगों को घवडाने की कोई बात नहीं है। उपासनामें दृढ होकर लगजाने से कोई न काई रोज योग्य गुरू अवश्यमेव मिल जाएगा। इस जन्म में नहोगा तो दूसरे जन्म में होगा। लिखा भी है कि "अनेक जन्मसंसिद्धस्ततोयाति परां गतिम्" महापूर्णाभिषेकी की वात तो क्या कहें, नारायण ऋषि भी एक ही जन्ममें ब्रह्म नहीं वनसका, दूसरी जन्म में श्रीकृष्ण बन कर अनेक यागकिया। तत्पश्चात् योगेश्वर बनकर ईश्वर ही बन गये। हमलोग जैसे क्षुद्र व्यक्ति को तो इसी जन्म में मोक्ष की आशा करना तो निरर्थक है। अतः हमलोग श्री १०८ स्वामी शंकराचार्य की निम्नलिखित स्तुति के अनुयायी बने। वह स्तुति ऐसी है:-

"नमोक्षस्याकांक्षा नच विभववाञ्छापि च नमे।
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः॥
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातुमम वै।
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब गुरू के विषय में मेरा कुछ निवेदन है। वह यह है कि लौकिक गुरू यानि अपनी वंश-परंपरा से माने हुए गुरूओं की सन्तान का, चाहे वह असिद्ध ही क्यो नहो, त्यागकरना कदापि उचित नहीं है, क्यों कि हम हिन्दू लोगों के लिए गो, ब्राह्मण, यति तथा राजा देव तुल्य हैं। इन लोगों का आदर करना और रक्षा करना हम हिन्दू ओं का परम कर्तव्य है, क्यों कि यह बात शास्त्रों में बताई है। गो लक्ष्मी का, ब्राह्मण विधिका, यति शंकर का तथा राजा विष्णुका प्रतिनिधि रूप है। शास्त्रों का उपदेशका पालन करना हम लोगों का परम कतव्य है। देखिये, हमलोग भी वही आदमी हैं फिर उन लोगोंने पूज्य स्थान क्यों पाया ? इसका तात्पर्य यह है कि उनलोगों ने पूर्वजन्म में उपासना कर इस जन्म में पूज्य बने गए हैं। इस जन्ममें वे लोग कुछ करें, उसका भोग अगले जन्ममें वे ही करेंगे। यदि उत्कट पाप तथा उत्कट पुण्य करेंगे तो उसका भोग इसी जन्म में होगा। लिखा भी है 'अत्युत्कटैः पुण्यपापैरिहैव फल-मश्नुते।' हमलोगोंका उससे कुछ सरोकार नहीं है। परन्तु पूर्व जन्म में वे लोग अवश्य उपासक थे। उपासकों को पूजना हमलोग जैसे सामान्य आदमियोंका परम कर्तव्य है। इसलिए यदि हमलोग अपने लौकिक कुलमें प्रचलित गुरुका त्याग करें तो उनकी अवहेलना करनेका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दोष हमलोगों पर आजाएगा। फिर अन्त्यजों को भी अवहेलना करना योग्य नहीं है, क्यों कि पूर्वजन्म के पाप से वे लोग वैसे हुए हैं। उन लोगों का अवहेलना करने से उनलोगो के पापका दोष हमलोगों पर आजाएगा। अतः दुःखी, दरिद्री, रोगी इत्यादि असहायकों का सहायक वनकर दयाकरके यथाशक्य परोपकार करना तथा मानव मात्र में समभावरखकर, ब्राह्मण यति और राजा में पितृभाव अन्य मनुजों में भ्रातृ भाव स्त्रीयों में मातृभाव रखकर व्यवहार करना हम हिन्दूओं का परम धर्म्म और कर्तव्य है। इसी भाव में रहकर जो उपासना होता है, वही सत्य उपासना है। नहीं तो आडंबरी उपासना होगा इससे परमार्थ के लिए कुछ भी नहीं होगा। यह सब बात यादरख कर लौकिक तथा परमार्थिक रस्ता सुधारकर जीवन यात्रा में चलना चाहिए। अतः यदि आपका लौकिक गुरु पाशव—कल्प वाला है, और आप वीर—कल्प तथा कुलका जिज्ञासु हैं तो भी पहले उनसे पाशव—कल्प की दीक्षा ग्रहण करके पूर्वोक्त विधानसे मन्त्रसिद्धकरके पाशव कल्पसे ही एक पुरश्चरण करके वीरकल्पवाले या कुलकल्प वाले गुरुका अन्वेषण करके दीक्षा ग्रहण करना चाहिए। मैने भी ऐसा ही किया था। मेरे चार गुरु हैं। उन्हीं की कृपा से मैं कुछ कुछ तन्त्र शास्त्रका मार्ग देख कर इस पथका अनुयायी हो रहा हूं। यदि अपना लौकिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुलगुरु (दानवीर) प्रसिद्ध वीरकल्पका है तो पूर्वोक्त विधिसे मन्त्र तथा पद्धतियों का संशोधन करना चाहिए। उस संशोधन के लिए ब्राह्मण गुरुओं की ही जरूरत नहीं है। सिद्धउपासक होगा तो, जो कोई यह कर सकता है। परन्तु इसके लिए दक्षिणा तथा बित्त लेने—देने की बात नहीं होगी। ऐसा चलन हमारे नेपालमें भी नेवार जाति में विशेष है। बहुत से नेवारजाति के घरमें कुलपरम्परागत प्राचीन आगम (तान्त्रिक कुलाचार तथा वीराचार से प्रतिष्ठित देवता तथा प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थादि और चित्रादि) विद्यमान है। वह आगम बडा ही प्रयत्न से गुप्त और सुरक्षित रखा जाता है। वहाँ उस आगम का दीक्षाविहीन होगा तो उसी घरका मालिकको भी प्रवेश करना मनाई है। उन लोगों के गुरु देव– ब्राह्मण जाति का ब्राह्मण है। उन की सन्तति में यदि बाप गुजर गया और उनके लडके ने केवल वीराचार की दीक्षा तक ग्रहण की है, परन्तु हस्तक्रियादि बताने में वह अनभिज्ञ है तो शिष्य उन से ही मूल मन्त्र ग्रहण करते हैं और उस समय पूजाकरने वाले आचार्य भी अन्य लोग होते हैं। हस्तक्रियादि भी वही बताते हैं। ऐसे आदमीको नेपाल में 'अचाज्यू' कहते हैं। वे लोग जातमें ब्राह्मण से नीचे हैं और नेवार जाति के क्षत्रिय से विवाहादिक व्यवहार करते हैं। प्रायशः उनलोगों में ब्राह्मण से अचाजु लोग ही तन्त्र में निपुण हैं, क्यों कि शूद्रान्न उनलोगों के पेट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में नहीं पडता है। शूद्रान्न से सिद्धि की हानि होती है अतः असिद्धावस्था में शूद्रके दिए हुए दानको ग्रहण करना उपासकों के लिए उचित नहीं है। कोई—कोई ब्राह्मण लोग भी मूलमन्त्र के सिवा अन्य सब उपासना काण्ड क्षत्रिय तथा वैश्य सिद्ध उपासकों से सीख कर उन की ही गुरु परम्पर के अनुयायी बन सकते हैं। यह कुलमार्ग देहाभिमान से सिद्ध नहीं होता है। आत्माभिमान से ही सिद्ध होता है। अतः यहमार्ग सीखने—सिखाने के लिए जाति का विचार करने की जरुरत नहीं है। प्राचीन कालमें भी शुकदेव स्वामीने ब्राह्मण होकर भी एक क्षत्रीय राजा जनक से शिक्षा ली थी, परन्तु वित्तादि दक्षिणा लेना—देना कुछ नहीं किया था। यह बात पुराणों से स्पष्ट है। फिर वशिष्ट ऋषि ने चीन जाकर एक वौद्ध को गुरुवनाकर उपदेशदीक्षा उन से ग्रहण कर चीनक्रम से तारा विद्याको सिद्ध किया था। ये दोनों ही वाते किसी तान्त्रिक से छिपी नहीं है। परन्तु मूलमन्त्र तो प्रथम श्रेणिमें ब्राह्मण गुरुसे ही लेना पड़ेगा और दक्षिणा भी स्ववित्तानुसार देनी पड़ेगी। यह तन्त्रविद्या अगाध है। इसके सव रहस्यों को कौन जान सकता है ? एक साधक-को केवल एक ही रहस्य मालूम होगा और दूसरेको दूसरा ही। इसलिए परस्पर उपदेश लेने में कोई शर्म्म की वात नहीं है। कौल-संगठन के द्वारा परस्पर प्रेम बढाकर लाभ उठाना चाहिए।"अथ ाः विद्यया विद्या ऐसा लिखा हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब फिर सन्ध्या की ओर लौटें। पाचौं काल की सन्ध्या के विषय में एक कहने की वात है। जो लोग गृहस्थाश्रमी हैं उन्हें देवी को संहारावस्था अथवा अन्त-र्लीनावस्था में रखकर समाप्ति नकरना चाहिए सायं सन्ध्या के साथ-साथ ही तुरीया-सन्ध्या और भाषा सन्ध्या भी उसी अवस्था में करने की प्रथा है। यदि निशा पूजा करनी है तो उसी अवस्था में सायं, तुरीया और भाषा सन्ध्या के जप भी पूजा को अबस्था में करने की प्रथा है।

मतान्तर में गायत्री, साबित्री और सरस्वती का ध्यान निम्नलिखित प्रकार का है। उसमें सावित्रीको वैष्णवी और सरस्वती को माहेश्वरी मानलिया है। इसका रहस्य पीछे वर्णन करूंगा अभी ध्यान देताहूँ:—

" प्रात ब्राह्मीं रक्तववर्णां द्विभुजाञ्च कुमारिकाम् ।
कमण्डलुं तीर्थपूर्णमक्षमालाञ्च विभ्रतीम् ॥
कृष्णाजिनाम्वर धरांहंसारूढां शुचिस्मिताम् ।
मध्यान्हे तां श्यामवर्णां बैष्णवीञ्च चतुर्भुजाम् ॥
शङ्खचक्रगदापद्मधारिणीं गरुडासनाम् ।
पीनोत्तुङ्गकुचद्वन्द्वाम् वनमालाविभूषिताम् ॥
युवतीं सततं ध्यायेन्मध्ये मार्तण्ड मण्डले ।
सायान्हे वरदां देवीं गायत्रीं संस्मरेत्त् यतिः ॥
शुल्कत्रां शुल्कत्राम्वर धरां बृषासनकृताश्रयाम् ।
त्रिनेत्रां वरदां पाशं शूलञ्च नृकरोटिकाम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विभ्रतीं करपद्मैश्च वृद्धां गलितयौवनाम् ।
एवं ध्यात्वा महादेव्यै जलानामञ्जलित्रयम् ॥
दत्वा जपेत्तु गायत्रीं दशधा शतधापिवा ॥"

इस का रहस्य यह है वैष्णवी विष्णु की शक्ति और माहेश्वरी शिव की शक्ति हैं। फिर विष्णु श्यामवर्ण के होनेके कारण तामसिक मूर्ति हैं। तथा शिव श्वेत वर्णके होनेके कारण सात्विक मूर्ति है। विष्णु सात्विक मूर्ति शिव का ध्यानादि करते करते सत्वगुणी स्वभाव के बन गए। शिव तामसिक मूर्ति विष्णुका ध्यानादि करते करते तमोगुणी स्वभाव के बनगए। अतः विष्णु सत्वगुणात्मक तथा शंकर तमोगुणात्मक ही बनगए। लिखा भी है किः—

"विष्णुस्वरूपसिद्धार्थं तपस्तेपे हरः स्वयम् ।
शिवस्वरूपसिद्ध्यर्थं तपस्तेपे हरिः स्वयम् ॥
षड्वृन्दयुगसंख्यातमुभौ तपःपरौ शिवे ।
शिवोविष्णुस्वरूपत्वं विष्णुश्च शिरूपताम् ॥"

अतः जो परम्परा मूर्ति मानती है उस में मध्यान्ह में माहेश्वरी का और सायं में वैष्णवीका ध्यान करते हैं। फिर जो परम्परा स्वभाव मानती है उसमें मध्यान्ह में वैष्णवी और सायं में माहेश्वरी मानते हैं।

सकल ही अवस्था में गायत्री का भैरव वेदमन्त्रात्मक ब्रह्म हैं। गायत्री का यन्त्र तथा आवरणपूजा मेरु तन्त्र में निम्न लिखित प्रकारका है।:—

"पद्ममष्टदलं लेख्यं न्हीं कार कणिकास्थितम् ।
द्वौ द्वौ स्वरौ दिग्विदिशं प्रतिपत्रं समालिखेत् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किञ्जल्केषु तदग्रेषु गायत्र्यार्णा स्त्रिशस्त्रिशः ।
तद्बहिर्वृत्तयुगलान्तराले तु समालिखेत् ॥
ककाराद्यांस्तथोमापोऽज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म ।
भूर्भुवः स्वरोमिति च यन्त्रं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥ ”

अस्यावरण पूजा–“ ततस्तु पूजयेद्देवीमष्टावरणसंयुताम् ।
अदौ संपूज्य देवेशीं कोणाग्रे पूजयेत्ततः ।
त्रिकोणस्याग्निकोणैस्तु प्रादक्षिण्येन देवताः ॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव वैष्णवी प्रथमावृतिः ।
तस्याग्रतस्त्वष्टदिक्षु क्रमादष्टौ प्रपूजयेत् ॥
आदित्यमूषाञ्च रविं प्रज्ञां भानुं प्रभान्तथा ॥
भास्करं चापि सन्ध्यां च द्वितीयावरणं त्विदम् ।
ततोर्चयेदष्टदलकेशरेष्वङ्गषट्ककम् ॥
गायत्र्याश्च तृतीयोक्तं दलमध्ये यजेदिमाः ।
प्रल्हादिनींप्रभां नित्यां विल्वरुद्रां विलासिनीम् ॥
प्रभावतीं जयां शान्तां चतुर्थावरणं त्विदम् ।
ततोयजेद्दलाग्रेषु कान्तिं दुर्गां सरस्वतीम् ॥
विल्वरूपां विशालां च ईशानीं व्यापिनींक्रमात् ।
विमलां च क्रमात्प्रोक्तं पञ्चमावरणं त्विदम् ॥
तदग्रिमे त्वष्टदले एताः पूज्यास्तु शक्तयः ।
तमोहारिणिका पूज्या विश्वयोनिर्जयावहा ॥
पद्मालया पराशोभा पद्मरूपा च षष्ठकम् ।
भवेदावरणं चाग्रे ब्राह्मयाद्याः सप्तमातरः ॥
अष्टमी त्वरुणा प्रोक्ता प्रोक्तमावरणं त्विदम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रविः सितः कुजो राहुः शनिश्चन्द्रो बुधो गुरुः ॥
अष्टमावरणं चै तच्चतुरस्रादिगष्टके ।
दिपपालाः सप्तमेप्रोक्तास्तदस्त्राणि तथाष्टमे ॥
एवं सम्पूजयेद्देवीं तस्या मुद्राः प्रदर्शयेत ।
व्याहृतित्रयसंयुक्तां गायत्रीं सर्वदाजयेत् ॥ "

महालक्ष्मी संपत्तिंदेने तामसीरूप वाली होने के कारण यहाँ उनके बदले में अरुणा पूजित हैं। यह विद्या विशेषतः ब्रह्मज्ञान की मूर्त्ति है, अतुल संपत्ति से ऐश आराम उत्पन्न हो जाते हैं और वैराग्य खो जाते है। इसी कारण इस विद्या की आवरण पूजा में महालक्ष्मी अलग रही हैं।

वडवानलतन्त्र के नामावली में जो 'त्रिपुरा' पद तथा परातन्त्र में जो 'सर्वचक्रेश्वरी' पद दिया है, उस से त्रिपुरादि ११ चक्रेश्वरियों का संकेत किया गया है। आदमी के ११ अवस्था होनेके कारण श्रीचक्र में ११ चक्र तथा ११ चक्रनायिकायें बन गये। फिर श्रीविद्या महाषोडाक्षरी में षोड़श बीज विद्यमान होनेके कारण षोडशावरण बन गए। अब यहाँ मैं यामलतन्त्रोक्त श्रीयन्त्रोद्धार देता हूँ। वह ऐसा है:—

१ २ ३ ४ ५
"विन्दु त्रिकोण वसुकोण दशारयुग्मम् ।
६ ७ ८
मन्वस्र नागदलसंयुत षोडशारम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९ १०

वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रयं च ।
श्री चक्रराजमुदितं परदेवतायाः ॥"

इस यन्त्र का चक्रसंकेत बहुत ही गम्भीर है उसके रहस्य का यथार्थ व्याख्या करना होगा तो यह पुस्तक १० गुणा बडी पुस्तक होगी। अतः यहाँ चक्रेश्वरियों के वर्णन के पश्चात् संक्षेपतः चक्रसंकेत का वर्णन कर षोड़शावरणदेवता ओं का नाम तक देदूँगा। यदि कालवश यह देहरहेगी और यह पुस्तक आपलोगोंको रुचिकर होसकेगीतो कुछ वर्ष के वाद श्रीयन्त्र के संकेत का भी व्याख्या लिखने की चेष्टा करूँगा।

१. तीव्र जाग्रदवस्था में लोगों में चेतना की जो अवस्था होती है, उस अवस्था की चेतना को 'त्रिपुरा' कहा गया है। वह भूपूर (त्रैलोक्य मोहनकरचक्र) की चक्रेश्वरी हैं। उसका ध्यान निम्नलिखित प्रकारका है:—

"शुद्धस्फटिकवर्णाभां त्रिनेत्रां च चतुर्भुजाम् ।
पुस्तकं चाक्षसूत्रं च पद्मद्वयकरां शुभाम् ॥
त्रलोक्यमोहने ध्यायेत्त्रिपुरां चतुरस्त्रके ॥"

सकलं ही चक्रेश्वरियों का मन्त्रोद्धार श्लोकरूप में मेरे पास नहोने के कारण मैं यहाँ नहीं देसकता हूँ। अतः मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

२. वैसेही मन्द जाग्रदवस्था में वही चेतना 'त्रिपुरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिनी ' बन जाती है। वह वृत्तत्रय (त्रैवर्गसाधनकर चक्र) की चक्रेश्वरी है। उसका ध्यान ऐसा है।:—

रक्तवर्णां त्रिनेत्रां च पुस्तकाक्षवराभयैः ।
शोभितां हस्तकमलां नानालङ्कारभूषिताम् ।
त्रैवर्गसाधने चक्रे ध्यायेच्छित्रिपुरेशिनीम् ॥"

३. वैसे ही स्वप्नावस्था में वही चेतना 'त्रिपुरेशी' बन जाती हैं। वह षोड़शार (सर्वाशापरिपूरक चक्र) की चक्रेश्वरी है। उसका ध्यान ऐसा है:—

"शुभ्रां चतुर्भुजां ध्यायेत् पाशांकुशवराभयैः ।
भूषितां षोडशाराब्जे त्रिपुरेशीं सुरेश्वरीम् ॥"

४. सुषुप्त्यवस्था में वही चेतना 'त्रिपुरसुन्दरी' बन जाती है। वह अष्टसदल (सर्वसंक्षोभणचक्र) की चक्रेश्वरी है। उसका ध्यान ऐसा है:—

"रक्तवर्णां चतुर्हस्तां पुस्तकाक्षवराभयैः ।
भूषितां सर्वसंक्षोभणाष्टदलचक्रकें ॥
त्रिनेत्रां सस्मितां देवीं ध्यायेत्त्रिपुरसुन्दरीम् ॥"

यह ४ चक्र अज्ञानावस्था के हैं। अब अन्य चक्र ज्ञानावस्था के हैं और भूमिका में बँट गए हैं।

५. जब उपासक को शुभेच्छा होगी तो उस अवस्था में वही चेतना 'त्रिपुरावासिनी' बन जाती है। वह चतुर्दशार (सर्वसौभाग्यदायक चक्र) की चक्रेश्वरी है। उसका ध्यान ऐसा है:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"सहस्रार्कसमाभासां पुस्तकाक्षवराभयैः ।
शोभितां हस्तकमलां वहिर्दशारचक्रके ।
सर्वार्थसाधकाख्याने चिन्तयेत्त्रिपुराश्रियम् ।"

७. तनुमानसा में वही चेतना 'त्रिपुरामालिनी' बन जाती है। वह अन्तर्दशार (सर्वरक्षाकरचक्र) की चक्रेश्वरी है। उसका ध्यान ऐसा है:-

"रक्तवर्णां त्रिनयनां पाशांकुशकपालकम् ।
वराभयाक्षमालां च दधतीं त्रिपुरां पराम् ॥
मालिन्यन्तर्दशाराख्ये सर्वरक्षाकरे यजेत् ॥"

८. सत्त्वापत्ति में वही चेतना 'त्रिपुरासिद्धा' बन जाती है। वह अष्टार (सर्वरोगहरचक्र) की चक्रेश्वरी है। उसका ध्यान ऐसा है:-

"शुक्लवर्णां त्रिनयनां पाशांकुशकपालिनीम् ।
अभयं सर्वरोगघ्नेऽष्टारकेचिन्तयेत्सदा ॥
साधकैस्त्रिपुरां सिद्धां सर्वालङ्कारभूषिताम् ॥"

९. असंशक्ति में वही चेतना 'त्रिपुराम्बा' बन जाएगी। वह त्रिकोण (सर्वसिद्धिप्रदचक्र) की चक्रेश्वरी है। उसका ध्यान ऐसा है:—

"रक्ताम्बरां मुण्डमालीं पुस्तकाक्षवराभयैः ।
भूपितांत्र्यस्रमध्यस्थां सर्वसिद्धिप्रदायके ॥
सर्वालङ्कार संयुक्तां ध्याये च्छ्रीत्रिपुराम्बिकाम् ॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०. पदार्थ भाविनी में वही चेतना 'त्रिपुरभैरवी' बन जाएगी। वह विन्दु [सर्वानन्दमय चक्र] की चक्रेश्वरी है। उसका ध्यान ऐसा है:—

"उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकाम्।
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरान् ॥
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियम्।
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥"

११. तुर्यगा में वही चेतना 'ललिता महात्रिपुरसुन्दरी' बन जाएगी। वह विन्दोरन्तरगत [परब्रह्मात्मक महा वैन्दव चक्र] की चक्रेश्वरी है। उसका ध्यान ऐसा है।

"सूर्येन्द्वग्निमयैकपीठनिलयांबालार्कबिम्बारुणाम्।
त्र्यक्षां चन्द्रकलावतंसमुकुटां पीनस्तनीं सुन्दरीम् ॥
पाशं चांकुशमिक्षुचापविधृतां पुष्पेषुहस्तां पराम्।
नाना भूषण भूषितातिसुकुमाराङ्गीं भजे वैन्दवे ॥ "

अब श्रीयन्त्रका चक्रसंकेत अतिसूक्ष्मतः वर्णन करता हूँ। श्रौतस्मार्तधर्म्मावलम्बी हम लोगों के लिये श्रीविद्योपासना ही सर्वोत्तम उपासना मानी गई है। इस विषय को समस्त विद्वज्जन जानते हैं। श्रीविद्योपासकों के लिए श्रीचक्रार्चन तथा महाषोडशी मन्त्र जप ही मुख्य मानेगए हैं। परातन्त्र में ऐसा लिखा है।:—

" कोटिलिङ्गप्रतिष्ठायां यत्फलं समुदाहृतम्।
तत्फलं लभते नूनं श्रीचक्रस्य प्रपूजने ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वदेवगणास्तत्र सर्वे धर्म्मांश्च तत्रवै ।
गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः पुष्कराद्या जलाशयाः ॥
पुरुषोत्तममुख्याश्च क्षेत्रानन्दा वनादयः ।
वाजिमेधस्य यज्ञस्य पुरायं त्वविकलं भवेत् ॥
वामदक्षिणयोगेन सुन्दरीद्विविधास्मृता ॥"

अतएव श्रीविद्याउभयाचारों की उपास्य देवता मानी गई हैं। "वामदक्षक्रियायुक्तः कौलश्चोभयमिश्रितः" इत्यादि तन्त्रके वचनसे भी श्रीविद्या कुलमार्ग की प्रधान उपास्य देवता है। इस विषय में शंका का अवकाश नहीं है। अतएव श्रीयन्त्र को ब्रह्माण्ड--स्वरूप माना गया है। इसी कारण श्रीयन्त्र में सब देवताओं की पूजा हो सकती है। अब पूजाक्रमका संक्षेपतः वर्णन करता हूँ। श्रीयन्त्र की आवरणपूजा में आम्नायों की तीन बार पूजा अवश्य करनी चाहिए।:—

१. भूपुर के चारद्वारों में द्वारनायिका रूप से चार आम्नायें।

२. अपने अपने चक्र की जो नायिका हैं (अर्थात् सृष्टिचक्र की पूजा के अन्तमें पूर्वाम्नाय, स्थितिचक्र की पूजा के अन्तमें दक्षिणाम्नाय, संहार चक्र की पूजा के अन्त में पश्चिमाम्नाय, अनाख्या-चक्र की पूजा के अन्तमें उत्तराम्नाय और भासाचक्र की पूजा के अन्त में ऊर्ध्वाम्नाय) इन पाँच आम्नायोंकी चक्रेश्वरी रूपमें पाँच आम्नायें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. बिन्दुचक्र में आम्नायेश्वरी रूप से नव आम्नाय। इन सबकी भी तुरीयारूपा श्री में ही समष्टि होती है।

श्रीविद्या के उपासना में तीन मत हैं। एक हयग्रीवमत दूसरा आनन्दभैरवमत और तीसरा दक्षिणामूर्तिमत हैं। श्रीचक्रावरणपूजा प्रत्येक मत में भिन्न भिन्न प्रकार से होती है।

१. हयग्रीव के मतानुसार श्रीयन्त्र में दक्षिणाचार से पूजा होती है। इसमें त्रिवृत्तचक्र की पूजा नहीं होती है। वह चक्र लिखा भी नहीं जाता है। सृष्टिक्रम में (अर्थात् प्रातःसन्ध्या में) बिन्दु चक्रसे आरम्भ कर भूपुरचक्रमें पूजा की विश्रान्ति होगी। स्थितिक्रम में अर्थात् मध्याह्न समय में) प्रथमतः त्रिकोण के बाहर षोडशनित्या ओं, गुरुमण्डल तथा षडङ्ग युवतियों की सपर्या करके भूपुरचक्र से आरम्भकर बिन्दुचक्र में पूजा का समाप्त होगा। संहारचक्रम में [अर्थात् सायंकाल में] भूपुरचक्र से आरंम्भकर बिन्दुचक्र में पूजा की पूर्ति होगी। सृष्टिक्रम तथा संहारक्रम में जिस समय त्रिकोणचक्र की पूजा होती है, उसी समय षोडशनित्याओं, गुरुमण्डल तथा षडङ्गयुवती की पूजा होती है। शुष्कपाशवकल्प और स्मार्तमतमें श्रीयन्त्रकी आवरणपूजा से ललितासहस्रनाम, ललितात्रिशतिस्तोत्र नामावलि और ललिताशतनाम का कुंकुमार्चन का अधिक महत्व माना गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. आनन्दभैरवमत में बिन्दुचक्र को नायिका याने चक्रेश्वरी ललितामहात्रिपुरसुन्दरी मानकर यदि उसकी पूजा की जावे तो दक्षिणाचार माना जाता है। फिर बिन्दुचक्र की नायिका त्रिपुरभैरवी और बिन्द्वन्तरगत चक्रान्तर भावना करके उस चक्रकी नायिका ललितामहात्रिपुरसुन्दरी को मानकर पूजा करने से वामाचार कहलाता है। कौलाचार में भी इसी क्रम से सपर्या होती है। आनन्द भैरवमतमें त्रिवृत्त चक्रतो लिखाजाता है, परन्तु उसकी पूजा नहीं होती है। सृष्टिक्रम में बिन्दुचक्र से पूर्ववत् भूपुरचक्रपर्यन्त, स्थितिक्रम में त्रिकोणचक्र के बहिर्भागस्थ गुरूपंक्ति, षोड़शनित्याओं तथा षडङ्गयुवतियों की सब से पहले पूजाकर भूपुरचक्र से बिन्दुचक्रपर्यन्त तथा संहारक्रम में भूपुरचक्र से बिन्दुचक्र पर्यन्त ही पूजा होती है।

३. दक्षिणामूर्ति के मतमें त्रिवृत्तचक्र लिखाजाता है और उसकी पूजा भी होती है। यह क्रम सर्वोत्तम मानागया है। इस क्रममें कुलाचार से ही पूजा हो सकती है। इस दक्षिणामूर्त्ति मत में भी ३ क्रम हैं सृष्टिक्रम में बिन्दु चक्रसे भूपूरपर्यन्त, स्थिति में भूपूरचक्र से अष्टदल चक्रतक तथा बिन्दुचक्र से चतुर्दशारचक्रतक, और संहारक्रम में भूपुर-चक्र से बिन्दुचक्रपर्यन्त अर्चाकी जाती है। यह क्रम के संकेत से प्राचीन हस्तलिखित तन्त्रान्तरमें यन्त्रोद्धार निम्नलिखित प्रकारका दिया है।:—

सृष्टिक्रम-" बिन्दुत्रिकोणवहिरष्टककोणवरद्य—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिक्कोणयुक्परचतुर्दशकोणयुक्तम् ।
वृत्ताष्टषोडशदलानलवृत्तलोक— ॥
भूपुश्चतुर्मुखमहं प्रणमामिचक्रम् ।

स्थितिक्रम-- " भूविम्वचक्र खलु षोडश चाष्टबिन्दु—
अग्न्यग्न्यष्टसंयुतमहत्त्रितयं दशारम् ॥
वेदारसंयुतदशास्पदमध्यरूपाम् ।
त्वां वै महात्रिपुर सुन्दरि नौम्यहं श्रीः ॥ "

संहारक्रम- " भूवेश्मगत्रिवृतषोडशनागशक्र—
दिग्युग्मवस्वनलकोणगबिन्दुमध्ये ॥
सिंहासनोपरिगतारकपीठमध्ये ।
प्रोत्फुल्लपद्मनयनां त्रिपुरां भजेहम् ॥

अब श्रीयन्त्र के १० चक्रों के भाग का वर्णन करता हूँ ॥ श्रीयन्त्र शिवशक्त्यात्मक होने के कारण इसमें शिव तथा शक्ति दोनों के ही भाग के चक्र विद्यमान हैं। वह वृहद्बड़वानलतन्त्र में ऐसा है:—

" बिन्दुचाष्टदलंपद्मषोढशारंत्रिवृत्तकम् ।
चतुरस्राख्यधकं च शिवचक्राणिपंच च ॥
त्रिकोणं चाष्टकोणञ्च दशकोणद्वयं तथा ।
चतुर्दशारमेतानि शक्तिचक्राणि पञ्च ह ॥ "

फिर श्रीयन्त्र में सृष्टिस्थितिसंहारानाख्याभासा एवं पाँचों ही भाग विद्यमान हैं। अतः वही आम्नायों का भाग भी होगा, क्यों कि वृहद्बडवानलतन्त्र में ऐसा है:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीयन्त्रराजः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" पूर्वाम्नायः सृष्टिरूपः स्थितिरूपश्च दक्षिणः ।
संहारो पश्चिमो देवि त्वुत्तरानुग्रहो भवेत् ॥

श्रीयन्त्रका आम्नाय- विभाजन के विषय में वही तन्त्र म ऐसा है:—

" भूवृत्तशशिनागाढ्ं सृष्टिचक्रं वरानने ।
मनुर्दीग्दशकैर्युक्तं स्थितिचक्रं शुवावहम् ॥
वस्वग्निबिन्दुसंयुक्तं चक्रं संहारकं स्मृतम् ।
सर्वैश्चानाख्यचक्रंतु भावयेत्सा धकोत्तमः ॥

इसलिए श्रीयन्त्र का क्रमार्चन पूर्वोक्त प्रकारका हुआ। अर्थात् भूपूर, त्रिवृत्त, षोडशदल और अष्टदल इन चार चक्रों का समष्टिरूप पूर्वाम्नायात्मक सृष्टिचक्र; चतुर्दशार, वहिर्दशार तथा अन्तर्दशार दक्षिणाम्नायात्मक स्थितिचक्र फिर अष्टर, त्रिकोण तथा बिन्दु पश्चिमाम्नायात्मक संसार चक्र होते हैं। अतएव दक्षिणामूर्ति मतकी श्रीचक्रावरणपूजा कासृष्टिक्रम में, स्थितिचक्र में, स्थितिक्रम में स्थितिचक्र में तथा संहारक्रम में संहारचक्र में पूजाकी विश्रान्ति होती है। तथा बिन्दु से भूपूर तक सबचक्रों का समष्टिरूप उत्तराम्नायात्मक आनाख्याचक्र बनता है। इसके अनन्तर बिन्द्वन्तगतचक्र, षड्डाकिनीविद्या, पञ्चपञ्चिका विद्या तथा षडध्व इत्यादि सबमिलकर बिन्दु चक्र से भूपूरचक्रपर्यन्त के समस्त चक्रों का समष्टिरूप ऊर्ध्वाम्नायात्मक भासाचक्र रूप बनता है। दक्षिणामूर्ति मत की श्रीचक्रवरणपूजा में पञ्चधा आम्नायपूजा होती है। तीन प्रकारकी आम्नाय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्व ही लिखीजाचूकी हैं। चतुर्धा सर्वाधिकार अर्थात् जगदम्बिका के सर्वाम्नायों की चेतनासत्तारूप और पञ्चधा षडन्वयशांभवविद्या अर्थात् मूलसमष्टिरूपिणी श्रीविद्याके षट्चक्रस्फुरणसत्तारूप की सपर्या होती है।

केवल एक काल में ही श्रीचक्रार्चन करने वालों के लिए तो ब्रह्मचर्याश्रम के अन्तर गृहस्थाश्रम ग्रहण करने की आकांक्षा जिन ब्रह्मचारियों की है उनके लिए सृष्टिक्रम से, गृहस्था श्रमियों के लिए स्थितिक्रम से और गृहस्थाश्रम में न आनेवाले ब्रह्मचारियों तथा वानप्रस्था श्रमियों के लिए संहारक्रम से अर्चन करनी चाहिए।

कुलमार्ग में निशापूजा की आवश्यकता दिखाकर उसकी वडी महिमा लिखी है। किन्तु श्रीयन्त्रमें प्रातः, मध्यान्ह और सायं तीनों कालों में श्रीचक्र क्रम दिखाया गया है। तुरीयाका क्रम अर्थात् निशा-पूजा का क्रम नहीं दिया गया है। कारण यह है कि जो एकावार पूजा करते हैं, वे प्रातः काल में अथवा निशाकाल में पूर्वोक्त आश्रम के नियम से एक सम में ही करते हैं। परन्तु यथार्थ क्रमानुसार क्रमार्चन करने वाले साधक सन्ध्यात्रय में सृष्टि स्थिति तथा संहारक्रम से सपर्या कर निशीथिनी में तुरीय सन्ध्यारूप से पूर्ण श्रीयन्त्रको तेजोमय तुरीया श्रीविद्याधाम भावना करके महानिर्वाण भैरव तथा निर्वाण महात्रिपुरसुन्दरी की समर्चना किया करते हैं। "ब्रह्मविद्याजीवदशां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निरन्त्री ' इत्यादि श्रुतिवचन से पशु-बलि भी निशा समय में ही देकर वीरभोजनादि किये जाते है। उस निशा-पूजा की अवस्था में समस्त श्रीचक्र ज्योतिर्मय होकर महानिर्वाण भैरवात्मक बन जाता है। उन महानिर्वाण भैरवका वक्षस्थलान्तर्गत शुक्लारुणरूप अन्य श्रीयन्त्रके बिन्दुके अन्तर्गत शुन्यागारमें ज्वाला के अन्तःस्थिता परब्रह्मस्वरूपिणी निर्वाणमहात्रिपुरसुन्दरी विद्यमान होती है। सायुध सालङ्कार ही ध्यानोक्तरूप उसकी पूजा होती है।

हमारा हिन्दुमत द्वैतवाद और अद्वैतवाद अर्थात् कर्मकाण्ड तथा ज्ञानकाण्ड के भेद से दोप्रकार का है। कर्मकाण्ड़ के गाणपत्य, सौर, वैष्णब, शैव तथा शाक्त इत्यादि अनेक भेद हो गए हैं। फिर ज्ञानकाण्ड़ में सांख्य, मिमांसक, न्याय, वैशेषिक, पातञ्जल तथा वेदान्त इत्यादि अनेक भेद हो गए है। किन्तु इन सब भेदों की श्रीयन्त्र में ही समष्टि हो जाने पर भी कर्मकाण्डानुसार श्रीविद्या का पूजा-विधान होने के कारण यह द्वैतवाद (कर्मकाण्ड) जैसा प्रतीत होता है। दृष्टिगोचरीभूत त्रिकोणचक्र जो है वह चिच्चक्र, दृष्टिगोचरीभूत बिन्दुचक्र जो है वह आनन्दचक्र तथा अदृष्टिगोचर अर्थात् केवल भावना-ज्ञेय बिन्दुन्तर्गत चक्र जो है वह सच्चक्र होने के कारण श्रीचक्र सच्चिदानन्दरूप कहलाता है। अद्वैतवादी लोग भी सच्चिदानन्द कोही मानते हैं। पुनश्च पूजारम्भमें भूतशुद्धि के अन्त में निम्नलिखित प्रकार की भावना करनी चाहिए:-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" अह देवि नचान्योस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।
सच्चिदानन्दरूपोहमात्मानमिति चिन्तयेत् ॥ "

इस वचन से भी विदित होता है कि केवल पाठमात्र नहीं करना वरन भावना भी करनी चाहिए। तथा पूजा के अन्त में और तत्व शुद्धि के बाद भी " गुरुचरणरतोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् " इत्यादि जो पाठ करने के लिए बनाया गया है, वह भी भावना के लिए लिखा है। " जीवन्मुक्ताश्च कौलिकाः " इत्यादि वचन भी तत्तस्थानों में देखने में आते हैं। इससे भी अद्वैतवादियों का " सोऽहं ब्रह्म " इत्यादि सिद्धान्त भी इसी में मिल गया। केवल भेद इतना ही हुआ कि अद्वैतवादी वेदान्तियों की प्रक्रिया विषय में चित्तशुद्धि हो जाने पर किसी कर्म्म और उपासना के अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं रहती। किन्तु फिर भी सर्वकर्मसंन्यासपूर्वक सद्गुरूपदिष्ट रीति द्वारा वेदान्त के मत से " प्रज्ञानं ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि तत्वमसि, अयमात्माब्रह्म " इत्यादि चारों वेदों के महावाक्यों के अर्थ का श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन करना चाहिए। श्रीविद्या के मत में क्रमदीक्षा ग्रहण करके मन्त्रार्थ का मनन कर मन्त्र चैतन्य के साथ जप करना चाहिए। अतः श्रवण मंत्रग्रहणकरना ही है, मनन मन्त्रार्थ का ही है और निदिध्यासन मन्त्र चैतन्य के साथ जपकरना है। अन्तःकरणनिष्ठ असंभावनाविपरीतभावनादोष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निवृत्ति बनती ही नहीं। असंभावनादिदोषनिवृत्ति के बिना अनर्थ की निवृत्ति परमानन्दप्राप्तिरूप मोक्ष नहीं हो सकता। यही तो मोक्षमार्ग (वेदान्त तथा श्रीविद्या) का सिद्धान्त है। अतः तन्त्रों में शंकर बार—बार कहते हैं कि:—

" जपात्सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्जयात्सिद्धिर्वरानने ॥ "

पुनश्च— " नदेशकालनियमो शौचादिनियमो नहि ।
भक्ष्यादिनियमो नास्ति महामन्त्रस्यसाधने ॥ "

वेदान्तविषय में आत्मा तथा ब्रह्मका अभेद वर्णित है अथवा भेद? यह प्रमाणगत संशय है। फिर आत्मा और ब्रह्म का अभेद सत्य है अथवा भेद? यह प्रमेयगत संशय है। इन दोनों संशयों को असंभावना के नाम से पुकारा गया है। वेदान्त के मतमें श्रवण-मनन करके, श्रीविद्योपासना के मतमें मन्त्रार्थचिन्तन तथा मन्त्रचैतन्य-भावसे तत्वशुद्ध्यादि करने के अनन्तर ही असंभावना दोष की निवृत्ति होगी। आत्मा और ब्रह्म का भेद ही सत्य हैं अथवा देहादिप्रपञ्च ही सत्य है? इस प्रकार के विपरीत निश्चय को विपरीत भावना के नाम से पुकारते हैं वेदान्त में निदिध्यासन करके और श्रीविद्योपासना में चक्रार्चन के पश्चात् मपञ्चक से तत्वशुद्धि के पश्चात् मन्त्रशिखा के विचार से विपरीतभावना-दोष की निवृत्ति होगी। उक्त रीति से असंभावनादिदोष की निवृत्ति होने पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" शुद्धोऽहं, बुद्धोऽहं, मुक्तोऽहं, परिपूर्णोऽहं, चैतन्यानन्द घनोऽहं, भैरवोऽहं, शिवोऽहम्, " इत्याकार दृढ अपरोक्ष आत्मसाक्षात्कार हो जाता है। उसी समय अनारब्ध [सञ्चित] कर्म का भी विनाश होता है और आगामी (क्रियमाण) कर्म का भी कमलदलगतजलवत् असंबन्ध तो अवश्य होगा, किन्तु विक्षेपकी वासना जो प्रारब्धकर्म है, उसे तो भोगकरने से ही समाप्त करना हैं। भोग के बिना नष्ट न होने वाले प्रारब्धकर्मों का भी सर्वतो बलवान् संयम द्वारा उपशम हो सकता हैं।

" त्रयमेकत्र संयम " इस सूत्र द्वारा योगीश्वर पतञ्जलिने योगदर्शन-विषय में धारणा, ध्यान तथा असंप्रज्ञात समाधि इन तीनों को ही संयम माना है।

यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार तो इसके उपयोग के लिए जानने चाहिए। जब संयम द्वारा मनोनाश और वासनाक्षय होगा, तब योगी की असंप्रज्ञातसमाधि सिद्ध होगी। सकल वृत्तियों के विलय के साथ ध्येयाकार वृत्ति के लोप का नाम ही तो शास्त्र में असंप्रज्ञातसमाधि कहागया हैं। एवं संयमद्वारा मनोनाश [वासनाक्षय] होने पर भी तत्व ज्ञान नहोने के कारण निर्बीज समाधि नहीं हो सकती, किन्तु सर्वप्राणि साधारण सुषुप्ति के सदृश सबीज ही होगी। यद्यपि लय-चिन्तनपूर्वक लयसमाधि ही क्यों न हो, तथापि उस में भी सबीज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समाधि ही होगी। जब वेदान्त के श्रवण, मनन, निदिध्यासनादि से अथवा श्रीविद्योपासना से तत्वज्ञान और संयमद्वारा मनोवासना का क्षय होगा तब जीवन्मुक्ति दृढ होगी। इसी अवस्था को अत्यन्ताभावसमापत्ति माना गया है। अर्थात् वाधितानुवृत्तिद्वारा जीव ईश्वर-जगद् भेदभ्रान्ति-वृत्ति व्युत्थित नहोनेकेकारण बिलकुल प्रतीत न होना ही अत्यन्ताभाव समापत्ति कही जाती है। इनको श्रुति, (वेद तथा तन्त्र दोनों की एकता ही श्रुति है) स्मृति, पुराण, युक्ति और अनुभूति आदि अनेक प्रमाणों से बिद्वत्संन्यास, परमयोगी अथवा कौलावधूत कहा गया है। जिसप्रकार तत्वज्ञान न होनेके कारण सबीज समाधिवाले अपरम योगी हैं, फिर संन्यासहोनेपर भी विविदिषा संन्यास है न कि विद्वत्संन्यास। उसी प्रकार कुलमार्ग में आरूढ होने पर भी उपासक सामान्य कौल है न कि कौलावधूत। किञ्च संयम के न होने से मनोनाश (वासना—क्षय) नहीं होता हैं। "तत्वमसि" आदि महावाक्यों के श्रवण—मननादि विचारजन्य 'अहंब्रह्मास्मि ऐसाज्ञान होने से अथवा श्रीविद्या की क्रमदीक्षा द्वारा क्रमार्चनकर तत्वशुद्ध्यादियों से "भैरवोऽहं शिवोऽहम्" इस प्रकार ब्रह्म और आत्मा की ऐक्य-निश्चयात्मिका अखण्डाकारवृत्ति उत्पन्न होते ही अविद्या और तत्कार्यको नष्ट करके स्वयं भी वृत्ति होने के कारण वह (अखण्डाकारवृत्ति) अपने अधिष्ठान आत्मा में लीन हो जाती है। जिस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकार काष्ठस्थित अग्नि काष्ठ—समुदाय का भस्मकर स्वयं भी नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार उक्त अखण्डाकारवृत्ति भी आत्मा तथा अनात्मा के अनादि इतरेतराध्यास (जड-चेतनाग्रन्थि) को भेदन करके स्वयं निःस्नेह दीपवत् निर्वाण हो जाती है। किन्तु इस प्रकार वृत्ति-विलय होने के पहले भ्रान्तिनिवृत्तिवाले जीवन्मुक्त को विचारावस्था में अनादि अनिर्वचनीया त्रिगुणात्मिका माया तथा माया के कार्य जीवन्ईश्वर-जगद्-भेद-भ्रान्ति अपने अधिष्ठान ब्रह्म में वाध होने पर भी वृत्युत्थान अवस्था विषय में प्रारब्ध कर्म्म की प्रेरणा से वाधितानुवृत्ति द्वारा सुख-दुःखादि प्रपञ्च का अनुभव हो ही जाती है। इसी अवस्था का नाम अभाव—समापत्ति है न कि अत्यन्ताभाव—समापत्ति। क्यों कि मनोनाश (वासना—क्षय) के बिना तत्वज्ञानीको मिथ्यारूप से भी प्रारब्धप्रेरणा से सुख—दुःखादिप्रपञ्च का अनुभव अवश्यम्भावी है। श्रुति में ऐसा लिखा है:—

" भिद्यते हृदय ग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः ।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥ "

इस वचनानुसार जिन महात्माओं की हृदयग्रन्थिका भेदन तथा सर्व संशयों का उच्छेदन, और प्रारब्धातिरिक्त कर्म (संचित आगामी) का नाश हो गया है, ऐसे जीवन्मुक्त महात्माओं को प्रारब्ध की प्रेरणा से सुखदुःखादि प्रपञ्च की प्रतीति होने पर भी प्रारब्धकला भोग की समाप्ति कर देने के बाद विदेहकैवल्य अर्थात् पुनर्जन्म न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होना अवश्यम्भावी मानागया है। यतः—

"न स पुनरावर्तते नस पुनरावर्तते ॥"

तथा— "यद्गत्वा न निवर्तन्ते तध्दामपरमं मम ॥"

इत्यादि अनेक शास्त्रवचन से इस विषय का समर्थन करते हैं।

जैसा कि वेदान्त—विषय में है कि ब्रह्मज्ञान होने पर भी प्रारब्ध का भोग भोगना ही पड़ेगा, श्रीविद्योपासना—विषय में वैसा नहीं है। कौलावधूत अपने तथा दूसरे के बनेहुए प्रारब्धको भी रोक सकते हैं। विश्वामित्रजीने जिस प्रकार दूसरे स्वर्ग की रचना करदी थी, उसी प्रकार कौलावधूत भी दूसरे प्रारब्ध की रचना करने के लिए समर्थ है। तन्त्रान्तर में श्रीविद्या विषय में लिखा भी है कि '**कर्मरेखानाशकर्त्री कर्मरेखाविनोदिनी**' इति। पुनश्च योगवाशिष्ठ महारामायण की रीति से तो ये ज्ञान योगी चतुर्थ भूमिका से लेकर सप्तम भूमिका पर्यन्त आरूढ होने वाले होते हैं। तथाहि शुभेच्छा, शुभविचारणा, तनुमानसा, सत्वापत्ति, असंशक्ति, पदार्थाभाविनी, तुर्यगा एवं नाम से ज्ञान की सप्त भूमिकायें मानी गई हैं। इन सप्त भूमिकाओं में तृतीय भूमिका तकतो ज्ञानप्राप्ति की साधना भूमिका मात्र होने से श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन पर्यन्त ही जानना चाहिए। इन तीन भूमिकाओं को जाग्रत भूमिका भी कहा गया है, क्यों कि ज्ञान के बिना बोध न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होने वाले जीव ईश्वर जगत् की भेद भ्रान्ति जगत् के न सत्यरूप प्रतीत होते हैं। तथा ये ३ भूमिकायें तो ज्ञानप्राप्तिसाधन भूमिका होने के कारण ज्ञानप्राप्ति के बिना सिद्ध भूमिका नहीं हो सकती। सिद्ध भूमिकायें तो चतुर्थ भूमिका से लेकर सप्तमी भूमिका पर्यन्त ही मानी गई हैं। चतुर्थी भूमिका को स्वप्न-भूमिका भी कहते है, क्यो कि आत्मज्ञानके बल से वाध होने पर भी इस भूमिका में मिथ्यारूप से स्वप्नके समान जीवेश्वरजगद्भेदभ्रान्ति प्रतीत होती है। अतः इस चतुर्थ—भूमिका में स्थित ज्ञानयोगी 'ब्रह्मविद्' कहा गया है। पञ्चम—भूमिका को सुषुप्ति भूमिका माना जाता है, क्यो कि इस भूमिका में सुषुप्ति के समान समाधि काल में जीवेश्वरजगद्भेद की भ्रान्ति प्रतीत नहीं होती। परञ्च समाधि से पञ्चम भूमिका के ज्ञानयोगी स्वयं व्युत्थित भी हो जाते हैं। यहाँ पर ये 'ब्रह्मविद्वर' नाम से पुकारे जाते हैं। षष्ठ भूमिका गाढ सुषुप्त्यवस्था है, क्यों कि जिस प्रकार समाधि में जीवेश्वरजगद्भेद की भ्रान्ति की स्फूर्ति नहीं होती है, उसी प्रकार सुषुप्ति में भी जीवेश्वरजगद्भेदभ्रान्ति का स्फुरण नहीं होता है। परन्तु षष्ठ—भूमिका के ज्ञानयोगी समाधि से स्वयं नहीं उठ सकते, वरन् उन्हें उठाना पडता है। इस भूमिका में इन का नाम 'ब्रह्मविद्वरीयान्' माना जाता है। यद्यपि चतुर्थ-भूमिका में योगी जीवन्मुक्ति का भाव सिद्ध होता है, तथापि समाधि से व्युत्थान होने तथा न होने के तारतम्य से सप्तम-भूमिका पर्यन्त यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वीकार किया गया हैं। अतएव सप्तमभूमिका में स्थित ज्ञानयोगी स्वतः अथवा प्रयत्न से किसी प्रकार समाधि से नहीं उठते हैं। यह भूमिका ज्ञाननिष्ठा की पराकाष्ठा है अतएव मनसा वाचा अगम्य है। इसी भूमिका में आरूढ ज्ञानयोगी ब्रह्मविद्वरिष्ठ कहलाती है। यह भूमिका में तो किसी काल में भी जीवेश्वरजगद्भेदभ्रान्ति का स्फुरण नहीं होता है। ईश्वर-प्रेरणा से केवल प्राणवायु का संचालनमात्र होता रहता है। परन्तु शरीर का होना न होना इन के लिए समान है। इनको शरीरादिकों का भान बिलकुल नहीं होता है।

इन प्रकार के वेदान्त-सिद्धान्त का भी श्रीविद्योपासना में ही श्रीयन्त्रद्वारा समावेश हो जाता है। पूर्व में भी कह चुका हूँ कि किस किस चक्र किस किस अवस्था के तथा किस किस आम्नायात्मक हैं। अब यहाँ उनका विशेष वोध कराने के लिए फिर दुबारा वर्णन करता हूँ। भूपूर चार्वाकदर्शनात्मकचक्र में तीव्रजाग्रदवस्था, त्रिवृत्त जितेन्द्रिय [स्मृतिपुराणादि] दर्शनात्मकचक्र में जाग्रदवस्था, षोडशदल. बौद्धदर्शनात्मकचक्र में स्वप्नावस्था तथा अष्टदल गाणपत्यदर्शनात्मकचक्र में सुषुप्त्यवस्था समाविष्ट होती है। इन प्रकार ये चारों चक्र पूर्वाम्नायात्मक सृष्टिचक्र हैं। और इन को अज्ञान की ४ अवस्था में समाविष्ट जानना चाहिए। ज्ञान की सप्त भूमिकाओं में भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उक्तप्रकार से समावेश होता है। चतुर्दशार सांख्यमिमांसकन्यायवैशेषिकपातञ्जलवेदान्तोद्दिदर्शनात्मक चक्र में शुभेच्छा नामक प्रथम-भूमिका, बहिर्दशार वैदिकदर्शनात्मक चक्र में शुभविचारण नाम्नी द्वितीय-भूमिका तथा अन्तर्दशार सौरदर्शनात्मकचक्र में तनुमानसा तृतीय-भूमिका समावेश होता हैं इस प्रकार ये ३ चक्र दक्षिणाम्नायात्मक स्थितिचक्र हैं और इन को ज्ञान की ३ साधन भूमिका में समाविष्ट जानना चाहिए। अष्टकोण वैष्णव दर्शनात्मकचक्र में सत्वापत्ति चतुर्थ-भूमिका, त्रिकोण शाक्तदर्शनात्मक चक्र में असंशक्ति पञ्चम-भूमिका और बिन्दु शैवदर्शनात्मक चक्र में पदार्थाभाविनी षष्ठम-भूमिका का समावेश होता है। इस प्रकार ये तीनों चक्र पश्चिमाम्नायात्मक संहारचक्र हैं और इन को ज्ञान की ३ सिद्ध-भूमिका हैं। परन्तु ये ३ सिद्धभूमिका होने पर भी समाधि से उठ सकने के कारण पराकाष्ठा में नहीं मानी गई है। इस लिए इन १० ही चक्रों का समष्टि रूप को उत्तराम्नायात्मक अनाख्यचक्र माना गया है। फिर बिन्दु का अन्तर्गत महावैन्दव कौलात्मकचक्र में तुर्यगा सप्तम-भूमिका समाविष्ट होती है। इस चक्र सहित के श्रीयन्त्र उर्ध्वाम्नायात्मक भासाचक्र माना गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब आम्नायों का भावना का वर्णन करता हूँ । पूर्वाम्नाय में अज्ञानावस्था होने के कारण उपास्य देवता को भैरवी माता और अपनेको दास अथवा पुत्र मान कर मातृ—पुत्र भाव से सेवा भाव से उपासना करना लिखा है। क्षमास्तुति में ऐसा है:—

" अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
दासोऽयमितिमां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ "

दक्षिणाम्नाय में ज्ञान की साधन-भूमिका होने के कारण उपास्य देवता को भैरवी शक्ति और अपने को भैरव भर्ता मानकर दाम्पत्य-भाव से कुलसन्ध्यादि विधि द्वारा उपासना किया जाता है। भावना करने के लिए ऐसा लिखा है:—

" अलिपिसितपुरन्ध्रीयोगपूजापरोऽहम् ।
वहुविधकुलमार्गारम्भसंभावितोऽहम् ॥
पशुजनविमुखोऽहं भैरवीमाश्रितोऽहम् ।
गुरुचरणरतोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥ "

यहाँ पर " मैं भैरवी का आश्रय करने वाला भैरव तथा शिव हूँ " एवं भावना से स्पष्ट विदित होता है कि " भैरवोऽहं शिवोऽहम् " की भावना होने से भी भैरवी को पृथक् निज-शक्तिरूप माना है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पश्चिमाम्नाय में ज्ञान की सिद्ध-भूमिका होनेके कारण उपास्य देवता का और अपना ऐक्य मानकर भैरवी—स्वरूप जानकर कुलार्चनादि विधि से उपासित दिखाई गई है। लिखा भी है:—

" साऽहमस्मीत्यभेदेन विविक्तस्था उपासते ॥ "

यहाँ ऐसा भाव होने से भी " अहं, इदं, त्वं " का लेस रह जाता है। उत्तराम्नाय में भी ऐसा ही है किन्तु भावना में शूक्ष्म भेद है वह अनुभवगम्य है। मैं इतना ही लिख सकता हूँ की उत्तराम्नायोपासना में पश्चिमाम्नायवत् भावना तो है ही फिर निम्नलिखित भावना भी करनी चाहिए:—

" रचितयुवतिवेशस्तद्धिया ध्यायते सः ॥ "

ऊर्ध्वाम्नाय में ज्ञान—भूमिका की पराकाष्ठा होने के कारण उपास्य देवता तथा अपने को भी ' अहं, इदं, त्वं ' की लेश रहीत केवल अवांमनसगोचर सन्मात्र पूर्णब्रह्ममय मानकर दिव्य चक्रार्चनादि तत्वशुद्धियुक्त राजाधिराज योग द्वारा उपासना करना होगी। इस विषय में ऐसा लिखा है:—

" श्रीविद्या मखिलागमान्तविदितब्रह्मस्वरूपां शिवाम् ।
सत्यज्ञानसुखां विशेषरहितामाद्यन्तहीनां पराम् ॥
आत्मत्वेन विभावयेद्वरवर: सद्यो विमुक्तिं गतो—
ऽप्यादेहान्तमुपासनैकरसिकः श्रौतं विधिमानयेत् ॥ "

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुनश्च— "केवलोऽहं शिवोऽहम् ।" तथा "ब्रह्मविद्ब्रह्मैव भवति ।"
तथा— "क्रमदीक्षायुतो देवि क्रमाच्छम्भुर्भविष्यति ॥"

इत्यादि शास्त्र वचनों का समन्वय होता है ।

श्रीविद्योपासना के पराकाष्ठा में पहुँच कर कर्म और उपासना के अनुष्ठानकी आवश्यकता नहीं होती है । अतः महासाम्राज्यमेधादीक्षा के पश्चात् वानप्रस्थाश्रम ग्रहण करना आवश्यक ही है । परन्तु शिखा—सूत्र का त्याग न करना चाहिए । बृहद्वडवानलतन्त्र में ऐसा है:—

"कौलावधूतमार्गेषु तीर्थयात्रां न च व्रजेत् ।
तीर्थाटनं च संन्यासं व्रतधारणमेव च ॥
उपवासं मुण्डनं च सर्वथा परिवर्जयेत् ।
पूर्णाभिषिक्ते शिरसि तेन तत्र न मुण्डनम् ॥"

परन्तु जिन को महासाम्राज्यमेधादीक्षा न होकर केवल (लघु) साम्राज्यमेधादीक्षा तक ही है, उनको अन्तः- करण से जीवन्मुक्त होने पर भी गृहस्थाश्रमी यदि हो तो महाराज जनक, श्रीराम तथा श्रीकृष्णादि की भाँति कर्म्म का परित्याग नकरना चाहिए । अतएव श्री १०८ स्वामी शंकराचार्यने कहा है किः—

"यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं नाचरणीयं नाचरणीयम् ॥"

श्रीकृष्ण भगवान् ने भी गीता में कहा है किः—

"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्यथा लोग इन का आदर्श सम्मुख रखकर कर्म परित्याग करने लगेंगे।

अपने अपने मत की सब ही प्रधानता मानते है। तथापि पूर्वोक्त सम्पूर्ण मतों तथा तन्त्र की अशेष आम्नायिकाओं और वेदकी चतुर्विंशति गायत्रियों की श्रीविद्या में समष्टि होने के कारण हिन्दु मात्र के हित के लिए इस से बढकर दूसरा सिद्धान्त दृष्टिगोचर नहीं होता। अतएव हिन्दू धर्म के संस्थापक श्रीं १०८ स्वामी शंकराचार्यजी ने नेपालस्थ ज्योतिर्लिङ्ग श्रींपशुपतिनाथ के शिरमें चन्दन से श्रीयन्त्र निर्माण कर नित्य तथा नैमित्तिक अर्चन करने की प्रणाली प्रचलित की है। और इसी के अनुसार श्रीपशुपतिनाथ की पूजा चलरही है। द्वैतवादी लोग पुराणादि शास्त्रों से ही शैव, वैष्णव, गाणपत, शाक्त तथा सौर इत्यादि मतमतान्तर निकाल अपने मन के अनुकूल मत स्वीकार कर स्वमत को सर्वश्रेष्ठ मान वैठते हैं, क्योकि पुराणादियों का जिस प्रकार भी अर्थ किया जा सकता है। परन्तु श्रीविद्योपासना मनोविज्ञान का मूलतत्व होने के कारण यह शाम्भवीविद्या है इसका अनेकार्थ नहीं हो सकता। इस विषय में आगमशास्त्र में ऐसा लिखा है:—

"वेदशास्त्रपुराणानि सामान्यगणिका इव ।
इयन्तुशाम्भवीविद्या गुप्ताकुलवधूरिव ॥"

फिर अद्वैतवादी लोग अर्थात् सांख्य, पूर्वमीमांसा, न्याय, वैशेषिक, पातञ्जल और वक्रवेदान्ती शुन्यवादी आदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवैदिक लोग भी अपने अपने मत को प्रधान मानते हैं। इन का जब परस्पर वादविवाद (शास्त्रार्थ) चलता है और अपनी वाक्चातुरी से जो प्रतिवादी को निरुत्तर कर देता है, वही सब से विद्वान् महात्मा बन जाता है तथा उसी का मत सर्वोत्तम माना जाता है। परन्तु यह श्रीवि-द्योपासना के मत कुलवधू के समान अतिगोपनीय होने के कारण श्रीविद्योपाशक तो अपने ही मनोराज्य में विचार करते हैं न कि मनुष्यों के साथ। अतएव उन के लिए शास्त्रार्थ अथवा जय-पराजय का प्रयोजन ही नहीं है। जब श्रीविद्याका पूर्णतया अनुभव हो जाता है, तब जिस प्रकार मिश्री का आस्वादन करने वाला पुरुष 'मिश्री कडुवी होती है' इस प्रकार कहने वाले पुरुष की प्रतीति नहीं करता है, उसी प्रकार श्रीविद्यामृतपानसन्तृप्त-म मानव के लिए अन्य मतों की आवश्यकता नहीं होती है, और न उनको मानने के लिए वह उद्यत ही होता है। वास्तव में इस कुलमार्गोक्त श्रीचक्रोपासना के समान कोई भी द्वैतवादी अथवा अद्वैतवादी मत नहीं है। श्री १०८ स्वामी शंकराचार्यजी का उक्ति ऐसा है:—

"शैवाः सौराश्च गाणेशा वैष्णवा शक्तिपूजकाः ।
भवन्ति यन्मयाः सर्वे सोहमस्मि परः शिवः ॥"

सब मतों की तात्पर्य-समाप्ति इस मत में होने के कारण यह विद्या सच्चिदानन्दान्तरगत मार्ग है। इस प्रकार महत्वपूर्ण श्रीविद्योपासना को मादृश अल्पज्ञ किस प्रकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जान सकता है ? तथापि यथा मति अब श्रीयन्त्र का षोड-शावरण का नाम संकेत देता हूं। वह पद्धति के अनुसार दियाजाएगा, किन्तु मन्त्र नहीं होगा केवल नाम मात्र रहेगा।

१. शुक्लारुणकृष्ण- त्रिरेखानिर्मित ३ भूपुर को ध्यान करके ४ द्वार में यथोक्तरूप ध्यान करके पूजा करें। यथाः—

पश्चिमाम्नाय पश्चिमद्वार, वीरकुब्जिकापश्चिमद्वारनायिका। उत्तराम्नायउत्तरद्वार, सिद्धिलक्ष्मीउत्तर नायिका। पूर्वाम्नायपूर्वद्वार, उन्मनीपूर्वद्वारनायिका। दक्षिणाम्नाय दक्षिणद्वार, आद्याकालीदक्षिणद्वारनायिका। पश्चिमे, सर्वयोगिनियां तथा सर्वभूतों। पूर्वे, क्षेत्रपाल। दक्षिणे, महागणपति। उत्तरे, वटुक भैरव। नैर्ऋत्ये, तिरस्करिणीदेवी आग्नेयां, वनदुर्गा। ईशान्यां, कामदेव। वायव्यां, वसन्त। पार्श्वयोः, शंखनिधि तथा पद्मनिधि।

प्रथमरेखा में १० सिद्धियाँ रक्तवर्णा निधिवाहना चतुर्भुजा पाश, अंकुश उपर की भुजाओं में तथा दो कमलों के नीचे की दो भुजाओं में धारण की हुई ध्यानकरके पूजा करें। यथाः— १ अणिमासिद्धि। २ लघिमासिद्धि। ३ महिमासिद्धि। ४ इशित्वसिद्धि। ५ वशित्वसिद्धि। ६ प्राकाम्यसिद्धि। ७ भुक्तिसिद्धि। ८ इच्छासिद्धि। ९ प्राप्तिसिद्धि। १० सर्वकामसिद्धि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वितीयरेखामें नीलवर्णा दोभुजाओं में लाल कमल तथा कपालपात्र धारण किए हुए रक्तवस्त्राभरण से सुशोभित ८ मातृकाओं का ध्यान करके पूजा करें। यथा— १ ब्रह्माणी। २ माहेश्वरी। ३ कौमारी। ४ वैष्णवी। ५ बाराही। ६ इद्राणी। ७ चामुण्डा। ८ महालक्ष्मी।

तृतीयरेखामें रक्तवर्णा रक्तवस्त्रविभूषणा चतुर्भुज उपर के दो हाथों में पाश, अंकुश नीचे के हाथों से अपने अपने मुद्रा दर्शाती हुई १० मुद्रादेवियां के ध्यान करके पूजा करें। यथाः— १ सर्वसंक्षोभिणी। २ सर्वविद्राविणी ३ सर्वाकर्षिणी। ४ सर्ववशंकरी। ५ सर्वोन्मादिनी। ६ सर्व महांकुशा। ७ सर्वत्रिखण्डा। ८ सर्व बीजा। ९ सर्वखेचरी १० सर्वयोनि।

इन सब को "**प्रकट योगिनी**" नाम से पुकारते हैं इन **त्रैलोक्यमोहनचतुरस्त्रपृष्ठत्र्यात्मकचक्र** के मध्य में **त्रिपुराचक्रनायिका** का यथोक्त ध्यान तथा पूजा कर वाम ओर में **सर्वसंक्षोभिणीमुद्रा**, दक्षिण ओर में **अणिमासिद्धि** तथा अग्र में **चार्वाकदर्शन** की पूजा करें। इति प्रथमावरणम्

२. **शुक्लारुणकृष्ण** रेखानिर्मित **त्रिवृत्तचक्र** को ध्यान करके प्रथम वृत्तमें रक्तवर्णा पाशांकुशधरा २९ मातृकाओं की पूजाकरे। यथाः— १ कालरात्री। २ खातिता। ३ गायत्री। ४ घण्टाधारिणी। ५ ङार्णात्मिका। ६ चण्डा। ७ छात्मिका। ८ जया। ९ झट्कारिणी। १० ज्ञानरूपा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११ टङ्कहस्ता । १२ ठंकारिणी । १३ डकारिणी । १४ ढकारिणी । १५ णकारिणी । १६ तकारिणी । १७ स्थानी । १८ दाक्षायनी । १९ धात्री । २० नादा । २१ पार्वती । २२ फेत्कारिणी । २३ वन्धिनी । २४ भद्रकाली । २५ माया । २६ श्री । २७ षण्ढा । २८ सरस्वती । २९ हंसवती । द्वितीयरेखामें रक्तवर्णा धनुर्बाणधरा १६ मातृकाओं का ध्यान कर पूजा करें । यथाः— १ अमृता । २ आकर्षणी । ३ इन्द्राणी । ४ ईशानी । ५ उमा । ६ ऊर्ध्वकेशी । ७ ऋद्धिदा । ८ ऋद्धीशा । ९ लृता । १० लृका । ११ एकपादा । १२ ऐश्वर्या । १३ ओंकारात्मिका । १४ औषधा । १५ अम्बिका । १६ अक्षरात्मिका । तृतीयवृत्तमें रक्तवर्णा पाशांकुश धनुर्बाणधरा १६ नित्याओं का ध्यान कर पुजा करें । यथाः— १ कामेश्वरी । २ भगमालिनी । ३ नित्यक्लिन्ना । ४ भेरुण्डा । ५ वह्निवासिनी । ६ महाव्रज्रेश्वरी । ७ शिवदूती । ८ त्वरिता । ९ कुलसुन्दरी । १० विमला । ११ नीलपताका । १२ विजया । १३ सर्वमंगला । १४ ज्वालामालिनी । १५ विचित्रा । १६ महात्रिपुरसुन्दरी । इन सब को 'मातृकायोगिनी' नाम से पुकारते हैं। इस त्रैवर्गसाधनकरत्रिवृत्तात्मकचक्र के मध्य में त्रिपुरेशिनी चक्रनायिका का यथोक्त ध्यान तथा पूजा कर वाम ओर में महायोनिमुद्रा दक्ष ओर में गरिमासिद्धि तथा अग्र में स्मार्तदर्शन की पूजा करें । इति द्वितीयावरणम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. **पूर्णचन्द्रनिभ षोडशदलचक्र** को ध्यानकरके शुभ्रवर्णा शुक्लाम्बरधरा पाशांकुशामृतपूर्णस्फटिकपात्रच-शङ्कितकरा १६ गुप्तयोगिनीयों का ध्यान कर पूजा करें। यथा— १ कामाकर्षिणी। २ बुद्ध्याकर्षिणी। ३ अहंकारा-कर्षिणी। ४ शब्दाकर्षिणी। ५ स्पर्शाकर्षिणी। ६ रूपकर्षिणी ७ रसाकर्षिणी। ८ गन्धाकर्षिणी। ९ चित्ताकर्षिणी। १० धैर्याकर्षिणी। ११ स्मृताकर्षिणी। १२ नामाकर्षिणी। १३ वीजाकर्षिणी। १४ आत्माकर्षिणी। १५ अमृताकर्षिणी। १६ शरीराकर्षिणी। इस सर्वासापरिपूरक षोड़शदलसो-मात्मकचक्र के मध्य में त्रिपुरेशी चक्रनायिका का यथोक्त ध्यान तथा पूजा कर वाम ओर में सर्वविद्राविणीमुद्रा, दक्ष ओर में लघिमासिद्धि तथा अग्र में वौद्ध-दर्शन की पूजा करें। इति तृतीयावरणम्॥

४. **जपाकुशुमप्रभ अष्टदलचक्र** में रक्तवर्णा पाशांकुश-नीलरत्ननीलोत्पलकरा ८ **गुप्ततरयोगिनिओं** का ध्यान कर पूजा करें। यथा— १ अनङ्गकुशुमा। २ अनंगमेखला। ३ अनंगमदना। ४ अनंगमदनातुरा। ५ अनंगरेखा। ६ अनंगवेगिनी। ७ अनंगाङ्कुशा। ८ अनंगमालिनी। इस **सर्वसंक्षोभणाष्टदलव्योमात्मकचक्र** के मध्य में **त्रिपुरसुन्दरी चक्रनायिका** का यथोक्त ध्यान पूजा कर वाम ओर में **सर्वाकर्षिणीमुद्रा**, दक्ष ओर में **महिमासिद्धि** तथा अग्र में **गाणपत्यदर्शन** की पूजा करें। इति चतुर्थावरणम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तदन्तर इन ४ चक्रों को **पूर्वाम्नायसृष्टिचक्र** मान कर **पूर्णेशीपूर्वाम्नायेश्वरीसृष्टिप्रदा** का यथोक्त ध्यान तथा पूजा कर उनको सृष्टिरूपा महात्रिपुरसुन्दरी में विलीन मान कर **महाषोडशी के सृष्टिक्रम से महात्रिपुरसुन्दरी तथा महाकामेश्वर** की पूजा करे।

५. **सिन्दूरवर्ण चतुर्दशारचक्र** में रक्तवर्णा पाशांकुश-दर्पणपानपात्रहस्ता १४ **संप्रदाययोगिनिओं** का ध्यान कर पूजा करें। यथा— १ सर्वसंक्षोभिणी। २ सर्वविद्रा-विणी। ३ सर्वाकर्षिणी। ४ सर्वाह्लादिनी। ५ सर्वसंमोहनी ६ सर्वस्तंभिनी। ७ सर्वजृम्भिणी। ८ सर्ववशंकरी। ९ सर्वरञ्जिनी। १० सर्वोन्मादिनी। ११ सर्वार्थसाधिनी। १२ सर्वसंपत्तिपूरणी। १३ सर्वमन्त्रमयी। १४ सर्वद्वन्द्वक्षयं-करी। इस सर्वसौभाग्यदायकचतुर्दशारमायात्मकचक्र के मध्य में त्रिपुरवासिनी चक्रनायिका का यथोक्त ध्यान तथा पूजा कर वाम ओर में सर्ववशंकरीमुद्रा, दक्ष ओर में इशित्वसिद्धि तथा अग्र में सांख्यादिदर्शन की पूजा करें। इति पञ्चमावरणम् ॥

६. **दाडिमीकुसुमप्रभ वहिर्दशारचक्र** में जवाकुसुम-वर्णा पाशांकुशारपट्टीशहस्ता १० कुलकोलयोगिनियों की पूजा करें। यथा— १ सर्वसिद्धिप्रदा। २ सर्वसंपत्प्रदा। ३ सर्वप्रियंकरी। ४ सर्वमंगलकारिणी। ५ सर्वकामप्रदा-यिनी। ६ सर्वदुःखविमोचिनी। ७ सर्वमृत्युप्रशमनी। ८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वविघ्ननिवारिणी। ९ सर्वाङ्गसुन्दरी। १० सर्वसौभाग्यदायिनी। इस सर्वार्थसाधकबहिर्दशारवाय्वात्मकचक्र के मध्य में त्रिपुराश्री चक्रनायिका का यथोक्त ध्यान तथा पूजा कर वाम ओर में सर्वोन्मादिनीमुद्रा, दक्ष ओर में वशित्वसिद्धि तथा अग्र में वैदिकदर्शन की पूजा करें। इति षष्ठावरणम्॥

७. जवाकुसुमवर्ण अन्तर्दशारचक्रमें बालार्कवर्णा पाशांकुशज्ञानमुद्रावराभयकरा १० निगर्भयोगिनियों की पूजा करें। यथा— १ सर्वज्ञा। २ सर्वशक्तिमयी। ३ सर्वैश्वर्यप्रदायिनी। ४ सर्वज्ञानमयी। ५ सर्वव्याधिविनाशिनी। ६ सर्वाधारस्वरूपिणी। ७ सर्वपापहरा। ८ सर्वानन्दमयी। ९ सर्वरक्षास्वरूपिणी। १० सर्वेप्सितफलप्रदा। इस सर्वरक्षाकरान्तर्दशारतेजसात्मकचक्र के मध्य में त्रिपुरमालिनी चक्रनायिका का यथोक्त ध्यान तथा पूजा कर वाम ओर में सर्वमहांकुशमुद्रा, दक्ष ओर में प्राकाम्यसिद्धि तथा अग्र में सौर दर्शन की पूजा करें। इति सप्तमावरणम्॥

तदन्तर इन ३ चक्रों को दक्षिणाम्नायस्थितिचक्र मान कर श्यामाकालीदक्षिणाम्नायेश्वरीस्थितिप्रदा का यथोक्त ध्यान तथा पूजा कर उन को स्थितिरूपा महात्रिपुरसुन्दरी में विलीन मान कर महाषोडशी का स्थितिक्रम से महा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिपुरसुन्दरी तथा महाकामेश्वर की सपर्या करें।

८. पद्मरागप्रभ अष्टारचक्र में रक्तवर्णा पुष्पबाण पुस्तकाद्यधनुष्करा ८ रहस्ययोगिनियों की पूजा करें। यथा— १ वशिनीवाग्देवता। २ कामेश्वरीवाग्देवता। ३ मोहिनीवाग्देवता। ४ विमलावाग्देवता। ५ अरुणावाग्देवता। ६ जयिनीवाग्देवता। ७ सर्वेश्वरीवाग्देवता। ८ कौलिनीवाग्देवता। इस सर्वरोगहराष्टारकलात्मकचक्र के मध्य में त्रिपुरासिद्धाचक्रनायिका का यथोक्त ध्यान कर पूजा कर वाम में सर्वखेचरीमुद्रा, दक्ष में भुक्तिसिद्धि तथा अग्र में वैष्णवदर्शन की पूजा करें। इति अष्टमावरणम्॥

९. वन्धूककुसुमारुण त्रिकोणचक्र के पूर्वरेखा के बहिर्भाग में दक्षिण से उत्तर तक ३ रेखाओं की भावना कर यथोक्त गुरु का ध्यान कर प्रथमरेखामें दिव्यौघादि, द्वितीय में सिध्दौघादि तथा तृतीय में मानवौघादि गुरुओं की सपर्या कर विन्दु तथा त्रिकोण के विच में परौघादि गुरुओं की, त्रिकोण की वाम रेखा में उड्डीशानन्दनाथादि, पूर्व रेखा में षष्ठीशानन्दनाथादि, दक्ष रेखा में मित्रेशानन्दनाथादि तथा विन्दुका परितः त्रिकोण में स्वगुरुपंक्ति की अर्चना करें। फिर समस्त गुरुओं को दक्षिणामूर्तिगुरु में विलीन मानकर दक्षिणामूर्त्तिगुरु का यथोक्त ध्यान तथा पूजा कर त्रिकोण के वहिः आग्नेयादि दिशा में दो दो के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रम से रक्तार्कवर्णा वराभयस्वमुद्रांकितचतुर्भुजा षड़ंगयुवतिओं की सपर्या कर त्रिकोणचक्र के वहिः अष्टकोणचक्र के अन्तर रक्तवर्णा पाशांकुशधनुर्वाणधरा (उसरोजके) तिथिनित्या, सप्तदशीनित्या तथा अष्टदशीनित्या की पूजा कर, त्रिकोणचक्र के अन्तर चतुष्कोण भावना कर रक्तवर्णा बराभयकरा स्वायुधांकितमस्तका यौवनोन्मत्तविग्रहा ४ आयुधशक्तिओं की अर्चा कर त्रिकोणचक्र के अन्तर ३ कोणों में ३ अतिरहस्ययोगिनियों का यजन करें। यथा—
१अग्रकोण में निम्नलिखित प्रकार का ध्यान कर उस स्थान को अग्निचक्र कामगिरिपीठ मित्रेशनाथात्मक मानकर कामेश्वरी [अतिरहस्ययोगिनी] की सपर्या करें—

ध्यानम्— " गोक्षीरधवलां शान्तां शुभाम्वरविभूषिताम् ।
पुष्पवाणेक्षुकोदण्डपुस्तकाक्ष धरांस्मिताम् ॥
कामेश्वरींचन्द्रचूडां ध्यायेन्नेत्रत्रयोज्वलाम् ॥ "

वामकोण में निम्नलिखित प्रकार का ध्यान कर उसस्थान को सूर्यचक्र जालन्धरपीठ षष्ठीशनाथात्मक मानकर वज्रेश्वरी [अतिरहस्ययोगिनी] की सपर्या करें

ध्यानम्— " नीलाम्रक्ताम्वरधारां चापवाणवराभयाम् ।
महावज्रेश्वरीं ध्यायेच्चन्द्रार्द्ध कृतशेखराम् ॥ "

दक्षकोण में निम्नलिखित प्रकार का ध्यान कर उस स्थान को सोमचक्र पूर्णगिरिपीठ उड्डीशाथात्मक मानकर भगमालिनी [अतिरहस्ययोगिनी] की सपर्या करें—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्यानम्— " ध्यायेद्रक्ताम्बरधरां शरदिन्दु प्रभाननाम् ।
विद्याक्षांकुशपाशांश्च बिभ्रतीं भगमालिनीम् ॥ "

इस सर्वसिध्दिप्रदत्रिकोणविश्वनादात्मकचक्र के मध्य में त्रिपुराम्बा का यथोक्त ध्यान तथा अर्चन कर वामे सर्वबीजामुद्रा, दक्षे इच्छासिद्धि तथा अग्रे शाक्त दर्शन की पूजा करें। इति नवमावरणम् ॥

१०. शुक्लारुणप्रभ बिन्दुचक्र में रक्तवर्ण पाशांश्च धनु-र्बाणधरा १६ परापरयोगिनियों की पूजा करें । यथा—
१ रती । २ प्रिती । ३ मनोभवा । ४ द्राविणी । ५ क्षोभिणी । ६ वशीकरिणी । ७ आकर्षिणी । ८ मीनकेतना । ९ सुभगा । १० भगा । ११ भगसर्पिणी । १२ भगमालिनी । १३ अनङ्गा १४ अनङ्गमेखला । १५ अनङ्गमदना । १६ अनङ्गमदनातुरा ।
इस सर्वानन्दमयवैन्दवशिवात्मकचक्र में त्रिपुरभैरवी का यथोक्त ध्यान तथा अर्चन कर वाम में सर्वयोनिमुद्रा, दक्ष में प्राप्तिसिद्धि तथा अग्र में शैवदर्शन की सपर्या करें। इति दशमावरणम् ।

तदनन्तर इन ३ चक्रों को पश्चिमाम्नायसंहारचक्र मान कर अघोरकुब्जिकापश्चिमाम्नायेश्वरीसंहारनिष्ठा का यथोक्त ध्यान तथा अर्चन कर उन को संहाररूपिणी महा त्रिपुरसुन्दरी में विलीन मानकर महाषोडशी का संहारक्रम से महात्रिपुरसुन्दरी तथा महाकामेश्वर की सपर्या करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह श्रीयन्त्रार्चन दक्षिणामूर्त्तिमतानुसार है। यहाँ संहारक्रम से दिया है। पूर्वोक्त प्रकार से अदलबदल सृष्टि तथा स्थितिक्रम में इन १० आवरणों में होगा, तदनन्तर अन्य ६ आवरण तीनों ही क्रम में एक ही निम्नलिखित प्रकार के हैं।

११. मन्वस्रादित्रिकोणान्तर्विनिर्मितस्पन्दियों में यथोक्तरूपा २४ गायत्रीवर्णमातृका तथा मध्य में चतुस्पंदी गायत्री की पूजा करें। इति एकादशावरणम् ॥

१२. कर्णिका में चतुर्दशारनिर्मितस्पन्दिमध्यगत दश स्थानों में यथोक्त ध्यान कर कालिकादि दश महाविद्याओं की तथा मध्य में बालासुन्दरी की पूजा करें। इति द्वादशावरणम् ॥

तदनन्तर पूर्वोक्त १२ चक्रों को उत्तराम्नायात्मकतीरोधानचक्र मानकर दशाननासिध्दिकरालीगुह्यकालीउत्तराम्नायेश्वरी तीरोधानिलया का यथोक्त ध्यान तथा अर्चन कर उन को अनोख्यास्वरूपपिणी महात्रिपुरसुन्दरी में विलीन भावना कर महासप्तदशी से महात्रिपुरसुन्दरी की सपर्या करें।

१३. ब्रह्मात्मक तेजोरूप बिन्दुचक्र के अन्तर्गत महावैन्दवात्मकचक्र भावना कर उस में क्रमशः निम्नलिखित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकार से आम्नायनायिकाओं तथा उन के भैरवों का यथोक्त प्रकार का ध्यान कर सपर्या करें। यथाः- कामकलागुह्यकाली उत्तराम्नायनायिका तथा संहारभैरव। २ भुवनेश्वरीपूर्वाम्नायनायिका तथा सदाशिव। ३ दक्षिणकालिकादक्षिणाम्नायनायिका तथा महाकाल। ४ महोग्रतारा अधराम्नायनायिका तथा अक्षोभ्य। ५ महाकाली ईशानाम्नायनायिका तथा रुद्रभैरव। ६ महालक्ष्मी आग्नेयाम्नायनायिका तथा विष्णुभैरव। ७ महासरस्वतीवायव्यांनायनायिका तथा ब्रह्मभैरव। ८ चामुण्डाउपाम्नायनायिका तथा भीषणभैरव। ९ उग्रचण्डादुर्गा तथा पाण्डुनाथ भैरव। १० वज्रकुब्जिकापश्चिमाम्नायनायिका तथा कुब्जिकेश्वर। ११ बालात्रिपुरा तथा त्रिपुरभैरव। १२ बालासुन्दरी तथा वटुकभैरव। १३ बालात्रिपुरसुन्दरी तथा त्रिपुरेश्वर। १४ पराप्राशादात्मिकासर्वमन्त्रेश्वरीपरादेवता ऊर्ध्वाम्नायनायिका। १५ कादिविद्येश्वरीकाली। १६ हादिविद्येश्वरीसुन्दरी। १७ सादिविद्येश्वरीतारिणी। १८ ललितामहात्रिपुरसुन्दरी तथा कामेश्वर। १९ श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी सर्वाम्नायनायिका तथा महाकामेश्वर। तदनन्तर वही महाबैन्दवात्मक चक्र में विन्दुत्रिकोण भावनाकर पाशांकुशशरचापहस्तारक्ता ४ समयादेवियों की पूजा करें १ अग्रकोण में कामेश्वरीसमयानित्या। २ वामकोण में वज्रेश्वरीसमयानित्या। ३ दक्षकोणमें भगमालिनीसमयानित्या। विन्दु में बालामहात्रिपुरसुन्दरीसमयानित्या। फिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन के निकट में चतुश्चरण विद्या का समर्चन करें। १ अग्र में शुक्लपाद। २ वाम में रक्तपाद। ३ दक्ष में मिश्रपाद। मध्य में निर्वाणपाद। तदनन्तर उस विन्दु में षडाम्नाय की सर्वाधिकारविद्याओं की अर्चनाकर रश्मी सहित षडन्वयशाम्भवविद्या की सपर्या करें। पश्चात् इन सब विद्यायों (देवदेवियों) का समष्टिरूप मानकर पूर्वोक्त "सूर्येन्दग्निमयैकपीठनिलयां" इत्यादि ध्यान कर उस महाबिन्दमात्मकचक्र को उड्डियानपीठ चर्येशनाथात्मकब्रह्मचक्र मानकर महात्रिपुरसुन्दरी परापरातिरहस्य योगिनी की अर्चा करें। इस समरसमहाबैन्दवपरब्रह्मात्मकचक्र में [ललिता] महात्रिपुरसुन्दरी का यथोक्त ध्यान तथा अर्चन कर वाम में सर्वत्रिखण्डामुद्रा, दक्ष में सर्वकामसिध्दि तथा अग्र में कौलदर्शन की पूजा करें। इति त्रयोदशावरणम् ॥

१४. सर्वानन्दमय विन्दुचक्र में षटकोण भावनाकर स्वाग्रादिवामावर्त से ६ डाकिनियों की पूजा करें। यथा— १. प्रथम कोण में विशुध्दिचक्र की भावना कर ध्यान के साथ डाकिनी की पूजा करें। ध्यान ऐसा है:—

* ग्रीवाकूपे विशुध्दौनृपदलकमले रक्तवर्णां त्रिनेत्राम् ।
श्रीखट्वांगंकपालं त्रिशिखमपिमहाचर्म्मसंधारयन्तीम् ॥
वक्त्रेनैकेनयुक्तां पशुजनभयदां पायसान्नप्रशक्ताम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वक्रस्थां वन्देमृताद्यैः परिवृतवपुषां डाकिनीबीजवन्द्यः ॥

२. एवं **अनाहतचक्रमें शाकिनी** का ध्यान ऐसा है:—

"हृत्पद्मे भानुपत्रे द्विवदनविलसद्दंष्ट्रिणीं श्यामवर्णा—
मक्षं शूलं कपालं डमरुमपि भुजैर्धारयन्तीं त्रिनेत्राम् ॥
रक्तस्थां कालरात्रिप्रभृतिपरिवृतांशुध्दभक्तप्रशक्ताम् ।
श्रीमद्वीरेन्द्रवन्द्यामभिमतफलदां भावयेराकिनींताम् ॥

३. एवं **मणिपूरचक्र में लाकिनी** का ध्यान ऐसा है:—

" नाभौदिक्कपत्रपद्मे त्रिवदनविलसत्त्रीक्षणां कृष्णवर्णाम् ।
शक्तिदंभोलिदण्डावभयमपिकरैर्धारयन्तीं महोग्राम् ॥
डामर्याद्यैः परीतां पशुजनभयदां शुध्दधात्वैकनाथाम् ।
गौडान्ने सक्तचित्तां सकलसुखकरीं संस्मरे लाकिनींताम् ॥

४. **एवं स्वाधीष्ठान में काकिनी** का ध्यान ऐसा है:—

"स्वाधीष्ठानाख्यपद्मे रदललसिते वेदवक्त्रां त्रिनेत्राम् ।
पीताभां धारयन्तीं त्रिशिखगुणकपालाभयान्यातंगर्वाम् ॥
मेदोधातुप्रविष्टामलिमदमुदितां वन्धिनीपूर्वसन्नाम् ।
पीतांदध्यन्नशक्तामभिमतफलदां काकिनीं भावयेत्ताम् ॥

५. एवं मूला धार चक्र में साकिनी का ध्यान ऐसा है:—

"मूलाधारस्थपद्मे श्रुतिदललसिते पंचवक्त्रांत्रिनेत्राम् ।
स्वर्णाभासस्थिसंस्थां श्रणिमपिकमलं पुस्तकं ज्ञानमुद्राम् ॥
बिभ्राणां वाहुदण्डैः सुललितवरदाधाभिवीतां मनोज्ञाम् ।
मुद्राते शक्तचित्तां मधुमदमुदितां साकिनीं भावयेताम् ॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६ एवं **आज्ञाचक्र में हाकिनी** का ध्यान ऐसा है:—

"भ्रूमध्ये बिन्दुमध्ये द्विदलविलसिते शुक्लवर्णा कराब्जै-
र्बिभ्राणां ज्ञानमुद्रांडमरुककमलं चाक्षमालां कपालम् ॥
षड्वक्रामब्जसंस्थां त्रिनयनलसितां हंसवत्यादियुक्ताम् ।
हारिद्रान्ने प्रशक्तां सकलसुरनुतां हाकिनीं भावयेताम् ॥"

ततः मध्य में **सहस्रार** भावना कर **याकिनी** का ध्यान कर सपर्या करें। उन का ध्यान ऐसा है:—

"मुण्डव्योमस्थपद्मे सकलदलयुते याकिनीभैरवींताम् ।
यक्षिरायाद्याः समस्तायुधर्तसितकरां सर्ववर्णासमष्टिम् ॥
डादीनांमध्यसंस्थां सकलसुखकरीं सर्वधातुस्वरूपाम् ।
सर्वान्ने सक्तचित्तां परशिवरसिकां भावयेसर्वरूपाम् ॥"

इति चतुर्दशावरणम् ॥

१५. श्रीयन्त्र के मध्य, वायव्य, ईशान, आग्नेय तथा नैऋत्य में क्रमशः ५ **सिंहासनों** की कल्पना कर प्रत्येक सिंहासन में वही क्रम से पञ्चपञ्चिका विद्याओं का यथोक्त ध्यान कर पूजा करें। यथा:—

१. **पञ्चलक्ष्मीविद्या**— (१) श्रीविद्यालक्ष्मी। (२) सौभाग्यलक्ष्मी। (३) महालक्ष्मी। (४) त्रिशक्तिलक्ष्मी। (५) साम्राज्यलक्ष्मी ॥ २. **पञ्चकोशविद्या**— (१) श्री विद्याकोशाम्बा। (२) परंज्योतिःकोशाम्बा। (३)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निष्कलकोशाम्बा । (४) अजपाकोशाम्बा । (५) मातृका कोशाम्बा ॥ ३. पञ्चकल्पलताविद्या — (१) श्रीविद्या-कल्पलताम्बा । (२) पञ्चकामेश्वरीकल्पलताम्बा । (३) पारिजातेश्वरीकल्पलताम्बा । (४) कुमारीकल्पलताम्बा । (५) पञ्चबाणेश्वरीकल्पलताम्बा ॥ ४. पञ्चकामदुग्धाम्बा (१) श्रीविद्याकामदुग्धाम्बा । (२) अमृतपीठेश्वरीका-मदुग्धाम्बा । (३) सुधांशुकामदुग्धाम्बा । (४) अमृते-श्वरीकामदुग्धाम्बा । (५) अन्नपूर्णाकामदुग्धाम्बा ॥ ५. पञ्चरत्नविद्या — (१) श्रीविद्यारत्नाम्बा । (२) सिद्धलक्ष्मीरत्नाम्बा । (३) राजमातंगीरत्नाम्बा । (४) भुवनेश्वरीरत्नाम्बा । (५) वाराहीरत्नाम्बा ॥ इति पञ्च-दशावरणम् ॥

१६. भूपुर के वाहर १० दिक्पालों का यथोक्त ध्यान कर पूजा करें। यथा— १ इन्द्र । २ अग्नि । ३ यम । ४ निर्ऋति । ५ वरुण । ६ वायु । ७ कुवेर । ८ ईशान । ९ ब्रह्मा १० अनन्त । पुनश्च । उन का अस्त्रों की पूजा करें । यथा— १ वज्र । २ शंख । ३ दण्ड । ४ खड्ग । ५ पाश । ६ अंकुश । ७ गदा । ८ त्रिशूल । ९ पद्म । १० चक्र ॥ इति षोदशावर-णम् ॥ तदनन्तर भूपुरकेवहिः कलाध्वनेनमः । भूपुर में, तत्वाध्वने नमः । त्रिवृत्त तथा ; षोडशदल के मध्य में, वर्णाध्वने नमः । षोदशदल तथा षोदशदल के मध्य में भुवनाध्वने नमः । चतुर्दशार में पदाध्वने नमः । विन्दु में, मन्त्राध्वने नमः । तत्रैव व्याप्ततत्वात्मने नमः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तदनन्तर पूर्णश्रीयन्त्रराज को ऊर्ध्वाम्नायात्मकभासा-चक्र मान के श्रीप्राशादात्मिकासर्वमन्त्रेश्वरीपरादेवताऊर्ध्वाम्नायेश्वरीभासानिलया का यथोक्त ध्यान तथा अर्चनकर उन को निर्वाणमहात्रिपुरसुन्दरी तथा महानिर्वाणभैरव में विलीन भावना कर साम्राज्यमेध! की विधि से सपर्या करें। इति दक्षिणामूर्त्ति मतानुसार श्रीचक्रावरणपूजा-संकेत॥

अधम अधिकारी ध्यान को सगुणरूप में भाना कर इष्ट कोपूजते हैं। मध्यमाधिकारी ध्यान को निर्गण में भा-नाकर मन्त्रार्थ और अपने में ऐक्य भावना से इष्ट की अर्चना करते हैं। उत्तम अधिकारी यन्त्र, मन्त्र और ध्यान की प्रासाद में समष्टि करके इसीके विचार में अपने आत्मा की भी एकता कर मग्न होकर बैठते हैं। जैसे वचन, वाच्य तथा वक्ता में भेद नहीं है, वैसे ही मन्त्र, जापक और उसका अर्थरूप देवता (यन्त्र) में भेद नहीं है। इस विष-य को अधिकारी विचार वान् लोग स्वयं जानेगे अथवा गुरुमुख से जानने की चेष्टा करेंगे। तदनन्तर उन को श्रीचक्र का अद्भुत रहस्य विदित होगा।

बडवानलतन्त्र की नामावली में जो "भैरवी" पद तथा परातन्त्र में "सिंहासनेश्वरी" पद दिया है, वह भैरवी यों को सूचित करता है। इसी ऊर्ध्वाम्नाय में पूर्वादि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४ आम्नायों के अन्तर्गत होकर ४ सिंहासनों में विभाजित हो गए हैं। यह ऊर्ध्वाम्नाय वडारहस्यपूर्ण है। उन ५ सिंहासनों में भैरवियां हैं। इसका यथार्थ रहस्य तो गुरुमुख से ही जानना चाहिए। तथापि मैं यथाज्ञान संक्षेपतः वर्णन करने की चेष्टा करूंगा। प्रत्येक मन्त्रका अर्थ वेदके महावाक्य के अर्थ में समन्वय होता है। हाँ, चारों ही महावाक्यों के सिद्धान्त तो एक ही ब्रह्म में घटते हैं परन्तु घटाने के ढङ्ग पृथक् हैं। वे सब वेदान्त ग्रन्थो से पाठकोंको विदित हो सकते हैं। जैसे ऋग्वेद पश्चिमाम्नायात्मक है। उसका महावाक्य है "प्रज्ञानं ब्रह्म" पश्चिमाम्नाय में जितने मन्त्र हैं, सबके अर्थों की एक "प्रज्ञानं ब्रह्म" के अर्थ में समष्टि हो जाती है। वैसे ही उत्तराम्नायात्मक यजुर्वेद का महावाक्य "अहंब्रह्मास्मि" है। पूर्वाम्नायात्मक सामवेद का महावाक्य "तत्वमसि" है। दक्षिणाम्नायात्मक अथर्व वेद का महावाक्य "अयमात्मा ब्रह्म" है। परन्तु ऊर्ध्वाम्नाय में "अहं, इदं और त्वम्" का भाव विल्कुल न होने के कारण उसका महावाक्य चतुस्पदी तुरीया गायत्री ही मानी गई है यह गायत्री वेदमाता होने के कारण चारों ही महावाक्यो इस के अन्तर्गत हैं। अतः जिस आम्नाय के महावाक्यद्वारा गायत्री की ब्रह्मपद में समष्टि होने का अर्थ जिस ऊर्ध्वाम्नायात्मक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्त्र का होगा, उसमन्त्र का उसी सिंहासन में विभाजन किया गया है। जैसा की पूर्वाम्नाय का महावाक्य द्वारा हो तो पूर्वसिंहासन होगा इत्यादि। परन्तु विना महावाक्यों की सहायता से जिस मन्त्र की चारों वेदों के सारभूत वेद मन्त्र त्र्यक्षरी के अर्थ में समष्टि होती है, वह केवल शुद्ध ऊर्ध्वाम्नायात्मक ही होगा। अतः सकल भैरवियाँ ऊर्ध्वाम्नायात्मिक ही हैं, उन की आराधना ऊर्ध्वाम्नाय से ही होती है परन्तु ४ सिंहासनों में बाँटी गई हैं।

अबयहाँ पूर्वसिंहासन का वर्णन करता हूँ। वागादि त्र्यक्षरात्मिका बालात्रिपुरा जो हैं, उन के मन्त्रार्थ—भेद से बालाभैरवी मानी गई है। यह वही विद्या है जिस का विवरण उपर ही लिख चुका हूँ। त्रिपुरभैरवी को संपत्प्रदा भैरवी भी कहते हैं उन के मन्त्रध्यानादि ज्ञानार्णवतन्त्र में ऐसे हैं:—

"यथा श्रीत्रिपुराबाला तथा त्रिपुरभैरवी ।
संपत्प्रदा नाम तस्याः श्रृणु निर्मलमानसे ॥
शिवचन्द्रौ वह्निसंस्थौ वाग्भवं तदनन्तरम् ।
कामराजं तथा देवि शिवचन्द्रान्वितं ततः ॥
पृथ्वीबीजान्तवन्ह्याढ्यं तार्तीयंश्रृणुसुन्दरि ।
शक्तिबीजे महेशानि शिववह्नीनियोजयेत् ॥
कुमार्यास्त्रिपुरेशानि हित्वा सर्गं तु वैन्दवम् ।
त्रिपुरा भैरवी देवी महासंपत्प्रदा प्रिये ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनयो सदृशीविद्या त्रिषुलोकेषु दुर्लभा ।
मूलमंत्रद्विरावृत्या षडङ्गन्यास ईरितः ॥ "

ध्यानम्—" उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां " इत्यादि पुरोक्तम् ॥

चैतन्यभैरवी के मन्त्रध्यानादि ज्ञानार्णव में ऐसे हैः—

" श्रृणुदेवि प्रवक्ष्यामि पूर्वं सिंहासनस्थिताम् ।
वाग्भवं बीजमुच्चार्य जीवप्राणसमन्वितम् ॥
सकला भुवनेशानीं द्वितीयं बीजमुद्धृतम् ।
जीवप्राणं वह्निसंस्थं शक्रस्वरविभूषितम् ॥
विसर्गाढ्यं महादेवि विद्यात्रैलोक्यमातृका ।
त्रैलोक्यमोहनी देवी परब्रह्मचिदात्मिका ॥ "

इस मन्त्र के न्यासादि पूर्ववत् हैं। ध्यान ऐसा हैः—

" उद्यद्भानु सहस्राभां नानालंकारभूषिताम् ।
मुकुटोर्ध्वलसच्चन्द्रलेखां रक्ताम्बरान्विताम् ॥
पाशांकुशधरां नित्यां वामहस्ते कपालिनीम् ।
वरदाभय शोभाढ्यां पीनोन्नतघटस्तनीम् ॥ "

चैतन्यभैरवी का ही मन्त्रान्तर तथा ध्यानान्तर ज्ञानार्णव-तन्त्र में ऐसा हैः—

" एतस्या एवविंद्याया वीजद्वयमुदाहृतम् ।
तदन्ते परमेशानि नित्यक्लिन्ने मतद्रवे ॥
एतस्याएव तातीयं रुद्रार्णा परमेश्वरि ॥ "

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्यानम्— चैतन्यभैरवीं ध्यायेत् पाशांकुश कपालिनीम् ।
रक्तां मण्डस्रजं पञ्चप्रेतसिंहासनस्थिताम् ॥ ”

कामेश्वरीभैरवी के मन्त्रध्यानादि ज्ञानार्णवतन्त्र में ऐसे है-

" शिवचन्द्रौमादनान्तं पन्तं वह्निसमन्वितम् ।
शक्तिभिन्नं बिन्दुनादकलाढ्यं वाग्भवं प्रिये ॥
संप्रदाया भैरव्याः कामराजं तथैव हि ।
सदाशिवस्य बीजं तु महासिंहासनस्य च ॥ ”

ध्यानम्— “ ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि रिपुभारनिकृन्तनम् ।
उद्यत्सूर्यसहस्राभां चन्द्रचूडां त्रिलोचनाम् ॥
नानालंकारसुभगां सर्ववैरिनिकृन्तनीम् ।
स्रवद्रुधिरमुण्डालिकलितां रक्तवाससम् ॥
त्रिशूलं डमरुं खड्गं तथा खेटकमेव च ।
पिनाकं च शरान् देवि पाशांकुशयुगं क्रमात् ॥
पुस्तकं चाक्षमालां च शर्वासिहासनस्थिताम् ॥ ”

अब दक्षिण सिंहासन का वर्णन करता हूँ। अघोर भैरवी के मन्त्रध्यानादि ऐसे हैः—

“ अघोरविद्यारूपं तु महापापनिकृन्तनम् ।
अघोरे वाग्भवं पश्चाद् घोरे तु भुवनेश्वरी ॥
सर्वतः शर्व सर्वेभ्यो घोरघोरतरे रमाम् ।
नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यो देव्या बीजयुगंलिखेत् ॥
त्रिंशद्भिश्च त्रिभिवर्गैर्विद्येयं कथिता प्रिये ॥ ”

इन के न्यासध्यानादि कामेश्वरी भैरवीवत है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महाभैरवी के मन्त्रध्यानादि ऐसे हैं।

" शिवचन्द्रौवह्निसंस्थौ वाग्भवेन समन्वितौ ।
नादबिन्दुसुसंयुक्तं प्रथमं वीजमुद्धृतम् ॥
लोपाया वाग्भवं कूटं द्वितीयं बीजमुद्धृतम् ।
शिवचन्द्रौवह्निसंस्थौ मनुस्वरसमन्वितौ ॥
तृतीयंबीजमाख्यातं बिन्दुनादकलान्वितम् ।
पूर्ववत् परमेशानि ऋष्यादिन्यासमेव च ॥
मध्यकूटेनषड्दीर्घ युक्ते नाङ्गानिकल्पयेत् ॥

ध्यानम्— " आताम्रार्कसहस्राभां लसच्चन्द्रजटास्फुरत् ।
किरीटरत्नविलसच्चित्रचित्रितमौक्तिकाम् ॥
स्फुरद्रुधिरपंकाढ्यमुण्डमालाविराजिताम् ।
नयनत्रयशोभाढ्यां पूर्णेन्दुवदनान्विताम् ॥
मुक्ताहारलताराजत्पीनोन्नतघनस्तनीम् ।
रक्ताम्बपरीधानां यौवनोन्मत्तरूपिणीम् ॥
पुस्तकंचाभयं वामे दक्षिणे चाक्षमालिकाम् ।
वरदानरतां, नित्यां महाप्रेतासनस्थिताम् ॥ "

ललिताभैरवी के मन्त्रध्यानादि ऐसे हैं:—

" मायाबीजं समुद्धृत्य कामराजं ततोद्धरेत् ।
प्रेतबीजं समुद्धृत्य विद्येयं त्र्यक्षरी भवेत् ॥
पूर्वोक्ता एवं मुन्याद्या आद्ये नाङ्गक्रियामता ॥ "

ध्यानम्— " उद्य-सूर्यसहस्राभां माणिक्यमुकुटोज्ज्वलाम् ।
रत्नकुण्डलमुक्तालिपदकाङ्गदभूषणाम् ॥
रत्नमञ्जीरसुभगां रक्तवस्त्रानुलेपनाम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाशांकुशौपुस्तकं च दधतीमक्षमालिकाम् ॥
बाल्यलीलापरां देवीं कुमारीरूपधारिणीम् ।
सर्वाङ्गसुन्दरीं ध्यायेत् सर्वसंपत्तिहेतवे ॥ "

कामेशी-भैरवी के मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:—

" श्रीकामेशीभैरवी स्यात् कामराजेन सुन्दरि ।
ऋषिरस्याः कामदेवो गायत्रीछन्दउच्यते ॥
कामेशीभैरवी देवी बीजेनाङ्गक्रिया मता ॥ "

ध्यानम्— " जपाकुसुमसंकाशां धनुर्बाणधरांस्मरेत् ।
नानालङ्कारसुभगां मोहयन्तीं जगत्त्रयम् ॥ "

रक्तनेत्राभैरवी के मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:—

" चन्द्रवाग्भवसंयुक्तं बीजं प्रथममीरितम् ।
सकला वह्निमायाभ्यां द्वितीयं बीजमीरितम् ॥
बालायाश्चैव तार्तीयं तृतीयं बीजमुद्धृतम् ।
कुमार्या एव ऋष्यादिरस्याश्च परमेश्वरि ॥
षड्दीर्घचन्द्रबीजेन षडंगन्यास ईरितः ॥ "

ध्यानम्— " उद्यत्सूर्यसहस्राभां माणिक्यमुकुटोज्वलाम् ।
रत्नकुण्डलमुक्तालिपदकाङ्गदभूषणाम् ॥
रत्नमञ्जीरसुभगां रक्तवस्त्रानुलेपनाम् ।
पाशांकुशौ पुस्तकं च दधानां चाक्षमालिकाम् ॥
उन्मत्तयौवनप्रौढां पीनोन्नतघनस्तनीम् ।
नितम्बिनीं क्षाममध्यां प्रान्तरक्तसुलोचनाम् ॥ "

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब पश्चिमसिंहासन का बर्णन करता हूँ। षट्कूटा भैरवी के मन्त्रध्यानादि ऐसे हैः—

" शिवचन्द्रौ मादनंच भूमिवह्निस्तुडामरम् ।
वाक्शान्तिमनुभिर्युक्तं बीजत्रयमुदाहृतम् ।
ऋष्यादीन् पूर्ववत् न्यस्य द्विरावृत्त्या षडङ्गकम् ॥ "

ध्यानम्— " बालसूर्यप्रभां देवीं जपाकुसुमसंनिभाम् ।
मुण्डमालावलीरम्यां बालसूर्यसमांशुकाम् ॥
सुवर्णकलशाकारपीनोन्नतपयोधराम् ।
पाशांकुशौ पुस्तकं च तथा च जपमालिकाम् ॥
दधतीं भैरवीं ध्यायेत् प्रेतसिंहासनस्थिताम् । "

नित्याभैरवी के मन्त्रध्यानादि ऐसे हैं:—

" षट्कूटाभैरवी देवी प्रतिलोमतया भवेत् ।
नित्या च भैरवी प्रोक्ता चतुर्वर्गफलप्रदा ॥
पूर्वोक्ता एव मुन्याद्या ध्यानमस्या वदामि ते ॥ "

ध्यानम्— " पञ्चमुण्डसमामुण्ड मुण्डमालाविभूषिताम् ।
आताम्रार्कायुताभासां रत्नभूषणभूषिताम् ॥
पाशांकुशाभयवरान् दधतीं भावयेच्छिवाम् ॥ "

मृतसंजीवनीभैरवी के मन्त्रध्यानादि ऐसे हैं:—

" माया हंसः पदं चोक्त्वा सञ्जीवनि ततः परम् ।
जूँ जीवं प्राणपदं ग्रन्थि कुरुयुगं ततः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋषिः शुक्रः समाख्यातो गायत्री छन्द ईरितम् ।
मृतसंजीवनी देवी देवता परिकीर्तिता ॥
मायाबीजं तु बीजं स्यात् स्वाहा शक्तिरुदाहृता ।
हंसस्तु कीलकं प्रोक्तं मृतसंजीवनाय च ॥
विनियोगः समाख्यातस्त्रिचतुश्चैककं पुनः ।
षट्चतुर्द्विक केनैव षडङ्गानि समाचरेत् ॥"

ध्यानम्—" कर्पूराभां हीरमुक्ताभूषणैर्भूषिताम्बराम् ।
ज्ञानमुद्रामक्षमालां दधतीं चिन्तयेत्पराम् ॥"

मृत्युञ्जयपराभैरवी के मन्त्रध्यानादि ऐसे हैं:—

" अथ वक्ष्ये महेशानि मृत्युञ्जयपरां पराम् ।
वदद्वन्द्वं वादिनीति वाङ्मध्ये निक्षिपेत् प्रिये ॥
हंसकं वाग्भवं देवि क्लिन्ने क्लेदिनि चालिखेत् ।
महाक्षोभं कुरुद्वन्द्वं शिवचन्द्रकलानलाम् ॥
वामाक्षिबिन्दुनादाङ्कां तारबीजं ततो वदेत् ।
मोक्षं कुरुयुगं हंसं शक्रस्वरविसर्गवत् ॥
इयं सञ्जीवनी देवी ऋषिरस्याः शिवः प्रिये ।
गायत्रं छन्दआख्यातं देवतेयं तु भैरवी ॥
आदिकूटं भवेच्छक्तिः साक्षान्मृत्युविनाशिनी ।
नवशक्राष्टवर्णैस्तु षडङ्गानि प्रविन्यसेत् ॥"

ध्यानम्— " ध्यात्वा चावाहयेद्देवीं कदम्बवनमध्यगाम् ।
पुस्तकं वामहस्तेन दक्षिणेनाक्षमालिकाम् ॥
बिभ्रतीं कुन्दधवलां कुमारीं चिन्तयेत् पराम् ॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वज्रप्रस्तारिणीभैरवी के मन्त्रध्यानादि ऐसे हैं:—

" परां क्लिन्नं वाग्भवं च तत्कोमारमकमक्षरम् ।
ततो नित्यमदप्रान्ते द्रवे मायां च संलिखेत् ॥
वज्रेशी रवि वर्णोऽयं ऋषिब्रह्मास्य सन्मनोः ।
छन्दो विराट् च वज्रेशी देवता परिकीर्तिता ॥
पञ्चमं च चतुर्थं च बीजशक्तीक्रमेणतु ।
तार्तीयं कीलकं देव्यास्ततोऽङ्गानि प्रविन्यसेत् ॥
आद्यन्तबीजं संत्यज्य द्विकं चैकैकरूपकम् ।
द्विकंद्विकंत्रिकं चैव षडङ्गानिप्रकल्पयेत् ॥ "

ध्यानम्— " ध्यात्व चावाहयेद्देवीं कदम्बवनमध्यगाम् ।
रक्तां चन्द्रकलाचारुमुकुटां वरभूषणाम् ॥
महातारुण्यगर्वाढ्यलोचनत्रयशोभिताम् ।
शोणिताब्धितरत्पोतमहायन्त्रोपरिस्थिताम् ॥
दाडिमं सायकांश्चैव पाशं चैव श्रृणिं तथा ।
चापं कपालं दधतीं शोणमाल्यानुलेपनाम् ॥
स्मरेन्द्रक्ततरां देवींमुपचारैः समर्चयेत् ॥ "

अब उत्तरसिंहासन का वर्णन करता हूँ । भुवनेश्वरीभैरवी के मन्त्रध्यानादि ऐसे हैं:—

" कोपावाग्भवमुच्चार्य प्रेतबीजंसमुद्धरेत !
रेफं शिवाधो निःक्षिप्य भुवनेशी च भैरवी ॥
कुमार्यां एव ऋष्याद्या आद्ये नाङ्ग क्रिया मता ॥ "

ध्यानम्— " जपाकुसुमसंकाशां दाडिमीकुसुमप्रभाम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रलेखाजटाजूटां त्रिनेत्रां रक्तवाससाम् ॥
नानालंकारसुभगां पीनोन्नतघनस्तनीम् ।
प्रेतासनसमासीनां मुण्डमालाविभूषिताम् ॥
पाशांकुशवराभीतीर्धारयन्तींशिवां श्रये ॥ ”

कमलेश्वरीभैरवी मन्त्र ऐसा है। अन्य सब भुवनेश्वरी भैरवीवत् हैः—

“ भुवनेशी च चन्द्राद्या कमलेशी तथा भवेत् ॥ ”

सिद्धकौलेशभैरवी के मन्त्रध्यानादि ऐसे हैं:—

“ ह्स्रैँ ह्स्रीँ च ह्स्रौँः च सिद्धकौलेशभैरवी ।
कुमार्या एव सुन्याद्या ध्यानमस्यावदामिते ॥ ”

ध्यानम्— “ आताम्रार्कसहस्राभां त्रिनेत्रां चन्द्रसन्मुखीम् ।
चन्द्रखण्डस्फुरद्रत्न मकुटां क्षाममध्यमाम् ॥
नितम्बिनीं स्फुरद्रत्नवसनां रक्तभूषणाम् ।
उन्मत्तयौवनप्रौढां पीनोन्नतनघनस्तनीम् ॥
असृक् पंकाढ्यमुण्डस्रङ्मण्डितांगीं सुभूषणाम् ।
पुस्तकं चाभयं वामे दक्षिणे चाक्षमालिकाम् ॥
वरदं दधतीं ध्यायेत् प्रेतसिंहासनस्थिताम् ॥ ”

डामरभैरवी के मन्त्रध्यानादि ऐसे हैं:—

“ महासिंहासनगता भैरवी डामरेश्वरी ।
पूर्वोक्तभैरवीदेव्याः कामकूटे परां शिवाम् ॥
हित्वोच्चरेत् तदा विद्यां महासिंहासनेश्वरीम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वोक्त एव मुन्याद्यो ध्यानमस्या वदामिते ॥ "

ध्यानम्— " वन्धूककुसुमाभासां पंचमुण्डाधिवासिनीम् ।
स्फुरच्चन्द्रकलारत्नमुकुटां मुण्डमालिनीम् ॥
त्रिनेत्रां रक्तवसनां पीनोन्नतघनस्तनीम् ।
पुस्तकं चाक्षमालां च वरदं चाभयं क्रमात् ॥
दधतीं संस्मरेन्नित्यमुत्तराम्वुजसंस्थिताम् ॥ "

कामिनीभैरवी के मन्त्रध्यानादि ऐसे हैं:—

" संपत्प्रदाया भैरव्या वह्निं स्यस्का समुद्धरेत् ।
कामिनी भैरवीचेयं भयविध्वंसिनीति च ॥
पूर्वोक्ता एव मुन्याद्या ध्यानमस्या वदामिते ॥ "

ध्यानम्— " आताम्राकायुता भासां रत्नभूषण भूषिताम् ।
पाशांकुशभयवरान् धारयन्तीं शवासनाम् ॥
मुण्डमालावलीरम्यां चिन्तयेद्भैरवीं पराम् ॥ "

अब ऊर्ध्वसिंहासन का वर्णन करता हूँ । ऊर्ध्वसिंहासन में सुन्दरीभैरवी है । उनका ५ भेदहैं ध्यानबिना सब का एक ही ललिता महा त्रिपुरसुन्दरी वत् है । **प्रथमसुन्दरी भैरवी** का मन्त्र ऐसा है:—

" वाग्भवं शिवसंयुक्तं वग्भवेमध्यमं श्रृणु ।
हकालान्ते महेशानि शिवबीजंतुसंलिखेत् ॥
रेफवामाक्षिविन्द्विन्दु घटितं तु तृतीयकम् ।
हसानुग्रह सर्गाढ्यं विद्यैका सुन्दरीप्रिये ॥ "

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वितीय सुन्दरीभैरवी के मन्त्र ऐसा है:—

" अहसाद्यैर्जयेन्मन्त्री रवितुर्यमनुस्वरैः ।
अन्त्य ससर्गमाद्ये हि बिन्दुनादकलात्मिके ॥
इयं द्वितीया देवेशि सु दरी परिकीर्तिता ॥ "

तृतीय सुन्दरीभैरवी का मन्त्र ऐसा है:—

" केवलं वाग्भव देवि वाग्भवे मध्यमं श्रृणु ।
हसएहसहस्रां श्च वाग्भवेन च योजयेत् ॥
हत्रयंकलहल्लेखां शक्तिकूटं श्रृणुप्रिये ।
चतुष्कं शिवबीजानां रेफोनुग्रहसर्गवान् ॥ "

चतुर्थ सुन्दरीभैरवी का मन्त्र ऐसा है:—

" कलान्ते शिवयुग्मं तु तथा जीवत्रयं शिवे ।
परया पिण्डितं कुर्यात् कूटमेतत् त्रिधेरयेत् ॥
वग्भवे कामराजे च शक्ति बीजे च संलिखेत् ।
चतुर्थी सुन्दरी ख्याता भोगमोक्षप्रदायिनी ॥ "

पञ्चम सुन्दरीभैरवी का मन्त्र ऐसा है:—

" जीवः शिवयुगं जीवः क्ष्माक्षकारशिवेन्दुमत् ।
एतदाद्यं च मध्यं च हसयकक्ष्माक्षहेन्दुमत् ॥
अन्त्यं तु हसलक्षेन्दुहेन्द्राकाशविभूषितम् ।
त्रिपुरेशोमनोरेषा पंचमी सुन्दरी भवेत् ॥ "

इन के विषय में ऐसा है। मेरी गुरुपरंपरामें बाला के सिवा अन्य सकल भैरवियों की यन्त्र और आवरणपूजा एक ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। अन्य गुरुपरंपराओं में यदि अन्य बात हो तो मुझे मालुम नहीं है।

"संपत्प्रदाभैरवीवद्ध्यायेत्पञ्चकमुत्तमम् ।
ऋष्यादिपूजाविज्ञेयात्रिपुरेशीव नान्यथा ॥"

अतिरहस्ययोगिनियों के विषय में एक और रहस्य की बात है। आदमी का मस्तिष्क (Brain) में बोध की सत्ता-फुर्त्ति रहती है। इसलिए उसको तन्त्र में गुरुरूप मानकर मस्तिष्क सहस्रार मान कर व्याख्या की गई है। इस विषय में अगले अङ्क में वर्णन करने की चेष्ठा करूंगा। सकल जीवों की जाग्रद्दशा का बोध मैत्रेशनाथ गुरु है। वह गुरु जब चेतना बनेगा तब कामेश्वरी (अतिरहस्य योगिनी) शक्तिरूप होगा। वैसे ही स्वप्नादशा में षष्ठीशनाथगुरु वज्रेश्वरी रूप में परिणत होजाते हैं। सुषुप्तिदशा में उड्डीशनाथ गुरु भगमालिनी रूप में परिणत हो जाते हैं। फिर तुरीया दशा में चर्यशनाथ गुरु महात्रिपुरसुन्दरी (परापरातिरहस्ययोगिनी) शक्तिरूप में परिणत होते हैं। उन सब का ध्यान ऊपर ही लिखचुका हूँ।

आनन्द भैरव तथा आनन्द भैरवी दोनों ही ऊर्ध्वाम्नायात्मक देवता हैं। परन्तु सकल आम्नायों के वीराचार तथा कौलाचार में इन की आवाहन तथा पूजा आनन्द-कलश में तथा विशेषार्धश्रीपात्रादि में करनी आवश्यक है क्यों कि ऊर्ध्वाम्नाय में ही सर्व धर्म का मूल है। अतः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकल वीराचार तथा कौलाचार की पूजा में इसका आभास चाहिए। कुलार्णवतन्त्र में ऊर्ध्वाम्नाय के विषय में ऐसा लिखा है:—

" ऊर्ध्वत्वात्सर्व धर्म्मानां ऊर्ध्वाम्नाय प्रशस्यते।
सर्वाम्नायाधिकफलमूर्ध्वाम्नायं परात्परम् ॥
तस्माद्देवेशि जानीहि साक्षात्मोक्षैकसाधनम् ॥ "

आनन्दभैरव तथा आनन्दभैरवी के मन्त्र के श्लोक-रूप में उद्धार मेरे पास नहीं है। फिर ये मन्त्र साधकमण्डली में प्रचार होने के कारण मैं यहाँ केवल ध्यान ही देदूंगा। आनन्दभैरवका ध्यान ऐसा है:—

" सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम् ।
अष्टादशभुजंदेवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम् ॥
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरिस्थितम् ।
वृषारूढ़ं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम् ॥
कपालखट्वाङ्गधरं घण्टाडमरुवादिनम् ।
पाशांकुशधरं देवं गदामूशलधारिणम् ॥
खड्गखेटकचक्रर्ष्टीं पशुं मुद्गरशूलिनम् ।
मुशुण्डिधारिणां देवं गदामूशलधारिणम् ॥ "
धवलं (काम्यमें'लोहितं') देवदेवेशं भावयेद्भैरवीयुतम् ॥"

आनन्दभैरवीका का ध्यान ऐसा है:—

" ततो ध्यायेत्सुधादेवीं चन्द्रकोट्ययुतप्रभाम् ।
हिमकुन्देन्दुधवलां सर्वानन्दकरोद्यताम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सन्मुखीम् ।
सर्वरत्नविचित्राङ्गीं त्र्यम्बकां भूतविग्रहाम् ॥
अष्टादशभुजाकीर्णां नीरजायतलोचनाम् ।
आयुधानेकसंयुक्तैर्भुजैरष्टादशैर्वृताम् ॥
ज्ञानमुद्रापरा भद्रे अभया च द्वितीयका ।
दक्षिणे मांसखण्डानि वामे पाशं तु भीषणम् ॥
मुद्गरं दक्षिणेहस्ते वामे शूलं सुवर्चसम् ।
दक्षिणे निघृणं शुभ्रं वामे खेटं सुवर्तुलम् ॥
दक्षिणे च शिलावृत्तं वामे घण्टां च सुस्वनाम् ।
दक्षिणे वाममुष्टिं च वामे चापं सुवंशजम् ॥
दक्षिणे डमरुं श्रेष्ठं वामे शृङ्गं र वाकुलम् ।
दक्षिणे नृकपालं च वामे दण्डं महाबलम् ॥
दक्षिणे वज्रदीप्यन्तं वामे कट्टारिकाशुभा ।
निघृणां चैव निर्लज्जांत्यागां सुरां च मानिनीम् ॥
त्रासयन्त्यसुरान्सर्वान्देवानामभयकरीम् ॥ ''

सकलप्रकार के चक्रार्चनों में आनन्द भैरव तथा आनन्द भैरवी का ध्यान यही है। परन्तु भैरवी चक्रयाग में मन्त्र तो यही है परन्तु ध्यान पृथक् हैं क्यों कि उस में आनन्दभैरवी ही प्रधान देवता मानी जाती है, और उनका ध्यान प्रथम होके साथ ही पश्चाद्भैरवका ध्यान होता है वह ऐसा है:—

" नवयौवन संपन्नां तरुणारुणविग्रहाम् ।
चारहासामृताभाषोल्लसद्वदनपंकजाम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नृत्यगीतकृतामोदां नानाभरण भूषिताम् ।
विचित्रवसनां ध्यायेत् वराभयकराम्बुजाम् ॥
इत्यानन्दमयीं ध्यात्वा स्मरेदानन्दभैरवम् ।
कर्पूरपूरधवलं कमलायताक्षम् ।
दिव्यांवराभरणभुषितदेहकान्तिम् ॥
वामेनपाणिकमलेन सुधाढ्यपात्रम् ।
दक्षेन शुद्धिगुटिकां दधतं स्मरामि ॥ ”

दशमहाविद्या में षोडशी तथा विष्णु का कल्क्यवतार का ऐक्य होने के कारण कल्किभगवान ऊर्ध्वाम्नायात्मक हैं। उन के मन्त्रध्यानादि ऐसे है:—

“ अथातः संप्रवक्ष्यामि कल्किमन्त्रंमहाफलम् ।
ॐ कल्किने हृदन्तोऽयं प्रोक्तो मन्त्र षडक्षरः ॥
मन्त्रार्णैश्चषडङ्गानि पूर्णेन व्यापकं चरेत् ॥ ”

ध्यानम् — “ ध्यायेन्नीरसमारूढं श्वेतोष्णीशविराजितम् ।
महाप्रतोद हस्तं च कौस्तुभोद्दामकञ्चुकम् ॥
मर्दयन्तं म्लेच्छगणं क्रोधघूर्णितलोचनम् ।
अन्तर्हितैर्देवमुनिगन्धर्वैः संस्तुत हरिम ॥ ”

दक्षिणमूर्त्ति [गुरु] शिव भी ऊर्ध्वाम्नायात्मक है उन के मन्त्र ध्यानादि ऐसे हैं:—

“ अथवक्षे मन्त्ररत्नं समस्तपुरुषार्थदम् ।
अवापुर्येनजप्तेन दिब्यं ज्ञानंमुनीश्वराः ॥
दक्षिणामूर्त्तये पूर्वं तुभ्यंपदमनन्तरम ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वटमूल पदस्यान्ते पदं पश्चान्निवासिने ॥
ध्यानैकनिरताङ्गाय पश्चाद्ब्रूयान्नमः पदम् ।
रुद्राय शम्भवेतारशक्तिरुद्धोऽयमीरितः ॥
षट्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः सर्वकामफलप्रदः ।
मुनिः शुकः समुद्दिष्टश्छन्दोऽनुष्टुप् समीरितम् ॥
दक्षिणामूर्तिनामास्य देवता शम्भुरीरितः ।
षड्भिर्वर्णैर्हृदाख्यातं द्वाभ्यां शिरउदीरितम् ॥
शिखाष्टभिः समादिष्टा वस्वर्णैः कवचं मतम् ।
पञ्चभिर्नेत्रमाख्यातं त्रिभिरस्त्रमुदाहृतम् ॥
षडेते तारशक्त्याद्यास्ताराद्यन्ताः सजातयः ।
अङ्गमन्त्राः समुद्दिष्टा यथावद्देशिकोत्तमैः ॥ ”

ध्यानम्— “ कैलासाद्रिनिभं शशाङ्कशकलस्फुरज्जटामण्डितम् ।
नासालोकनतत्परं त्रिनयनं वीरासनाध्यासिनम् ॥
मुद्राटङ्ककुरङ्गजानुविलसत्पाणिप्रसन्नाननम् ।
कक्षावद्धभुजङ्गमं मुनिवृत्तं वन्दे महेशं परम् ॥ ”

मन्त्रान्तरम्— “ प्रणवो हृदयं पश्चात् ततो भगवते पदम् ।
ङेयुतं दक्षिणामूर्त्ति मह्यं मेधामुदीरयेत् ॥
प्रयच्छ ठद्वयान्तोऽयं द्वाविंशत्यक्षरो मनुः ।
मुनिश्चतुर्मुखश्छन्दो गायत्री देवता मनोः ॥
दक्षिणामूर्त्तिराख्यातो वेदव्याख्यानतत्परः ।
ताररुद्धैः स्वरैर्दीर्घैः षड्भिरङ्गानिकल्पयेत् ॥
अथवा मनुसंभूतैः पदैर्वा कल्पयेत् क्रमात् ।
पूर्वोक्त वटमूलस्थं चिन्तयेन्मन्त्रनायकम् ॥ ”

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्यानम्-- " स्फटिकरजतवर्णं मौक्तिकीमक्षमाला -
मम्‍तकलशविद्याज्ञानमुद्राकराग्रैः ॥
दधतमुरगकक्षं चन्द्रचूडं त्रिनेत्रम् ।
विधृत विविध भूषं दक्षिणामूर्त्तिमीडे ॥ "

इन का प्रधान मन्त्र नवाक्षरी हैं। उन का भी ध्यान स्फटिकरजत इत्यादि ही है। मन्त्रोद्धार ऐसा है:—

" आद्यद्वादशवर्णं तु तस्योपान्त्येन संयुतम् ।
पञ्चमं पञ्चमस्याथ षष्ठस्यापिचपञ्चमम् ॥
प्रथमस्यान्त्यसंयुक्तं द्वितीयप्रथमं ततः ।
सप्तमस्य तृतीयस्थं प्रथमस्य तुरीयकम् ॥
प्रथमोप्रान्त्ययुक्तश्च अष्टमस्याद्यमक्षरम् ।
तृतीयोपेतमाद्यस्य सप्तमस्यतुरीयकम् ॥
आद्यद्वितीय संयुक्तं सप्तमस्याद्यमक्षरम् ।
अष्टमस्य तृतीयं तु आद्योपान्ताद्यसंयुतम् ॥
तदन्त्यसहितं नन्दिन् तारादोयं नवाक्षरः ।
ऋषिः शुकः समाख्यातोऽनुष्टुप्छन्द उदाहृतम् ॥
देवता दक्षिणामूर्त्तिः पदैः षड्भिः षडङ्गकम् ॥ "

चक्रार्चनों के भेद पात्रादिस्थापना के क्रम और न्यासादि तथा मुद्रादि के रहस्य अगले पटल में यथाज्ञान संक्षेपतः वर्णन करूंगा। उस से चक्रार्चनों का नाम, गौड़ादि संप्रदाय और अन्तर्ज्योति के तत्व का ज्ञान पाठको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को पद्धति देखने से सुविधा से हो सकेगा। मेरे पूर्व लेखों से आम्नायदेवताओं के परिचय में कुछकुछ सुविधा तो हुई होगी। इस से अधिक बिना गुरुकृपा द्वारा नहीं हो सकती। इतना भी केवल ग्रन्थावलोकन से नहीं हो सकता था। परन्तु मैंने अपने गुरुदेव से थोड़ासा जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसे पाठकों का प्रेम प्राप्त करने के लिए दिग्दर्शन रूप से देरहा हूँ। इस से अधिक देने का मेरा सामर्थ्य नहीं है। अतः पाठक लोगों से मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। मैं पूर्व ही कह चुका हूँ कि गाणपत्य आदि सब ही मार्ग शास्त्र के विविधार्थ से निकला है। उदाहरण के लिए गीता में लिखा है कि " मामेकं शरणं व्रज " वैष्णव लोग ' मां ' का अर्थ ' श्रीकृष्ण ' को मानते हैं, क्यों कि यह श्रीकृष्ण की उक्ति है। शाक्त लोग ' मां ' का अर्थ ' लक्ष्मी ' को मानते हैं, क्यों कि ' लक्ष्मी ' शब्द का पर्याय ' मा ' शब्द है। फिर ' मा ' का अर्थ 'आत्मा, को मानते हैं, क्यों कि ' अस्मद् , शब्द का द्वितीया का एक वचन ' मां , तथा प्रथमा एक वचन ' अहं , है। पुनः ' अहमेवात्मा , इत्यादि शास्त्र के प्रमाण वे लोग देते हैं। परन्तु कुलमार्ग केवल मनो-विज्ञान-मार्ग होने के कारण यह मार्ग गुप्त है। अतः इस से विविधमार्ग नहीं निकल सकते। सद्गुरु की कृपा होगी तो यह अति सुगम मार्ग है, अन्यथा यह बडा ही कठोर भ्रष्टाचारी तथा भया-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक मार्ग है। अब इतने में ही मैं इस पटल को समाप्त करता हूं। दूसरे पटल में यागादि का विवरण करने की चेष्टा करूंगा।

इतिश्रीधनशम्शेरवर्मणा संग्रहितश्रीतान्त्रिकोपासना- दर्पणे ऊर्ध्वाम्नायविवरणन्नाम नवमः पटलः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ॐ ॥

॥ अथ दशमः पटलः ॥

॥ ॐ नमः श्रीपरदेवतायै ॥

अब मैं यागादि का वर्णन करता हूँ । सब से प्रथम पात्र तथा अमृतादि के कामानुसार प्रयोग का वर्णन करता हूँ । शक्तिसङ्गम तन्त्र के कालिखण्ड के मतानुसार गौड, केरल तथा काश्मीर सम्प्रदायों में पृथक् पृथक् पात्र स्थापना करने की विधि लिखी है, परन्तु वृहद्वडवानल तन्त्र के मत से तो तीनों ही सम्प्रदायों में सकल पात्र एक ही जात के रखने की विधि हैं । फिर वे पात्र कामनाभेद से पृथक् जात के बनाने चाहिए, जैसे भुक्ति—मुक्ति के लिए सकल पात्र शुक्ति के रखे, शान्ति के निमित्त रजत-निर्मित्त पात्र स्थापित करे इत्यादि । परन्तु सामान्यार्घ्य रजतया ताम्रका और विशेषार्घ्य तथा शंखार्घ्य शंख मे ही करना चाहिए । इस विषय में जात जात के पात्र में जात-जात की अलिरख कर स्थापना करके अर्चन करनेका वृहद्वडवानलतन्त्रका वचन ऐसा है:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विष्णु भगवान्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ॐ ॥

॥ अथ दशमः पटलः ॥

॥ ॐ नमः श्रीपरदेवतायै ॥

अब मैं पात्रादि का वर्णन करता हूँ। सब से प्रथम पात्र तथा अमृतादि के कामानुसार प्रयोग का वर्णन करता हूँ। शक्तिसङ्गम तन्त्र के कालिखण्ड के मतानुसार गौड, केरल तथा कश्मीर सम्प्रदायों में पृथक् पृथक् पात्र स्थापना करने की विधि लिखी है, परन्तु बृहड्डवानल तन्त्र के मत से तो तीनों ही सम्प्रदायों में सकल पात्र एक ही जात के रखने की विधि है। फिर वे पात्र कामनाभेद से पृथक् जात के बनाने चाहिए, जैसे भुक्ति—मुक्ति के लिए सकल पात्र शुक्ति के रखे, शान्ति के निमित्त रजत-निर्मित पात्र स्थापित करे इत्यादि। परन्तु सामान्यार्घ्य रजतया ताम्रका और विशेषार्घ्य तथा शंखार्घ्य शंख से ही करना चाहिए। इस विषय में जात जात के पात्र में जात-जात मैं आलिख कर स्थापना करके अर्चन करनेका बृहड्डवानलतन्त्रका वचन ऐसा है:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विष्णु भगवान्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" गौडीतर्कवितर्ककाव्यरचनालङ्कारबुद्धिप्रदा ।
पैष्ठी पुष्टिविवर्धिनी सुखकरी सर्वापदोन्मूलिनी ॥
धान्या नामयकारिणी जयकरी चारोग्यदाबलकरी ।
धान्यास्फूर्तिकरी ह्यघौघशमनी दोषादिकान्नाशिनी ॥
माध्वीवश्यकरी पशुक्षयकरी चाद्वैतता बोधिनी ।
पौष्पीराज्यकरी शुभोदयकरी मांगल्यसंवर्धिनी ॥
आनन्दौघविधायिनी रिपुकुलविध्वंसिनी खार्जुरी ।
तत्वज्ञानकरीविमुक्तिफलदा द्राक्षापरारूपिणी ॥
वश्याकर्षणमारणादिकरणे हैमं तथापैष्ठिके ।
शान्त्यादौ रजतोद्भवं दृशदजं त्वाकर्षणं स्तम्भने ॥
लौहंमारणदारणादिपुरिपो विद्वेषणे स्मरामयम् ।
काचं वंशविवर्द्धने च हननं पात्रं तथोच्चाटने ॥
सौभाग्यं रत्नपात्रैरखिलमलहरं स्फाटिकैर्मन्त्रसिद्धिम् ।
कापाले रष्टसिद्धिं नृपकुलवनिता मोहने नारिके लैः ॥
ज्ञानंब्रह्मद्रमोत्थैः कलयति कविता विल्वजैर्मौक्तिकोत्थैः ।
भुक्तिमुक्तिं च पुण्यं शुभमतिविभवं शुक्तिकैरर्घपात्रैः ॥
विश्वामित्रकपालं तु सर्वपात्रोत्तमोत्तमः ।
नृत्यन्तिसर्वयोगिन्यः सिद्धयः सहसर्वदा ॥
कपालपात्रंदेवेशि सर्वसिद्धिकरंपरम् ।
अस्मात् परतरं पात्रं नास्ति नास्ति जगत्त्रये ॥

यह वचन पूर्णवैज्ञानिक तरीके का है। इस की व्याख्या करने से दूसरी ही पुस्तक बनेगी। हमलोगों की इस पुस्तक में तो केवल मानव वीर बनने की तरकीब बताई गई हैं न कि दानववीर बनने की। वे लोग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(दानववीर) तो बिनावध मुक्त ही नहीं हो सकते। युग त्रय में देवता को साक्षात्कार करके उन के अस्त्र द्वारा अपने को वंधकराके परम पद में पहुचते थे। कलि काल में वेलोग जन्मान्तर में पशुयोनि को प्राप्त कर पशुयाग में वध होकर परम पद में पहुँचते हैं। अभी यह बात इतना में हीं रहने दें, अब यागों की बात शुरु करें।

ईश्वर तो निराकार, निर्लेप और एकरस है। उन में प्रपञ्च का लेशमात्र भी नहीं है। अतः उन के लिए सब सम है "यह मेरा भक्त तथा उपासक है इस को मैं ऊचा स्थान दूंगा, यह मेरा भक्त तथा उपासक नहीं है उसको मैं नीचास्थान दूंगा" ऐसा कह कर मनुष्य जैसा प्रपञ्ची वह ईश्वर कदापि नहीं बन सकता। वह सर्वव्यापी है केवल सब की साक्षी रूप एक सच्चिदानन्द है। एक सर्वश्रेष्ठ है वही "हं" रुप 'सत्, है, उसी को तन्त्रने महानिर्वाण भैरव माना है। फिर उन में प्रपञ्चरहित होने के कारण वह आन्दमय है इसलिए वह आन्दभैरव के उपर, तथा सब जीवो [हंस] के संचालक होने के कारण हंस के उपर नृत्य कररहा है ' सत् , तोजड है विना चैतन्य आनन्द का उपभोग नहीं होसकता। इसलिए उस (महानिर्वाणभैरव) का वक्षस्थलांकित श्रीयन्त्रका बिन्द्वन्तर्गत निर्वाणमहात्रिपुरसुन्दरी को ' चित , (चैतन्य) माना है। फिर वही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चैतन्य सिद्धिकरालीरूप बनकर ऊर्द्ध्वक्रान्तर्गत होकर आनन्द का उपभोग करता है। इस प्रकार तन्त्र ने सच्चिदानन्द का वर्णन किया है।

उपासना के ढङ्ग ३ प्रकार के है, अधम, मध्यम तथा उत्तम, यहाँ मैं सब से प्रथम एक बात कर उपासनाओं का वर्णन करूंगा। बात यह है कि हमलोग ही स्वयं सर्वशक्तिमान् ईश्वर है। अज्ञान वश अपनो उस शक्ति का प्रयोग नहीं करसकते है। वह ज्ञान अभ्यास के बिना प्राप्त नहीं हो सकता है। उदाहरण के लिए देखिए आप सर्कस का तमाशा देखरहे है, वहाँ एक आदमी एक तार के उपर खडा है। तो आप चकित सा होते है, परन्तु आप वैसा करने का साहस नहीं कर सकते है, क्यों कि आपके भी हरेक अङ्गप्रत्यङ्ग तथा अन्तस्करणादि सब उसके ही सदृश होने से भी उस कर्म के लिए आपका अभ्यास न होने के कारण **आत्मबल** (Will-power) वा बल उस कर्म के लिए कमजोर होजाता है, अतः आप उसकर्म को नहीं कर सकते है। फिर आप कुछरोज इस का योग्य अभ्यास करें तो आप भी वह कर्म कर सकेंगे। परन्तु यह अभ्यास क्रम से धीरेधीरे करना चाहिए। इष्ट देवता की साधनविधि भी ऐसी ही है। प्रथमावस्था की साधना को **अधम उपासना** मानते हैं। इस में इष्टको स्वामि—पितृ-सखादि भाव से अपने को दासपुत्रादि भाव से देहा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भिमान के साथ भक्ति योग से प्रायशः पाशवकल्प से उपासते हैं। जब साधक भक्ति बढाता जायेगा तब उस का आत्मबल (Will-power) भी साथसाथ ही बढता जाए-गा और अन्त्य में उस साधका ही प्रतिबिम्ब उसका ध्येयरूप ईष्टदेवता का दर्शनस्पर्शनादि तक भी करा के साधक की कामना की पूर्ति हो जाएगी। परन्तु यह उपासना देहाभिमान से होने के कारण " यह मेरे आत्म-बल की शक्तिद्वारा मैं ही कल्पना कर रहा हूँ ,, ऐसा ज्ञान साधक को नहोकर वह कहता है कि " देखो, मेरे भगवान् ने प्रसन्न होकर मुझे दर्शन देकर मेरे पिता बनकर मुझे सहायता देकर मेरी कामना की पूर्तिकर दी। " इस प्रकार के भक्ति योग का उपासना देख कर ही आधुनिक पश्चात्य-सभ्यता का गन्धप्राप्त किए हुए अर्ध-पण्डित लोग " देखो, इस शास्त्र ने निस्प्रपञ्ची ईश्वर को प्रपञ्ची, तथा निराकार ईश्वर को साकार बनाया है, फिर ये आदमी अन्धी श्रद्धा (Blind faith) में कूदते है " कह कर हँस्सी उडाते हैं। उन विचारों को तो परशास्त्र ही का अभ्यास है हमारे शास्त्र का मर्मिक रहस्य क्या जानें ? यदि कोई उपासक होगा तो उन लोग के दृष्टिगोचर में पागल तथा पुराने-विचार के असभ्य मूर्ख हो जाते हैं। फिर पागल मूर्ख से सभ्यलोग क्यों संगत करें उससे बल् डान्स (Ball-dance) का मजा नहीं मिल सकता। इसी कारण हम हिन्दु ओं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की निःश्रीकता होरही है। प्रथमावस्था की बात ही ऐसी है तो द्वितीयावस्था की बातकथा कहें ? द्वितीयावस्था को मध्यम उपासना कहते हैं। इस में देहाभिमान को त्यागकर आत्माभिमान द्वारा अपने आत्मबल (Will power)को प्रधान मान के उसकी शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। तृतीयावस्थाको उत्तम उपासना करते है। इस में अपने कोही इष्ट मानकर उपासनादिकर्म्म होगा। यह तो मनो विज्ञानशास्त्र है। मध्यम उपासना तथा उत्तम उपासना को बहुत ही सूक्ष्म भेद है जो कि गुरुकृपाद्वारा अनुभव से ही विदित हो सकता है। अब मैं यहाँ मन्त्र के विषय में कुछ लिखूंगा। बीजा क्षरी मन्त्रों का अर्थ तो एक ही है तथापि अपने-अपने गुरुपरंपरा भेद से अपने—अपने शिष्यों को पृथक् पृथक् तरिका से समझा देने की प्रथा है। जैसे एक छोटे से वीजके अन्तर गंत एक बडा वृक्ष है फिर उस वृक्ष के मूल से अथवा शाखा से जिसप्रकार भी वर्णन हो सकता है, वैसे ही एक मन्त्र का बीजाक्षर के अन्तर्गत एक लम्बा अर्थ है, उस की जिस प्रकार भी व्याख्या हो सकती है। फिर मन्त्र का अर्थ उपासक के भेद से ३ प्रकार से किया जाता है। अधम अधिकारी के लिए देहाभिमान से जपने का साधारण अर्थ समझायाजाता है। मधम अधिकारी के लिए आत्माभिमान से मनन करने के लिए उसी मन्त्र का अर्थ निर्गुण रूप में समझाया ज.ता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। तथा उत्तम अधिकारी के लिए निरभिमान से निदि-ध्यासन करने के लिए उसी मन्त्र का अर्थ निर्गुण रूप से अपने में घटा कर तन्मय करा देते हैं। यह अर्थ मुख से बताया नहीं जाता है वरन् स्वयम् गुरु शिष्य को अपने साथ रखकर स्वयं अनुभव करके दिखाकर शिष्य को भी अनुभव करा देते हैं। जिस प्रकार मन्त्र के अर्थ ३ प्रकार के होते हैं, उसी प्रकार ध्यान के तथा यन्त्र के अर्थ भी ३ प्रकार के होते हैं। अतः पूजा भी ३ प्रकार से होती है। इसलिए मूर्ति, मन्त्र तथा यन्त्र का एक ही रूप माना गया है। अब यहाँ एक शंका की बात है कि यन्त्र तथा मूर्ति तो हमलोगों ने बनाया और जिस ईश्वर ने हमको बनाया उस को हम कैसे पूजें? वास्तविक बात यह है कि सर्वशक्ति मान् ईश्वर तो हम ही हैं, केवल भ्रमसे ईश्वर को अलग मान ते हैं। यह जगत् है ही नहीं, केवल हमलोगों की भ्रान्ति है। यह संसार हमने ही अपने संकल्प से रचा है फिर मोहवश उसी को सत्य मानकर अपनी ही रची हुई अनेक योनि में भ्रमणकर देहधारी बन सुखदुःख का अनुभव कर रहा है। इसी भ्रमको हटाने के लिए प्रथमा-वस्था में साधक देहाभिमान से उपासते हैं, इसलिए वह अपनी देह से मूर्ति निर्माण कर प्राणप्रतिष्ठादिकर उन को सजीव मानकर अपना मालिक बनाकर पूजते हैं। इस अवस्था में "इसमूर्तिको मैंने बनाया है" ऐसा भाव त्याग कर "यह साक्षात् भगवान् है हम इस से बने हुए हैं"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसा भाव साधक का होता है। तब भक्ति पूर्वक आदमी को जैसे स्नान शृंगार तथा भोजनादि कराके उन की सेवा में मग्न होजाते हैं। अधम उपासना की विधि ऐसी है।

जब साधक मध्यमाधिकारी होगा तब देहाभिमान को त्यागकर आत्माभिमान से उपासना करने के लिए मन्त्ररूप वाङ्मय मूर्त्ति को निर्माण करता है। और उस निर्गुण से अर्थ किया जायगा, और जिस देवता के मन्त्र के निर्गुणार्थ का मनन किया जायगा, उस देवता की मूर्त्ति तथा ध्यान का भी वही अर्थ बन जाएगा। यह अनुभवी गुरु के वक्त्र से जानने की बात है। अतएव यहाँ संक्षेपतः वर्णन किया है, क्यों कि मन्त्रों तथा मन्त्रार्थों को मुद्रित कराने में मैं असमर्थ हूँ। ये दोनों ही गुरु वक्त्राम्बुज से सीखने की बातें हैं न कि मुद्रित अथवा लिखित पुस्तकों से। मन्त्र के विषय में पिङ्गलामततन्त्र में ऐसा लिखा है:—

"मननाद्विश्वविज्ञानं त्राणं संसारवन्धनात्।
यतः करोति संसिद्धिं मन्त्र इत्युच्यते ततः ॥"

मेरुतन्त्रे—"साधकानां फलं दातुं तत्तद्रुपं धृतं सुरैः।
मुख्यस्वरूपं तेषां तु मन्त्रा एव न चेतरम् ॥"

फिर मन्त्र की आराधना के विषय में चामुण्डातन्त्र में ऐसा लिखा है:—

"पुस्तके लिखितो मन्त्रो येन सुन्दरि जप्यते।
नतस्य जायते सिध्दिर्हानिरेव पदे पदे ॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुमुख्याः क्रियाः सर्वाभुक्तिमुक्तिफलप्रदाः ।
गुर्वनुक्ताः क्रियाः सर्वा निष्फलाः स्युर्यतो ध्रुवम् ॥ ,,

फिर " शास्त्राद्वा गुरुवक्त्राद्वा ज्ञात्वा मन्त्रं प्रसाधयेत् " ऐसा भी तन्त्रान्तर में लिखा है। उसका अभिप्राय यह हैं कि जिस आम्नाय का मन्त्र गुरुवक्त्र से लिया हैं, उसी आम्नाय के उस मन्त्र से कम श्रेणीका मन्त्र शास्त्र देख कर दक्षिणामूर्त्ति गुरु—द्वारा पूर्वोक्त विधिसे ग्रहण करके पुरश्चरणादि करना चाहिए। यदि साधक उस आम्नाय की सर्वाधिकार ले चुका होतो उस आम्नाय के अन्य मन्त्रों के पुरश्चरणादि केवल शास्त्रदेखकर कर सकता हैं, दक्षिणा-मूर्त्तिगुरु से ग्रहणकरने की जरूरत नहीं होगी। इस विषय में पूर्व ही लिखचुका हूं। यहाँ दुबारा लिखने की जरूरत नहीं हैं। अब मैं द्वितीयावस्था अथवा मध्यम उपासना की पूजा का वर्णन करूंगा।

इस अवस्था की पूजा को कुलपूजा कहते हैं वह पूजा आत्माभिमान से मनोविज्ञान के तरी के से करनी चाहिए। कुलपूजा में सामान्यार्घ्य स्थापनादिभूतशुध्यन्त के सकल विधि स्वगुरपरंपरा—क्रम से समाप्त कर जो हेतुपूर्णकलश की स्थापना होती हैं उस में आनन्दभैरव तथा आनन्द भैरवी के आवाहन तथा अर्चन किये जाते हैं। अतः इस कलश को आनन्दघट अथवा आनन्दकलश कहते हैं। उस में अपना आनन्दरूप जो हैं, वही आनन्द भैरव तथा इस आनन्द को 'सुधा' याने बोध करानेवाली जो सत्ता है,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यही आनन्द भैरवी (सुधादेवी) हैं। वागर्थवत् इन दोनों में अभेद होने के कारण इन दोनों का साथसाथ ही आवाहन तथा पूजन होनाचाहिए। यह आवाहन करने की विधि गुरुद्वारा अभ्यास तथा अनुभव के साथ सीख लेनी चाहिए। इन्हीं आनन्दभैरव तथा आनन्द भैरवी का श्रीपात्र में भी आवाहन होता है। फिर इसी श्रीपात्र में इष्टदेवता का भी आवाहन होता हैं। उसका तात्पर्य यह है कि— आप विचार किजिए एक दीप जलरहा है। यदि उससे आप दूसरा दीप जलायें तो भी प्रथम दीप की ज्योति का ह्रास नहीं होगा ज्यों—का—त्यों ही रहेगा। फिर दूसरा दीप प्रथम दीप का ही सदृश बन जाएगा और उन दोनों में भेद भी नहीं रहेगा वैसे ही अपना आनन्द तो अपने ही साथ में है, उस से दीपवत् दूसरा आनन्द उद्धृत करके आनन्दकलश में आवाहन करना चाहिए। और आनन्द कलश का बिन्दु जिस अवस्था में श्रीपात्र में ड़ालाजाता है, उसी अवस्था में उस आनन्द से भी दूसरा आनन्द उद्धृत करके बिन्दु के साथ साथ ही श्रीपोत्र में डाल देना चाहिए। उस श्रीपात्र में भी आनन्द भैरव तथा आनन्द भैरवी का आवाहन और संक्षेपतः पूजन होगा। अब देखिए, इस अवस्था में अपना, आनन्द घट का तथा श्रीपात्र का आनन्द संमिलित होने से पूर्व आनन्द तिगुना हो जाएगा। यही आनन्द को तिगुना करने की तरीका है कौलाचार। अब वही आनन्द जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीपात्र में रहा, उस में अपने हृदय में स्थित सच्चैतन्य (Self) रूप इष्टदेवता का दीपवत् पूर्वोक्त प्रकार से आवाहन कर उसे आनन्द में मिलाना होगा। फिर अपने हृदय में दीपवत् इष्टदेवता ज्यों-के-त्यों ही रहते हैं। एवं प्रकार से इष्ट देवता को गुरुपात्रादि अन्यपात्र में भी आवाहन करना चाहिए। उदाहरण के लिए देखिए श्रीपात्र में आनन्द का साक्षीरुप बनके ईष्टदेवतारूप आत्मचैतन्य (Self) का आवाहन होता है। फिर गुरुपात्र में वोध (Knowledge) रूप गुरु के साक्षी रुप से, भोगपात्र में इन्द्रिय (Sensetion) रुप आवरणदेवताओं के तथा अन्य अन्य पात्रों में भी एवं प्रकार साक्षीरुप से इष्ट देवता को आवाहन होता है। एवं प्रकार अपने सच्चिदानन्दरूप सर्व शक्तिमान् आत्मा (Self-power) को साचरण इष्ट देवता सराही, मूर्त्ति अथवा यन्त्र में आवाहन कर यथा मिलितो पचार से पूजा होगी। संक्षेपतः पूजा का रहस्य बतलाता हूं। स्नान से जलतत्व का, चन्दन से पृथ्वी तत्व का, सिन्दूर से रजो गुण का अक्षता से सत्वगुण का मोहिनी (कज्जल) से तमोगुण का, पुष्प से आकाशतत्व का, धूप से वायुतत्व का, दीप से तेजस्तत्व का, नैवद्य से काल (time) का तत्तत् पात्र के विन्दु के तर्पण से तत्तत् तत्वको अर्थात् श्रीपात्रामृत से आनन्द का, गुरुपात्रामृत से वोधका इत्यादि सब का आत्मारूप इष्ट देवता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में विलीन कराना चाहिए। यही आत्मा में जगत् को विलीन कराने की तरीका है कुलार्चन। तत् पश्चात् यथोक्त विधि से पूजा को समाप्त कर विसर्जन करना चाहिए। विसर्जन का अर्थ यह है कि पहले जो दीपवत् सत्ता अपने से निकाल कर जहाँ जहाँ स्थापित की है, संहार मुद्रा से वहाँ-वहाँ से लेकर अपने हृदयस्थ दीपरूप सत्ता में उसे मिला देना है। जैसे एक सूत्र में दीप जल रहा था, भिन्न--भिन्न सूत्रों में उसी दीप से दीप जला कर भिन्न भिन्न रखकर घृत डाल दियाथा अब सब दीपों का घृत सूत्र के साथ पहले वाले दीप में मिला दिया जाए तो उस दीपका तेज कितना बढ जाएगा? इसी तरह इष्टदेवता का विसर्जन करके अपने आनन्द तथा शक्ति की वृद्धि की जाती है। जैसा दीप जलाने की और दीप में घृत सहित सूत्र डाल ने की मुद्रा पृथक्—पृथक् होती है, वैसा ही आवाहन और विसर्जन करने की मुद्रा भी पृथक—पृथक होती है। पूर्वाम्नाय पश्चिमाम्नाय दक्षिणाम्नाय और अधराम्नाय की सर्वाधिकारदीक्षा का मन्त्रार्थ में शिवशक्ति का भाव स्फुरण होने के कारण उन में करकच्छपी मुद्रा से आवाहन तथा संहारमुद्रा से विसर्जन होते है। फिर उत्तराम्नाय और ऊर्ध्वाम्नाय की सर्वाधिकारदीक्षा का मन्त्रार्थ में एक आत्मा का ही भाव स्फुरण होने के कारण उन में त्रिखण्डा मुद्रा से आवाहन तथा संहार मुद्रा से विसर्जन होते हैं। इस का रहस्य गुरुमुख से ही जान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेना चाहिए। इत्यादि के चक्रार्चन आत्मसाधन तथा राजाधिराजयोग (Self-culture) भी कहते हैं। इस राजाधिराज—योग का तत्वशुद्धि—साधन तरीका तो एक ही है, परन्तु चक्र के नाम भेद से विसर्जन तथा स्थापना का ढंग पृथक है। उसका अत्र वर्णन करता हूँ। चक्रार्चन में मुख्य दो भेद हैं एक दिव्यचक्र दूसरा वीर-चक्र फिर इन दोनों के अन्तर्गत बहुत भेद हैं। दिव्यचक्र में "इतः पूर्वं" इत्यादिमन्त्र पढ़कर "मां मदीयं सकलं परार्पणमस्तु" यह मन्त्र पढकर दोनों हाथों के तत्वमुद्रा से जब इष्टदेवता के चरणकमलों में श्रीपात्र का बिन्दु समर्पित किया जायगा तव साधक 'तत्वमसि' हो जाय-गा। यहाँ 'तत्वमसि' का भावार्थ ऐसा है। 'तत्' पर-ब्रह्मात्मक पूज्य ईष्ट—देवता को तथा 'त्वम्' पूजक अपने को "असि" (अस × सिप्) से ऐक्य भाव देकर 'तत्त्वं' तत्त्वरूप फिर वही "असि" से वन जायगा। इसका यथार्थरहस्यगुरुवक्र से ही जानलेना चाहिए। ततपश्चात् वही श्रीपात्र उठा के तत्व—शुद्धि करनी चाहिए। यतः प्रथमतत्व शुद्धि के आगे श्रीगुरुका ध्यान करना चाहिए क्यों कि सहस्रार वोध रूप गुरु से ही ज्ञानप्राप्ति होती है। मस्तिष्क brain से ही ज्ञान Feeliugs की उत्पति होगी। तत्पश्चात् उस पात्रका अमृत प्रथमतत्व के साथ प्रथमपात्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वन्दन पढकर मूलमंत्र का प्रथमपाद के उच्चारण के साथ "आत्मतत्वेनात्मतत्वं स्थूलशरीरं परिशोधयामि शिवोऽहं स्वाहा" इस मन्त्र से कुलकुण्डली के मुख में हवन करने से स्थूलदेह तथा आत्मतत्व की शुद्धि होगी। अर्थात् स्थूल-देहाभिमान हट जाएगा। कुलकुण्ड़लि—मुख में हवन करने की तरीका स्वगुरुदेव से ही सीखलेना चाहिए। उसका संकेत महानिर्वाण तन्त्र में ऐसा लिखा है:—

" मूलाधारादिजिह्वान्तांचिद्रुपांकुलकुण्डलीम् ।
विभाव्य तन्मुखाम्भोजे मूलमन्त्रं समुच्चरन् ॥
परस्पराज्ञामादाय जुहुयात्कुण्डलीमुखे ॥ "

यह खाने पीने की बात नहीं है, यह अन्तर्याग की बात है। फिर हृदय में (जहा अन्तस्करण रहते हैं) आत्मारूप इष्टदेवता का चिन्तन कर द्वितीयतत्व के साथ द्वितीय पात्रवन्दन पढकर मूलमन्त्र का मध्यमपाद के उच्चारण के साथ "विद्यातत्वेन विद्यातत्वं सूक्ष्मशरीरं परिशोधयामि शिवोऽहं स्वाहा" इस मन्त्र से पूर्ववत् हवन करके सूक्ष्म देह तथा विद्यातत्व की शुद्धि कर सूक्ष्मदेहाभि-मान हटावे। तदन्तर प्राणायाम कर तृतीयतत्व के साथ मूलमन्त्र के अन्तीमपाद के उच्चारण के साथ "शिवत-त्वेन शिवतत्वं कारणशरीरं परिशोधयामि शिवोऽहं स्वाहा" इस मन्त्र से पूर्ववत् हवन करके कारणदेह शिवतत्व की शुद्धिकर कारणदेहाभिमान भी हटावे। फिर जपकर तीनों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही तत्व के साथ चतुर्थवन्दन पढकर मूलमन्त्रोच्चारण के साथ " सर्वतत्वेनसर्वतत्वमत्रास्नयजीवं प्रकृति एवं परिशोधयामि शिवोऽहं स्वाहा ,, तदनन्तर कुण्डगोलादि के साथ शक्त्युच्छिष्टामृत पंचमवन्दन पढ़कर मेधामन्त्र के साथ " पुरुषतत्वं परिशोधयामिजुहोमि शिवोऽहं स्वाहा " इस मन्त्र से पूर्ववत् हवन करे। इस पञ्चमाहुति कुलसन्ध्या के साथ करनी चाहिए। कुलसन्ध्या की विधि गुरु से ही जान लेनी चाहिए क्योंकि यह विधि अति रहस्यपूर्ण है। इस हवन के विषय में कौलावलिनीर्णय में ऐसा है:—

" प्रथमे श्रीगुरोर्ध्यानं द्वितीये स्वेष्ठुचिन्तम् ।
प्राणायामं तृतीये च चतुर्थे जपमाचरेत् ॥
पंचमेतु महेशानि कुलसन्ध्यां समाचरेत् ।
पंचमे पंचमं कुर्याद्यावदेकादशावधिः ॥ "

ततः यथारुचि तत्व के साथ षष्ठवन्दन कर " ॐमनस्तत्वं परिशोधयामि जुहोमि शिवोऽहं स्वाहा " इस मन्त्र से पूर्वोक्त हवन करे। एवं सप्तम में बुद्धितत्व, अष्टम में अहंकार तत्व, नवम में शक्तितत्व, दशम में भैरवतत्व तथा एकादश में सर्वतत्व की शुद्धि कर उस उस अभिमान को हटावे। इसी क्रिया का नाम है तत्वशुद्धिक्रिया। जब शान्तिस्तवादि का पाठ समाप्त होगा, तब आनन्दकलशामृत भी उसी श्रीपात्र में रखकर ' ॐ देहं मन्त्रमयं ' इत्यादि पढ़कर पूर्णाहुति करनी चाहिए। यह विधि दिव्य-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चक्र की है। चक्रार्चनपद्धति में लिखा भी है कि 'दिव्यं देव्यग्रतः कार्यं वीर विसर्जनात् परम्। वीरचक्र में घट के ऊपर एक पात्र स्वाग्र में स्थापित कर उस में कुलमधु भरकर उस मधु में ही इष्टदेवता के आवाहन तथा पूजन होते हैं। इसी को सराही कहते हैं। इस विधि में जब श्रीपात्र से पूर्वोक्त प्रकार 'ईतः पूर्वं, होगा तब श्रीपात्र में स्थापित देवता को श्रीपात्र में ही रखकर केवल उसका आनन्द को सराही में मिला कर सराही को विसर्जन कर वहीं पात्र उठाकर तत्वशुद्धि होगी अन्त में सकलपात्र का अमृत दिव्य चक्र में श्रीपात्र में और वीर चक्र में उस अवस्था में श्रीपात्र का विसर्जन कर सब पात्र का अमृत सराही में एकत्रित कर सूर्यको आत्मा मानकर सूर्यार्घ्य देना चाहिए। अतः दिव्यचक्र में आनन्द श्रीपात्र में रहकर चेतना मूलदेवता में लय होगी। और उसी आनन्दमय श्रीपात्र से उल्लास मिलेगा। वीरचक्र में चेतना श्रीपात्र में रहकर आनन्द सराहीरूप मूलदेवता में लय होगा। और उसी आनन्दमय सराही से उल्लास होगा। प्रायशः तत्वशुद्धि की क्रिया बीरचक्र के सदृश ही होगी। परन्तु दिव्य—वीर चक्र में दोनों की ही मिश्रित किया होगी। चक्रार्चन बहुत प्रकार के होते हैं, सब का मुझे ज्ञान नहीं है। मुझे जितना ज्ञान है, वह पीछे वर्णन करूंगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चक्रार्चन में पंक्त्या कार वा चक्राकार से आचार्य के वाम तरफ शक्ति की स्थापना कर ज्येष्ठक्रम से वीरो को बैठ के तत्व शुद्धि करनी होगी और इसी क्रम से पात्र भ्रमण भी होगा। फिर योगिनियाँ तथा वीर सम होंगे तो दक्षिणतः क्रम से योगिनी तथा वीर, फिर योगिनी तथा वीर एवं क्रम से भी बैठने को तन्त्रशास्त्रने कहा है। इस विषय में कुलार्चनदीपका में करीब ३०० श्लोक लिखे हैं। उसका भावार्थ इतना ही होने के कारण तथा लेख ! विस्तार भय के कारण यहाँ नहीं दियाजाएगा। चक्रार्चन में जितने ही कम आदमी होंगे, उतनी शीघ्र सिद्धिप्राप्ति होगी। यतः बहुत मनुष्यों में सब की मनोवृत्ति एक ही प्रकार की होनी बहुत कठिन है। अतएव प्रथम श्रेणी में केवल एक साधक और एक शक्ति दोनों ही बैठके चक्रार्चन करना चाहिए। जब इनकी वृत्ति एक ही होजाय तब धीरे धीरे साधकान्तरों का समावेश करना चाहिए। परन्तु आठ से अधिक उपासकों की सम्मति नहीं है। इस में नीलतन्त्र का वचन ऐसा है "अथवाष्टौ समाहूय प्रान्तरेषु समाचरेत्।" परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि सात अथवा नौ न हो। सम्भव है आठसे अधिक उपासकों की सम्मति भी किसी किसी तन्त्रान्तरमें दी गई हो। तन्त्रग्रन्थ एक नहीं अनेक हैं। हमने स्वयं बहुत कम तन्त्रग्रन्थों का अवलोकन किया है। अतः हम निश्चय से नहीं लिख सकते कि इतने ही मनुष्य चक्रार्चन में संमिलित हो सकते हैं। किन्तु यह बहुत आवश्यक है कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सब की वृत्ति एक जैसी हो। यदि सब के मनोभाव एक न हों गे, तो यह राजाधिराज-योग कदापि पूर्ण न होगा। इस की पूर्ति के लिए सब की चित्तवृत्ति एक होनी चाहिए। और इस की सम्भवता जितने ही कम साधक होंगे उतनी ही अधिक हो सकती है। लय-योग भी राजयोगका ही अङ्ग है। तथापि तन्त्रान्तर में नाद के अभ्यास को लय-योग ध्यान तथा धारणा के अभ्यास को राज-योग मानागया है। राज-योग, लय-योग इत्यादि अनेक प्रकार के योग के वैष्णव, सौर, शाक्त, गाणपत्य, तथ शैर इत्यादि अनेक मार्गसे अभ्यास होसकता है। मंत्र-योग, लय योग, राज-योग तथा मनोविज्ञान यह चारों का मिश्रित राजाधिराज-योग के कुलमार्ग के अतिरिक्त अन्यमार्गसे अभ्यास नहीं हो सकता है। फिर कुलदीक्षा प्राप्त कर राजाधिराजयोग का अभ्यास अथवा तीव्रवैराग्य प्राप्तकर वेदान्तका श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन के अतिरिक्त किसी से भी निर्वाणमोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। राजाधिराज-योग की विधि तो बताई गई है, अब उस के अभ्यास का तरीका संक्षेपतः यथाज्ञान लिखता हूँ। जब तत्व-शुद्धि की क्रिया समाप्त होजाय तब वीर-भोजन करके यथोक्तविधिसे मध्यम उपासक लोग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चक्र का विसर्जन करते हैं। परन्तु उत्तम उपासकों के लिए तत्व—शुद्धि के पश्चात् " देहंमन्त्रमयं " इत्यादि के आगे वीर—भोजन के साथ—साथ ही (अर्थात् अर्ध भोजन के पश्चात् अभ्यास कर फिर अर्ध भोजन) नीचे लिखाहुआ अभ्यास करना चाहिए। तत्वशुद्धि से यह निश्चय हो जायगा कि हमलोगों में वह परमशक्ति (Supreme-power) विद्यमान है। उसी के प्रभाव से यहनिश्चय होगा कि स्वयं हम लोग ही शक्ति, अनुमन्ता, भोक्ता और भर्त्ता हैं। अनुमन्ता रूप से हमलोग अनुमति करते हैं, फिर शक्तिरूपसें उस के फलका ज्ञान प्राप्त करते हैं, भोक्तारूपसे फलका भोग करते हैं और भर्तारूपसे उसी शक्तिकी पुष्टि करते हैं। वह जो परमा शक्ति हैं वह सर्वसाक्षीरूप से हमलोगों के सहस्रदल के उपर विराजमान होकर सूक्ष्मदेह (मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार) का स्थूलदेह से सम्बन्धकराकर कवली कर रही है। अब यह सूक्ष्मशरीर स्थूलशरीर की किस-किस जगह पर रहकर सम्बद्ध होरहा हैं उसका वर्णन किया जायगा। हमलोगों के मस्तिष्क के उपर भागमें ज्ञानरूपी बुद्धि और उसके नीचे भाग में विवेकरूपी बुद्धि तन्त्रशास्त्र ने उपर भागको मातृकावर्णसहित सरस्रार की गुरुपादुका के चिन्ह तथा नीचेभागको वही सरस्रार के अधोभाग आनन्दभैरवकूटाक्षरों तथा खेचरीकूटाक्षरों से अंकित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दलों को ही माना है। उसी वुद्धि को अनुभव गम्य रीति से तीन भाग लगाकर दिव्यौघ, सिद्धौघ, तथा मानवौघ गुरुरूप माना गया है। फिर विवेकरूपवुद्धि को पूर्वोक्त द्वादशकूटाक्षरों के साथ द्वादश भागकर १० गुरु माने गये हैं, वे ऐसे हैं। १ गुरु। २ परमगुरु। ३ परापरगुरु। ४ परमेष्ठिगुरु। ५ परमाचार्यगुरु। ६ पूर्वसिद्धगुरु। ७ आदिसिद्धगुरु। ८ श्रीनाथादिगुरु। ९ सिद्धिनाथादिगुरु। १० त्रिपुरानाथादिगुरु। और दो नादविन्द्वात्मक अक्षरों के भाग में वे बीज ही गुरुरूप माने गए हैं। उसी मस्तिष्क के नीचे ललाटमें स्मृतिरूपी बुद्धि है। तन्त्रने इसको नाद-बिन्दु चक्र माना है। उसी स्मृति का ४ भाग करके शृङ्गाटक रूप नादचक्र के मध्य में, दक्षशृङ्गमें, वाम शृङ्ग में तथा बिन्दु में मैत्रेश नाथ, षष्ठीशनाथ, उड्डीशनाथ तथा चर्येशनाथ ये गुरुचतुष्क माने गए हैं,। संघट्टमुद्रा से जब पादुका मन्त्र का जप होगा तब मुद्रा के तत्व के प्रभासे सकल गुरुओं का सहस्रार की कर्णिका में ही एकीकरण होगा और उसी स्थान में उन का ध्यान होगा। यह सब अनुभवी गुरु से जानकर अनुभव कर लेना चाहिए।

वक्षःस्थलके अन्तर हृदयके ऊपर मन रहता है। जीव मन से ही संकल्प विकल्प द्वारा सब रचता है, फिर पूर्व ही लिख चुका हूँ कि **पूर्वाम्नाय सृष्टिरूप** और उस आम्नाय की नायिका **भुवनेश्वरी** है। अतः **मन** को तन्त्र शास्त्र ने **भुवनेश्वरीरूप मायावीजात्मक** माना है। उसी मनके नीचे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से लेकर नाभिस्थान तक जितनी जगह है उसके बीच का स्थान में (नेपाली भाषा में उस स्थान को ह्याँकुला कहते हैं) चित्त रहता है। मन से रचीहुई वस्तु की चित्त से ही स्थिति होती हैं, फिर पूर्व ही लिख चुका हूँ कि दक्षिणाम्नाय स्थितिरुप, फिर उस आम्नाय की नायिका दक्षिणकाली है। अतः चित्त को तन्त्रशास्त्रने (कुन्तीबीजात्मक) दक्षिणकालीरूप माना है। उस स्थान से स्वाधिष्ठान का मध्यदेश,नाभिस्थान के आसपास में अहंकार रहता हें। अब उस अहंकार के विषय में संक्षेपतः कुछ लिखने की चेष्टा करता हूँ। सूर्यवत् प्रकाशरूप परमेश्वर की किरण दर्पणवत् विमर्श रुप शक्ति के उपर पड़जाने से कुड्यवत् चित्त में जो बिन्दु—रूप बन जाता है वही अहंकार है। आगमशास्त्रमें इस विषय में ऐसा भी लिखा है:-

" प्रकाशस्यान्तर्विश्रान्तिरहंभावो हि कीर्त्तितः ॥ "

इत्यादि प्रमाण से स्पष्ट होता है कि अहंकार कामकलात्मक है। अतः अहंकारको तन्त्रशास्त्रने (उत्तराम्नायात्मक) कामकलागुह्यकाली कामबीजात्मकरूप माना फिर मूलाधार में कुण्डलिनी रहती है। कुण्डलिनी को तन्त्र ने कुब्जिका (पश्चिमाम्नायनायिका) माना है, यह बात पूर्व ही बताई गई है। इस अवस्था में कुब्जिका का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूप खेचरीबीजात्मक है। और सब से ऊपर याने मस्तक से भी ऊपर चेतना शक्ति है। इसी चेतना शक्ति को प्रणवात्मक महात्रिपुरसुन्दरीरूप (ऊर्ध्वाम्नायात्मक) तन्त्रशास्त्रने माना है। अतएव कादि (कुण्डलिनी) क्रम में कुब्जिका विद्या में तथा हादि (हंसः) क्रम में श्रीविद्या में क्रमदीक्षा की विश्रान्ति होगी। एवं पूर्वोक्त प्रकाश से ऊपर की चेतना शक्ति और नीचे की कुण्डलिनी शक्ति के अन्तर्गत होकर इस सूक्ष्मदेह का स्थूलदेह से सम्बन्ध है। फिर पृथ्व्यादि पञ्च तत्व का स्थूलदेह से व्यापक संबन्ध है। जब ऊपर की चेतना शक्ति तथा नीचे की कुण्डलिनी शक्ति की खींचातानी निःश्वासोच्छ्वासक्रियाद्वारा होगी तब ६ स्थानों में श्वास की एक एक (महाभूतात्मक) तत्व के साथ लेकर षट्चक्ररूप स्पन्दि बन जाएगा। आगम में भी ऐसा लिखा है:—

"स्फुरत्ता मात्मनः पश्येत्तदा चक्रस्य संभवः ॥"

अब कौन कौन चक्र कैसे कैसे हैं वर्णन करता हूँ। १ मूलाधार चक्र पृथ्व्यात्मक अधराम्नायात्मक में "वँ, शँ, षँ, सँ," एवं ४ अक्षर–युक्त चतुर्दलपद्म और कर्णिका में पार्थिव बीज विद्यमान हैं। २ स्वाधिष्ठान चक्र जलात्मक (मतान्तरसे तैजसात्मक) चक्र पूर्वाम्नायात्मक में "बँ, भँ, मँ, यँ, रँ, लँ," एवं ६ अक्षरयुत षड्दलपद्म और कर्णिका में जलबीज (मतान्तर में अग्निबीज) विद्यमान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। ३ मणिपूर चक्र तेजसात्मक (मतान्तर से जलात्मक) दक्षिणाम्नायात्मक में " डँ, ढँ, णँ, तँ, थँ, दँ, धँ, नँ, पँ, फँ " एवं १० अक्षरयुत दशदल पद्म और कर्णिका में अग्निबीज (मतान्तर से जलबीज) विद्यमान है। इसका वास्तविक रहस्य गुरुवक्त्र से जानलेना चाहिए, यहाँ मैं इतना तक लिखसकूँगा कि पाशवकल्प में स्वाधिष्ठान जलात्मक तथा मणिपूरतैजसात्मक, वीर-कल्प और कुल-कल्प में स्वाधिष्ठान तैजसात्मक तथा मणिपूर जलात्मक चक्र माने गए हैं। ४ अनाहतचक्र वाय्वात्मक में " कँ, खँ, गँ, घँ, ङँ, चँ, छँ, जँ, झँ, ञँ, टँ, ठँ, " एवं १२ अक्षरयुत द्वादशदलपद्म पश्चिमाम्नायात्मक और कर्णिका में वायुबीज विद्यमान है। ५ विशुद्धिचक्र आकाशात्मक उत्तराम्नायात्मक में " अँ" से " अः " तक १६ स्वरवर्णयुतषोडशदलपद्म और कर्णिका में वायुबीज विद्यमान है। ६ आज्ञाचक्र ऊर्ध्वाम्नायात्मक में " हँ, क्षँ " इति द्व्यक्षरयुत द्विदलपद्म और कर्णिका में प्रणव विद्यमान हैं। इन सब चक्रों के पीतादिवर्ण गुरुपरम्परा भेद से पृथक् पृथक् होते हैं। इन सबका यथार्थ तत्वका गुरूपदिष्टविधि से मनन करने से ऊपर के ३ चक्र मन में समष्टि होकर मन चन्द्ररूप होने के कारण सहस्रार में चन्द्रमण्डलबनकर चेतना शक्ति में लय होकर शुक्लवर्ण पराप्रासादरूप बन जाएगा, फिर नीचे के ३ चक्र अहंकार में समष्टि होकर " अहमेवआत्मा इस श्रुति वचनानुसार सूर्यरूप बनकर नाभिस्थित जठरा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नल अग्निमें पहुंचकर उनके साथ मिलकर अग्निरूप बन कर मूलाधार में कुण्डलिनी शक्ति में लय होकर रक्तवर्णा श्रीप्रासादरूप बन जाएगा। तदनन्तर चन्द्रमंडल से लाक्षा-रसप्रभा द्रवन्ती अवच्छिन्न सुधा-धारा दो बीजों का परस्परजननस्पर्श से निकाल उस परामृत से अपने को आपादमस्तक सेचन कर शिवरूप बने। इस विषय में कुलार्णवतन्त्र में निम्नलिखित प्रकार का संकेत दिया है:—

"सर्वकर्माणि कुर्वीत मन्त्रीतत्तत्फलाप्तये।
मूले प्रासादवीजञ्च तरुणादित्यसन्निभम् ॥
उत्तमाङ्गे परावीज चन्द्रायुतसमप्रभम् ।
परस्परजनस्पर्शजनितानन्दनिर्भरः ॥
मूलादिब्रह्मरन्ध्रान्तं अनवच्छिन्नरूपिभिः ।
परमामृतसंसिक्तैः सिक्तमापादमस्तकम् ॥
आत्मानं भावयेन्नित्यं स भवेदजरामरः ।
एवं ध्यात्वा कुलेशानि सर्वकर्माणि साधयेत् ॥"

तत्पश्चात् इस प्रकार स्वयं शिवरूप बन कर षडन्वय शाम्भव का चिन्तन स्वगुरूपदिष्टविधि से करना चाहिए। इस विषय में यथार्थ तरीका गुरुवक्त्र से ही जानलेना होगा तथापि मैं संक्षेपतः यहाँ कुछ लिखकर समझाने की चेष्टा करूँगा। आप विचार लीजिये कि आप एक गेंद (Boll) एक दीवार (Wall) की तरफ फेंकदिया तो टक्कर लगकर आपकी तरफ ही वापिस होकर आजाएगी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और जितना ही निकट से फेकेंगे उतना ही जोरदार होजाएगी तथा उतना ही दूरतक वापिस होके पहुंच जाएगी। ठीक इसी प्रकार सहस्रार में षडन्वयेश्वरको ध्यानकर वह पूर्वोक्त दो प्रासाद बीज के प्रभाव से आज्ञाचक्र में परेश्वरकूट को भावना कर परेश्वरानन्दनाथ का ध्यान कर मूलाधार में परेश्वरी बीज को भावना कर उनके मन्त्र द्वारा ऊपर का कूट से नीचे का बीज में टकर मार कर सहस्रार के ऊपर लेजाके वहाँ षट्कोण भावना कर उस में रश्मी का स्मरणकर मध्यमें परेश्वरानन्दनाथपरेश्वरीपराम्बारुप बनावे। एवं विशुद्धि में चिच्चेश्वरानन्दनाथचिच्चेश्वरीपराम्बा, अनाहत में हंसेश्वरानन्दनाथहंसेश्वरीपराम्बा, मणिपूरे में संवर्तेश्वरानन्दनाथसंवर्तेश्वरीपराम्बा, स्वधिष्ठान में द्वीपेश्वरानन्दनाथद्वीपेश्वरीपराम्बा तथा मूलाधार में नवात्मेश्वरानन्दनाथ नवात्मेश्वरीपराम्बा के रूप बनाके षडन्वयेश्वरमहाशाम्भवरूपमें समष्टि कराके उनको सर्वमन्त्रेश्वरीपराहूप फिर पूर्वोक्त प्रकार दो प्रासादबीजों शुद्धवर्णों को अपने मस्तक का चन्द्रमण्डल के वीच में फिर वह चन्द्रमण्डल भी षोड़शस्वरवर्णयुक्तकला के ध्यान कर अष्टोत्तरसहश्र जपकरे। मेरे गुरुदेवने बताया है कि यह जप करते करते स्वयं ही समाधि हो जाएगी तब जप की संख्या की जरूरत नहीं है, परन्तु मुझे तो अभीतक इस अनुभवका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है। तत्पश्चात् मन से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ भी स्मरण न कर मन खाली रखने का अभ्यास करना चाहिए। उत्तम उपासना की विधि यही है। उपरोक्त क्रिया के विषय में कुलार्णवतन्त्र में ऐसा संकेत है:—

" मस्तकस्थितसम्पूर्णचन्द्रमण्डलमण्डलम् ।
श्रीप्रासादपराबीजं षोडशस्वरसंयुतम् ॥
शुद्धस्फटिककर्पूरकुन्देन्दुधवलं प्रिये ।
सच्चन्द्रबिम्बसञ्जातसुधाप्लावितविग्रहम् ॥
आत्मानं भावयेन्नित्य निश्चलेनान्तरात्मना ।
सर्वाभीष्टं विलीयेत श्रीभद्रप्राप्तिकारणम् ॥
श्रीप्रासाद परामन्त्रमष्टोत्तरसहस्रकम् ।
तरुणोल्लाससहितो मण्डलं भावयेत् प्रिये ॥
अपमृत्यु महारोग जरामरणजं भयम् ।
जित्वाधिव्याधिरहितः पुत्रपौत्रसमन्वितः ॥
जीवेद्वर्षशतं सार्द्धं पूजितः सर्वमानवैः ।
अश्रुतं बुध्यते शास्त्रं कविता निर्मला भवेत् ॥
चिन्मये रोचते साक्षात्तत्रकार्याविचारणा ॥ "

एवं प्रकार से अभ्यास करने से विविध प्रकार की भुक्तिमुक्ति देनेवाली सिद्धियाँ मिल जाएँगी। वह भाषा में व्याख्या करने से लम्बा होगा, अतः लेखविस्तार भयसे यहां केवल कुलार्णवतन्त्र का वचन ही दे दूँगा। वह निम्नलिखित प्रकार है:—

" ज्वरोन्मादादिरोगेषुजपेच्छिरसि चिन्तयन् ।
शूलवातव्रणग्रन्थिमूत्रकृच्छ्रादिसम्भवे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्तस्थानेषु संस्पृष्ट्वापूर्ववच्चिन्तयन् जपेत् ।
महारोगेषु जातेषु सर्वाङ्गेषु विचिन्तयेत् ॥
तत्क्षणाच्छान्तिमायान्ति रोगाः सर्वे न संशयः ।
देहेन्द्रियेषु योध्यायेल्लभेदिन्द्रियसौष्ठवम् ॥
यत्रबीजं स्मरेत्तत्र तत्फलं लभते ध्रुवम् ।
सदायश्चिन्तयेन्मूर्ध्नि सभवेदजरामरः ॥
सर्वरोगप्रहरणं विद्यारोग्यप्रदं प्रिये ।
अस्मात्परतरं कालं नास्ति सत्यं न संशयः ॥
सात्विकध्यानजंदेवि फलमेतदुदीरितम् ।
शान्तिकर्माणि सर्वाणि विधिनानेन कारयेत् ॥
विधिनानेन देवेशि सौभाग्यमतुलं लभेत् ॥
द्वादशाधारपद्मेषु द्वादशस्वरसंयुतम् ।
बीजं सञ्चिन्तयेद्यस्तु स भवेदजरामरः ॥
षडाधारेषु वा दीर्घयुक्तं बीजं विचिन्तयेत् ।
षडाधारस्थदेवीभिः पूज्यते कुलनायिके ॥
हृत्पद्मकर्णिकामध्ये सूर्यमण्डलसंस्थितम् ।
पराप्रासादबीजन्तु तरुणारुणसन्निभम् ॥
जवाबन्धूकसङ्काशं पद्मरागप्रभोज्ज्वलम् ।
पन्चविंशतिभिः स्पर्शाक्षरैर्वाचान्तमम्बिके ॥
तत्प्रभापटलच्छायाव्यक्तीकृतजगत्त्रयम् ।
आत्मानन्च स्मरेद्देवि निश्चलेनान्तरात्मना ॥
पराप्रासादबीजन्तु तरुणोल्लाससंयुत ।
अष्टोत्तर सहस्रन्तु मण्डलं प्रजपेत्सुधीः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवदानवगन्धर्वसिद्धकिन्नरगुह्यकान् ।
विद्याधरान्मुनीन् यक्षान् नागानप्सरसः स्त्रियः ॥
सिंहव्याघ्रोरगेन्द्रादीन् न्यासदुष्टमृगानपि ।
वश्यान्करोत्यसन्देह किं पुनर्मानवादयः ॥
सहदैश्वर्यमाप्नोति स्वर्गभोगादिकं प्रिये ।
यस्य मूर्ध्नि स्मरन् जप्यात् स वश्यो जायते हठात् ॥
राजसध्यानजं देवि फलमेतदुदीरितम् ।
वश्यकर्माणिसर्वाणि विधिनानेनकारयेत् ॥
सर्व वश्यकरंदेवि सर्वैश्वर्यफलप्रदम् ।
अस्मात् परतरं ध्यानं नास्ति सत्यं न सं शयः ॥ "

अब पृथ्व्यादि पञ्चतत्व के द्वारा मुद्रा तथा न्यासादि से क्या क्या अनुभव करना चाहिए, वह सब यथा ज्ञान संक्षेपतः लिखने की चेष्टा करूंगा। राजाधिराजयोग के विषय में, वह बहुत गहन विषय होने के कारण इस लेख में स्वाल्पज्ञानानुसार पाठकों को समझाने का प्रयत्न किया है। यदि उस में समर्थन रहा तो पाठक लोग क्षमा करें।

हमारी शरीर पृथ्व्यादि पञ्चतत्वात्मक हैं। उन तत्वों को शरीर में किस प्रकार जगाना चाहिए, इस विषयका वर्णन करता हूं। हमारे हाथों की कनिष्टिकायें पृथ्वी-तत्व की चाबी हैं। वे दो अँगुलियाँ दबाकर 'लँ' इस बीज का मनन याने मन से जप करने से पार्थिव तत्व का पीत-ज्योति का अनुभव होगा। वैसे ही अनामिकायें जल-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्व की चाबी होने के कारण पूर्ववत् 'वँ' बीज से शुक्लज्योति का, मध्यमाये अग्नितत्व की चाबी होने के कारण पूर्ववत् 'रँ' बीज से रक्तज्योति का, तर्जनियाँ वायु तत्व की चाबी होने के कारण पूर्ववत् 'यँ' बीज से हरितज्योति का तथा अँगुष्ठों आकाशतत्व की चाबी होने के कारण पूर्ववत् 'हँ' बीज से श्वेत में विचित्र वर्णके बिन्दु—मिश्रित ज्योति का अनुभव होगा। लेख से क्या होगा। गुरुजी से अनुभव कर लेने पर स्वयं विदित होगा। फिर इसी के द्वारा मानसिक पूजा की मुद्रायें भी सीखकर अभ्यास करना चाहिए। इस में एक बात है। किस—किस अँगुली के दवाने से किस तत्व का उत्पादन होगा, यह बता चुका हूँ। यह विचार कीजिए कि केवल नर्तन के लिए ही मुद्रायें दिखाना शंकरजी ने नहीं बताया है। किन्तु पूजा के लिये भी बताया है। इस में रहस्य होने के कारण ही शंकरजी ने ऐसा कहा है कि अमुकबीज मन से उच्चारण करके अमुक मुद्रा दिखाना। इस का तात्पर्य यह है कि उस बीज का उच्चारण करके वह मुद्रादिखाने से वह तत्व उत्पन्न होगा। उदाहरण के लिए देखिए, हठ-योगीलोग प्रथम देहद्वारा योगाभ्यास करने के कारण उन लोगों के लिए योनि मुद्रा के कायिक आसन बताया अर्थात् ऐसे आसन कर बैठने से योनिमुद्रा बनेगी जिस से योनितत्व का उत्पादन होगा। कुलयोगीलोग प्रथम आत्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शक्ति द्वारा मन से राजाधिराज-योगाभ्यास करने के कारण उनलोगों के लिए योनि मुद्रा के हस्तवद्ध करने के लिए ऐसा बताया है:—

"मध्यमे कुटिलेकृत्वा तर्जन्युपरि संस्थिते ।
अनामिके मध्यगते तथैव हिकनिष्ठिके ॥
सर्वा एकत्र संयोज्य अंगुष्ठपरिपीडिताः ।
एषातु प्रथमामुद्रा योनिमुद्रेति संज्ञिता ॥"

अतः कौल लोग हाथ से योनिमुद्रा बनाकर योनि बीज का उच्चारण करके योनितत्व का उत्पादन कराते हैं। खेचरी मुद्रा आदि का भी ऐसा ही तात्पर्य है। बात यह है कि अन्य सकल प्रकार का योगाभ्यासक्रम में देहशुद्धि (Physical-culture) से आरम्भकर आत्मशुद्धि (Will-culture) में विश्रान्ति करते हैं। राजयोग तथा राजाधिराजयोग में आत्मशुद्धि (Will-eulture) से आरम्भकर देहशुद्धि में विश्रान्ति करते हैं। राजयोग तथा राजाधिराजयोग में भेद इतना ही है कि राजयोग में समाधिके लिए यमनियमादिप्रणायामप्रत्याहार तक सब हठ योग के सदृश ही करना पडेगा, परन्तु राजाधिराज योग में इन नियमादि कि जरूरत नहीं केवल चक्रार्चन के पूर्वोक्त तत्वशुद्धि द्वारा स्वयं ही सबीजसमाधि हो जाएगी फिर जोजो मुद्रायें हठयोगियों के आसनों में नहीं हैं वे वे मुद्रायें भी कुलयोगियों के हाथ तथा मन्त्रों से हो सकती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। मुद्रा का फल मेरुतन्त्र में निम्नलिखित प्रकार का है:—

" मुदं स्वरूपलाभाभ्यां देहद्वारेण चात्मनः ।
या अर्पयन्त्ययत्नेन मुद्रास्ताः शक्तयो मताः ॥
मोदयन्ति ग्रहादिभ्यः पापौघं द्रवयन्ति च ।
मोदनं द्रावणं यस्मादतो मुद्राः प्रकीर्तिताः ॥ "

वैसे ही न्यास में भी देवरूप बनने की विधि है। शरीर के अमुक-अमुक स्थान पर अमुक—अमुक अँगुली से अमुक—अमुक मन्त्र मनन करके स्पर्श करने से अमुक अमुक तत्व का उत्पादन होकर देह देवमय हो जाएगी। अतः न्यास करने को शंकरजीने बताया है। सब से पहले कर न्यास का ही विचार करें जिसजिस अँगुली का न्यास होगा उसउस तत्व की जागृति होगी। एव सब से प्रथम करन्यास कर पञ्चमहाभूतो का तत्व जगाकर अन्य न्यासादि करने को कहा है। षडंगन्यास की विधि ऐसी है:—

" अंगुष्ठा ऋजवो हस्तशाखा ।
भवेन्मुद्रा हृदये शीर्षके च ॥
अधोऽगुंष्ठा खलु मुष्टिः शिखायाम् ।
करद्वन्द्वां गुलयो वर्मणि स्युः ॥
नराचमुष्टिर्ध्वतबाहुयुग्म—
कांगुष्ठतर्जन्युदितो ध्वनिस्तु ॥
विष्वग्विभक्तः कथितास्तु मुद्रा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यन्नाक्षिणी तर्जनिमध्यमे स्तः ॥
नेत्रत्रयं तत्र भवेदनामा ।
षडङ्गमुद्राः कथितायथावत् ॥ ”

एवं मुद्रा से मन्त्रोच्चारण के साथ तत्तत्स्थान में स्पर्श करने से तत तत् तत्व द्वारा तद्रूप की सिद्धि होगी। एवं प्रकार अन्य अन्य न्यासों के भी मुद्रा हैं, जो गुरुदेव द्वारा सीख के अनुभव करना चाहिए। आगम में लिखा है:—

“ देवोभूत्वा यजेद्देवं नादेवो देवमर्चनम् ॥ ”

फिर “ न्यासप्रिया तु श्रीविद्या ” ऐसा भी लिखा है। मैंने यहाँ इस विषय में बहुत संक्षेपतः लिखा है। मुझ जैसा अल्पज्ञ इस विषय में इस से अधिक क्या लिख सकता है ? वह सबतो गुरुजी से ही अभ्यास करके जान-लेने की बातें हैं।

अब चक्रार्चन के विषय में लिखता हूँ। बहुत से लोग सभी चक्रार्चनों को भैरवी चक्र ही समझते हैं। यह बात ठीक नहीं है। प्रत्येक चक्रार्चन में देहाभिमानत्याग कर आत्माभिमान से ही अर्चन हुआ करती है। इस लिए उस अवस्था :भिमानका जाति—भेद नहीं माना जाता है। फिर भैरवीचक्र के विषय में आगम में ऐसा लिखा है:—

“ प्रवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णाः द्विजातयः ।
निवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णाः पृथक् पृथक् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शायद इस उक्ति के लोग सब चक्रार्चनों को भैरवी चक्र ही समझते होंगे परन्तु अन्य चक्रार्चनों के विषय में भी ऐसी उक्ति है। वह ऐसा है:—

"श्रीपत्रे स्थापिते यत्र सर्ववर्णाः द्विजातयः।
विसर्जिते तु श्रीपात्रे सर्ववर्णाः पृथक् पृथक्॥"

अब यहाँ एक शंका की बात आई। जिस गुरु परम्परा में शक्ति सङ्गमतन्त्र का निम्नलिखित वचनानुसार श्रीपात्र की स्थापना ही नहीं होती तो उस में क्या किया जाए?

"सामान्यार्घ्यविशेषार्घ्यौ द्वौ प्रोक्तौ यत्रपार्वति।
चतुष्पात्राणि सामान्ये घटस्त्वावश्यको मतः॥"

अब इस गुरुपरम्परा के विषय में वही शक्तिसंगमतन्त्र का निम्नलिखित वचनानुसार सामान्यार्घ्य तथा विशेषार्घ्य मानकर पूर्वोक्त वचन प्रशस्त होगा।

"सामान्यार्घ्यंश्च श्रीपात्रमेकमन्यन्महेश्वरि।
सामान्यार्घ्येणसिद्धिश्च विशेषार्घ्येण पूजनम्॥"

अथवा महानिर्वाणतन्त्र का निम्नलिखित वचन भी इस विषय में प्रशस्त है:—

"यथाब्रह्मार्पितेऽन्नादौ स्पृष्टदोषो न विद्यते।
तथा तव प्रसादेऽपि जातिभेदं विवर्जयेत्॥"

अब यहा एक विचारणीय बात है। जब श्रीपात्र की स्थापना होगी तब चक्र में संमिलित हुये सब उपासक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भैरव तथा भैरवियाँ बन जाते हैं। यतः उन में देहाभिमान तनिक भी न रहना चाहिए। इस लिए वहाँ देहभेद यानि जातिभेद का लेश भी नहीं रहेगा। जब श्रीपात्र का विसर्जन होगा, तब देहाभिमान आजाएगा। और जातिभेद का भी अवश्य ही विचार करना पडेगा। नहीं तो 'बिसर्जिते तु श्रीपात्रे सर्वे वर्णाः पृथक् पृथक्' ऐसा क्यों लिखा ? इस लिए हम हिन्दू लोगों को चक्रार्चन के वाहर वर्णाश्रम धर्म्मको अवश्य पालन करना चाहिए। श्रीपात्रस्थापना की यह उक्ति सब प्रकार के चक्रार्चनों में लागू होती है। परन्तु भैरवीचक्र में यह उक्ति लागू न होकर पूर्वोक्त 'प्रवृत्ते भैरवीचक्रे' वाला वचन लागू होगा, क्यों कि भैरवीचक्र में श्रीपात्र की स्थापना नहीं होती है। इस विषय में महानिर्वाणतन्त्र में ऐसा है:—

"भैरवी चक्रविषये नतादङ्नियमः प्रिये ।
यथा समयमासाद्य कुर्याच्चक्रमिदं शुभम् ॥"

पुनश्चतत्रैव— "विशेषमत्र वक्ष्यामि श्रृणुष्वामरवन्दिते ।
गुर्वादिनवपात्राणां नात्र स्थापनमिष्यते ॥"

अब चक्रार्चन के विषय में जो थोडा बहुत मैं जनता हूँ वही लिखता हूं। चक्रार्चन मुख्यतः दो प्रकार हैं— एक दिव्य चक्र, दूसरा वीर चक्र इन का वर्णन, पूर्व में ही कर चुका हूँ। दिव्यचक्र में मूर्ति अथवा यन्त्र में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीरचक्र में सराही में पूजा होती है। अब फिर दिव्य वीरचक्र में मूर्ति वा यन्त्र के आगे सराही की स्थापना करके अन्य विधियाँ वी॰ चक्रवत् करते हैं। फिर वीरदिव्य चक्र में सराही के उपर यन्त्रवामूर्ति रखकर अर्चन कर के पात्रभ्रमण के समय यन्त्र वा मूर्त्ति जिस में जिस का अर्चन हुआ था उनको सराही से निकाल कर स्थानान्तर में रखकर वीरचक्रवत् करते हैं। बहुत से तन्त्रों और आचार्यों का मत यही है। परन्तु महानिर्वाणतन्त्र ने तत्वचक्र को भी दिव्यचक्र ही बताया है। उसतत्व चक्र में तो पूजा की भी जरूरत नहीं है। उसके विषय में ऐसा लिखा है:—

"नघटस्थापनाऽत्रास्ति न वाहुल्येन पूजनम् ।
सर्वत्र ब्रह्मभावेन साधयेत् तत्वसाधनम् ॥"

परन्तु इस चक्रका अधिकारी बनना वड़ी कठिन बात है। केवल मुँह से सोऽहं कहने से नहीं होगा। इस विषय में निर्वाण तन्त्र में ऐसा लिखा है:—

"नात्राधिकारः सर्वेषां ब्रह्मज्ञान् साधकान् विना ।
परब्रह्मोपासका ये ब्रह्मज्ञा ब्रह्मतत्पराः ॥
शुद्धान्तः करणाः शान्ताः सर्वप्राणिहितेरताः ।
निर्विकारानिर्विकल्पा दयाशीला दृढव्रताः ॥
सत्यसंकल्पका ब्राह्मास्त एवात्राऽधिकारिणः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मभावेन तत्वज्ञे ये पश्यन्ति चराचरम् ॥
तेषां तत्वविदां पुंसां तत्वचक्रेऽधिकारिता ॥ ”

इस लिए यह चक्र विशेषतः हम जैसे साधारण साधकों के लिए सिद्धिदायक नहीं है।

अब भैरवीचक्र का वर्णन करता हूं। साधारण भैरवी चक्र और भैरवीचक्र—महायाग (महाभैरवीचक्र) का विधान पृथक् है तथा याग का उद्देश्य भी पृथक् है। भैरवीचक्र में केवल मूलमन्त्र से ही मपञ्चक की शुद्धि होगी। इस विषय में महानिर्वाणतन्त्र में लिखा है:—

“ कुलाचार्यो रम्यभूमावास्तीर्यासनमुत्तमम् ।
कामाद्येनास्त्रबीजेन संशोध्योपविशेत्ततः ॥
सिंदूरेण कुसीदेन केवलेन जलेन वा ।
त्रिकोणञ्चतुरस्रञ्च मण्डलं रचयेत् सुधिः ॥
विचित्रघटमानीय दध्यक्षतविमृक्षितम् ।
फलपल्लवसंयुक्तम् सिन्दूरतिलकान्वितम् ॥
सुवासितजलैः पूर्णं मण्डले तत्र साधकः ।
प्रणवेन तु संस्थाप्य धूपदीपौ प्रदर्शयेत् ॥
संपूज्य गन्धपुष्पाभ्यां चिन्तयेदिष्टदेवताम् ।
संक्षेपपूजाविधिना तत्र पूजां समाचरेत् ॥
विशेषमत्रवक्ष्यामि श्रृणुष्वाऽमरवन्दिते ।
गुर्वादिनवपात्राणां नात्र स्थापनमिष्यते ॥
यथेष्टं तत्वमादाय संस्थाप्य पुरतो व्रती ।
प्रोक्षयेदस्त्रमन्त्रेण दिव्यदृष्ट्याऽवलोकयेत् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अलियन्त्रे गन्धपुष्पं दत्वा तत्र विचिन्तयेत् ।
आनन्दभैरवींदेवीं आनन्दभैरवं तथा ॥ ”

अर्थात् भैरवी चक्र के विषय में आचार्य केवल कामबीज के पीछे अस्त्रबीज का उच्चारण कर जलसेचन कर एक आसन पर बैठ अपने आगे सिन्दूर वा रक्तचन्दन अथवा केवल जल से भूमिपर त्रिकोण और चतुरश्र लिख कर उसके ऊपर दध्यक्षत से आभूषित किएहुए एक घट को कर्पूरादि सुवासितजल से पूर्णकर प्रणवोच्चारणद्वारा स्थापित्त करे और उसे धूप तथा दीप दिखावे। इस के बाद पुष्पाक्षत से उस घट की प्रणव से पूजाकर अपने इष्ट देवता का ध्यान कर उस घट में आवाहन करे। तत्पश्चात् संक्षेपतः उस में (इष्टदेवता की) पूजा करे और उसी घट के आगे यथेष्ट तत्व रखकर उसी अलियन्त्र को अस्त्रमन्त्र से जलद्वारा सेचन कर दिव्य दृष्टि से अवलोकन करे। फिर अलियन्त्र में गन्धपुष्पाक्षत समर्पणकर आनन्द भैरवी तथा आनन्द भैरव का ध्यान करे। वह ध्यान मैं पिछले लेख में दे चुका हूँ। आगेलिखा है:—

“ ध्यात्वैवमुभयोस्तत्र सामरस्यंविचिन्तयेत् ।
प्रणवादि नमोन्तेन नाम मन्त्रेण देशिकः ॥
संपूज्यगन्धपुष्पाभ्यां शोधयेत्कारणं ततः ।
पाशाद्वित्रिक बीजेन स्वाहान्तेन कुलार्चकः ॥
अष्टोत्तरशतावृत्या जपन् हेतुं विशोधयेत् ॥ ”

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थात् उस अलियन्त्र में आनन्द भैरव तथा आनन्द भैरवी का आवाहन कर उन दोनों के सामरस्य की भावना कर प्रणवादी नमोन्ब नाम मन्त्र से गन्धपुष्पद्वारा पूजा करे। तब पाश, माया, अंकुशबीज और स्वाहा इस मन्त्र को अष्टोत्तरशत बार जपने से हेतु शोधन होगा। यहाँ देखिए, हेतुशोधन का शापमोचन, दोषमोचन, अमृतीकरणादि तथा गायत्र्यादि से संशोधन करनेको नहीं बताया है। फिर अन्य मकारादि के शोधन की बात दूर ही रही। इस विषय में उसी महानिर्वाणतन्त्र में ऐसा लिखा है:—

" म्लेच्छेन श्वपचेनापि किरातेनापि हूणुना।
आसं पक्वं यदानीतं वीरहस्तार्पितं शुचि॥ "

अतः उपर्युक्त विधिसे हेतु शोधनकर उसी हेतु से तत्वशुद्धियाँ कर भोजनादि करे। परन्तु भैरवीचक्र महायाग (महाभैरवी चक्र में ऐसा नहीं है। उस की विधि में तो घटस्थापना होती है। उस घट में इष्टदेवता को सविधि पूजन होता है। तत्वादिका भी सविधि अन्य चक्राचंन वत् संस्कार होगा। इस महायाग की विधि में इष्टदेवता के पूजन के पहले घट में कर्म्मकुञ्जि का की पूजा होगी। इस विधि में भी श्रीपात्रादि का स्थापन नहीं होता है। परन्तु नवचरु की स्थापना होगी। केवल भैरवी चक्र में घट में संक्षेपतः इष्टदेवता की पूजा करने को जो बताया है, उस में जिस आम्नाय के इष्टदेवता की पूजा होगी, उसी आम्नाय का भैरवीचक्र माना जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु इस **भैरवीचक्रमहायाग** (**महाभैरवीचक्र**) प्रत्येक आम्नाय तथा आवरण की पूजादि की पृथक् पृथक् पद्धति होती है। मेरे पास केवल ऊर्ध्वाम्नाय की पद्धति है। अन्य आम्नाय का भैरवीचक्रमहायाग किस प्रकारका है, वह मैं नहीं जानता हूँ। ऊर्ध्वाम्नाय के भैरवीचक्रमहायाग को षडाम्नायात्मक भैरवीचक्रमहायाग भी कहते हैं, क्यों कि इस में **निर्वाणमहात्रिपुरसुन्दरी** की पूजा होती है। उनका ध्यान मैं उर्ध्वाम्नाय के विवरण में लिख चुका हूँ। अब यहाँ मैं इस पटल को समाप्त करता हूँ। अब अगले लेख में यथाज्ञान महायागादिका कुछ संकेत लिखने की चेष्टा करूंगा॥

इति श्रीधनशम्शेरवर्म्मणा संग्रहित श्रीतान्त्रिकोपासनादर्पणे साधनाविधिविवरणन्नमः दशमः पटलः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री शङ्कर भगवान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु इस भैरवीचक्रमहायाग (महाभैरवीचक्र) प्रत्येक आम्नाय तथा आवरण की पूजादि की पृथक् पृथक् पद्धति होती है। मेरे पास केवल ऊर्ध्वाम्नाय की पद्धति है। अन्य आम्नाय का भैरवीचक्रमहायाग किस प्रकारका है, वह मैं नहीं जानता हूँ। ऊर्ध्वाम्नाय के भैरवीचक्रमहायाग को षडाम्नायात्मक भैरवीचक्रमहायाग भी कहते हैं, क्यों कि इस में निर्वाणमहात्रिपुरसुन्दरी की पूजा होती है। उनका ध्यान मैं ऊर्ध्वाम्नाय के विवरण में लिख चुका हूँ। अब यहाँ मैं इस पटल को समाप्त करता हूँ। अब अगले लेख में यथाज्ञान महायागादिका कुछ संकेत लिखने की चेष्टा करूंगा॥

इति श्रीधनशम्शेरवर्म्मणा संग्रहित श्रीतान्त्रिकोपासनादर्श्ये साधनाविधिविवरणात्मकः दशमः पटलः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

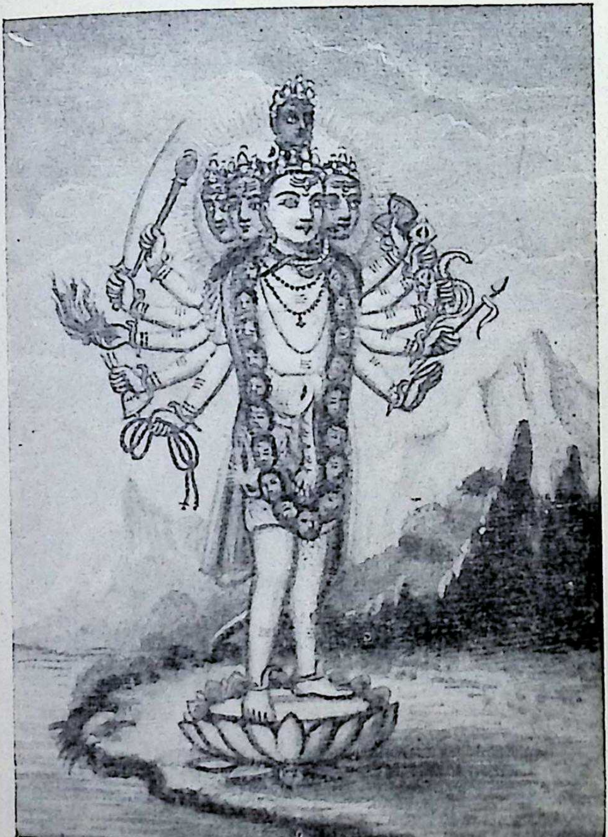

श्री शङ्कर भगवान्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ॐ ॥

॥ अथ एकादशः पटलः ॥

॥ ॐ नमः श्रीपरदेवतायै ॥

अब ऊर्ध्वाम्नायात्मक भैरवीचक्र–महायाग के विषय में मेरे पास जो पद्धति है, उस के अनुसार संक्षेपतः लिखता हूँ। एक स्थण्डिल निर्माण करके उसके आगे आचार्य बैठे और भैरवीचक्र के सदृश एक घट स्थापित करे। उसी स्थंडिल के ऊपर उसी घट के आस–पास में दीप, शान्ति (वरुण) कलश तथा महागणपति की भी स्थापना कर पूजा करनी चाहिए दिग्बन्धन, प्राणायाम, भूतशुद्धि इत्यादि तो यथा समय यथाक्रम करना ही चाहिए। तत्पश्चात् संकल्प करे। यथा— "ॐ अद्यत्यादि देशकालौ संकीर्त्य मम स्वेष्टदेवताप्रीतिपूर्वक निजामुककामनासिद्ध्यर्थं भैरवीचक्रमहायाग कर्माहं करिष्ये। इस के बाद मूल घट में कर्मकुब्जिका की यथोक्त विधिसे आवाहन तथा पूजन कर उस घट के आगे एक बलिपात्र स्थापितकर उस में कूष्माण्ड बलि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शताक्षरी मन्त्र से देवे— प्रणवके बाद पञ्चतार उच्चारण कर तत्पश्चात् धेनु, योनि तथा बिन्दु मुद्रा दिखा कर मूल घट के दक्ष भाग में उसी स्थण्डिल के उपर ही नवचरु की स्थापना करनी चाहिए। नवचरुस्थापना के लिये निम्नलिखित प्रकार का नवयोन्यात्मक यन्त्र लिखे।

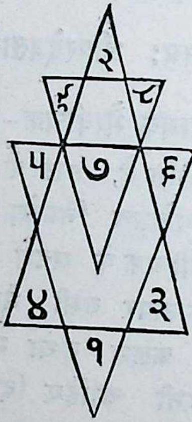

इस यन्त्र के नौ त्रिकोणों में दिए हुए अंक क्रम से निम्नलिखित प्रकार के यन्त्रो को लिख कर निम्नलिखित चक्रों भी भावना करे।

१. ऊर्ध्वाम्नायात्मक आज्ञाचक्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. उत्तराम्नायात्मक विशुद्धिचक्र ।

३. पश्चिमाम्नायात्मक अनाहतचक्र ।

४. दक्षिणाम्नायात्मक मणिपुरचक्र ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५. पूर्वाम्नायात्मक स्वाधिष्ठानचक्र ।

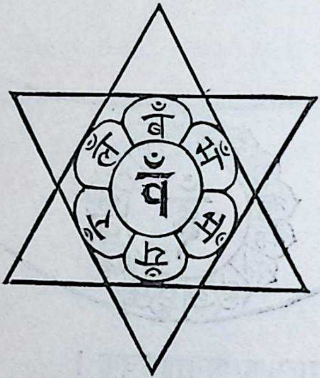

६. अधराम्नायात्मक मूलाधारचक्र ।

७. सूर्यचक्र ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८. सोमचक्र ।

९. अग्निचक्र ।

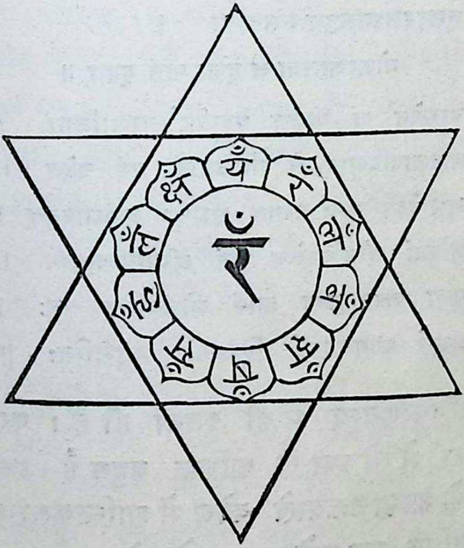

तत्पश्चात् मूल घट के आगे नौ प्रकार के यथेष्ट हेतु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थापना कर यथोक्त विधिसे शोधन करे। हेतु शोधन का मन्त्रोद्धार महानिर्वाणतन्त्र में ऐसा लिखा है:—

"ॐ एकमेव परंब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम् ।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥
सूर्यमण्डल मध्यस्थे वरुणालयसम्भवे ।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ।
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ॥
तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु ।
ह्रीँ हँसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षस—
द्धोता वेदिसदतिथिर्दुरोणसत् ॥
नृसद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा ।
गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥
वारुणेन च बीजेन षड्दीर्घस्वरभाजिना ।
ब्रह्मशापविशब्दान्ते मोचितायै पदं वदेत् ॥
सुधादेव्यै नमः पश्चात् सप्तधा ब्रह्मशापनुत् ।
अंकुशं दीर्घषट्केन युतं श्रीमाययायुतम् ॥
सुधा पश्चात्कृष्ण शापं मोचयेतिपदं ततः ।
अमृतं श्रावयद्वन्दं द्विठान्तो मनुरीरितः ॥

महानिर्वाणतन्त्र में तो इतना ही है। परन्तु मेरी गुरुपरम्परा में तो इस से अधिक बहुत है। इस प्रकार शोधनकरके आज्ञाचक्रवाले कोण में शान्तिकलसवत एक कलस स्थापित कर उसे द्राक्षा हेतु से पूर्णकर महाशंख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पात्र में पूर्ववत् आज्ञाचक्रलिख कर उसीकलश के ऊपर स्थापित करे। उस में क्षीर, दधि, कदली, शर्करा, मधु, घृत तथा चटामढी (तण्डुल की रोटी) मिश्रितकर रखे। इस को सर्वचरु कहते हैं। इस सर्वचरु का शोधन कर उस में हाकिन्यम्बा तथा आज्ञानन्दनाथ का अर्चन करे। तत्पश्चात् उसी प्रकार गौडीहेतुपूर्णकलश के ऊपर विशुद्धिचक्र में विश्वामित्रपात्र में तित्तिर्यादि पक्षियों का सुपक्वमांस रखे। इस खेचरचरु में साकिन्यम्बा और खड्गीशानन्दनाथ की पूजा करे। ततः अनाहतचक्र में पूर्ववत् पैष्टीहेतुपूर्णकलश के ऊपर मुक्तापात्र में लशुन, गृञ्जन तथा पलाण्डु रखकर इस शेखरचरु में कानिन्यम्बा तथा विश्वानन्दनाथ की पूजा करे। फिर मणिपुरचक्र में धान्यहेतुपूर्णकलश के ऊपर शंखपात्र में मत्स्य तथा कूर्म का सुपक्वमांस रखकर इस जलचरचरु में लाकिन्यम्बा तथा षष्ठीशानन्दनाथ की पूजा करे। इस के बाद स्वाधिष्ठानचक्र में माध्वीहेतुपूर्णघट के ऊपर नानामृगादि पशुओं का सुपक्वमांस कूर्मपात्र में रखकर इस भूचरचरु में राकिन्यम्बा तथा अनुग्रहीशानन्दनाथ की पूजा करे। ततः मूलाधारचक्र में खार्जुरीहेतुपूर्णघट के ऊपर शैलपात्र में तिल, शर्करा, घृत, त्रिकटु तथा सैन्धव मिश्रित कर रखकर इस आनन्दचरु में डाकिन्यम्बा तथा मैत्रेशानन्द-नाथ की पूजा करे। तत्पश्चात् सूर्यचक्र में माध्विकीहेतु पूर्णघट के ऊपर रौप्य पात्र में पक्षियों का सुपक्व अण्डे रख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर इस अण्डजचरु में क्रियाशक्त्यात्मक की पूजा करे। ततः सोम चक्र में वाल्कलीहेतु से पूर्णघट के ऊपर स्वर्णपात्र में खड्गी तथा वराह के सुपक्वमांस रखकर इस पाजकचरु में ज्ञानात्मक की पूजा करे। फिर अग्निचक्र में पौष्पीहेतु से पूर्णकलश के ऊपर काँचपात्र में अम्लबेतसंयुतछागमांस रखकर इस स्वेदजचरु में इच्छाशक्त्यात्मक की पूजा करे। ततः इन सब नवचरुओं को धूप-दीप नैवेद्य समर्पण करे। इस नवचरुविधान सब वैज्ञानिक तरीका है. इस विषय में स्वगुरुदेव द्वारा हस्तक्रिया तथा रहस्यज्ञानसहितमनोविज्ञान के प्रयोग सीख कर जानना चाहिए। तत्पश्चात् श्रीविद्यादशकूटात्मिकामहाविद्या का ऋष्यादि करषड़ङ्ग न्यासकर सकलाम्नायनायिका श्रीमन्निर्वाणमहात्रिपुरसुन्दरी का यथोक्त ध्यानकर मूलघट में आवाहन तथा प्राणप्रतिष्ठादि कर सालङ्कारावयवासना उन की यथोक्त विधिसे सपर्याकर धूप-दीपनैवेद्यादि समर्पण करे। फिर देवी के अग्रभाग में हेतुपूर्ण एक कुलकुम्भ स्थापित करे। तत्पश्चात् आनन्दभैरवी तथा आनन्दभैरव का करषडङ्ग न्यास कर आनन्दभैरवी तथा आनन्दभैरव का ध्यान के साथ दोनों के सामरस्य का चिन्तनकर उस अलियन्त्र में आवाहनादि कर उस में पूजाकरे। तत्पश्चात् उसी अलियन्त्र में आनन्दभैरवीभैरव के अष्ट दिशाओं में सुरानन्दादि अष्टभैरव और भैरवियों की आवरणरूप से पूजा करे। इस के बाद उन को धूपदीपनैवेद्यादि समर्पण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करे। फिर मूलदेवी (मूलघट) के वाम भाग में बिन्दु-त्रिकोणवृत्तचतुरश्र लिखकर एक मृण्मयपात्र में नानाव्यञ्जन सहित यथेच्छ भक्तान्न स्थापित कर यथोक्त विधिसे उन का शोधनकर स्व स्व मन्त्रों से कामेश्वरी समयानित्या, वज्रेश्वरी समयानित्या, भगमालिनीसमयानित्या तथा महात्रिपुरसुन्दरी समयानित्या और ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर कुब्जिकेश्वर, कुब्जिकेश्वरी और अन्नपूर्णा की पूजा करे। उस के बाद उनकी धूपदीप नैवेद्यादि समर्पण करे। साम्राज्यमेधा मन्त्र मूलघट में फिर मूलदेवी की सपर्या कर धूप-दीप समर्पण करे। तत्पश्चात् व्यञ्जनादि सहित अन्न तथा नवचरु के कच्चे सूत से वेष्ठित कर उसे मूलघट के मुँह में लगावे और पञ्चग्रासमुद्रा दर्शावे। फिर "भगवती नैवेद्य भोजन कररही है" ऐसी भावना कर मूलमन्त्र से प्राणायाम करे। तत्पश्चात् वलिपात्र में कृच्छ्रान्नवलि निम्नलिखित मन्त्र से देवे।— "मूलं निर्वाणेश्वरि महात्रिपुरसुन्दरि इदं पूजावलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय सर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वमनोरथान् पूरय पूरय मन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ त्रिजगच्चैतन्यरूपिणि हूँ फट् स्वाहा।" फिरि उसी पात्र में मूलदेवी के परितः— "वाँ वटुकनाथाय याँ योगिनीभ्यः क्षाँ क्षेत्रपालाय गाँ गणपतये सर्वोपचारसहितं वलिंगृण्ह गृण्ह सर्वविघ्नान्नाशय हूँ फट् स्वाहा।" ततः स्थण्डिल के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नैऋत्य भागमें प्रणवोदिमायाबीज उच्चारण कर 'सर्व विघ्न कृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो बलि गृण्ह गृण्ह स्वाहा " इस मन्त्र से भूत बलि देकर उन को विसर्जन कर दूर में क्षेपन करे। तत्पश्चात् आचमनकर मूलमंत्र का ऋष्यादि कर षड़ङ्ग न्यास कर यथा शक्ति जप तथा स्तवादि पाठकर यथोक्तविधिसे निराजन करे। फिर योगिनियों की पूजाकर दक्षिणा देवे और वीरों भी परस्पर पूजन करें। उस के बाद कुलाचार्य " ॐ नवचरून् उत्थापयामि " कहे। योगिनियाँ " ॐ उत्थापयस्व ' कहे। फिर कुला चार्य कूर्मपात्र उठाकर निम्नलिखितमंत्र पढ़कर चरू हाथ में लेवे:—

" ॐ सर्वाधारस्वरूपाय सर्वापापहरायच ।
देवर्षिद्विजसेव्यास नमो मांसाय शम्भवे ॥ '

तब उस कूर्मपात्र के नीचे के माध्वीघट उठाके निम्न लिखित मन्त्र पढ़ अन्यपात्र में वह अमृत डाले। :—

" ज्ञानतो भैरवीचक्रे ज्ञानीनां नैवदूषणम् ।
गुरुं स्मरन् पिबन्मद्यं खादन्मांसं नदोषभाक् ॥ "

इसकेबाद निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर पिशितसहित अलिपात्र प्रत्येक योगिनी को दे।:—

" ॐ अलिपात्रमिदं देवि दीयते पिशितेन वा।
स्वीकृत्य सुभगे देवि यथो वीर्यं च देहि मे ॥ "

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फिर निम्नलिखित मन्त्रपढ योगिनियाँ पात्र ग्रहणकरें:—

"ॐ मद्यं तु भैरवो देवो मदः शक्तिसमीरिता।
तत्पीत्वा ते प्रयच्छामि निखिलं वाञ्छितंफलम्॥"

ततः कुलाचार्य निम्नलिखित मन्त्र पढकर पूर्ववत् अलिपात्र प्रत्येक वीर को दे।:—

"ॐ अलिपात्रं हि मांसेन प्रयच्छामि सुभक्तितः।
स्वीकुरुष्व ज्ञानीनो वीरा यच्छन्तु वाञ्छितं फलम्॥"

फिर निम्नलिखित मन्त्र पढ वीरों पात्र ग्रहण करें।

"ॐ सुरा शक्तिः शिवोमांसं तद्भोक्ता भैरवा वयम्।
सर्वाभीष्टफलं तुभ्यं प्रयच्छामि सुखा वहम्॥"

ततः कुलाचार्य, योगिनियाँ तथा वीर प्रभृति अपने अपने शिरपर अपने अपने गुरुपरम्परा के अनुसार गुरु-सन्तति का तर्पणंकर निम्नलिखित वन्दनादि कर परस्परा-ज्ञालेकर कुलकुण्डलि के मुख में हवन करें। 'श्रीनाथादि.' पढकर वाग्वीज तथा लाकिनीकूट का उच्चारण कर महाभूचराय ब्रह्मशापविमोचकाय पृथ्वीतत्वाय स्वाहा।

वाग्वीजान्ते— सर्वतेजयुतंघोरं जांगलं कोलरूपिणम्।
तत्वन्तत्वविदोयुक्त प्राणाग्नौप्रजुहोम्यहम् ॥

हूँ स्वाहा। लँपृथ्वीतत्वं जुहोमिस्वाहा। ॐ श्रीमद्भैरव-शेखर०। आत्मतत्वेन आत्मतत्वं०।"

उसीप्रकार शंखपात्रस्थ चरु तथाधान्या से हृदय में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वेष्टदेवी का तर्पण कर पूर्ववत् करे। :— इष्ट का ध्यान. कामबीज तथा काकिनीकूट उच्चारणकर जलचरायवि- ष्णुशापविमोचकायजलतत्वाय स्वाहा।

कामबीजान्ते— कामरूपसमुत्पन्नं मत्स्यं त्वग्धातुरूपकम्।
अग्नौ पचात्मके चैव ॐ स्वाहेति जुहोम्यहम ॥

ॐफट्स्वाहा ॥

बँ अप्तत्वं जुहोमिस्वाहा। ह्रीँ हैमंमीन०। विद्यातत्वेन विद्यातत्वं०।"

फिरउसीप्रकार मुक्तापात्रस्थचरु तथा पैष्ठी से स्वकण्ठ में जीवात्मा का तर्पण कर प्राणायाम कर पूर्ववत् करे। :— "शक्तिबीज तथा शाकिनीकूट उच्चारणकर शेखरायरुद्रशापविमोचकाय तेजस्तत्वायस्वाहा।

शक्तिबीजान्ते— शेखरंभृङ्गवेरञ्च रसाधातुविराजितम्।
आत्माग्नौप्रजुहोम्यद्य ॐ जूँ स. शेखरं स्वाहा ॥

समुद्रबीज और रेफयुक्तकूर्चबीजउच्चारणकर अग्नि- तत्वं जुहोमि स्वाहा। श्रीँ सर्वाम्नाय०। शिवतत्वेन शिवतत्वं०।"

फिर उसीप्रकार विश्वामित्रपात्रस्थचरु तथा गौडी से स्वभ्रूमध्य कुलगणपति का तर्पण कर प्रासादमंत्र १०८ बार जप कर पूर्ववत् करे। :—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" वाग्वीज और याकिनीकूट उच्चारणकर खेचरण्य-ईश्वरशापविमोचकाय वायुतत्वाय स्वाहा। वाग्बीजान्ते त्वगशृङ्मांसमेदोऽस्थिशुक्रं धातुस्वरूपकं ॥ तस्मात्संभव यास्यद्य पञ्चद्रव्य जुहोम्यहम् ॥ ॐ नमो हूँ स्वाहा। यँ वायु तत्वं जुहोमि वाक्मशक्तिबीजत्रय उच्चारणकर पचपच स्वाहा। त्रितारान्तेमद्य मीन० । सर्व तत्वेन सर्व-तत्व अत्रात्मयजीवं प्रकृतितत्वं० । " तत्पश्चात् महाशंख-पात्र से पूर्ववत् उठाकर सबचरु का भ्रमण करे। यथा योगिनियाँ तथा वीरों परस्पर लाजा पुष्प दक्षिणा से पूजा कर शक्तिहस्त में पात्र देकर अन्यचक्रवत् क्रियाकर वन्दना भी करें। यथाः—

" त्रितारान्ते— आकाशे स्वप्रकाशे सकलगुणमयी सुन्दरीरक्तनेत्रा।
नित्या पद्मासनस्था तरुणरविनिभा रक्तचन्द्रप्रभा वा।
आत्मानं सर्वभावैः सकलगुणयुता सर्वदा यो हि पश्येत् ॥
साक्षाद्देवः शिवोवा मदनदहनकृत् खेचरो जायते सः ॥ "

इति चक्रमध्ये भ्रमणकराके वह पात्र स्वस्थान में रखकर मूलशक्ति के हाथ में त्रिकोण लिखकर उसपर पात्र रखकर सर्वचरु और उसीसुधा (द्राक्षा) भरकर अमृतेशीविद्या पढकर आलोडन करे। ततः अन्यचक्रवत् करके स्वमूलाधार में आत्मपादुका का तर्पण कर वंदना करें। यथाः—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" ह्रीँ आनन्दः प्राणदश्चैव प्राणश्चान्येन जायते ।
कालि कालि महाकालि चरुभक्षणि ह्रूँ स्वाहा ॥

ॐफट् नमः स्वाहा ।

आकाशे दिविमावसेत् भुवने तत्वात्मकं सुन्दरम् ।
चातुर्वेदसुधारसान्धिमुदितं सा मन्त्रतन्त्रार्चितम् ।
मूर्त्ति ब्रह्ममयं प्रसन्नवदनं शक्तिः स्वयं भूर्भुवः ।
फेनं स्वर्णमयं पवित्रजगतां वश्यं परं योगिनाम् ॥

हँ आकाशतत्वं जुहोमि । त्रितारान्ते पच पच मथ मथ मथय मथय विहंगमकामाग्नये स्वाहा । " इस मन्त्र से केवल सर्वचरु का हवन करे । फिर " ॐ आधारेभुज-गाधिराज० " पढ कर द्राक्षा को भी हवन करे । तत् पश्चात् अन्यतत्वका निम्नलिखित चरु तथा सुधा से हवन करे । यथा- शैलपात्र आनन्दचरु से षष्ठम मनस्तत्वम् रौप्यपात्र अण्डजचरु से सप्तम बुद्धितत्वम् । स्वर्णपात्र पाकजचरु से अष्टम अहंकारतत्वम् । काँचपात्र स्वेदजचरु से नवम शक्तितत्वम् । ओदन तथा आनन्द कलशामृत से दशम भैरवतत्वम् । सव्यञ्जन सकलमृत से एकादश सर्व-तत्वम । इस में अपने अपने गुरुपरम्परा भेद से वन्दना करनी चाहिए । इस के बाद अन्य चक्रार्चनवत् समाप्त करे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस महायाग को तान्त्रिक महायज्ञ भी कहते हैं। इस महायाग तथा पश्चिमाम्नायात्मक मांसाहुतियज्ञ को वैदिक वाजपेयादि महायागों के सदृश कहा गया है। कलियुग में वाजपेयादि वैदिकयज्ञों का निषेध होने के कारण इस से बढकर अन्य महायाग नहीं है। परन्तु पद्धति मिलने से इसका रहस्य और हस्तक्रियादि बिनागुरु से सीखे कोई भी सम्यक्रूपसे इसे नहीं कर सकता। अतः स्वगुरुदेव से सीखले। अन्य अन्य आम्नाय में भी भैरवी चक्रमहायाग है अन्य अन्य महायाग भी हो सकते हैं, परन्तु वह मुझे मालूम नहीं है। मेरी गुरुपरम्परा का यही हैं। मैं सकल आम्नायों से समष्टि होकर ऊर्ध्वाम्नायी बनगया हूं। इसलिए मेरे आम्नाय की भी यही पद्धति है। इसी को मैंने अपने गुरुदेव से सीखा है। अन्य मैं नहीं जानता।

अब मैं भैरवचक्र के विषय में लिखता हूँ। भैरवचक्र विशेषतः भैरव के पर्व में होता है। ग्रहदशाओं की अरिष्ट-शान्ति के लिए यही भैरवचक्र करने की प्रथा हैं। इस भैरवचक्र की सकल विधियाँ वीरचक्र के सदृश ही होती हैं। अन्तर केवल इतना है कि भैरवचक्र में अलि के बदले भैरव (काञ्जिक) रखना चाहिए। और वही भैरव सराही में डालकर उसी भैरवयन्त्र में पूजा करनी चाहिए। जैसे अन्य चक्रार्चनों में पहले शक्ति का अर्चनकर उन की दाहिनी ओर भैरव की पूजा हो कर आवरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूजा होती है, वैसे ही भैरवचक्र में पहले भैरव की पूजा के पश्चात् उन की वामओर शक्ति की पूजा कर आवरण पूजा करनी चाहिए। उस के बाद सभी क्रियाये वीरचक्र वत् सम्पन्न करे।

अब मैं सुधायाग का वर्णन करता हूं। यह याग केवल पश्चिमाम्नाय से होता है। कहा भी है कि "पश्चिमं त्वैहिकंफलम्।" इस में कुब्जिका श्रीयन्त्रको कुण्डलिनीरूप मानकर उसके ऊपर एक जलहरी लटकाकर उसे सहश्रार मानकर उस में सुधा डालकर उस श्रीयन्त्र के ऊपर अवच्छिन्न सुधाधारा टपकावे। उसी सुधाधारा में यथोक्त विधिसे कुब्जिका की सपर्या करे। तत्पश्चात् बलि देकर कुब्जिकाहृदयस्तोत्र नवधा पाठकर पूजा की समाप्ति अन्य चक्रवत् करे। यह प्रत्यक्ष फलदायक है। यह मेरा अनुभव-सिद्ध भी है। लिखा भी है:—

"नवम्यां संयुतो भूत्वा निजगात्रानुगुप्तिताम्।
देवीं संपूज्य यत्नेन गन्धपुष्पादिभिर्नरः॥
नवधापठते पश्चात् पाठयेद्वा समाहितः।
भक्तितः श्रृणुयाद्वापिलभते वाञ्छितं फलम्॥"

यह याग शुक्लपक्ष अथवा कृष्णपक्ष की नवमी की निशा में ही करना चाहिए। परन्तु यह कर्म बहुत ही गुप्त रीति से करना चाहिए। जितना ही गुप्त रीति से होगा, उतना ही अधिक फलमिलेगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब **भैरवामृत महायाग** के विषय में वर्णन करता हूँ। इसी यागको अमृत अथवा **सुधामहायाग** भी कहते हैं। जैसे भैरवीचक्रयाग से भैरवीचक्रमहायाग पृथक् है, वैसे ही सुधायाग से (पूर्वोक्त कुब्जिका के) यह सुधा—महायाग (भैरवामृतमहायाग) पृथक् है। यह महायाग प्रेतमोचन के लिए और अपने पितृगण के उद्धार के लिए प्रशस्त है। इस कार्य के लिए इस से अधिक उत्तम अन्य कर्म नहीं है। सत्ययुग में शिव ने ब्रह्मा का पञ्चम शिर काट डाला तब उस अवस्था में शंकर के हस्तमें ब्रह्माका वह पञ्चम कपाल अटक गया और शिवजीने ब्रह्महत्या से काली हृदयका अनुष्ठान द्वारा अपने को मुक्त करा कर ब्रह्माजी के प्रेतत्वमोचन के लिए उसी स्थान में यह महा-यागकर ब्रह्माजी का प्रेतत्व का नाश किया। आगम में इस विषय में ऐसा लिखा है:—

"देव्युवाच— देव देव परेशान भक्ताभीष्टप्रदायकम्।
ब्रूहि मे महाभाग गोप्यं यद्यपि मे प्रभो ॥

शिवउवाच— भैरवोऽहं पुरादेवि ब्रह्माणं पञ्चमं शिरः।
चिच्छेद कोपमनसा वामांगुलिनखाग्रतः ॥
प्रेतत्वमभवद्ब्रह्मा पंचमेन विना शिवे।
ब्रह्मणः पञ्चमं शीर्षं मम हस्ते ह्ययं गतम् ॥
पुनर्ब्रह्माविशुद्ध्यर्थं सुधायागंमयाकृतम्।
पात्राद्ववाह पीयूष विश्वात्मा चाभवत् क्षणात्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेनामृतेनदिव्येन तर्पिता योगिनी गणाः ॥
योगिन्यास्तत्र मुदिता उचुस्ता मां वरं वृणु ।
ब्रह्माणं शीघ्र योगिन्यश्चैतन्यं योजनं कुरु ।
मयोक्तं वचनं श्रुत्वा ब्रह्माचैतन्यदर्शनम् ॥
कारयामास योगिन्योमुदे देवता तदा ।
भैरवेण कृतो यस्मात् सुधायागं महेश्वरी ॥
भैरवामृतयागोयं प्रशस्तं प्रेतमुक्तये ॥ ”

इस महायाग का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार का है। स्वसंप्रदाय गुरुपरंपरा के मत से आसन शुद्धि पर्यन्त कर प्राणायामत्रय कर तिल, यव, कुश तथा जल हाथ में रखकर संकल्प करे। यथा:— “ ॐ अद्येत्यादि ममेहजन्मनि श्रीस्वेष्टदेवताप्रीतिपूर्वक सर्वापच्छान्तिदीर्घायुष्यविपुलधनधान्यपुत्रपौत्रादिसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभविजय सदभीष्टसिद्ध्यर्थं तथा च गृहेसदास्थितपीडादिकृत्प्रेतादि तृप्तिमोक्षप्राप्तिपूर्वकगृहे सर्वारिष्टशान्त्यर्थं भैरवामृतमहायागकर्म्माहं करिष्ये वा कारयिष्ये ॥ तत्पश्चात् रक्षादीप जलाकर पूजनकर भूतशुद्ध्यादि शान्तिकलशगणेशपूजादि स्वपरंपरा के अनुसार समाप्तकर शंखार्घ्यस्थापनादि आनन्दकलशास्थापनामपंचकादिशोधनान्त ; समाप्तकर आनन्दकलस के उत्तर यथोक्त विधि से कर्म्मकुब्जिका का अर्चन कर श्रीपात्रस्थापना करे। तत्पश्चात् स्वाग्र में चतुरङ्गुल उच्च वेदी पर एक श्वेतवस्त्र रखकर उस में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

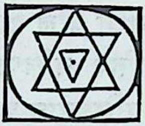

सिन्दूर से पीठयन्त्र लिखे पोठयन्त्र ऐसा है:- इस यन्त्र में पीठशक्तियों कायजन कर आनन्दकलशवत् मूलघट स्थापित करे। शेखर रतरु (लशुन, गृञ्जन, पलाण्डु) के साथ मांसादिमकार रखे हुए महापात्र में पंचरत्नविद्या से पूजाकर उस घट के उपर रख दे। फिर उस पात्र सहित घट में स्वेष्टदेवता का आवोहन तथा पञ्चोपचार से पूजन कर बलिपात्र में पंचवलि प्रदानकर नवचरुस्थापनादिसंस्कार करे। ततः दध्यादि सगुणद्रव्य में सगुणपूजा इस मंत्र करे। "कूट उच्चारणकर उमापतिदेवतायै अश्वत्थामाद्यष्टचिरञ्जीवीभ्यो नमः।" फिर आनन्दकूट का षड्दीर्घ से षडङ्गपूजा भी करे। उस के बाद अमृतयागका अर्घ्यादिकर षड्ङ्गन्यासकर हेतुमध्य में " बिन्दुत्रिकोणाष्टदलषोडशकेशरचतुर्द्वारोपेतयन्त्र ,, की भावना कर उस के बिन्दु में यथोक्त रूप आनन्दभैरव तथा आनन्दभैरवी का आवाहन तथा यथा शक्त्युपचार से पूजन कर उस यन्त्र में आवरण पूजा कर योनि, भूतिनी, बीजाक्षा, दैत्यधूपिनी, 5 और लेलिहान मुद्रा दर्शावे। तब घट के दक्ष में वटुक, वाम में योगिनी, पश्चिम में क्षेत्रपाल, दक्षिण में गणपति, पूर्व में भूतों और अग्र में (बलिपात्र में) मूलदेवता को बलि समर्पित करे। उत्तर में आगे ही कर्मकुब्जिका का यजन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा बलि हो जानेके कारण अभी यहाँ बलि नहीं होगा। फिर बलिपात्र में ही पूर्वपूजितावरणदेवताओं को भी बलिप्रदान करे। उस के बाद घट को सहस्रार तथा श्रीपात्र को कुलकुण्डलिनीरूप में भावित कर सुषुम्णा भाव से घट से श्रीपात्र तक शुक्लवस्त्र लटकाकर आरार्तिक प्रदान कर आनन्दमन्त्र यथाशक्ति जप कर निवेदन करे। ततः सकल योगिनियाँ और वीरों यथोक्त विधि से चक्राकार बैठकर घण्टा तथा डमरु वादनकर पुष्पाक्षत हाथ में रख बद्धाञ्जलि हो स्वस्तेश्वरी स्तव पढकर समर्पण करे। तबताम्रपात्र में अलितिलाक्षतकुशशुद्धि डालकर देवर्षि-मनुष्यतर्पण करे। यथा— "ॐब्रह्मभैरवस्तृप्यतामिदम लिवल्लिसहितंतिलामृतमर्घ्यं ते स्वाहा। ॐ विष्णुभै-रवस्तृप्यतामित्यादि।" इसीप्रकार पितृ तर्पण भी करे। उस में पुरुष को 'भैरव' और स्त्री को 'भैरवी' नाम दे। जैसे "अस्मत् पिता अमुकगोत्र अमुकशर्मा वा वर्मा वसुभैरवरूपस्तृप्यतामित्यादि। अस्मन्माता अमुकगोत्रा अमुकी देवी वसुभैरवीरूपातृप्यतामित्यादि।" इसप्रकार तर्पण किए हुए द्रव्य का आलोडन "ॐ अकुलस्थामृताकारे०" इत्यादि मन्त्र से करे। उस के बाद योगिनी तर्पण कर भैरवीचक्रमहायागवत् नवचरुविधान तथा वीरचक्रवत् कर यहयागका समाप्त करे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब कौलरुद्रीयाग का वर्णन करता हूं। इस विषय में श्रीकुलक्रमचिन्तामणि में निम्नलिखित वचन हैः—

" श्रृणुदेवि प्रवक्ष्यामि तवस्नेहान्महेश्वरि ।
दुर्लभं त्रिपुलोकेषु केवलं मुक्तिसाधनम् ॥
कौलरुद्री मया प्रोक्ता गुह्याद्गुह्यतरं महत् ।
आदौ यन्त्रे विधायाथ पूजां विधिविधानतः ॥
पश्चाद्वेदविधानेन यन्त्रोपरि सुपूजयेत् ।
यन्त्रोपरि घटंधृत्वासुधाधारां प्रपातयेत् ॥
रुद्रसूक्तं ततो जप्त्वा दुर्गापाठञ्च कारयेत् ।
वलिदानं ततः कृत्वा पूजा कोटिफलंलभेत् ॥
रुद्रीदर्शनमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ।
तद्द्रव्यगन्धमात्रेण सर्वरोगहरं फलम् ॥
मार्जनेन हरं दुःखं कोटितीर्थफलं लभेत् ।
श्रृणुदेवि महेशानि तद्वोक्ता भैरवावयम् ॥
तस्योल्लासपराशक्ति ह्यानन्दो मोक्ष उच्यते ।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां संक्रान्तौ पूर्णमासिके ॥
अभिषेकं सदा कुर्याद्देवता भावसिद्धये ।
गुरोर्जन्मदिने वापि स्वजन्मदिवसेऽपिवा ॥
भुक्तिमुक्तिप्रसिद्ध्यर्थं कौलरुद्री तु कारयेत् ॥ "

इसी उक्ति के आधारपर प्राचीन आचार्यों ने स्व—स्वसंप्रदाय तथा गुरुपरंपरा के अनुसार अपनी अपनी पद्धति निर्माण की है। इस वचन का मतलब यह है कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहले कुलाचार से यन्त्र में अपने इष्टदेवी के भैरव तदनन्तर इष्टदेवी का अर्चन तथा आवरणपूजादि समाप्त कर उसी यन्त्रस्थ साङ्गावरण सशक्तिक भैरवको सदाशिवरूप मानकर "ॐ नमः शम्भवायच०" इत्यादि ऋचा से उन की पञ्चोपचारों से पूजा कर उन के उपर जलहरि रखकर उस में सुधा डालकर अवच्छिन्न सुधाधारा टपकावे फिर रुद्राध्यायी का पाठकर सप्तशती स्तोत्र का भी पाठ करे। उस के बाद उर्ध्वाम्नायी हो तो मूलवलि तथा कुरुकुल्लादिवटुकादिबलि, पश्चिमाम्नायी हो तो मूलबलि तथा नवात्मादिवटुकादिबलि फिर अन्य आम्नायी हो तो मूलबलि तथा वटुकादिबलि देकर स्वपरंपरानुसार दिव्य अथवा वीरचक्र कर पूजा की समाप्ति करे।

फिर मांसाहुति महायाग पश्चिमाम्नाय से होता है। इस में अपने अपने गुरुपरंपरानुसार त्रिकोणाकार अथवा चतुष्कोणाकार कुण्ड निर्माण कर उस के अन्तर अग्नि प्रोज्वलन कर उस अग्नि को मूलाधारगत कुलकुण्डलिनी रूप कुब्जिका मान कर उस में सपर्या होती है और पशु-याग के पश्चात् मांस का आहुति होती है। इस का विशेष विवरणमैं नहीं देसकता हूं क्यों कि इस महायाग की पद्धति मैंने एक ही बार दूसरे की पुस्तक में पढी है उस समय यदि मै चाहतो तो उसका नकल लिखवा कर ले सकता था, परन्तु मैंने वैसा नही किया। कारण यह है कि मुझे उस पद्धति की हस्तक्रियाओं और रहस्यों को सीखने-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का अवसर नहीं मिला फिर पीछे सीखाने वाला गुरु मिलने की आशा भी नहीं हुई। फिर जिस पद्धति से मैं काम नहीं ले सकता हूँ, उसे मैं रखता नहीं हूँ। मेरे पास जितनी पद्धतियाँ हैं, लेखविस्तार भयसे वे सब संकेतरूप में ही हैं।

दूतीयाग, दूतीक्रम और पञ्चमयाग इन तीन यागोंको अधिकांश लोग एक हा समझते हैं। परन्तु यह तीनों ही अलग अलग हैं। यह बड़ा ही गहन तथा गुप्तविषय होने के कारण इसका विवरण मैं यहां नहीं दे सकता हूँ। यह सब गुरुवक्त्र से जान लेने की बात है।

कुमारीयाग भी एक भुक्तिमुक्तिप्रदयाग है। वह अपने गुरुपरम्परा भेद से बहुत प्रकार का होने के कारण सबको मालूम ही होगा, मैं क्या लिखूँ ?

अब रहा शिवावलि याग। यह याग छः आम्नायों की पृथक् पृथक् विधियाँ होने के कारण कुल सात प्रकार का होता है। अपने अपने आम्नाय की विधि गुरु जी से सीखकर करना अच्छा है। यागों के भेद के विषय में मुझे इतना ही मालूम है। और और भी हो सकते हैं, जो मुझे मालूम नहीं हैं। इस अगाध तन्त्रशास्त्र का विषय मुझ जैसा एक सामान्य अल्पज्ञ क्या जान सकता है ?

अब चक्रार्चन के विषय में मेरी एक कहने की बात है। यदि किसी ने चक्रार्चन के लिए आप को निमन्त्रण दिया तो आप शामिल हो सकेंगे। वहां शामिल होने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीरों में सबके संप्रदाय और गुरुपरंपरा एक नहीं हो सकेगी। अतः योगिनीयाँ तथा वीरों अपने अपने मतानुसार तर्पणादि तथा वन्दनादिकर्मकर तत्वशुद्धिकर आचार्य के ही मत से पूजा की समाप्ति करें।

सप्तशतिस्तोत्र में भी शतचण्डी तथा सहस्रचण्डी नाम के याग होते हैं। उन में भी अपने अपने संप्रदाय तथा गुरुपरंपरा भेद से बहुत प्रकार के विधिभेद तथा पाठ भेद हो ते हैं। अपने लिए अपने ही संप्रदाय तथा परंपरा मत ही ठीक है पुस्तकान्तरों को देखकर न ललचावे, अपने ही से कर्म्म करे। मैं विविधप्रकार का पाँच सात किसिम का सप्तशतिस्तोत्र का पाठ भेद औ उन की विधि देखा हूँ। यजमान ब्राह्मणका वरण करे तो वह ब्राह्मण यजमान के मतानुसार करे। हम लोगों की परंपरा में ऐसी ही प्रथा है। अन्य परम्परा में क्या है, वह मुझे मालूम नहीं है।

इन महा यागों की केवल पद्धति प्राप्तकर लेने से ही कोई महाविद्वान् भी बिना गुरु से इन का रहस्य तथा हस्तक्रियायें सीखे आचार्य बनकर नहीं सकता है। तन्त्र का रहस्य जोलोग नहीं जानते, वे षट्कर्म्म करनेवालों (दानववीरों) को ही महातान्त्रिक, सिद्ध तान्त्रिाचार्य मानने लगे हैं, क्यो कि बहुत से लोग मुक्ति से भुक्ति को ललचाते हैं, और दानववीरों तात्कालीक क्षणीक दानवीय माया दिखा सकते हैं। तब ऐसा महायागों और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चक्रार्चनों (जिन से धीरे धीरे अनन्त के लिए फल मिल ते हैं) की चर्चा कौन करे! पूर्वोक्त महानिर्वाणतन्त्रोक्त लेख के आधार से अन्तः करण से ब्रह्मविद् चाहे बने अथवा न बने मुख से ही ब्रह्मविद् सहि, मनो भाव कैसा भी हो बस तत्व चक्र रचा, मौज उडाई फिर कौन अर्च-नादि की तकलीफ उठाये! इतने ही से अपने को कौल समझनेवाले भी बहुत हैं। इस का फल यही हो रहा है कि "कौलिक" नाम सुनते ही वैष्णवादि धर्मावलम्बी लोग कोसों दूर भागते हैं। इसलिए मैं ने अपने अल्पज्ञा-नानुसार तन्त्रशास्त्र का कुछकुछ रहस्यों का वर्णन किया है।

कौलाचार तथा अवधूताचार पृथक् हैं। कौलाचारी को कौलिक और अवधूताचारी को पूर्णावधूत कहते हैं। अवधूताचारी का लक्षण ऐसा है:—

"नयोगी न भोगी न वात्मा न काङ्क्षी ।
नवीरो न धीरो न वा साधकेन्द्रः ॥
सदानन्दपूर्णो धरण्यां विवेकी ।
चिराज्जात धूतो द्वितीयो महेशः ॥
श्रुतौकुण्डलेऽसृग् गलेमुण्डमाला ।
करे पानपात्रं मुखे हन्तहाला ॥
परित्यक्तकर्मा लयन्यस्त धर्म्मा ।
विरक्तोऽवधूतो द्वितायो महेशः ॥"

फिर कौलाचारी के लक्षण ऐसे है:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

" वामे रामा रमणकुशला दक्षिणेपानपात्रम् ।
मध्येन्यस्तं चणकवटक शूकरस्योष्णमांसम् ॥
स्कन्धेवीणा ललितसुभगा सद्गुरूणां प्रपञ्चः ॥
कौलो धर्म्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥ "

इस श्लोक का अर्थ बड़ा ही रहस्यपूर्ण और गम्भीर है। अतः इसका यथार्थ अर्थ गुरुवक्त्र से ही जान लेना चाहिए।

गृहस्थ लोगों को कुलाचाराश्रित होकर कौल ही बनना चाहिए। उन्हें अवधूताचार आश्रयकर कर्म्मत्याग-कर अवधूत कदापि न बनना चाहिए। यथार्थ ब्रह्मज्ञान प्राप्तकर जीवन्मुक्त होने से भी कर्म्मत्याग न कर गृहस्थाश्रमीलोग दिव्यकौल बनकर मिथिलानरेश जनक महाराज जैसे कर्मनिष्ठ होकर यथार्थ व्यवहारिक प्रपञ्च भी करना चाहिए कौल लोगों को सभी याग तथा अर्चनो में अपने वाम तरफ शक्ति अवश्य रखनी चाहिए। विना शक्ति के किएहुए चक्रार्चनों तथा यागादिका यथार्थ फल नहीं होगा। परन्तु अवधूतों के लिए शक्ति की बात तो क्या, अर्चनादि की भी जरूरत नहीं, स्वेच्छा से ही खान-पान कर सकते हैं। उन लोगों के लिए विधिनिषेध कुछ भी नहीं है। महानिर्वाणतन्त्र में जो तत्वचक्र की विधि बताई गई है, वह अवधूतों के लिए ही है। मेरी गुरुपरम्परागत बात यही है। अन्य परम्पराओं में अन्य बात होगी, वह मुझे मालूम नहीं है। कौलों के लिए तो शक्ति साथ में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रखना अत्यावश्यक है । देखिए, श्रीराम ने जब अश्वमेघ याग किया था, तब सीता का अभाव होनेके कारण सुवर्ण की सीता की प्रतिमा निर्माण कर उन्हों ने याग की पूर्ति की थी । जब वैदिक याग में भी शक्ति की आवश्यकता है तो तान्त्रिक याग, जिस में शक्ति ही प्रधान देवता मानी जाती है, उस में तो जरूर ही शक्ति रखनी चाहिए ।

अब मैं **नवरात्र के दुर्गापूजा याग की कन्यापूजा तथा सुवासिनी पूजा के** विषय में कुछ लिखूँगा । नवरात्र दुर्गापूजा याग में जो लोग पाशव-कल्प से पूजा करते है, उनलोगों में बहुत से याग मण्डप तक स्त्रीमात्र को देखने भी नहीं देते हैं । कन्यापूजातो यागमण्डप के वाहर ही होती है । परन्तु वीरकल्प तथा कुलकल्प में तो शक्ति (सुवासिनी) के बिना पूजा ही नहीं हो सकती है । उस विधि में पहले कन्यापूजा ततपश्चात तत्वशुद्धि के पहले सुवासिनी पूजा होगी । प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त एक वर्ष से क्रमशः नववर्षतक की कन्याओं की पूजा होगी । उन के नाम श्री विद्या कल्प में क्रमशः ये हैं— १ श्रद्धा । २ वाला । ३ कालिका । ४ मालिनी । ५ वसुन्धरा ६ सरस्वतो । ७ रमा । ८ गौरी । ९ दुर्गा । अन्यकल्प में क्रमशः नाम ये हैं— १ कुमारी । २ त्रिमूर्ति । ३ कल्याणी । ४ रोहिणी । ५ कालिका । ६ चण्डिका । ७ शाम्भवी । ८ दुर्गा । ९ सुभद्रा । सुवासिनी के नाम क्रमशः ये हैं— १ हल्लेखा । २ गगना । ३ रक्ता । ४ महोच्छूष्मा । ५ करालि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नी। ६ इच्छा। ७ ज्ञान। ८ क्रिया। ९ दुर्गा।

अन्ययागों तथा अर्चनों में जिस शक्ति के उद्देश्य से अर्चना होती है, उसी शक्ति के नाम से सुवासिनी की पूजा होगी। यहाँ एक कहने की बात है। नित्यार्चनों के लिए शक्ति यानि सुवासिनी की वैसी जरूरत नहीं है। अपने वामाङ्क में विन्दु, त्रिकोण, वृत्त तथा चतुरश्र लिख कर उसी में सुवासिनी की पूजाकर कामचला सकते हैं। परन्तु अन्यपर्वार्चनों तथा यागादिकों में तो अवश्य ही शक्ति के बिनाकाम नहीं हो सकता है। परन्तु सब से पहले अपना संप्रदाय और अपनी गुरुपरम्परा किस तन्त्र के आधार पर निकले हैं यह सब अच्छी रीति से जान लेनी चाहिए, नहीं तो बहुतन्त्रों के बहुमतभेद देखने से भ्रम होने की सम्भावना है। यथा लाभ मतभेदों को जान ले परन्तु स्वयं अपनी ही गुरुपरम्परा के मत में रहकर उपासना करना चाहिए। क्रमदीक्षा ग्रहण कर आम्नायों में भ्रमण कर पीछे एक आम्नाय में समष्टि कर उपासना करने के लिए गुरु मिलना कठिन है। प्रयत्न से मिल भी सकेगा। यदि वैसा न मिले तो भी एक ही विद्या में रहकर अपने गुरुपरम्परा में पूर्ण विश्वास रख उपासना करने से भी भुक्तिमुक्ति मिल सकेगी। कुलार्णवतन्त्र में ऐसा लिखा है:—

" मम पंचमुखेभ्यश्च पंचाम्नायाः समुद्गताः।
पूर्वश्च पश्चिमश्चैव दक्षिणश्चोत्तरस्तथा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऊर्ध्वाम्नायश्च पञ्चैते मोक्षमार्गाः प्रकीर्तिताः ।
आम्नाया वहवः सन्तिनोर्ध्वाम्नायस्य ते समाः ॥
सत्यमेतद्वरारोहे नात्रकार्या विचारणा ।
आम्नाया वहवो गुप्ता श्चतुराम्नाय भेदज ॥
अस्मिस्त त्रे समाख्याताः पूर्व त्र कुलनायिके ।
अपराम्नायवेत्तारो वहवः सन्ति मानिनः ॥
ऊर्ध्वाम्नायात्मतत्त्वज्ञा विरला वीरवन्दिते ।
यावन्तः पांशवो भूमेस्तावन्तः समुदीरिताः ॥
एकैकाम्नायजामन्त्रा भुक्ति—मुक्ति फलप्रदा ॥ "

पुनस्तत्रैव — " एकाम्नायञ्च यो वेत्ति समुक्तो नात्र संशयः ।
किंपुनश्चतुराम्नायवेत्ता साक्षाच्छिवोभवेत् ॥
चतुराम्नायविज्ञानादूर्ध्वाम्नायः परः प्रिये ।
तस्मात्तदेवजानीयाद्यदीच्छेत् सिद्धिमात्मनः ॥ "

अतः एक ही विद्या के प्रभाव से कितने लोग पार हो गए हैं। और सिद्ध भी हो रहे हैं। केवल विश्वास, भाव, भक्ति, और अभ्यास का अभाव है। यह सब बात बताने और लिखने में बहुत ही सरल है। परन्तु करना तो बहुत ही कठिन है।

मेरा जन्म यह पाशुपतक्षेत्र में हुआ है। फिर मै यहाँ ही बैठकर यह ग्रन्थ लिख रहा हूँ। इस लिए अब श्री पशुपतिनाथ का वर्णन कर इस ग्रन्थको समाप्त करता हूँ। " सर्वे जीवा एव पशवः, तेषां पतिः पशुपतिः " इस सूत्र से शास्त्रने पशुपति को जीवसाक्षी ब्रह्मरुप प्रतिपादन किया है। पशुपति भी ऊर्ध्वाम्नायात्मक देवता है। श्रीविद्या का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्णक्रम ग्रहण कर साम्राज्यमेघादीक्षा लेने के लिए इन (पशुपति) क्रम ग्रहण करने को भी आवश्यक है। पशुपति के तीन क्रम हैं। लघुपाशुपत, मध्यमपाशुपत और महापाशुपत। फिर प्रत्येक विद्या का न्यास तथा ध्यान पृथक् है। लघुपाशुपतको पाशुपतास्त्र भी कहते हैं। उन के मन्त्र ध्यानादि शारदा तिलकतन्त्र में ऐसा है:—

"मध्याह्नार्कसमप्रभं शशिधरंभीमाट्टहासोज्वलम्।
त्र्यक्षपन्नगभूषणं शिखिसखाश्मश्रु स्फुरन्मूर्धजम्॥
हस्ताब्जैस्त्रिशिखं समुद्गरमसिं शक्तिंदधानं विभुम्।
दंष्ट्राभीमचतुर्मुखं पशुपतिं दिव्यास्त्ररूपं स्मरेत्॥"

अस्यमन्त्रम्— "तारोवान्तो धरा संस्थो वामनेत्रेन्दुभूषितः।
पार्श्वौ वक्रः कर्णयुतोवर्मास्त्रान्तः षडक्षरः॥
मनुः पाशुपतास्त्राख्यो ग्रहक्षुद्रनिवारणः।
षड्भिर्वर्णैः षडंगानि हूँ फडन्तैः सजातिभिः॥"

फिर मध्यम पोशुपात में प्रणव के अन्त में पाशुपत-कूट फिर 'पशु' के अन्त में 'पतिं' और अस्त्रबीज के अन्त में वह्निजाया प्रयोग हो कर दशाक्षरी मन्त्र होगा। इन का उद्धार श्लोक मेरे पास नहीं है। इन का ब्रह्मा ऋषि गायत्री छन्द है पाशुपतबीज का षट्दीर्घ भाजा से कर-षडङ्ग न्यास होते हैं। देवता पशुपति तथा ध्यान ऐसा है:—

"ध्यायेत् पशुपतिं सम्यङ्मन्त्री चैकाग्रमानसः।
पंचवक्त्रं दशभुजं प्रतिवक्त्रत्रिलोचनम्॥—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अग्निज्वालानिभश्मश्रु संयुतं भीमदंष्ट्रकम् ।
खड्गंवाणानक्षशूलं शक्तिं परशुमेवच ॥
दधानं दक्षिणैर्हस्तैरूर्ध्वादिक्रमतो गुरुम् ।
खेटचापौ कुंड़िकांच त्रिशूलं ब्रह्मदण्डयुक् ॥
वामहस्तैश्चबिभ्राणं मध्यान्हार्कसमप्रभम् ।
नानाभरणसंदीप्तं पन्नगेन्द्रैरलं कृतम् ॥
स्फटिकौघनिभं शान्तं सर्वरक्षाकरं स्मरेत् ॥"

महापाशुपत का भी श्लोक में मन्त्रोद्धार मेरे पास नहीं है। इनका महापशुपति देवता है। ऋषि तथा छन्द पूर्ववत् ही हैं। करषडङ्ग ब्रह्मगायत्री के छ भागों के पूर्व पाशुपत कूट तथा प्रासादबीज का षड्भाजा से होता हैं। मन्त्र में ब्रह्मगायत्री, प्रासाद, तथा मध्यमपाशुपत यह तीनों ही मन्त्रों की समष्टि होकर एकोनचत्वारिंशदक्षरी विद्या होगी। इनका ध्यान ऐसा है:—

" ॐ सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम् ।
उत्तप्तहेमसंकाशं त्रिकोणोपरि संस्थितम् ॥
पूर्वे तप्तसुवर्णाभंशान्तविष्णवात्मकास्यकम् ।
दक्षिणे भैरवास्यं च श्यामदंष्ट्रांकुरान्वितम् ॥
क्षीरकुन्देन्दुधवलं कात्मकंपश्चिमाननम् ।
उत्तरेवदनं भौरं गौरीशंकररूपकम् ॥
जटाजूटं चन्द्रचूडं प्रतिवक्त्रत्रिलोचनम् ।
ऊर्ध्वेज्योतिर्मयंवक्त्रंशिखाकारं तदन्तरे ॥
श्रीचक्रराजचिह्नन्तु परब्रह्मात्मकं विभुम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाभौकालाग्निरुद्रस्य वदनं प्रोज्वलाननम् ॥
योगपट्टपरीधानं व्याघ्र चर्म्मा भृताम्वरम् ।
पन्नगाभरणोपेतं रुद्राक्षैः समलंकृतम् ॥
नानारत्नोज्ज्वलांगं च मुण्डमालाविभूषणम् ।
विल्वपत्रमयीमाला मापादान्तावलम्बितम् ॥
दक्षिणैर्वै ददोर्दण्डैरभीतिर्दानमुद्यतम् ।
वरदं वामहस्तैश्च चतुर्भिर्दधतं शिवम् ॥
एवमष्टभुजं देवं सदाषोडशवार्षिकम् ।
खगान्तरे शून्यमध्ये शून्यपद्मोपरिस्थितम् ॥
श्रीमत्पशुपतिं ध्यायेत्सच्चिदानन्दलक्षणम् ॥ ”

अतः हमारे यहाँ जो पाशुपतपीठ है वह साक्षात् श्रीविद्यापीठ है। यह मैंने सिद्धप्राप्ति का मार्ग बताया है परन्तु स्वयं मैं सिद्ध नहीं हूं। मैतो एक मामूलि कुलपथानुयायी हूँ। पाठकलोगों से मेरी यही प्रार्थना है कि सब से प्रथम आपलोग अपना संप्रदाय, गौड, केरल वा कश्मिर में से कौन है फिर अपना गुरुपरम्परा किसतन्त्र के आधार से किस गुरुने संकलित किया और अपनी इष्ट देवता किस आम्नाय की है यह ३ बात अवश्यमेव जान लेना चाहिए। इस लिए आपलोग किसी सिद्ध अथवा आचार निष्ठ गुरु का अन्वेषण कर उन की शरण मे जाकर सीख लिजिए पाशवकल्प से उपासनाकरने के लिए अपने पितृपरम्परा से ही होसकेगा। परन्तु वीर कल्प तथा कुलकल्प के लिए तो अंडवंड से सिद्धि नहीं होगी। यदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपलोगों में रुचि होगी तो मेरी इस पुस्तक का अनुयायी बनसकेंगे। इस से संप्रदाय तथा गुरुपरंपरा का ज्ञान हो सकेगा, क्यों कि यह पुस्तक मेरे ही संप्रदाय तथा परम्परा से लिखी गयी है। मेरा गौड संप्रदाय है। और मेरी गुरुपरम्परा वृहद्वडवानलतन्त्र के मतानुसार उन्मत्तभैरव द्वारा निकली है। न मैं सिद्ध हूं न मैं ब्राह्मण हूं। अतः आपलोगों ने किसी गुरुद्वारा मन्त्र ग्रहण किया है और दैववश उन से आपको सत्संग नमिलकर आपको संप्रदाय तथा गुरुपरंपरा का ज्ञान नहो सके तो, इस पुस्तक की मदद से पूर्वोक्त संप्रदाय तथा गुरुपरम्परा ज्ञान लीजिए। इस से अधिक और मैं क्या लिख सकता हूं। जितना ही सिद्ध गुरु होने से भी शिष्य की प्रयास के बिना कुछ भी नहीं होसकता। गुरुलोगतो शिष्यो को उपदेश देकर कुछ कुछ अनुभव कराही देंगे, तत्व वता ही देंगे, संशय हटा देंगे, परन्तु शिष्यों को सिद्ध नहीं बना सकेंगे। यहतो शिष्य के ही हाथ में है। सिद्धि तो गुरुभक्ति, विश्वास तथा प्रयास से ही मिल सकती है। कोई शिष्य गुरु से भी अधिक सिद्ध बन गए यह बात इतिहासों में मिलती है। " गुरु गुड ही रहगए, चेलाबन गए चिनी " यह कहानी उसी से बन गयी होगी। अस्तु!

विक्रम सम्वत् १९५२ माघकृष्ण एकादशी में मेरा जन्म हुआ। विक्रम सम्वत् १९७३ वैशाखकृष्ण द्वितीया में मेरा प्रथम पुत्र का तथा उस के ५ रोज बाद वैशाख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्ण सप्तमी में मेरी प्रथम भार्या का देहान्त होगया था। यद्यपि मेरी बालावस्था से ही मुझे जगदम्बा में प्रेमथा तथापि विद्योपार्जन में संलग्न होनेके कारण उपासना विषय में मैं नथा, जब मेरे पुत्र तथा धर्मपत्नी के खोजाने के बाद मेरे को वैराग्य उत्पन्न हुआ और उसी साल माघ शुक्ल पञ्चमी में मैंने प्रथम श्रीविद्या ग्रहण कर कुलपथानुयायी बनकर अभीतक जितना ज्ञान हुआ और जो अनुभव किया वह सब लिख चुका हूँ। इस से अधिक मैं और कुछ नहीं लिख सकता हूँ क्यों कि और मैं जानता नहीं हूँ। मैं एक साधारण कुलमतानुयायी होने के कारण किसी से शास्त्रार्थ वादविवाद करने में भी असमर्थ हूँ। मेरे पास वैसे बडेबडे तन्त्रग्रन्थों की लाइब्रेरी भी नहीं है। मैं तो केवल पाठकों से प्रेमरूप भिक्षार्थी हूं। बस, मेरी इतनी ही प्रार्थना है। और उपासकप्रवरों, सिद्धों तथा सद्ब्राह्मणों से आशीर्वाद चाहता हूँ। आप लोग के चरण-कमलों में साष्टाङ्गप्रणाम कर यह ग्रन्थ समाप्त करता हूँ। आप लोगों के दयार्द्रहृदय से मुझ अजान को आशीर्वाद मिले, मेरी यही अभिलाषा है॥ ॐ तत्सत्॥

इति श्री धनशम्शेरवर्मणा संग्रहित श्रीतान्त्रिकोपासनादर्पणे महायागादिविवरणंनाम एकादशः पटलः॥

इति श्रीतान्त्रिकोपासनादर्पणे द्वितीयः खण्डः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथम खण्ड

शुद्धिपत्र

पृष्ठाङ्क पंक्ति—	अशुद्ध	शुद्ध
निवेदन ३	अतथास्त्वयंपनी	तथा स्वयं अपनी।
(ख) ५	मामिक	मार्मिक।
भूमिक ४	स्वय	स्वयं।
२/१,२	माग, मार्गमै	मार्ग, मार्गमें
३/२	सनुष्यों	मनुष्यों,
५/१३,२४	वितित, बुद्धिहिने	विदित, बुद्धिहीने,
६/६,१४	हशभे, हें	हृशभे, हैं
७/९,१०	ठीक,	ठीक. "
७/११,१९	" पूवंवत	" पूर्ववत्
८/१५,१७	वने, देदुंग	वनें, देदूंगा
९/१	शम	समं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११/१४	शमर्थंवान	शमर्थंवान्
१२/११,१४	वर्भते, वलो	वर्धते, वलौ.
१२/२२,२३	वितृन्, कहेगे	पितृन्, कहेंगे
१३/२	सूर्वाव	सूर्याव
१६/८,१३२४	मिश्रित, वहहैं, मनोभाग	मिश्रितः, है, भाव
१७/१७	पूताम्नाय	पूर्वा
१७/२३	वामा	वामाचार
१८/१	स	से,
२२/३,१४	दशने नच, त्यन्त्का	दर्शनेन च, त्का,
२५/२	स	से,
२६/११,१८	विषयमै, विभती	वि, में, ती
३७/४	त्रिचण्डी	त्रिदण्डी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३८ / १,२	सिद्धयर्थ, मुमौतपंपरौ	थें, मुभौ तपपरौ
३८ / ७,१२	हरिशान, भवेत	हरीशान, भवेत्
३९ / ४,१८	तिरिक्त, रूध्च	अतिरिक्त, रूर्ध्वं
४८ / १ १६	प्रिय, पुटितांर	प्रिया, पुटितंतारः
५२ / १	ङ्कश	कुङ्कश
५७ / १७,२३	पारम्यर्येण, भगवान्	म्य, न्,
५८ / २२	वराहजीका	की
५६ / ६,१७	त्यर्णाढ्यं, धानां	त्व, दधानां
६० / १५,१९	सयुध, त	सा; स्तं
६३ / १४,१९	धाना, घलि	धान्या, वलि,
६४ / २१,२३,२४	षट्कमदि, क्षद्र छडो	कर्मादि, क्षुद्र, छोड
६९ / ५	शांखनिर्धि	पद्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७४/१०	रूही	रूपही
८२/१	पूवा	पूर्वा
८९/१६	हंसादिरूढा	हंसाधिरूढां
९०/१३,१४	बहुभिः, व्याख्या	वाहुभिः, र्व्या
९६/२२	उपरोक्त	उपरोक्त
९८/९	वन्	वन
१०२/३,१०	प्राक्ता, भिमप्रद	प्रोक्ता, भिमतप्रदः
१०९/५	दा	दो
१११/२	सप्तदशि	सप्तदशी
११९/२०	ऐसैं	ऐसे
१२०/८	स्छ्यिते	स्वपिते
१२५/२०	हाती	होती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३८/१८	पाठ	पीठ
१५०/७,१२	जायते, ब्राह्म	ज्जा, ब्राह्मी
१५५/७	लाकन	लोकन ।
१६१/१८,२०	उत्तरा, उत्तरा	पश्चिमा, पश्चिमा
१७३/१०,१५	उग्रजण्डा, दक्षिणाम्नायो	चण्डा पश्चिमा
१७६/६	अथ	अर्थ
१८०/९	पक्षिमा	पश्चिमा
१८१/५	स्न्हौँ स्न्हाँ स्न्हीँ	स्न्हूँ स्न्हीँ स्न्हाँ
१८२/१३,१४	छौँछीं, स्न्हीँ स्न्हाँ स्न्हो ँ	छ्रौँछ्रीँ स्न्हूँ स्न्हीँ स्न्हाँ
२०६/७	विधिवत	विधिवत्
२१७/५	वाधयित्वा	बोधयित्वा
२१८/४	दा	दो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२२१ / १२	संप्रषणं	संप्रेषणं
२२४ / २१	मदिनी	मर्दिनी
२३१ / १२	नवतत्न	नवरत्न
२३८ / ७,१४	सत्यगुण, का जाग्रत	सत्व, को
२४२ / १०	कृष्णाभं च कृष्णंव	भंकृ
२४४ / १४	दण्डोग	दण्डोग्रं
२४५ / ५	भीषण	णं
२४६ / २	कर	करें।
२५२ / ३	culture	reliance

पृष्ठाङ्क १७४ का पंक्ति ७ के वाद निम्नलिखित दो पंक्तियां छूटगये।

दक्षिणेनकरां एता यथा शोभातथापरम् ।
फेटकं धनुर्हस्तं च गदां घंटासुशोभिताम् ॥

इतिप्रथम खण्ड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वितीय खण्ड

पृष्ठ / पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३/११	नृमुण्डकुण्डलाम्	नृमुण्डकृतकुण्डलाम्
३/१२	क्रिलोचनाम्	त्रिलोचनाम्
३/२१	तन्त्रान्तमें	तन्त्रान्तरमें
३/२२	षोडवार्णं	षोडपार्णं
३/२३	यमेकवामुच्चार्यं	यमेकवारमुच्चार्यं
४/१३	वीउद्दयं	बीजद्वयं
४/१९	तद्बीजदकमुच्चार्यं	तद्बीजद्वयमुच्चार्यं
५/१७	भेद्दौ	भेदों
५/२०	भुजवरराभास	भुजवैराभास
६/१९	भैखकारं	भैरवाकारं
७/९	महासमुनामा	महासमुद्रनामा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७/१४	पशुभिव्याप्तं	पशुभिर्व्याप्तं
८/३	षड्द्रव्य	षड्द्रव्यैं
८/१९	संग्रमें	संग्रहमें
९/११	सिद्धिलल्मी	सिद्धिलक्ष्मी
१३/१६	व्यांप्तक्ष	व्याप्तक्षं
१८/१	पंच बक्त्रस्या	पंचवक्त्रस्य
१८/८	मुद्धत्य	मुधरस्य
१९/२	हमाकाल	महाकाल
१९/१५	एव	एषं
२०/५	सिद्धमार्थं	सिद्ध्यर्थं
२०/१४	यन्त्योद्धर	यन्त्रोद्धार
२१/१५	द्वाशारे	द्वादशारे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२/१६	सयुता:	संयुता:
१२/१८	वामातंव	वामावर्तं
१२/२३	सृप्क्यादि	सृष्ट्यादि
२२/५	मिध	भिध
२३/१८	तारत्रया	तारत्रय
२४/७	त्रलोक्य	त्रैलोक्य
२५/९	आदित्यापासिता	आदित्योपासिता
२६/१०	दानवापासिता	दानवोपासिता
२७/१४	तार्क्ष्यं	तार्क्षं
२८/१	मूर्योपास्वा	सूर्योपास्या
२९/८	ऋटरस्यालोमपाद	ऋषिः स्याल्लोमपाद
३०/२	करना	करनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१/१	स्त्रीकमलाह्म्	स्त्रीकमलाह्यम्
३१/४	मचरं	मपरं
३२/५	नरारिथकृतसर्वाङ्ग भूषणं	नरास्थिकृतसर्वाङ्गभूषणं
३३/१६	पिशास	पिपासा
३३/२१	धूम्रविजच	धूम्रवीजं च
३४/२	घो घोरतरे	घोरेघोरतरे
३५/२८	आद्यावर्गां	आद्यवर्गा
३६/२२	मूर्ध्निमूध्ना	मूर्ध्निमूर्ध्ना
३७/६	द्वात्रिंश	द्वात्रिंश
३७/१४	न्द्ध	नद्ध
३७/१८	दीवांगुलि	दीर्घांगुलि
३७/२१	जद्यना	जघना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३८/५	मालां दक्षिणे	मालां च दक्षिणे
३८/६	पाश च. मुद्गर	पाशंच, मुद्गर
३८/२१	सधावनासन्त्र	सप्तधावद्धनारान्त्र
४०/२	जएर्गी	जाएगी
४०/१८	पूजादिक	पूजादिकं
४०/१६	विशेष	विशेषं
४०/२१	पार्थिवै:	पार्थिवैः
४१/४	तमेघ	तमेव
४०/४	तन्नम	तन्नाम
४२/५	दद्याश्च	दद्याच्च
४२/१०	जपैर्नां पे	जपैर्नापि
४२/२४	समुद्धत्य	समुद्घृत्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४३/१०	मुश्चार्य	मुच्चार्यं
४३/१८	क्रोधाम्नि	क्रोधाग्नि
४४/१	सहारिणी, मोहियी	संहारिणी, मोहिनी
४४/४	ज्ञिकोणे	त्रिकाणे
४५/३	गडा	गदा
४५/५	योगिनीरष्ट	योगिनीरष्ट
४५/८	ब्याप्तनना	ब्याप्तानना
४५/१४	यूर्वकं	पूर्वकम्
४५/२५	बेह	वे
४६/१४	देवौं	देवीं
४६/१६	दला न्तिम्	दलान्वितम्
४६/१९	कोणेपु	कोणेषु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४६/२१	अघ:, कम्द्र्पाणं	अध:, कन्दर्पाणम्
४७/२	वणित	वर्णित
४७/७	उपभेदड़ों	उपभेदों
४७/९	शत्यद्	शायद्
४७/२३	न्हास	ह्रास
४८/१०	श्रेष्टाय	श्रेष्ठाय
४८/१३	नमोन्मनाय	मनोन्मनाय
४८/१४	माऽभय	मालाभय
४८/१५	किञ्जल्स	किञ्जल्कस
४८/१६	नाम्	माम्
४८/२२	हूँ	हूँ
५३/७	याशो	पाशो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५३/१६	चतुद्वार	चतुर्द्वार
५४/६	सयुतौ	संयुतौ
५५/१४	उध्वर्ाम्नार	ऊध्वर्ाम्नाय
५५/१९	ञैलोक्यै	त्रैलोक्यै
५६/३	दशंव	दर्शन
६२/४	द्विरावृयाङ्क	द्विरावृत्याङ्क
६३/१२	नित्यल्क्लिन्ना	नित्यक्लिन्ना
६४/१२	वल्पे	वक्षे
६४/१४	मुच्चर्यं	मुच्चार्यं
६६/१७	परनेशानि	परमेशानि
६६/१८	रक्तांणुक	रक्तांशुक
६८/८	मुच्चयं	मुच्चायं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८५ / २०	कामद्वन्दं	कामद्वन्द्वं
८७ / ९	वृच दलानाम्	वृत्त दलानाम्
८७ / ११	हृत्तम्	वृत्तम्
८७ / १५	योन्यत्मकं	योन्यात्मकं
८७ / १६	पुनर्वीतं	पुनर्वृत्तं
८८ / १२	व्रान्ह्मी	ब्राह्मी
८८ / १५	कोल्ल	कौल
८८ / ९	पालाश	पलाश
९१ / ६	श्रीमस्त्रिशक्ति	श्रीमत्त्रिशक्ति
९२ / ६	रूपसे	रूपसे
९७ / १६	कां	की
९८ / ६	मणोविं	मणेत्रिं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६८/१५	रङ्गावि निन्यसेत्	रङ्गानिविन्यसेत्
७२/९	अन्यज्व	अन्यच्च
७२/१३	लघुषोदशी	लघुषोडशी
७२/२१	गुणात्तीता	गुणातीता
७३/३	पन्चदकी	पन्चदशी
७९/७	व्यास्यास्यामः	व्यास्यास्यामः
७९/१५	ठयाचक्षते	व्याचक्षते
८१/९	वाप्रोति	वाप्नोति
८१/१७	किंः	कि
८३/२०	बिद्भिभ	बिद्भि
८४/६	षकल	सकलं
८५/१२	मन्मथाम्रे	मन्मथान्ते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९८ / १६	अभास	आभास
१०० / १०	जानलेनेसे से	जानलेनेसे
१०१ / २	अह	अहं
१०४ / १	द्यिा	विद्या
१०४ / १८	पाश	पाशं
१०४ / १९	अकुशं	अंकुशं
१०४ / १७	चतुर्भुजम्	चतुर्भुजाम्
१०७ / ६	च द्रशेखरम्	चन्द्रशेखरम्
१०७ / ११	दघॅ	दद्धॅ
११० / ९	विष्णवीश	विष्णवीश
१११ / ६	वक्त्य	वक्त्रं
१११ / ७	वक्त्रयन्तु	वक्त्रन्तु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१११/११	वधूक	वन्धूक
१११/१३	रत्नै वेराजित	रत्नैर्विराजित
१११/१५	चर्म्मरीधानां	चर्म्मपरीधानं
११९/८	लल्मी	लक्ष्मी
१२३/८	का	की
१२३/२२	शुल्कां शुल्कांवरधरां	शुक्लां शुक्लाम्बरधरां
१२७/१७	त्रलोक्यमोहने	त्रैलोक्यमोहने
१३५/२	त्यु त्तरानु	ह्यु त्तरानु
१३६/१०	करनी	करना
१३७/८	उसकी	उनकी
१५५/९	सर्वासा	सर्वांशा
१५५/१६	अनङ्ख	अनङ्ग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५७/२०	स्थितिक्रम	स्थितिक्रम
१५८/१२	घाँग	भाँग
१५९/१२	शुभाम्बर	शुभ्राम्बर
१६६/९	जेसे	जैसे
१७१/२	मण्डस्रजं	मुण्डस्रजं
१७१/४	पन्त्वं	पान्त्वं
१७१/९	वन्द्र	चन्द्र
१७१/२१	त्रिभिवणे	त्रिभिर्वर्णैं
१७१/२२	भैरवौवत्	भैरवीवत्
१७८/१३	दैरवीं	भैरवीम्
१७९/४	सुदरी	सुन्दरी
१७९		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१८१/१८	मुशुण्डि	भुशुण्डि
१८२/१६	चक्राचनों	चक्रार्चनों
१८३/७	दधत	दधतं
१८९/२१	वेज्ञानिक	वैज्ञानिक
१९०/६	इतना	इतनी
१९१/१	ऊदूर्ध	ऊर्ध्वं
१९२/२	साधक भक्ति बढात जाड़ेगा	साधककी भक्ति बढती जायेगी
१९६/९	मन्त्रा	मन्त्रों
१९९/३	चा हुए	चाहिए
१९९/२२	सुद्रा	मुद्रा
२००/३	तत्वशुह्मि	तत्वशुद्धि
२०६/८	आर	और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०६/२१	सरस्रार	सहस्रार
२१९/१९	स्या – भि	स्थाकादेहाभि
२३६/२	भुतेभ्यो	भूतेभ्यो
२३६/१३	से०यास	से०याय
२३९/८	सबचरु	सर्वचरु
२४५/१०	मंत्र करें	मंत्र सें करें
२४९/७	हा	ही
२५९/१०	मद्द	मदत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu